ख़लजी कालीन भारत

(१२९०–१३२०)

(HISTORY OF THE KHALJIS)

समकालीन इतिहासकारों द्वारा

[ज़ियाउद्दीन बरनी, अमीर ख़ुसरो, एसामी, इब्ने बतूता, यहया, फ़रिश्ता, अब्दुल्लाह]

अनुवादक

सैयद अतहर अब्बास रिजवी

एम० ए०, पी-एच० डी०

प्राक्कथन

प्रोफेसर मुहम्मद हबीब

प्रकाशक

हिस्ट्री डिपार्टमेन्ट अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़

१९५५

Publications of the Department of History, Aligarh Muslim University No. 8.

Souroe Book of Medieval Indian History in Hindi

Vol. III

History of the Khaljis (1290 1320)

by S. Athar Abbas Rizvi, M A., Ph. D.

With a Foreword by

Prof. Muhammad Habib

FIRST EDITION

1955

PRINTED BY BADRI PRASAD SHARMA, AT THE ADARSH PRESS, ALIGARH
FOR THE DEPT OF HISTORY, ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY

डा० ज़ाकिर हुसेन ख़ां

उपकुलपति

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

के

चरणों में

सादर समर्पित

प्राक्कथन[1]

अपनी राष्ट्रीय भाषा की देवनागरी लिपि के पाठकों को अपने प्रतिष्ठित मित्र डाक्टर सैयद अतहर अब्बास रिज़वी, प्रधानाचार्य, राजकीय इण्टर कालिज, बुलन्दशहर, द्वारा किये गये 'खलजी कालीन भारतीय इतिहास' की मूल सामग्री के अनुवाद का परिचय देने में मुझे विशेष गौरव का अनुभव हो रहा है।

डाक्टर अतहर अब्बास रिज़वी विद्यार्थी के रूप में ही बड़े होनहार रहे और उन्होंने अबुल फज़्ल पर खोजपूर्ण निबन्ध (थीसिस) लिखकर आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। मैं उनसे दीर्घ काल से परिचित हूँ। विद्वान् के रूप में उनमें सराहनीय गुण हैं—फ़ारसी तथा हिन्दी दोनों का उत्तम ज्ञान, फ़ारसी की प्राचीन पुस्तकों तथा मध्यकालीन युग में लिखी गई भारतीय इतिहास सम्बन्धी अन्य साधारण से साधारण पुस्तकों का पूर्ण परिचय, अदम्य उद्योग, जो मैंने बहुत कम विद्वानों में देखा है, और उसके साथ ही ऐसी विवेचन शक्ति जो मूल के वास्तविक भाव को जानने में सहायक होती है, उनमें हैं।

भारतीय इतिहास के छः सौ वर्षों के विवरण और लेख फ़ारसी भाषा में हैं और भारतीयों द्वारा भारतीय फ़ारसी में लिखे हुए हैं। उनमें से अधिकांश का तो कम से कम हिन्दी भाषान्तर करना ही है। सर हेनरी इलियट ने, जिसका देहान्त १८५३ ई० में हुआ, फ़ारसी के अनेक पुराने विवरणों का अङ्गरेज़ी में अनुवाद किया। फ़ारसी भाषा से अपरिचित मध्यकालीन भारतीय इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने वालों की जानकारी का प्रमुख साधन, अनेकों दोषों के रहने पर भी "भारतीय इतिहासकारों के शब्दों में भारतीय इतिहास" (History of India as told by its Historians) के वे आठ भाग रहे हैं जिनको पहले सर हेनरी इलियट ने लिपिबद्ध किया और बाद को प्रोफ़ेसर डाउसन ने सम्पादित किया, किन्तु इलियट के अनुवाद में अनेक भूलें हैं और इधर उस प्रकाशन के पश्चात अनेक फ़ारसी ग्रन्थों का भी पता चला है।

डा० अतहर अब्बास रिज़वी सर हेनरी इलियट के ही पथ पर अग्रसर हो रहे हैं किन्तु उनकी अपेक्षा कम अवस्था में ही अधिक साधन सम्पन्न होकर। उनकी योजना हिन्दी के पाठकों के लिये भारतीय इतिहास-सम्बन्धी फ़ारसी के समस्त मूल ग्रन्थों की संगत सामग्री का अनुवाद प्रस्तुत करना है। इनके लिये स्वभावतः ही अनेक ग्रन्थ लिखने होंगे। गुलाम वंश के मुसलमानों से सम्बन्धित ग्रन्थ तैयार है और मुस्लिम विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा बहुत शीघ्र प्रकाशित होगा। प्रस्तुत ग्रन्थ खलजी बादशाहों के अल्प किन्तु अत्यन्त आवश्यक शासनकाल (१२९०-१३२० ई०) से सम्बन्धित है। डा० अतहर अब्बास रिज़वी ने इस पुस्तक में निम्नलिखित समकालीन ग्रन्थों के परम आवश्यक उद्धरणों का समावेश किया है—ज़ियाउद्दीन बरनी की तारीखे फ़ीरोज़ शाही, अमीर खुसरो के पांच ऐतिहासिक ग्रन्थ (मिफ़ताहुल फ़ुतूह, खज़ाइनुल फ़ुतूह, दिवलरानी खिज़्र खानी, नुह सिपेहर और तुगलक नामा), और मुहम्मद बिन तुग़लक़ की मृत्यु से कुछ ही पहले लिखने वाले एसामी की फ़ुतूहुस्सलातीन। इब्ने बतूता की यात्रा के उल्लेख से भी ख़लजी वंश से सम्बन्धित उद्धरण दिये गये हैं। कुछ काल पीछे के लिखे हुए तीन अन्य ग्रंथों का भी इस लिये समावेश कर दिया गया है कि जिन मूल ग्रन्थों के आधार पर वे लिखे गये हैं उन मूल ग्रन्थों के अप्राप्य

---

१. अँगरेजी से अनूदित

हो जाने के कारण वे बड़े ही महत्वपूर्ण हे। वे ग्रन्थ यहया बिन अहमद का तारीखे मुबारक शाही, अबुल क़ासिम हिन्दू शाह फरिश्ता अस्तराबादी का गुलशने इब्राहीमी, जिसकी प्रसिद्धि तारीखे फ़रिश्ता के नाम से है, और जफ़रुलवालेह के नाम से प्रचलित अरबी में लिखा हुआ गुजरात का इतिहास।

इन ग्रन्थों के सम्बन्ध में अधिक कहना इसलिए अनावश्यक है क्योंकि विद्वान् अनुवादक ने उनका आलोचनात्मक विवेचन किया है। हमारे विधान में राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी की उन्नति करने की भावना है किन्तु यह तभी सम्भव है जब हिन्दी के पाठकों के लिए उपलब्ध सामग्री हमारे राष्ट्रीय कार्यों के लिए पर्याप्त हो। मुझे विश्वास है कि भारतीय इतिहास के समस्त प्रेमी और वे सब देश भक्त जिन्हें हमारी राष्ट्र-भाषा की उन्नति से प्रेम है, डाक्टर अतहर अब्बास रिजवी के इस ग्रन्थ का स्वागत करेंगे और उनके उन शेष ग्रन्थों के शीघ्र ही सम्पूर्ण होने की शुभ कामना करेंगे जिन्हें वे तैयार कर रहे हैं।

मुहम्मद हबीब,
प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

दो शब्द

इलियट और डाउसन के ग्रन्थ लगभग ७६ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुए थे। १९३९ ई० में शाहपुरशाह हुर्मुसजी होडीवाला ने "स्टडीज़ इन इंडो-मुस्लिम हिस्ट्री" (Studies in Indo-Muslim History) बम्बई से प्रकाशित की और उसमें इलियट और डाउसन की अशुद्धियो की समीक्षा की। इस ७६ वर्ष के समय मे अन्य फ़ारसी ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए और कुछ ऐतिहासिक ग्रन्थों के अङ्गरेज़ी मे अनुवाद भी हुए। फारसी से अनभिज्ञ इतिहासकार एवं अन्य इतिहास के विद्वान् इन्ही का प्रयोग कर रहे है। इनमे भूलें तो हैं ही, कहीं-कहीं अर्थ भी पूर्णतया परिवर्तित है। फिर भी इनका महत्व कुछ कम नहीं है।

हिन्दी के राष्ट्र भाषा हो जाने के उपरान्त अब फ़ारसी ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद अनिवार्य हो गया है। इस कार्य में अब विलम्ब करना राष्ट्र के लिए हानिकारक होगा। जैसा कि प्रोफ़ेसर मुहम्मद हबीब ने लिखा है, हमारा ६०० वर्ष (१२००-१८०० ई०) का इतिहास फ़ारसी ही में है। इस काल के इतिहास के पठन पाठन के लिए स्नातक तथा स्नातकोत्तर श्रेणियों (Graduate and Postgraduate) मे पाठ्य पुस्तकों के भरोसे काम नहीं चल सकता। इसी लिये इन ६०० वर्षों के इतिहास के अध्ययन और अध्यापन के लिए मूल ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद परम आवश्यक है।

इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए मध्यकालीन भारतीय इतिहास की इस ग्रन्थ माला का श्री गणेश किया गया है। प्रारम्भिक तुर्क वंश (१२०६-१२९० ई०) के इतिहास से सम्बन्धित मूल ग्रन्थों का अनुवाद अलीगढ़ विश्व विद्यालय द्वारा प्रकाशित हो रहा है और इस समय प्रेस मे है। खलजी वंश (१२९०-१३२० ई०) के मूल ग्रन्थों का यह इतिहास प्रस्तुत है। तुग़लक़ वंश (१३२०-१४१३ ई०) का इतिहास भी तैयार है। आशा है कि यह पुस्तक तथा इस ग्रन्थ माला की अन्य पुस्तकें भी शीघ्र ही प्रकाशित होंगी।

अनुवाद करते समय फ़ारसी से अङ्गरेज़ी अनुवाद के सभी अच्छे प्रचलित नियमों को, जिनका पालन प्रसिद्ध इतिहासकार करते रहे हैं, ध्यान में रखा गया है। भावार्थ के साथ शब्दार्थ को विशेष महत्व दिया गया है। बरनी ने अपना इतिहास एक विशेष वातावरण में तथा विशेष उद्देश्य से लिखा। उसने एक एक वस्तु के उल्लेख के लिये चार-चार, छः-छः समानार्थक शब्दों का प्रयोग किया है। उनमें से किसी को छोड़ देने पर अनुवाद में मूल जैसा वातावरण ही न उत्पन्न होता। इस कारण बरनी के प्रत्येक शब्द का अनुवाद किया गया है। मूल ग्रन्थ के पृष्ठों की संख्या अनुच्छेद के प्रारम्भ में ही कोष्ठ में लिख दी गई है। खुसरो के ग्रन्थों तथा एसामी की फ़ुतूहुस्सलातीन का केवल संक्षिप्त अनुवाद किया गया है और पृष्ठ संख्या वाक्य के अन्त में कोष्ठ में दी गई है। खलजी वंश से सम्बन्धित अन्य इतिहासों के केवल परम आवश्यक उद्धरणों का समावेश किया गया है।

अङ्गरेज़ी अनुवादों में पारिभाषिक शब्दों के अनुपयुक्त अनुवाद के कारण मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अनेक अशुद्धियाँ प्रचलित हो गई हैं। उनसे बचने के लिए पारिभाषिक शब्द तथा ऐसे शब्द, जिनके अनुवाद से मध्यकालीन वातावरण के नष्ट होने का भय था,

मूल रूप में ही रहने दिए हैं और उनकी व्याख्या अन्त में करदी गई है। अनेक भ्रमात्मक बातें पाद-टिप्पणियों में अन्य समकालीन तथा बाद के इतिहासों से स्पष्ट की गई हैं। नगरों के नाम के मध्य कालीन फ़ारसी रूप को ही रहने दिया गया है।

इस अवसर पर मैं अलीगढ़ मुस्लिम विश्व-विद्यालय के उप कुलपति डा० जाकिर हुसेन खां के प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करना चाहता हूं। मुझे इस कार्य में अत्यधिक प्रोत्साहन डा० साहब द्वारा ही प्राप्त हुआ है। डा० साहब की महान कृपा तथा राष्ट्र भाषा से प्रेम के कारण यह पुस्तक अलीगढ़ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा प्रकाशित हो रही है। मैं इस के लिये डा० साहब का विशेष कृतज्ञ हूँ। इस माला की तयारी में डा० नुरुल हसन एम० ए०, डी० फ़िल (आक्सन) प्रोफ़ेसर इतिहास विभाग, अलीगढ़ विश्वविद्यालय द्वारा मुझे विशेष प्रेरणा प्राप्त हुई। डा० साहब मेरी कठिनाइयाँ दूर करने को सदैव प्रस्तुत रहे। उनकी स्नेहमयी आलोचनाओं द्वारा ही इस कार्य को वर्तमान रूप प्राप्त हो सका है। मैं उनका विशेष कृतज्ञ हूं। अलीगढ़ विश्वविद्यालय के पुस्तकालाध्यक्ष प्रोफ़ेसर बशीरुद्दीन की कृपा से मुझे पुस्तकों के सम्बन्ध में कभी कोई कठिनाई नहीं हुई इसके लिये मैं उनका आभारी हूँ। प्रोफेसर मुहम्मद हबीब की इस माला में विशेष रुचि रही है। प्रस्तुत पुस्तक का प्राक्कथन उन्हीं की कृपा का फल है। इस सबके लिए मे उनका कृतज्ञ हूं। आदर्श प्रेस के स्वामी श्री बद्रीप्रसाद शर्मा ने जिस परिश्रम और उत्साह से यह पुस्तक छापी है और श्री श्रवण कुमार श्रीवास्तव ने जिस संलग्नता से प्रूफ़ देखा है उसके लिये उपर्युक्त दोनों सज्जन मेरे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। अन्त में मे अपने उन सब मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं जिन्होंने मुझे इस कार्य मे हर प्रकार की सहायता प्रदान की और जिनके नाम मैं स्थानाभाव के कारण नहीं लिख सका।

सैयद अतहर अब्बास रिज़वी

एम० ए०, पी-एच० डी०

५-२-५५. यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

———

अनूदित मूल ग्रन्थों की समीक्षा

जियाउद्दीन बरनी के अनुसार अलाई राज्यकाल का प्रसिद्ध इतिहासकार ताजुद्दीन एराक़ी का पुत्र कबीरुद्दीन था जिसने अलाउद्दीन की प्रशंसा में "फ़तहनामों"[1] की रचना की। उनमें सुल्तान की प्रशंसा भरी हुई थी इसलिये सम्भव है कि अलाउद्दीन के पश्चात उसकी रचना को लोगों ने अधिक महत्व न दिया हो। उसने स्वयं अपनी बाद की रचनाओं में इस प्रकार की प्रशंसा नहीं की। जलाली राज्यकाल के एक कवि मौलाना सिराजुद्दीन सावी तथा उनके "खलजीनामे"[2] की चर्चा भी बरनी ने की है। उसमें मौलाना ने सुल्तान की निन्दा की थी। अब यह दोनों पुस्तकें अप्राप्य हैं। इस प्रकार खलजी कालीन प्रसिद्ध कवि 'अमीर खुसरो'[3] जिसकी ऐतिहासिक कवितायें अब भी वर्त्तमान हैं, अलाई राज्य का शाही इतिहासकार भी कहा जा सकता है। ६९० हि० (१२९१ ई०) में उसने मिफ़ताहुल फ़ुतूह की रचना की। ७११ हि० (१३११-१२ ई०) में उसने खजाइनुल फ़ुतूह तैयार की। ७१५ हि० (१३१६ ई०) में उसने दिवलरानी तथा खिज्र खां की प्रेम कहानी की रचना समाप्त की। ७१८ हि० (१३१८-१९ ई०) में उसने नुह सिपेहर की रचना की। ७२० हि० (१३२० ई०) में उसने तुगलकनामा लिखा।

खजाइनुल फ़ुतूह के अतिरिक्त सभी पुस्तकें पद्य में हैं। खजाइनुल फ़ुतूह मे भी पद्य जैसी अलंकृत शैली है और कवि का वास्तविक अर्थ तथा ऐतिहासिक घटनाओं को जानने में पद्य की अपेक्षा अधिक कठिनाई होती है। यद्यपि अन्य पुस्तकें पद्य में हैं किन्तु प्रत्येक में अमीर खुसरो ने ऐतिहासिक घटनाओं के उल्लेख में बड़ी सतर्कता से काम लिया है और काव्य के आनन्द में ऐतिहासिक सत्य का महत्व कम नहीं होने पाया है। सभी पुस्तकों में ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख बड़ी सावधानी से क्रमानुसार किया है। उसके समकालीन बरनी ने तारीखों के लिखने में बड़ी असावधानी की है किन्तु अमीर खुसरो ने साल महीना, दिन सभी ठीक लिखे हैं। कवित्व के कारण उनमें किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं हुई है। खुसरो की अनुपस्थिति में अनेक प्रसिद्ध तथा महत्वपूर्ण घटनाओं का ज्ञान अधूरा रह जाता और अलाई राज्य की गौरवपूर्ण विजयों के उल्लेख मे कोई तत्व न रहता। बरनी को अपने समय के युद्धों का भी ठीक ज्ञान न था। युद्ध का समुचित विवरण देने में वह बड़ा ही अकुशल था किन्तु अमीर खुसरो ने लड़ाई का विस्तृत उल्लेख करने में बड़ी योग्यता दिखाई है और ऐसा प्रतीत होता है कि वह स्वयं युद्ध-कला में निपुण था। युद्ध-वर्णन में घटनाओं का उल्लेख उसने निष्पक्ष भाव से किया है। जान बूझ कर घटनाओं का असत्य विवरण नहीं दिया। मुगलों के सफल आक्रमणों तथा सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या का उल्लेख उसने नहीं किया। इसके कारण है—बरनी के समान उसने अपना इतिहास खलजी काल के उपरान्त नहीं लिखा अपितु सुल्तान अलाउद्दीन के समक्ष प्रस्तुत करने के लिये उसकी रचना की। ऐसी स्थिति मे मुगलों के उन युद्धों का उल्लेख, जिनमे सुल्तान अलाउद्दीन को बड़ी हानि उठानी पड़ी, वह किसी प्रकार कर ही न सकता था। जलालुद्दीन की हत्या का उल्लेख भी वह कैसे करता ?

---

१. तारीखे फ़ीरोज़ शाही पृ० ३६१

२. ,, ,, पृ० १६४

३ जन्म पटियाली ६५१ हि० (१२५३ ई०), मृत्यु ७२५ हि० (१३२५ ई०) जलाली राज्यकाल में वह मुसहफ़दार नियुक्त हुआ और उसका वेतन १२०० तनके निर्धारित हुआ। खुसरो सुल्तान अलाउद्दीन के साथ ७०२ या ७०३ हि० में चित्तौड़ भी गया। उसका वेतन अलाउद्दीन के समय में १००० तनका था। उसकी जीवनी का विस्तृत उल्लेख 'गुलाम वंश के इतिहास' में हो चुका है।

मिफ़ताहुल फ़ुतूह में सुल्तान जलालुद्दीन की एक वर्ष की विजय और विशेष कर मलिक छज्जू पर कड़े की विजय का सविस्तार उल्लेख है। विद्रोह का समाचार मिलना, सुल्तान का क्रोध, सामन्तों तथा अमीरों की नियुक्ति, सेना प्रस्थान, युद्ध, विजय तथा लौटना, इस प्रकार विस्तार से लिखे गये हैं कि पाठक अपने आपको उसी युग में वर्तमान समझने लगता है। मिफ़ताहुल फ़ुतूह में ही उसने सत्य का महत्त्व पूर्णतया प्रतिष्ठित कर दिया है।[1] अपनी अन्य रचनाओं में उसने इसी मार्ग का अनुसरण किया है।

ख़ज़ाइनुल फ़ुतूह में भूमिका के अतिरिक्त निम्नलिखित अध्याय हैं—

१. सुल्तान अलाउद्दीन का राज्यारोहण, सुधार तथा सार्वजनिक कार्य।
२. मुग़लों से युद्ध।
३. गुजरात, राजपूताना, मालवा तथा देवगीर पर विजय।
४. आरंगल की विजय।
५. माबर की विजय।

अमीर खुसरो ने सुल्तान अलाउद्दीन के सुधारों की चर्चा इस ढंग से की है कि बरनी के सविस्तार उल्लेख को कई स्थानों पर प्रमाणिकता प्राप्त हो जाती है। एवाहतयों को दण्ड तथा उनका सविस्तार उल्लेख ख़ज़ाइनुल फ़ुतूह ही में मिलता है। सार्वजनिक कार्यों में जामे मस्जिद, मीनार, हौज़ तथा क़िलों के निर्माण का वर्णन उत्प्रेक्षा, उपमा और रूपकों से भरा है। समकालीन इतिहासों में यह वर्णन इतने विस्तार के साथ कहीं नहीं मिलता। बरनी ने भी सार्वजनिक कार्यों का उल्लेख बड़ा ही सक्षिप्त किया है।

मुग़लों के आक्रमण में खुसरो ने कुतलुग़ ख्वाजा, सल्दी तथा तरग़ी के आक्रमणों का उल्लेख भी नहीं किया। इसका कारण यही है कि इन लड़ाइयों में सुल्तान को बड़े संकटों का सामना करना पड़ा। बरनी ने इन आक्रमणों का बड़ा ही विस्तृत चित्रण किया है। बरनी के वर्णन से ज्ञात पड़ता है कि उपर्युक्त आक्रमणों में सुल्तान की भारी क्षति हुई और उसकी दशा शोचनीय हो गई।

खुसरो में युद्ध-वर्णन सम्बन्धी चमत्कार अनुपम रूप में है। इसका ज्ञान हमें गुजरात, राजपूताना तथा मालवा के वर्णनों से होता है। क़िलों पर पहुँचने की तारीख़ों, आक्रमण के ढंगों, क़िले वालों के प्रतिरक्षण, शाही सेना के उत्साह और दुर्गवासियों के जौहर का बड़ा ही विशद और मार्मिक विवरण है।

दक्षिण के अभियानों के वर्णन में तो वह पूर्ण पटु है। बदायूनी[2] का यह कथन सत्य ज्ञात होता है कि अमीर खुसरो स्वयं दक्षिण-विजय में साथ था। यात्रा का विशद् वर्णन, साधारण स्थानों तक के नाम, आक्रमण और विजय का विस्तृत उल्लेख, लूट के माल की परिगणन और विभिन्न शिविरों (पड़ावों) और विजयों की तारीख़ों का विवरण ख़ज़ाइनुल फ़ुतूह के इस अध्याय को अमूल्य बनाने में सहायक हुए हैं। बरनी को न तो दक्षिण के सम्बन्ध में कोई ज्ञान था और न वह स्वयं दक्षिण गया था। ऐसी स्थिति में ख़ज़ाइनुल फ़ुतूह के बिना अलाउद्दीन की इस दक्षिण विजय का वृत्त अपूर्ण ही रह जाता।

ख़ज़ाइनुल फ़ुतूह की रचना अमीर खुसरो ने गद्य में अपनी योग्यता प्रदर्शित करने के लिये की। अरबी शब्दों तथा उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षाओं की प्रचुरता से इसकी शैली बड़ी जटिल हो गई है। कहीं कहीं तो अभिप्रेत अर्थ को जानना ही असम्भव है। इस ग्रन्थ को सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत करना था इस कारण अमीर खुसरो को अपने हार्दिक भावों को प्रकट करने की स्वतंत्रता न थी। मलिक काफ़ूर से अप्रसन्न होकर भी

---

१. मिफ़ताहुल फ़ुतूह ३९
२. मुनतख़बुत्तवारीख़, पहला भाग पृ० १९७

वह ख़ज़ाइनुल फ़ुतूह में उसकी प्रशंसा करने को विवश हुआ है। उसके आन्तरिक भाव दिवलरानी ख़िज़्र ख़ाँ में खुलकर प्रकट हुए हैं।

दिवलरानी ख़िज़्र ख़ाँ में सुल्तान के ज्येष्ठ पुत्र ख़िज़्र ख़ाँ तथा गुजरात के राजा कर्ण की पुत्री देवलदेवी के प्रेम तथा विवाह की कथा का उल्लेख है किन्तु इसके साथ साथ अलाउद्दीन की विजयों का भी संक्षिप्त उल्लेख कर दिया गया है। गुजरात की विजय का विवरण इस काव्य में अधिक विस्तार के साथ दिया गया है। ख़िज़्र ख़ाँ के साथ अलप ख़ाँ की पुत्री के विवाह के वर्णन में अमीर ख़ुसरो ने उस समय की वैवाहिक विधि प्रथाओं का बड़े विस्तार के साथ उल्लेख किया है। नगर की स्वच्छता, सजावट, नगरवासियों के उत्साह, बाजों, खेल-तमाशों, नाच-गानों, बरात के जलूस, निकाह, विदा, विदा की अन्य रस्मों, जलवे की रस्म तथा दूसरी रस्मों का बड़ा ही सजीव और विशद वर्णन है। उस समय के उच्च वर्ग की सामाजिक दशा का परिचय प्राप्त करने में अमीर ख़ुसरो का यह काव्य विशेष सहायक है। ख़िज़्र ख़ाँ के पतन उसके अन्धे बनाये जाने और अन्त में उसकी हत्या का उल्लेख बड़ी ही करुण शैली में है। इस प्रसंग में अनेक ऐसी बातें हैं जो अन्य समकालीन इतिहासों में नहीं मिलती।

नुह सिपेहर (९ आकाश) के पहले दो सिपेहरों[1] में क़ुतुबुद्दीन मुबारकशाह की कुछ लड़ाइयों और भवन निर्माण का हाल लिखकर अमीर ख़ुसरो ने तीसरे सिपेहर में भारत के वैभव और गौरव की प्रशंसा की है। अपनी जन्मभूमि के गुणगान में उसका उत्साह बहुत बढ़ जाता है। वह यहाँ के जलवायु, पशु-पक्षी तथा प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन मे विशेष आनन्द और गौरव का अनुभव करता है। दर्शन और अध्यात्म विद्या के ज्ञान में वह भारतवासियों के बराबर किसी को नही समझता। भारत और इसके निवासियों की भाषाओं के ज्ञान को वह सबसे बढ़कर मानता है। इसी अध्याय में जादू टोने आदि का भी उल्लेख है जिसके अनेक प्रदर्शनों की उसने भूरि भूरि प्रशंसा की है। अन्य अध्यायों में समकालीन राजनीति पर दृष्टिपात किया है और अलंकारिक रूप में सुल्तानों और अन्य अधिकारियों के कर्तव्य बताये हैं।

तुग़लक़ नामा अमीर ख़ुसरो की अन्तिम मसनवी है। इसमें उसने ख़ुसरो ख़ाँ पर ग़यासुद्दीन तुग़लक़ की विजय का वृत्तांत लिखा है। दोनों ओर की तैयारियों और युद्ध का विस्तृत वर्णन हमें तुग़लक़ नामे में मिलता है। ग़ाज़ी मलिक (ग़यासुद्दीन तुग़लक़) के अन्य अमीरों को पत्र लिखने और उनको अपनी ओर मिलाने का हाल इस रूप में हमें किसी दूसरे समकालीन इतिहास में नहीं मिलता। तारीखे फ़ीरोजशाही से पता चलता है कि ग़ाज़ी मलिक के लिये ख़ुसरो ख़ाँ का युद्ध बच्चों का खेल था किन्तु तुग़लक़ नामे से ज्ञात होता है कि ख़ुसरो की पराजय संयोगवश ही हुई अन्यथा ग़ाज़ी मलिक पूर्णतया पराजित हो गया था। ख़ुसरो के वर्णन की पुष्टि एसामी की फ़ुतूहुस्सलातीन से भी होती है। तारीखे मुबारकशाही में यह हाल अमीर ख़ुसरो से ही लिया गया है।

एसामी[2] ने फ़ुतूहुस्सलातीन की रचना रबीउल अव्वल ७५१ हि० (मई १३५० ई०) में अपनी अवस्था के चालीसवें वर्ष में की। यह इतिहास पद्य में है और फ़िरदौसी के शाहनामे

---

१. प्रत्येक सिपेहर को पुस्तक का एक अध्याय समझना चाहिये।

२. एसामी के विषय में "ग़ुलाम वंश के इतिहास" में विस्तार के साथ लिखा जा चुका है। उसका जन्म ७११ हि० (१३११ ई०) में हुआ। (१३२७ ई०) में १६ वर्ष की अवस्था में, राजधानी के देहली से दौलताबाद बदलने के कारण, वह भी अपने दादा के साथ देहली से दौलताबाद पहुँचा। ७२६ हि० से ७५१ हि० तक वह कदाचित् दौलताबाद में ही रहा। ७५१ हि० के उपरान्त उसके सम्बन्ध में कहीं से कुछ पता नहीं लगता।

की नक़ल है। इसमें महमूद ग़ज़नवी के आक्रमणों से लेकर ७५१ हि० तक का इतिहास है। खलजी काल में वह बाल्यावस्था में था। उसके दादा को बलबन के राज्य-काल में सिपह-सालारी का पद प्राप्त था। खलजी वंश में भी उसे कोई न कोई पद अवश्य मिला होगा। एसामी का पालन-पोषण उसके दादा ही ने किया था। इस प्रकार एसामी को ख़लजी वंश का इतिहास अपने दादा और उसके मित्रों से ज्ञात हुआ होगा। उसने अपनी जानकारी के साधनों का उल्लेख नहीं किया। अनेक घटनाओं का उल्लेख करते हुए उसने लिखा है कि 'मैंने इसे इस प्रकार सुना।' इस से जान पड़ता है कि उसे समस्त घटनायें अपने समकालीनों द्वारा ज्ञात हुई थी। उसने अनेक ऐसे ग्रन्थ भी पढ़े होंगे जो इस समय नहीं मिलते। उसने अमीर ख़ुसरो की कविताओं का भी अध्ययन किया था। दिवलरानी तथा खिज्र ख़ाँ की प्रेम-कथा अमीर ख़ुसरो ही से ली गई है। तुग़लक़नामे का अध्ययन भी सम्भवतः उसने किया था। घटनाओं को लोगों से सुनकर पूर्ण उत्तरदायित्व से लिखने में वह सर्वथा पटु था। फ़ुतूहुस्सलातीन उसने फ़िरदौसी के शाहनामे के ढंग पर लिखी है, इसी लिये इसमें अधिकतर युद्धों और आक्रमणों का ही वर्णन है। शासन सम्बन्धी और सामाजिक इतिहास उसके क्षेत्र के बाहर थे इसी लिये अलाउद्दीन के आर्थिक और सामाजिक सुधारों और अन्य सुधार कार्यों का उल्लेख इस इतिहास में बड़े साधारण ढँग से नाम मात्र को किया गया है। बाजारों के भाव के सम्बन्ध में जिस कहानी का उल्लेख है तथा अन्य कहानियाँ बड़ी ही आश्चर्यजनक हैं।

जलालुद्दीन ख़लजी के हाल में उसने अनेक नई बातें लिखी हैं। देहली के अकाल के समय क़ाज़ी आलिम दीवाना की प्रार्थना का वृत्तान्त किसी दूसरे स्थान पर नहीं मिलता। अलाउद्दीन के कड़ा से प्रस्थान तथा देवगीर में युद्ध का हाल भी बड़ा ही खोजपूर्ण है।

अलाउद्दीन के इतिहास में मुग़लों से सम्बन्धित अनेक ऐसी बातें भी इसमें हैं जिनके ज्ञान का कोई और सूत्र ही नहीं है। रणथम्बोर के युद्ध के प्रसंग में उलुग़ ख़ाँ और राय के पत्र व्यवहार तथा अलाउद्दीन की विजय के सम्बन्ध में भी अनेक नई बातों की जानकारी एसामी द्वारा ही हुई है। यही बात उलुग़ ख़ाँ को विष दिये जाने के सम्बन्ध में है। अलाउद्दीन की दक्षिण विजय का वर्णन एसामी का बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य है। पुस्तक की रचना के समय वह दक्षिण ही में था, अतः दक्षिण के विषय में वह अपने समकालीन बरनी की अपेक्षा अधिक जानता था। ग़ाज़ी मलिक की विजय के वर्णन में वह बरनी की अपेक्षा अधिक निष्पक्ष रहा है।

व्यक्तिगत दोषों के रहने पर भी ज़ियाउद्दीन बरनी[1] ही हमारा मुख्य समकालीन इतिहासकार है। उसके दोषों और त्रुटियों का उल्लेख किया जा सकता है किन्तु उसके इतिहास की उपेक्षा नही की जासकती क्योंकि उसके अभाव में हमारे मध्यकालीन इतिहास और संस्कृति के ज्ञान में इतनी अधिक कमी हो जायगी जिसकी पूर्ति असम्भव है। उसने तारीखे फ़ीरोजशाही ७४ वर्ष की अवस्था में ७५८ हि० (१३५७ ई०) में समाप्त की। ख़लजीवंश के इतिहास के सम्बन्ध में उसने लिखा है कि वह उसकी अपनी जानकारी पर आधारित है। उसका पिता मुईदुल मुल्क सुल्तान जलालुद्दीन फ़ीरोजशाह ख़लजी के राज्यकाल में अरकली ख़ाँ का नायब

१. उसका जन्म ६८४ हि० (१२८५ ई०) में हुआ। उसकी जीवनी तथा उसकी रचनाओं की विस्तृत समीक्षा 'ग़ुलामवंश के इतिहास' में दी जा चुकी है। अपने पूर्वजों के, अपने और अपने इतिहास के विषय मे उसने तारीखे फ़ीरोजशाही में भिन्न-भिन्न स्थानों पर लिखा है—

पृष्ठ ६९, ८७, ११४, ११९, १२५, १२७, २०४, २०५, २०९, २२२; २३४, २४०, २४८, २४९, २५०, २५५, २५८, ३१२, ३१३, ४६६, ४९७, ५०४, ५४८, ५७३।

अनुवाद कलकत्ता एडीशन से किया गया है।

था। अलाउद्दीन के राज्य काल के प्रथम वर्ष में उसे बरन की नियाबत तथा ख्वाजगी प्रदान हुई। उसका चचा अलाउल मुल्क सुल्तान अलाउद्दीन का बड़ा विश्वास-पात्र था। सुल्तान अलाउद्दीन ने उसे देहली का कोतवाल बना दिया था। उस समय के बहुत बड़े-बड़े विद्वानों ने उसे शिक्षा प्रदान की थी। अमीर खुसरो और अमीर हसन उसके बड़े मित्र थे। शेख निज़ामुद्दीन औलिया का वह चेला था। इस प्रकार खलजी कालीन इतिहास के ज्ञान के लिये आवश्यक समस्त सूत्रों तक उसकी पहुँच थी। अमीर खुसरो के छन्दों को उसने अपने इतिहास में उद्धृत किया है किन्तु घटनाओं के उल्लेख में उसने अमीर खुसरो के ग्रन्थों का अधिक उपयोग नहीं किया अन्यथा उससे इतनी भूलें न होतीं।

वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था और उसका दृष्टिकोण बड़ा ही संकीर्ण था। सूफ़ीमत अथवा अमीर खुसरो के विचारों का उस पर कोई प्रभाव न था। जिस समय उसने अपना इतिहास संकलन आरम्भ किया उस समय वह बड़ी दयनीय दशा को प्राप्त हो चुका था। अपने पिता और चचा के वैभव का स्मरण करके उसका दुःख और भी बढ़ जाता था। मुहम्मद तुग़लक़ के राज्यकाल में उसकी बड़ी प्रतिष्ठा थी किन्तु फ़ीरोज़ के राज्य काल में उसकी कुछ भी पूछ न थी। इस असहाय अवस्था ने उसके विचारों को विचित्र रूप दे दिया था। उसके शत्रु उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचते रहते थे और सुल्तान फ़ीरोज़ जैसे धार्मिक सुल्तान के दरबार में भी उसकी दाल न गलने देते थे। तुच्छ और अयोग्य व्यक्तियों को अपनी चापलूसी से यश प्राप्त करते देखकर उसे दुःख होता था। इन कारणों से उसका यह दृढ़ विश्वास हो गया था कि राज्य का आधार कट्टर सुन्नी धर्म के नियम बनाये जायँ। उसने आशा की होगी कि इस प्रकार सांसारिक व्यक्तियों का वैभव समाप्त हो जायगा और समस्त अधिकार उलमाये आख़िरत (वे आलिम जो भगवान् के ध्यान के अतिरिक्त किसी बात की चिन्ता नहीं रखते) के हाथ में आजायँगे और सच्चे मुसलमानों को कोई कष्ट न हो सकेगा। उसने राजनीति का यह दृष्टिकोण तारीख़े फ़ीरोज़शाही में भी स्पष्ट किया है और अपनी एक अन्य पुस्तक सहीफ़ये नाते मुहम्मदी में भी। फ़तावाये जहाँदारी नामक एक अन्य पुस्तक उसने इसी दृष्टिकोण से लिखी[1]। उसमें मुसलमान बादशाहों से सम्बन्धित काल्पनिक कहानियाँ लिखकर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया। तारीख़े फ़ीरोज़शाही और फ़तावाये जहाँदारी के अध्ययन से पता चलता है कि दोनों उसने एक ही उद्देश्य से लिखी हैं। तारीख़े फ़ीरोज़शाही में अपने समकालीन इतिहास से जिस सिद्धान्त और शिक्षा का प्रचार किया है उन्हीं को फ़तावाये जहाँदारी में प्राचीन मुसलमान बादशाहों की काल्पनिक कहानियों द्वारा सिद्ध किया है। सुल्तान बलबन की सुल्तान मुहम्मद को नसीहत, सुल्तान जलालुद्दीन की अहमद चप तथा क़ाज़ी मुग़ीस बयाना की सुल्तान अलाउद्दीन से होने वाली जिन वार्ताओं का तारीख़े फ़ीरोज़शाही में सविस्तार उल्लेख है, उनके सम्बन्ध में यह कहना बड़ा कठिन है कि वे कहाँ तक सत्य हैं किन्तु उनसे बरनी और उसकी विचारधारा के समर्थकों के दृष्टिकोण का पूरा पता चलता है कि वे किस प्रकार का राज्य चाहते थे और पहले सुल्तान किस प्रकार का राज्य स्थापित करने में समर्थ थे।

ज़ियाउद्दीन बरनी युद्धों और अवरोधों (घेरों) के वर्णन में अकुशल था। तारीख़ों के सम्बन्ध में वह अत्यधिक अप्रामाणिक है। सुल्तानों के राज्यारोहण की तिथियाँ भी ठीक नहीं। उसने खलजी कालीन राजनीति, उच्च वर्ग की सामाजिक दशा, शासन संस्थाओं, सामाजिक सुधारों तथा आर्थिक दशा का बड़ा विशद चित्र खींचा है। उसकी विवेचनात्मक शक्ति का प्रशंसनीय रूप प्रत्येक स्थान पर दृष्टिगोचर होता है। उसने अपने समय की समस्त संस्थाओं का उल्लेख किया है और प्रत्येक पर अपने दृष्टिकोण से समीक्षा की है। राज्य में

---

१. दोनों पुस्तकों के विषय में विस्तार से ग़ुलाम वंश के इतिहास में लिखा जा चुका है।

बसने वाले भिन्न-भिन्न वर्गों की एक दूसरे के प्रति प्रतिक्रिया और सुल्तानों का उनसे सम्बन्ध हमें तारीखे फ़ीरोज़शाही से ही ज्ञात होता है। बरनी इतिहास का समाज के साधारण वर्ग से कोई सम्बन्ध नहीं समझता था अतः उसने उच्च वर्ग अथवा कुलीन व्यक्तियों का ही वृत्तान्त लिखने का प्रयास किया है। फिर भी इस वर्ग के व्यक्तियों की साधारण व्यक्तियों के प्रति जो भावना थी उसके वर्णन से साधारण व्यक्तियों की दशा का ज्ञान भी अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त हो जाता है। खलजी कालीन भोग-विलास, विद्वानों, सूफ़ियों की गोष्ठियों, चिकित्सकों और शल्यकों, इतिहासकारों और कवियों, सुल्तानों के नदीमों, एवं ज्योतिषियों का हाल हमें तारीखे फ़ीरोज़शाही से ही मालूम होता है। बरनी के मतानुसार इतिहासकार को सुल्तानों के गुण और दोष दोनों का ही उल्लेख करना चाहिए। खलजी वंश का इतिहास लिखते समय उसने इस सिद्धान्त का पूर्ण रूप से अनुसरण किया है और अलाउद्दीन के कुकृत्यों को छिपाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। अलाउद्दीन के घृणित कार्यों के उल्लेख के साथ जलालुद्दीन की धन-लोलुपता की भी निन्दा की है। खलजी वंश के पतन तथा विनाश के समस्त कारण स्पष्ट करके लिखे हैं और यथा सम्भव उदाहरण भी दिये हैं। अलाउद्दीन के उन साथियों की जिन्होंने जलालुद्दीन की हत्या में उसका साथ दिया था, उसने बड़ी कटु आलोचना की है। उसका चाचा अलाउल मुल्क भी उल्लिखित हत्या में अलाउद्दीन का सहायक था। इसके लिये बरनी ने उसकी भी घोर निंदा की है। मलिक नायब और खुसरो ख़ाँ से वह, उनके बुरे आचरण के कारण, रुष्ट था। उनके लिये उसने ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो किसी सभ्य समाज में नहीं कहे जा सकते। वस्तुओं के भाव नियंत्रण पर अलाउद्दीन को जो सफलता मिली उससे वह बड़ा प्रसन्न था। उसके प्रत्येक शब्द से उसकी प्रसन्नता का भाव प्रकट होता है। उसकी दृष्टि में अलाउद्दीन की यह सफलता उस युग का महान् कार्य था। उसने नियंत्रण की सम्पूर्ण योजना एवं सफलता के कारणों का अत्यन्त विशद और स्पष्ट उल्लेख किया है। फ़तावाये जहाँदारी में भी उसने बाज़ारों के नियंत्रण पर बड़ा बल दिया है।

बरनी अपने भाव प्रकट करने में सिद्ध-हस्त था। उसने प्रचलित शब्दों तथा साधारण वाक्य रचना द्वारा ही अपने भाव पूर्णतया स्पष्ट कर दिये हैं। कहीं कहीं उसके साधारण कटाक्ष या व्यंग द्वारा जो भाव-व्यंजना होती है वह विस्तृत वर्णन से भी नही होती।

अपनी दीन अवस्था के कारण उसे पूरे समाज से घृणा हो गई थी और वह एकाकी जीवन व्यतीत करने लगा था; किन्तु समाज ने उसके विचारों और लेखों पर अमिट छाप लगा दी थी। तुर्कों के लगभग १२५ वर्ष के राज्य में भारतीय संस्थाओं के प्रति मुसलमानों के एक वर्ग की जो भावना थी उसका अमीर खुसरो ने नुह सिपेहर में अत्यन्त स्पष्ट उल्लेख किया है। उसके लगभग २५, ३० वर्ष पश्चात् हिन्दुओं और मुसलमानों के पारस्परिक सम्बन्ध का जो परिणाम हुआ वह बरनी जैसे कट्टर सुन्नी मुसलमान के इतिहास से भी स्पष्ट है। उसका सम्पूर्ण इतिहास ऐसी भाषा में है जिसे भारतीय फ़ारसी कहना उचित होगा। ईरानी के लिये वह विदेशी भाषा के तुल्य है। हिन्दी शब्दों के प्रयोग के अतिरिक्त उसकी अभिव्यंजन शैली भी भारतीय है और नव निर्मित मध्यकालीन भारतीय संस्कृति एवं समाज की परिचायक है।

चौदहवीं शताब्दी (ईसवी) का तानजीर का प्रसिद्ध यात्री अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने बतूता[1] ७३४ हि० (१३३३ ई०) में सिन्ध पहुंचा। भारतवर्ष से लौटने के पश्चात् उसकी यात्रा का वर्णन इब्ने जुज़ये द्वारा लिखा गया और एक हस्त लिखित पुस्तक के अनुसार इसका नाम

---

१. इब्ने बतूता के सम्बन्ध में 'तुग़लक वंश के इतिहास' में विस्तार पूर्वक लिखा गया है।

तुहफ़तुन्नुज़्ज़ार फ़ी ग़राइबिल अमसार व अजाइबुल असफ़ार रखा गया।[1] वह ख़लजी वंश के समाप्त हो जाने के १३ वर्ष पश्चात भारत में आया किन्तु उस समय तक ख़लजी काल की स्मृति ताज़ा थी। अनेक ऐसे व्यक्ति भी वर्तमान थे जिन्हें ख़लजी काल के सम्बन्ध में बहुत अच्छा ज्ञान था। इब्ने बतूता भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग से मिला। उसने जो कुछ लिखा भारतवर्ष के बाहर लिखा अतः उसे यहाँ के सुल्तानों का कोई भय न था। यद्यपि पुस्तक की रचना के समय उसके सूक्ष्मोल्लेख आदि नष्ट हो चुके थे और फ़ारसी न जानने के कारण वह यहाँ की बहुत सी बातें समझ भी न सका था फिर भी उस समय के समाज संस्कृति तथा इतिहास के संबन्ध में उसने जो कुछ लिखा है वह बड़े काम का है।

बाद के इतिहासकारों में यहया बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह सर हिन्दी की तारीख़े मुबारक शाही को बड़ा महत्व प्राप्त है। यहया ने ८३८ हि० (१४३४ ई०) तक का हाल लिखा है। उसने अपनी पुस्तक सैयद सुल्तान मुईज़्ज़ुद्दीन अबुलफ़तह मुबारक शाह बिन फ़रीदशाह को समर्पित की है। तुग़लक़ वंश के अन्त से लेकर सैयद वंश तक के इतिहास के लिये यह पुस्तक अमूल्य और ग़ुलाम तथा ख़लजी वंश के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अनेक ऐसे ग्रन्थ जिन पर यह इतिहास आधारित है, अप्राप्य हो गये हैं। इसके अतिरिक्त यहया की विवेचन शक्ति बड़ी विलक्षण थी। ख़लजी वंश के इतिहास में उसने अपनी इस अद्भुत विवेचन शक्ति का प्रदर्शन किया है।

मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी जो फ़रिश्ता के नाम से प्रसिद्ध है सोलहवीं शताब्दी ईसवी का बड़ा ही विख्यात इतिहासकार है। उसने अपने 'गुलशने इब्राहीमी' (जो तारीख़े फ़रिश्ता के नाम से भी प्रसिद्ध है) की रचना १०१५ हि० (१६०६–७ ई०) में समाप्त की। उसने भी अनेक ऐसे ग्रन्थों का उपयोग किया है जो काल-कोप से अब अप्राप्य हो गये हैं। उसने उन इतिहासों के नाम भी लिखे हैं। यद्यपि उसके इतिहास में विवेचनात्मक निर्णय की कमी है और उसने उपलब्ध सामग्री का सावधानी से प्रयोग किये बिना जनश्रुतियों को भी स्वीकार कर लिया है तो भी तारीख़े फ़रिश्ता बड़ा ही अमूल्य संग्रह है।

सोलहवीं शताब्दी ईसवी का एक अन्य इतिहासकार, जिसे गुजरात के विषय में विशेष ज्ञान था, अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर, अल आसफ़ी उलुग़ ख़ानी था। उसने १६०५ ई० में ज़फ़रुल वालेह की रचना अरबी में की। यह 'गुजरात का अरबी इतिहास' के नाम से प्रसिद्ध है। ज़फ़रुल वालेह भी गुजरात के अनेक ऐसे इतिहासों पर आधारित है जिनका ज्ञान उत्तरी भारत के इतिहासकारों को बहुत कम था।

इस कारण गुजरात के इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने में इस पुस्तक के बिना काम नहीं चल सकता।

---

१. सम्भव है कि संकलन कर्ता द्वारा पुस्तक का कोई नाम नहीं रखा गया। महदी हुसेन ने इसका नाम रेहला रखा। Rehla, (Baroda 1953) अनुवाद में केवल अजाइबुल असफ़ार रखा गया है।

विषय सूची

भाग 'अ'

भाग 'ब'

भाग 'स'

भाग अ

मुख्य समकालीन इतिहासकार

ज़ियाउद्दीन बरनी

तारीखे फ़ीरोज़ शाही

अस्सुलतानुल हलीम जलालुद्दुनिया वद्दीन फ़ीरोज़ शाह ख़लजी

(मलिक तथा अमीर)

(१७४) क़ाजी सद्रे जहां ज़ियाउद्दीन सावी। खाने खानां सुल्तान का पुत्र तथा सबसे बड़ा शाहजादा। अरकली खां सुल्तान का मंझला पुत्र व शाहजादा। क़दरख़ाँ सुल्तान का पुत्र तथा सबसे छोटा शाहजादा। युगरूशख़ाँ सुल्तान का भाई। शाइस्तखां ख़ाने ख़ानां का पुत्र। ख्वाज-ए-जहाँ ख्वाजा खतीर। मलिक क़ुतुबुद्दीन सैयद मलिक। मलिक इख़्तियारुद्दीन ख़ुर्रम वकीलदर। मलिक अहमद चप नायब बारबक। मलिक फ़खरुद्दीन कूची दादबक। मलिक अलाउद्दीन गुर्शास्प भतीजा व दामाद। मलिक मुइज़्जुद्दीन अल्मासबेग आखुरबक। मलिक ताजुद्दीन कुहरामी। मलिक कमालुद्दीन अबुलमआली। मलिक नुसरत जिनाह सरदावतदार। मलिक नसीरुद्दीन कुहरामी खास हाजिब। मलिक ऐनुद्दीन अलीशाह कोहजूदी। मलिक इमादुद्दीन मिसकाल। मलिक सादुद्दीन अमीर शहर। मलिक अमीरअली दीवाना। मलिक अमीरकलां। मलिक मुहम्मद, अमीरकलाँ का भाई। मलिक सालार खलजी। मलिक उस्मान अमीर आखुरबक। मलिक उमर सुरखा। मलिक इबाही अमीर आखुर। मलिक हिरनमार अमीर शिकार। मलिक मौज सरजानदार। मलिक तरगी सरजानदार। मलिक ताजू सरसिला-हदार। मलिक उलुगची कोल का मुक्ता। मलिक नसीरुद्दीन राना शहन-ए-पील। मलिक मुईनुद्दीन अल्वी। मलिक ताजुद्दीन अल्वी अगरोहा का मुक्ता। मलिक जलालुद्दीन अल्वी। मलिक निजामुद्दीन खरीतादार। मलिक क़ीरान अमीर मजलिस। मलिक मुईदुद्दीन जाजरमी। मलिक सादुद्दीन मनतकी। मलिक ताजुद्दीन जरऊ शहरी।

———— —

सुल्तान जलालुद्दीन का सिंहासनारोहण तथा किलोखड़ी में निवास करना

(१७५) सभी मुसलमानों का हितैषी ज़िया बरनी इस प्रकार निवेदन करता है, कि इस तुच्छ ने जलाली तथा अलाई काल का आरम्भ से अन्त तक जो कुछ उल्लेख इस इतिहास मे किया है, वह उसके अपने निरीक्षण एवं ज्ञान पर अवलम्बित है। ६८८[1] हि० में सुल्तान जलालुद्दीन फ़ीरोज खलजी किलोखड़ी राजभवन में राज-सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। कुछ समय तक सुल्तान जलालुद्दीन शहर (देहली) में न गया, कारण कि जन साधारण अस्सी वर्ष तक तुर्क मलिकों के अधीन रह चुके थे और खलजियों की बादशाही में उन्हें विशेष आपत्ति दृष्टिगोचर होती थी। उस समय शहर के निवासियों मे गण्यमान्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति, सद्र, आलिम और प्रत्येक गरोह के नेता भरे पड़े थे। ये लोग शहर (देहली) मे आते और सुल्तान जलालुद्दीन की बैअत (अधीनता स्वीकार) करते। उन्हें खिलअत प्रदान की जाती थी।

जलालुद्दीन के सिहासनारोहण के प्रथम वर्ष में शहर के निवासियों में से साधारण, कुलीन, सैनिक, बाजारी अपने-अपने गरोहों और समूहों के साथ किलोखड़ी जाकर सुल्तान जलालुद्दीन के दरबारे आम के दर्शन करते थे। वे आश्चर्य मे पड़कर स्तब्ध हो जाते और उन्हें विस्मय होता कि खलजी किस प्रकार तुर्कों के स्थान पर राज सिंहासन पर विराजमान हो गये और बादशाही तुर्कों के वंश से निकलकर दूसरे वंश मे चली गई।

(१७६) इस कारण सुल्तान जलालुद्दीन ने यह आवश्यकता समझी कि वह शहर (देहली) न जाय और किलोखड़ी में अपनी राजधानी बनाकर वही निवास आरम्भ करदे। इस उद्देश्य से उसने आज्ञा दी कि किलोखड़ी का राजभवन जिसे सुल्तान मुइज्ज़ुद्दीन (कैकुबाद) ने बनवाना प्रारम्भ किया था, अब पूरा किया जाय। उसे बेलबूटों से सजाया जाय। महल के सामने यमुनातट पर अति सुन्दर उपवन लगाया जाय। सुल्तान जलालुद्दीन ने अपने मलिकों, अमीरों सहायकों, सम्बन्धियों, सद्रों तथा शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आदेश दिया कि वे किलोखड़ी में निवास करना आरम्भ करदें और अपने लिये वही घर बना लें। कुछ बाज़ारियों को भी शहर से लाया जाय और किलोखडी में बाजार लगा दिया जाय। किलोखड़ी का नाम शहरे नव (नवीन नगर)[2] रक्खा गया। एक बहुत ही ऊँचा पत्थर का हिसार (चहार दीवारी) बनवाया गया। मलिकों और अमीरों को उसके भिन्न-भिन्न भागों की रक्षा के लिये नियुक्त किया गया। हिसार पर ऊँचे ऊँचे बुर्ज बनवाये गये। अमीर खुसरो ने किलोखड़ी के हिसार की प्रशंसा में कहा है :—

---

१. मिफ़ताहुलफ़ुतूह (लेखक अमीर खुसरो) में ३ जमादीउस्सानी ६८९ हि० (१३ जून १२९० ई०) है; शम्सुद्दीन कैकाऊस के ६८९ हि० के सिक्के अभी तक वर्त्तमान हैं। इस प्रकार अमीर खुसरो की लिखी हुई तारीख की पुष्टि सिक्कों द्वारा भी होती है। अन्य इतिहासकारों ने जो तारीखें लिखी हैं उनमें थोडा बहुत प्रत्येक में अन्तर है किन्तु अमीर खुसरो ही की तारीख़ मान्य है।

२. तबकाते नासिरी में ६५८ हि० के हाल में शहरे नव किलोखड़ी का उल्लेख हुआ है (पृ० ३१७) इससे पता चलता है कि किलोखड़ी शहरे नव के नाम से पहले से प्रसिद्ध था।

छन्द

बादशाह ने शहरे नव में ऐसा हिसार बनवाया।
उसके बुर्जों के पत्थर चांद तक पहुँचते थे।

यद्यपि शहरियों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को अपने अपने घर बनवाने में बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा किन्तु सुल्तान के उसी स्थान पर निवास करने के कारण चारों ओर घर बन गये और बाज़ार भर गया। सिंहासनारोहण के पश्चात् सुल्तान जलालुद्दीन कुछ समय तक शहर (देहली) के भीतर न गया। उसके सहायकों तथा सम्बन्धियों को विशेष सम्मान और वैभव प्राप्त हो गया। कुछ ही समय मे सुल्तान जलालुद्दीन के चरित्र के गुण, नेकी, न्याय और धर्मनिष्ठता शहर वालों को भलीभाँति ज्ञात हो गये। उसकी ओर घृणा से तथा वीभत्स भावों का अन्त होने लगा। प्रसन्नता अथवा अप्रसन्नता से लोगों के हृदय अक़्ता एवं विलायतों की लालसा के कारण राज्य के अधिकारियों की ओर झुकने लगे।

जलालुद्दीन के राज्यकाल के नये पदाधिकारी--

(१७७) सुल्तान जलालुद्दीन ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को खाने खानाँ, मंझले पुत्र को अरकलीखाँ और लघु पुत्र को क़दरखाँ की उपाधि प्रदान की। इनमें से प्रत्येक ने राजसी ठाट बाट ग्रहण कर लिये। सुल्तान के भाई को युग़रुशखाँ की उपाधि मिली। अर्ज़े ममालिक का कार्य उसके सिपुर्द हुआ। सुल्तान अलाउद्दीन और उलुगखाँ, सुल्तान के भतीजे और दामाद थे। इनमें से एक को अमीरेतुजुक और दूसरे को आखुरबक नियुक्त किया गया। दीवानी (विभागों) के अन्य पद राज्य के दूसरे निष्कपट लोगों को प्रदान किये गये। मलिक क़ुतुबुद्दीन कैथली और मलिक अहमद चप नायब बार्बक, मलिक खुर्रम वकीलदर, मलिक ताजुद्दीन कूची, मलिक कमालुद्दीन अबुलमआली, मलिक नसीरुद्दीन कुहरामी, मलिक नुसरत सुबाह, मलिक फ़खरुद्दीन, उसका भाई मलिक ताजुद्दीन कूची, मलिक सोन्ज, मलिक ताजुद्दीक कुहरामी, मलिक तरग़ी मलिक अमीर कलाँ, मलिक अमीर अली दीवाना, मलिक एबाही, मलिक हिरन मार और मलिक क़ीर जिनमें से प्रत्येक बड़ा अनुभवी, योग्य और समय के शीतोष्ण का आस्वादन किये हुये एवं राज्यों के उलट फेर तथा आकाश के परिवर्तन देखे हुये था, बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त किया गया। वे लोग प्रसिद्ध विश्वास पात्र और नेक नाम हो गये। सभी उनके शासन की ओर आकर्षित होने लगे, और जलाली राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध में पद और ओहदे प्राप्त करने लगे।

उन्हें उच्च पद और बड़ी-बड़ी अक़्तायें दी जाने लगी। विज़ारत का पद ख्वाजा खतीर को जो कि सर्वोत्तम वज़ीर था प्रदान किया गया। शहर की कोतवाली मलिकुल उमरा के ही हाथ में रही। वह वर्षो से बड़ी नेक नामी से यह कार्य कर रहा था और उसे विशेष अनुभव प्राप्त था। शहर के जन-साधारण और विशेष व्यक्तियों को आराम तथा सन्तोष प्राप्त हो गया।

सुल्तान का देहली में प्रवेश--

जब सुल्तान ने अपने शासन और दरबार आदि के लिये मलिक, अमीर, प्रतिष्ठित और गण्यमान्य व्यक्ति नियुक्त कर लिये तो उसने राजसी ठाट-बाट से अपने पदाधिकारियों, राज्य के सहायकों, खलजी अमीरों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों, निष्कपट सम्बन्धियों, तथा लावलश्कर के साथ शहर की ओर प्रस्थान किया। राजभवन में उतरा। भगवान् के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए दो रकात नमाज पढ़ी। प्राचीन सुल्तानों के राज-सिहासनों पर विराजमान हुआ।

(१७८) उस समय मलिकों तथा राज्य के अमीरों को अपने निकट बुलाकर उच्च स्वर में कहा कि, "मै किस प्रकार भगवान् के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सकता हूँ, कारण कि जिस राज-सिंहासन के सामने मै इतने वर्ष मे माथा नवाता आया हूँ, आज उस राजसिंहासन पर मेरे पांव पहुँच

गये। मेरे मित्र, ख़्वाजा ताश, मेरे बराबर के लोग जिनसे मेरी मैत्री और भाई-चारे के सम्बन्ध थे, आज मेरे सामने हाथ बाँधे खड़े हैं।" यह कहकर राज-भवन की ओर सवार होकर रवाना हुआ तथा कूश्केलाल (लाल राजभवन) में पहुँचा। द्वार के निकट पहले की भांति उतर पड़ा। मलिक अहमद चप नायब बार्बक ने जो कि जलाली मलिकों में सर्वोत्तम तथा बड़े विचित्र स्वभाव का व्यक्ति था निवेदन किया कि, "यह अन्नदाता का महल है। द्वार पर क्यों उतरपड़े ?" सुल्तान ने उत्तर दिया कि, "ऐ अहमद ! मेरे बाप दादा ने जो महल बनाया और जो उनकी सम्पत्ति में था, वही मेरा महल है। यह सुल्तान बल्बन का महल है। यह उस समय बना था जब कि मै खान था। यह उसके पुत्रों तथा पुत्रियों की सम्पत्ति है। मैं ने इस पर बलपूर्वक अधिकार जमा लिया है।" अहमद चप ने पुनः निवेदन किया कि, "राज्य व्यवस्था के कार्य वंश परम्परा के आधार पर नही चलते।" सुल्तान ने उत्तर दिया कि, "जो तू कहता है, वह मै भी जानता हूँ किन्तु क्या तू चाहता है कि इस क्षणिक राज्य के लिये मै इस्लामी नियमों को त्याग दूं। शरा की आज्ञाओं के विरुद्ध कार्य करने लगूँ। तुझे ज्ञात है कि मेरे वंश में कभी कोई बादशाह नही हुआ, तो फिर मुझ मे बादशाही आतंक तथा अभिमान कैसे पैदा हो सकता है। मुझे इस समय यह आशंका होती है कि सुल्तान बल्बन इस महल मे राजसिहासन पर विराजमान है और दरबार हो रहा है। मैं उसके सामने उपस्थित होने जा रहा हूं। मैंने उस बादशाह की इस राजभवन मे बडी सेवा की है। उस समय के वैभव तथा ऐश्वर्य से जो कि मेरे मन मे अभी तक बैठा है, मेरा हृदय कम्पित हो रहा है।"

(१७९) सुल्तान जलालुद्दीन महल के अन्दर पैदल रवाना हुआ और अहमद चप को जो कि बहुत बड़ा अभिमानी तथा आतकमय था, उपर्युक्त उत्तर दिया। जब कूश्केलाल में प्रविष्ट हुआ तो उसने प्रत्येक उस स्थान का जहाँ पर वह सुल्तान ग़यासुद्दीन बल्बन की सेवा किया करता था, और उसके सामने खड़ा रहता था, पूर्णरूपेण आदर किया और वहाँ न बैठा। वहाँ से हटकर मलिकों की पंक्ति मे पहुंचा और बैठ गया।

किसी से बात करने के पूर्व उसने मुँह पर रूमाल रख लिया और फूट-फूट कर रोना प्रारम्भ कर दिया। मलिकों से कहा कि "बादशाही केवल धोखे और दिखावट की वस्तु है। उसमें यद्यपि बाहर से बेल बूटे दृष्टिगोचर होते है किन्तु उसमें अत्यन्त आन्तरिक दोष हैं। एतमर कच्छन तथा एतमर सुर्खा के घर इस कारण नष्ट हो गये कि मुझे भय था कि कहीं वे मेरी हत्या न करदें। अब मै इस आपत्ति में हूं। मै वर्षो तक अमीर तथा मलिक रह चुका हूं। सर्वदा मैंने सुख सम्पन्नता एवं आराम से जीवन व्यतीत किया है। अब मैं वृद्ध हो गया इस समय मैं अपने अनुभव मे यह सोचता हूं कि सुल्तान बल्बन जैसा बादशाह, जिसने ४० वर्ष तक खानी तथा बादशाही की, जिसके इतने योग्य पुत्र, प्रतिष्ठित भतीजे राज्य और शासन के स्तम्भ और बुज़ुर्ग लोग थे, और जिन्हें इतना वैभव तथा ऐश्वर्य प्राप्त था कि उसके राज्य के सहायकों में से प्रत्येक की जड़ पाताल तक पहुँच गई थी और किसी की कोई बराबरी करने वाला या विरोधी देश मे न रह गया था, किन्तु उसकी मृत्यु को तीन वर्ष से अधिक नही बीते और उसका पोता राजसिहासन पर विराजमान हुआ और आज जब मैं इस भीड़ पर दृष्टिपात करता हूं तो मुझे उन लोगों मे से तीन चार से अधिक कोई नही दिखाई देता। वह राजसी ठाठ बाट, वैभव तथा ऐश्वर्य दृष्टिगोचर नही होता। हम लोग जो उसके सेवक थे वे कब इतने योग्य हो सकते हैं कि हमको वैसे प्रतिष्ठित मलिक तथा अमीर मिल जायें, जिनमें से प्रत्येक को उतना ही वैभव प्राप्त हो चुका हो।

(१८०) उस प्रकार के लोग हमारे सहायक और विश्वास पात्र किस प्रकार हो सकते हैं। जब उस जैसे प्रभावशाली, अनुभवी तथा आतङ्कमय व्यक्ति के वंश में बादशाही न रही

और उचित रूप से वह बात उसके पुत्रों को प्राप्त न हो सकी तो वह सफलता हमे तथा हमारे पुत्रों को किस प्रकार हासिल हो सकेगी। अतः मैं इस क्षणिक समय के कोलाहल के कारण जो कि अस्थायी है, जान बूझ कर अपने पुत्रों, अपने सहायको तथा अपने लावलश्कर को संकट में नही डाल सकता। यह सबको ज्ञात है कि जो बादशाही प्राप्त करता है वह अपने जीवन तथा लाव लश्कर एवं परिवार को सर्वदा मौत के मुँह में रखता है।

सुल्तान की बात का प्रभाव

सुल्तान जलालुद्दीन ने यह सब बातें मजमे मे कहीं और उसकी आँखो मे आँसू भर आये। कुछ अनुभवी और तजुर्बेकार अमीर सुल्तान की बातों पर रोने लगे। इस मजमे मे कुछ अभिमानी युवक और ऐसे लोग भी उपस्थित थे, जिन्हे नई-नई राज की चाट पड़ी थी। उन्हें सुल्तान की बाते अच्छी न लगी। वे एक दूसरे से कहने लगे थे कि राज्य ऐश्वर्य तथा वैभव का नाम है। इसमें अपने बराबर किसी अन्य को न समझना चाहिये। यह कार्य इस व्यक्ति से नही सम्पन्न हो सकता। इस व्यक्ति, अर्थात् सुल्तान जलालुद्दीन ने पहले ही दिन मे बादशाही के कार्य की ढाल पटक दी। इसके आगा पीछा सोचने के कारण राज्य अवनति के गर्त्त मे गिर जायगा। दंड तथा ऐश्वर्य जिसके द्वारा एक ओर रुधिर की धारा बहा करती है, इस व्यक्ति से कैसे हो सकता है। बुजुर्गों, मर्दों और शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने जब सुल्तान जलालुद्दीन के न्याय पूर्ण वाक्य तथा उसके पिछले लोगों के सम्मान की रक्षा का हाल सुना तो प्रत्येक उसकी प्रशंसा करने लगा। लोग उसकी बादशाही की ओर आकर्षित होने लगे और उसके विश्वास पात्र तथा आज्ञाकारी बन गये।

(१८१) सुल्तान जलालुद्दीन जिस रोज शहर मे प्रविष्ट हुआ था उसी दिन सायंकाल वापस होकर किलोखड़ी पहुँच गया। इस इतिहास के संकलन कर्ता ने उपर्युक्त बातें इस कारण लिखी है कि तारीखे फीरोजशाही के पाठक गण सुल्तान जलालुद्दीन की धर्मनिष्ठता, सच्चाई और इस्लाम पर विश्वास के विषय मे ज्ञान प्राप्त करलें। वे यह समझ लें कि शहर देहली मे उस समय कितने बुजुर्ग और पिछले वंश के विश्वासपात्र, गण्यमान्य व्यक्ति तथा अनुभवी लोग वर्त्तमान थे। बादशाह शहरियो के विरोध के भय से कुछ समय तक शहर मे प्रविष्ट न हो सका। सुल्तान जलालुद्दीन ने अपने सिहासनारोहण के समय किलोखड़ी को अपनी राजधानी बनाया। राजधानी के शासन सम्बन्धी कार्यो को दृढ़ बनाने, लाव लश्कर एकत्रित करने, अपने सहायकों तथा मित्रों के अधिकार बढाने और उन्हे मिल्क तथा अक्ता प्रदान करने मे लगा रहा।

मलिक छज्जू का विद्रोह

उसके राज्य के दूसरे वर्ष में सुल्तान बल्बन के भतीजे मलिक छज्जू ने कड़े में चत्र धारण कर लिया और अपने नाम का खुत्बा पढ़वाने लगा।[1] सुल्तान बल्बन का मौला ज़ादा अमीर अली सर जानदार जो हातिम खाँ के नाम से प्रसिद्ध था और जिसे अवध की अक्ता प्राप्त थी, उसका सहायक बन गया। कुछ अमीर तथा वे लोग जिनको बल्बन के राज्य काल में उत्कर्ष प्राप्त हुआ था और जिन्होंने अक्ता प्राप्त की थी, मलिक छज्जू से मिल गये।

मालिक छज्जू ने अपनी उपाधि सुल्तान मुग़ीसुद्दीन निश्चित की और पूरे हिन्दुस्तान में अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया। बहुत से प्यादे जमा कर लिये। हिन्दुस्तान के प्यादे और सवारों को लेकर इस विचार से देहली की ओर प्रस्थान किया, कि शहर के लोग उसके

१. खुत्बा पढवाने का अर्थ इस्लामी राज्य में यह समझा जाता था कि किसी अमीर ने स्वतन्त्र राज्य प्रारम्भ कर दिया है। इसी प्रकार अपने नाम का सिक्का चलाने का भी यही अर्थ समझा जाता था।

सहायक बन जायेंगे। उसका विचार था कि लोग उसकी चढ़ाई के विषय में यह समझेंगे कि वह अपने चाचा का राज्य प्राप्त करने आ रहा है। देहली, आसपास के प्रदेश क़स्बों तथा स्थानों के बहुत से लोग जिन्हें बल्बनी वंश और उसके बाप दादा द्वारा बहुत लाभ प्राप्त हुआ था, मलिक छज्जू के पहुँच जाने का समाचार पाकर हृदय से उसके सहायक बन गये। वे एक दूसरे से खुलकर बात चीत करते कि बल्बनी राज्य का अधिकारी और राजधानी के राजसिंहासन का मालिक, मलिक छज्जू कश्ली खाँ है। वह सुल्तान बल्बन का सगा भतीजा है। ख़लजियों का देहली पर कोई अधिकार तथा उससे कोई सम्बन्ध नही है। कोई ख़लजी कभी बादशाह नहीं हुआ है। सुल्तान जलालुद्दीन ने सुल्तान बल्बन के पुत्रों से बलपूर्वक उनका राज्य छीन लिया है।

(१८२) सुल्तान जलालुद्दीन अपने मित्रों, सहायकों, तथा खलजी अमीरों को जो कि उसके बहुत बड़े सहायक थे और एक वीर सेना जिसके राजभक्त होने का उसे पूर्ण विश्वास था, लेकर किलोखड़ी के बाहर निकला। मलिक छज्जू का सामना करने के लिए हिन्दुस्तान[1] की ओर रवाना हुआ। जब बदायूँ की हद मे पहुंच गया तो सुल्तान ने अपने मंझले पुत्र अरकली खाँ को जो कि बहुत बड़ा पहलवान तथा शूर वीर था लश्कर के मुक़द्मे (अग्रीमदल) का सरदार नियुक्त किया। अपनी अनुपस्थिति मे अपने ज्येष्ठ पुत्र खानेखाना को देहली मे अपना नायब बनाया।

अरकलीखाँ मुक़द्मे की सेना के साथ सुल्तान जलालुद्दीन की सेना के दस बारह कोस आगे-आगे जाता था। सुल्तान जलालुद्दीन बदायूँ मे पहुंच गया। अरकलीखाँ ने मुक़द्मे की सेना के साथ कलायब नगर[2] की नदी पार की। दूसरी ओर से मलिक छज्जू का लश्कर आता था। मलिक छज्जू के लश्कर मे हिन्दुस्तानी रावत और पायक चीटियों और टिड्डियों की भाँति एकत्रित हो गये थे। प्रसिद्ध रावतो तथा पायको ने मलिक छज्जू के सम्मुख पान का बीड़ा लेकर संकल्प किया था, कि सुल्तान जलालुद्दीन के चत्र पर अधिकार जमा लेंगे। जब दोनों लश्करो का आमना सामना हुआ तो सुल्तान जलालुद्दीन के मुक़द्मे के लश्कर ने हिन्दुस्तान की सेना पर बाणों की वर्षा प्रारम्भ करदी। हिन्दुस्तानी मछली भात खाने वाले जो कि शिथिल, ढीले, निकम्मे और मादक प्रेमियों की भांति चीत्कार मचाया करते थे, संज्ञा शून्य हो गये। सुल्तान जलालुद्दीन के मुक़द्मे की सेना के सिहों तथा शेरों को पछाड़ने वालो ने तलवारें म्यान से निकाल ली और मलिक छज्जू के लश्कर पर टूट पड़े। मलिक छज्जू उसके अमीर तथा सभी हिन्दुस्तानी जो कि रण-क्षेत्र में मुक़द्मे की सेना का मुक़ाबला करने आये थे, हार कर पीठ दिखा गये। उसका लश्कर छिन्न भिन्न हो गया। मलिक छज्जू भाग खड़ा हुआ। निकट ही एक मवास[3] था, वही घुस गया। कुछ दिन पश्चात् उस मवास के मुक़द्दम ने उसे पकड़कर सुल्तान जलालुद्दीन के पास भेज दिया।

मलिक छज्जू की सेना के परास्त हो जाने के उपरान्त उसके अमीर, विश्वास पात्र प्रतिष्ठित व्यक्ति, उत्तराधिकारी, प्रसिद्ध पायक जिन्होंने अपनी मूर्खता के कारण विद्रोह कर दिया था, मुक़द्मे की सेना द्वारा बन्दी बना लिये गये।

(१८३) अरकलीखाँ ने उनकी गर्दनें शिकंजे मे कस कर और उन्हें क़ैद करके सुल्तान

---

१. देहली के पूर्व का भाग हिन्दुस्तान कहलाता था।

२. मिफ़ताहुल फ़ुतूह तथा तारीखे मुबारक शाही मे रहब नदी है। सम्भव है कि यह आधुनिक काली नहर हो। जो कि गंगा से कनौज के निकट मिलती है।

३. वे स्थान जहाँ अधिकतर विद्रोही रक्षा के लिये छिप जाते थे।

जलालुद्दीन की सेवा में भेज दिया। सुल्तान जलालुद्दीन भी शाही सेना लेकर उसी स्थान पर पहुँच गया।

विद्रोहियों के साथ सुल्तान का व्यवहार—

इस तारीखे फ़ीरोज़ शाही के संकलन कर्ता ने अमीर खुसरो से जो कि सुल्तान जलालुद्दीन का विश्वास पात्र था, सुना है, कि जब विद्रोही अमीर और मलिक सुल्तान जलालुद्दीन की सेवा में उपस्थित किये गये तो उसने दरबारे आम किया। उस समय सुल्तान बड़े ऐश्वर्य से मोंढे पर बैठा था। मैं सुल्तान के निकट खड़ा था। मलिक अमीर अली सर जानदार, मलिक तरगी के पुत्र मलिक उलुगची, मलिक ताजुदर, मलिक एहजन और अन्य प्रतिष्ठित अमीरों को सुल्तान के सामने इस दशा मे लाया गया कि शिकंजे उनकी गर्दनों में पड़े थे। हाथ पीछे बँधे थे। ऊँटों पर सवार थे और सेना की धूल मिट्टी उनके सिर और मुख पर जमी हुई थी। वस्त्र मैले थे। लोगों की इच्छा थी कि उन्हें इसी दशा मे अपमानित करते हुये समस्त लश्कर मे घुमाया जाय।

ज्यों ही सुल्तान जलालुद्दीन की दृष्टि उनके ऊपर पडी, उसने अपनी आँखों पर रूमाल रख लिया और चिल्लाकर कहा, "हैं–है यह क्या करते हो?" उसी समय आदेश दिया कि अमीरों तथा गण्यमान्य व्यक्तियों को ऊँटों से उतार दिया जाय। शिकंजे गर्दनों से निकलवा दिये जायँ। हाथ खुलवा दिये जायँ। उन बंदियों में मे वे लोग जो बल्बनी तथा मुइज़्ज़ी काल में बडे सम्मान वाले और प्रतिष्ठित थे, उन्हें उनमें मे पृथक् कर दिया गया। वे रिक्त शिविरों में भेज दिये गये। सुल्तान के तश्तदारों[1] तथा जानदारों ने उनके सिर और हाथ धुलवाये। इत्र मला और राजसी वस्त्र पहनाये।

(१८४) सुल्तान अपने शिविर में चला गया। शराब की महफिल सजादी गई। उन मलिकों को जो बन्दी बनाये गये थे, मदिरा की महफिल मे सुल्तान ने बुलवा कर, उनके साथ मदिरा पान किया। वे लोग दूर ही रहे और लज्जा वश अपना सिर झुकाये थे। भूमि की ओर देखते थे और किसी से बात न करते थे। सुल्तान ने उनसे वार्त्ता आरम्भ की और उन्हें प्रोत्साहन देने तथा उनके सन्तोष के लिए उनसे कहा कि, "तुम लोगों ने कोई हरामखोरी नही की, अपितु राजभक्ति दिखलाई है। तुमने अपने स्वामी के पुत्र की ओर मे युद्ध किया।" सुल्तान ने उनके ऊपर दया और कृपा दिखलाते हुये जो बातें कही वह ख़लजी अमीरों को अच्छी न लगी। उन्होंने एक दूसरे मे यह कहना आरम्भ कर दिया कि सुल्तान राज्य करना नही जानता। उन विद्रोहियों को जिनकी हत्या कर देनी चाहिये थी, अपना मित्र बना लिया है।

मलिक अहमद चप द्वारा सुल्तान की आलोचना तथा सुल्तान का उत्तर

मलिक अहमद चप ने जो कि बड़ा दूरदर्शी, नायब अमीर हाजिब और सुल्तान का सम्बन्धी था, सुल्तान मे उसी दिन कह दिया कि, "बादशाहों को जहाँदारी करनी चाहिये, तथा जहाँदारी के नियमों का पालन करना चाहिये, या फिर मलिकी ही से संतुष्ट रहना चाहिये जो कि वर्षों मे आप को प्राप्त थी। इन मलिकों पर जो कि हत्या करा देने योग्य थे, अन्नदाता इतनी कृपा दृष्टि दिखला रहे हैं और उनके साथ मदिरा पान कर रहे हैं। इनको खुलवा दिया और विद्रोही बन्दियों को जो दण्डनीय थे, मुक्त करा दिया। मलिक छज्जू को जिसने कई महीनों तक हिन्दुस्तान में स्वतन्त्र राज्य किया था, पालकी पर बिठा कर मुल्तान की ओर भिजवा दिया। उसके लिये आदेश दे दिया गया कि वहाँ उसे एक महल में बड़े आदर पूर्वक रखा जाय और वह जो कुछ खाने पीने तथा पहनने के लिये माँगे, प्रदान किया जाय।

१ सुल्तान के स्नान तथा मुंह हाथ धुलाने का प्रबन्ध करने वाले।

राज्य के विरुद्ध इतना बड़ा अपराध करने पर भी जिससे बढ़कर कोई अपराध हो ही नहीं सकता कोई दंड न दिया गया, तो फिर यह कैसे संभव है कि इसके बाद दूसरे लोग विद्रोह न करेंगे और देश में अशान्ति न फैलायेंगे। बादशाहों के दण्ड के भय से लोग शिक्षा ग्रहण करते हैं। सुल्तान बल्बन जिसका वैभव और ऐश्वर्य अन्नदाता को याद है, ऐसे अवसरों पर कठोर दण्ड देता था और इस प्रकार के विद्रोह पर अत्यधिक रक्तपात करता था। यदि हम लोगों को वे बन्दी बना लेते तो खल्जियों का हिन्दुस्तान में नाम व निशान भी शेष न रहने देते।"

(१८५) सुल्तान जलालुद्दीन ने अहमद चप को उत्तर दिया "ऐ अहमद! जो कुछ तूने कहा उसे मैं खूब समझता हूं। बादशाह लोग जिस प्रकार विद्रोहियों को दण्ड दिया करते थे, उसे मैं तुझसे अधिक देख चुका हूं, परन्तु मैं क्या करूं, मैं मुसलमानों के मध्य में रहते-रहते वृद्ध हो गया। मैं मुसलमानों के रक्त पात का आदी नहीं हूं। मेरी अवस्था ७० वर्ष से अधिक हो चुकी है। इस बीच में मैंने किसी आस्तिक की हत्या नहीं कराई। इस बुढ़ापे में, मैं क्षणिक राज्य की रक्षा के लिये, जो कि न किसी के पास रहा है, और न मेरे पास रहेगा किस प्रकार इस्लामी आज्ञाओं और शरीयत के आदेशों का उल्लघन कर सकता हूं। किस प्रकार बिना सोचे समझे मुसलमानों की हत्या करादूँ। आज जो मैं चाहूं कर सकता हूं, किन्तु कल क़यामत में ईश्वर के सामने क्या उत्तर दूँगा। यदि ये लोग हमें बन्दी बना लेते, और इस्लामी नियमों का पालन न करते हुये हमारी हत्या करा देते तो क़यामत में इसका इन्हें उत्तर देना पड़ता। मुसलमानों की हत्या के फलस्वरूप इन्हें नरक में डलवा दिया जाता। आज जब भगवान ने हमें इनके ऊपर विजय प्रदान करदी है तो इसके लिये कृतज्ञता प्रकट करने हेतु हमने इन्हें मुक्त कर दिया है और इनकी हत्या नहीं कराई। तूने जो कुछ शासन नीति के विषय में कहा, उसमें कोई सन्देह नहीं, कारण कि अहंकारी तथा निरंकुश बादशाह जैसा कि तूने परामर्श दिया, वैसा ही करते हैं। वे किसी विद्रोही को पृथ्वी पर शेष नहीं रहने देते। मैं इस्लाम के मार्ग पर ७० वर्ष से चलता-चलता बुड्ढा हो गया। अब मैं अपने धर्म से मुख नहीं मोड़ सकता। मैं किसी प्रकार निरंकुशता, अहंकार ऐश्वर्य तथा आतंक नहीं दिखा सकता। मैंने उन क़ैदी मलिकों, तथा अमीरों को इस कारण छोड़ दिया और उनकी हत्या नहीं कराई, कि वे भी मनुष्य हैं, यद्यपि उन्होंने विद्रोह किया था, किन्तु मुसलमानों के बीच में रहकर उन्हें भगवान तथा अन्य मनुष्यों के सम्मुख लज्जा आयेगी। मैं यह समझता हूं कि वे मेरे कृतज्ञ रहेंगे और पुनः मेरे विरुद्ध विद्रोह न करेंगे।"

(१८६) अहमद चप के प्रश्न का उत्तर देते हुये सुल्तान ने उससे कहा, "ऐ अहमद चप! हम लोगों को स्वयं अपने विषय में सोचना चाहिये कि हम मलिक थे। हमारा कौनसा राज्य था, और हमें कब बादशाहत प्राप्त हुई थी। मैं और मेरा बड़ा भाई मलिक शिहाबुद्दीन देहली में सुल्तान बल्बन के सेवक थे। हमारे ऊपर उसकी परवरिश का बहुत हक़ है। यह कहां का न्याय है कि हम उसके राज्य पर अधिकार भी जमाले और उसके सहायकों, मित्रों अमीरों तथा सम्बन्धियों की हत्या भी करादे। ऐ अहमद! तुझे युवावस्था और राज्य लोभ ने मार्ग-भ्रष्ट कर दिया है। अभी तेरी अवस्था ही कितने दिन की है, किन्तु तेरा पिता जो कि मेरा सम्बन्धी था जानता था, कि इन मलिकों तथा अमीरों को जिनकी गर्दन से मैंने शिकंजे निकलवा दिये और जिनके साथ मैंने मदिरा पान किया, सुल्तान बलबन के राज्य काल में कितना सम्मान प्राप्त था। उनका वैभव तथा ऐश्वर्य किस सीमा तक पहुँच चुका था। सुल्तान बल्बन के राज-भवन में हम दोनों भाइयों की सर्वदा यही महत्वाकांक्षा रहती थी कि अमीर अली जानदार हमारे सलाम का उत्तर दे दे। इन अमीरों

मे से जिन पर आज मैंने दया दिखलाई, बहुतों ने हमें सुल्तान बल्बन तथा सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन के राज्य काल मे अपने महलों में मेहमान रक्खा था और हमारी मित्रता तथा भाईचारे के कारण हमारे घरों पर मेहमान रह चुके हैं। हमने एक साथ मदिरा पान किया है और सुख भोगा है। इस समय जबकि वे क़ैद में बँधे हुये हमारे सामने लाये गये हैं और ईश्वर ने हमको इस श्रेणी तक पहुँचा दिया है तो हम किस प्रकार मित्रता भूल जायें। पुरानी महफ़िलों को याद न करें। निरंकुश तथा अहंकारी बादशाहो के समान भगवान् का भय त्यागकर उनकी हत्या का आदेश दे दें।

(१८७) मै एक मुसलमान हूँ और मुसलमानों में रहकर बुड्ढा हो गया हूँ। मै मुसलमानों की हत्या नही करा सकता। निरंकुशता, अहंकार तथा निर्लज्जता नही दिखा सकता और भगवान् का भय नही त्याग सकता। मेरे पुत्रों तथा तुम लोगों मे से जो कि मेरे भतीजे हो जिस किसी को भी बादशाही, निरंकुशता एवं अहंकार की लालसा हो, वह बादशाही स्वीकार करले। मै उसे त्यागता हूँ। वही निर्दोषियों का रक्तपात करे। मै स्वयं मुल्तान चला जाऊँगा। जिस प्रकार शेर खाँ मुग़लों से जिहाद करता तथा उनका मुकाबला करता था, मै भी उसी प्रकार उनसे जिहाद तथा उनसे युद्ध करूँगा। मुगलों को इस योग्य न रहने दूँगा कि वे पुनः मुसलमानों के राज्य मे प्रवेश कर सकें। यदि मुसलमानों के रक्तपात के बिना बादशाही करना सम्भव नही तो मुझ मे रक्तपात की शक्ति नही और न कभी रही है। मै बादशाही को त्यागने के लिये तैयार हूँ। मुझ मे भगवान् का क्रोध सहन करने की शक्ति नही।"

सुल्तान अलाउद्दीन को कड़ा प्रदान किया जाना—

सुल्तान जलालुद्दीन ने मलिक छज्जू के विद्रोह को शान्त करने के पश्चात् बदायूँ मे लौटते समय अपने भतीजे और दामाद सुल्तान अलाउद्दीन को कड़े की अक्ता देकर उस ओर भेजा। उसका पालन पोषण सुल्तान ही ने किया था। जिस वर्ष मलिक अलाउद्दीन कड़े का मुक्ता होकर वहाँ पहुँचा उसी वर्ष मलिक छज्जू के अनेक विश्वासपात्र तथा कर्मचारी जिन्होंने सुल्तान से विद्रोह कर दिया था और जिनको सुल्तान जलालुद्दीन ने मुक्त कर दिया था, सुल्तान अलाउद्दीन के सेवक हो गये। वे उसे हर बात में परामर्श देने लगे। उसी वर्ष उन बागियों और विद्रोहियों ने सुल्तान अलाउद्दीन को यह समझाया कि उसे कड़े में एक बहुत बड़ा सुव्यवस्थित लश्कर तैयार करना चाहिये। सम्भव है कि कड़े के उपरान्त उसे देहली का राज्य भी प्राप्त हो जाय। इसके लिये धन सम्पत्ति आवश्यक है। यदि मलिक छज्जू के पास धन-सम्पत्ति होती तो देहली का राज्य उसके अधिकार में आ जाता। यदि किसी स्थान से अत्यधिक धन प्राप्त हो जाय तो देहली के राज्य पर अधिकार करना बहुत सरल है। सुल्तान अलाउद्दीन सुल्तान जलालुद्दीन की धर्म पत्नी जिसका नाम मलिकये जहाँ था और जो उसकी सास थी तथा अपनी धर्म पत्नी मे बड़ा खिन्न रहता था। वह सोचा करता था कि किसी निर्जन जंगल में चला जाय या किसी अन्य दिशा को प्रस्थान कर दे।

(१८८) बागी तथा विद्रोही मलिकों की वार्त्ता मे उसके मस्तिष्क में बादशाही प्राप्त करने के विचार उठने लगे। कड़े की अक्ता प्राप्त करने के प्रथम वर्ष के पश्चात् ही वह इस बात का प्रयत्न करने लगे, कि कही दूर चला जाय और वहाँ मे पर्याप्त धन सम्पत्ति प्राप्त करले। दिन रात यात्रियों तथा अनुभवी लोगों मे भिन्न-भिन्न इक़लीमों के विषय मे पूछ ताछ किया करता था।

सुल्तान जलालुद्दीन के राज्य के विषय में उसके समकालीनों के विचार—

जब सुल्तान जलालुद्दीन बदायूँ मे विजय प्राप्त करने के उपरान्त लौटा और

किलोखड़ी पहुँचा तो देहली तथा किलोखड़ी में क़ुब्बे सजाये गये। शत्रु पर, जिसने उसके राज्य पर अधिकार जमा लेने का प्रयत्न किया था, विजय प्राप्त कर लेने के उपरान्त, सुल्तान जलालुद्दीन ने अपनी राज्य व्यवस्था द्वारा प्रयत्न किया कि किसी चीटी को भी हानि न पहुँचे। उसके राज्य के किसी स्थान की प्रजा उससे असन्तुष्ट न हो, किन्तु मलिक, मंत्री, विश्वस्त तथा गण्यमान्य व्यक्ति और सद्र आदि उसकी नेकी का महत्त्व न समझते थे और यही कहा करते थे, कि सुल्तान जलालुद्दीन राज्य व्यवस्था के योग्य नही। वह बादशाही ऐश्वर्य तथा निरंकुशता का प्रदर्शन नही कर सकता। उसने अपना जीवन एक मलिक की भाँति सन्तोष तथा आराम से व्यतीत किया है। उसका व्यवसाय और कार्य मुग़लों से जिहाद करना रहा है। वह मुग़लों से भली भाँति युद्ध कर सकता है। यद्यपि वीरता तथा शत्रुओं का विनाश करने में वह अद्वितीय है, किन्तु राज्य व्यवस्था और शासन प्रबन्ध के विषय में वह पूर्णतया अनभिज्ञ है। उसके सहायकों, सम्बन्धियों, विश्वास पात्रों तथा अधिकारियों द्वारा जिनमें से सभी विद्वान अनुभवी और कार्य कुशल थे, जलाली राज्य सुदृढ़ हो गया, परन्तु उसे राज्य व्यवस्था के योग्य नही समझा जाता था। जलाली राज्य काल के प्रतिष्ठित तथा बुद्धिमान व्यक्ति अपनी सभाओं में कहा करते थे कि दो बाते जो कि बादशाहों मे राज्य व्यवस्था संचालन हेतु परमावश्यक हैं वे दोनों सुल्तान जलालुद्दीन मे विद्यमान नही। क्योंकि उसमे वह दोनों गुण नही पाये जाते, अतः वह राज्य व्यवस्था का संचालन किस प्रकार कर सकता है? वे दोनों चीजे जिनके बिना बादशाह राज्य व्यवस्था का संचालन नही कर सकता पर्याप्त व्यय तथा अत्यधिक दान है। इससे राज्य सुव्यवस्थित और शासन प्रबन्ध सम्बन्धी सब कार्य अच्छी तरह हो जाते हैं। कारखानो पर ख़ूब खर्च करने तथा प्राचीन व्यय को उचित रूप से चलाने से राज्य को उन्नति प्राप्त होती है। दूसरी चीज़ जो कि बादशाहों की राज्य व्यवस्था तथा शासन से सम्बन्धित है वह बादशाहों की निरंकुशता, अहंकार तथा अत्यधिक दंड है।

(१८९) इससे विरोधी क्षीण हो जाते है और विद्रोही राजभक्त बन जाते हैं। इसके बिना राज्य-आज्ञाओं का पालन, जिस पर राज्य व्यवस्था निर्भर है सम्भव नही और न बादशाहों की धाक लोगों के हृदय मे बैठ पाती है। यह दोनों गुण सुल्तान जलालुद्दीन में नही पाये जाते। सुल्तान जलालुद्दीन ऐसा व्यक्ति है जो कि न तो दिल खोलकर खर्च करता है, जिससे लोग उसके सहायक बन जायं, और न बादशाहो की भाँति दान करता है, हालाँकि बादशाहत दान द्वारा बड़ी सीमा तक चल सकती है और न उसमे अन्य बादशाहों की भाँति आतंक तथा अहंकार ही पाया जाता है।

सुल्तान के सम्मुख अनेक बार चोर पकड़ कर लाये गये परन्तु उसने सबको यह शपथ लेकर छोड़ दिया कि वे भविष्य मे चोरी न करेंगे। वह सबके सामने कहा करता था, "मै उन बँधे हुए आदमियों की हत्या नही करा सकता जो कि मेरे सामने लाये जाते हैं, किन्तु युद्ध मे अवश्य रक्तपात कर सकता हूँ। मुझे लोगो की हत्या कराते समय यह चिन्ता होती है कि किस प्रकार उसे बाल्यावस्था से दूध पिला पिलाकर पाला गया और तीस वर्ष में वह युवावस्था को प्राप्त हुआ, तो अब उसे किस दिल से मरवा डाला जाय।"

सुल्तान का ठगों को मुक्त करना

कहा जाता है कि सुल्तान जलालुद्दीन को कारख़ानों पर जो कुछ व्यय होता था, अच्छा न लगता था। हाथियो के चारे के विषय में वह कहा करता था कि, "हाथी मेरे किस काम के हो सकते है। उसे वीर नही कहा जा सकता जो हाथियों के बल पर युद्ध करे।" सुल्तान जलालुद्दीन के राज्य काल में शहर मे बहुत से ठग गिरफ़्तार हुये। उनमें से एक ठग ने हज़ार से अधिक

ठग और गिरफ़्तार करा दिये। सुल्तान जलालुद्दीन ने उनमें से किसी ठग की भी हत्या न कराई और सभी को नौका पर बिठलाकर लखनौती की ओर भिजवा दिया।

उन्हें आदेश दिया गया कि वे लखनौती में निवास करें और इस ओर फिर न आयें। इस घटना के उल्लेख का ध्येय यह है कि सुल्तान जलालुद्दीन यह न चाहता था कि वह व्यर्थ हत्या कराये। लोगों को दंड दे, उनसे युद्ध करे और मुसलमानों का धन सम्पत्ति आदि छीन ले। अपने किसी आदमी को भूमि प्रदान करदे या किसी निष्कपट राजभक्त को जिसकी सेवायें प्रमाणित हो चुकी हों, किसी प्रकार का कष्ट या दुःख पहुँचाये या उन्हें अपमानित अथवा जलील कराये।

मदिरा पान की महफ़िलों में सुल्तान को कटु आलोचनाएँ।

(१९०) अनेक अनुभव हीन तथा सच को न पहचानने वाले और कृतघ्नी उस बादशाह की इस्लाम में दृढ़ता का मूल्य न समझते थे। विद्रोही मादक प्रेमी, विचित्र लोग, कृतज्ञताहीन और विरोधी जो कुछ मुँह में आता था कह डालते थे, और उसकी त्रुटि निकाला करते थे। क्योंकि सुल्तान जलालुद्दीन अपनी दया तथा नेकी के कारण मलिकों, अमीरों एवं कर्मचारियों को कोई दण्ड न देता था और न उन्हें किसी प्रकार का कष्ट या दुःख पहुँचाता था, अतः बहुत से भगवान् का भय न रखने वाले अमीर कृतघ्नता के कारण मदिरा पान की महफ़िलों में सुल्तान की हत्या करा देने की योजनाएँ बनाया करते थे। जो कुछ जी में आता वह कह डालते। जब सुल्तान जलालुद्दीन को यह सब समाचार मिलते तो वह कभी तो टाल जाता और कभी कहता कि लोग नशे में इसी प्रकार अनावश्यक तथा व्यर्थ बातें कह डालते हैं। मदिरा पान की महफ़िलों की इस प्रकार की बातें मुझ तक न पहुँचाई जायँ।

इन्हीं दिनों मलिक ताजुद्दीन कूची के मकान पर जो कि बहुत बड़ा अमीर था, एक महफ़िल हुई। बहुत से अमीर उस महफ़िल में आमंत्रित थे। जब उपस्थित गण मदिरा के नशे में बदमस्त हो गये तो मलिक ताजुद्दीन से कहने लगे कि "बादशाही के योग्य तू है, न कि सुल्तान।" कुछ नशेबाजों ने कहा कि खलजी लोग बादशाही के योग्य नहीं। यदि कोई खलजी बादशाही के योग्य है, तो वह अहमद चप है न कि सुल्तान जलालुद्दीन। इसी प्रकार की उन लोगों ने व्यर्थ बातें की। जितने अमीर वहाँ उपस्थित थे, उनमें से प्रत्येक ने मलिक ताजुद्दीन कूची से बादशाही की बैअत करली।

(१९१) उसी दशा में एक बिना सोचे समझे यह कह बैठा कि "मैं सुल्तान की एक कटार द्वारा हत्या कर सकता हूं।" उन दुष्टों में से कुछ लोगों ने तलवार हाथ में लेकर कहा कि हम इसी तलवार से सुल्तान जलालुद्दीन का सिर खरबूजे की तरह काट सकते हैं। उस दिन इसी प्रकार बिना सोचे समझे उन लोगों ने बहुत सी व्यर्थ बातें की। वे समस्त बातें सुल्तान के पास पूर्णतया पहुँच गईं। सुल्तान इससे पूर्व भी इस विषय में मलिक लोग जो अपनी महफ़िलों में वाद विवाद किया करते थे, सुन चुका था, किन्तु वह हमेशा टाल जाता और किसी से कुछ न कहता था। उस दिन मलिक ताजुद्दीन की महफ़िल में लोग अपनी सीमा से बहुत बढ़ गये। सुल्तान उन सब बातों को सुनकर सहन न कर सका। सबको अपने सम्मुख बुलवा कर एक स्थान पर खड़ा किया और प्रत्येक बार क्रोध करते हुए बड़े कठोर वचन कहे। लोगों ने यह समझ रक्खा था कि सुल्तान उन अमीरों का क्या बिगाड़ लेगा, किन्तु सुल्तान बहुत उत्तेजित हुआ। अपने सामने से तलवार उठा कर उन अमीरों के सामने म्यान से निकाल कर फेंक दी और कहा, "दुष्टो नशे में तुम बहुत डींग मारते हो और कहते हो कि इस प्रकार तीर चलायेंगे और इस प्रकार तलवार। तुम

लोगों मे ऐसा कौन वीर है जो यह तलवार लेकर खुल्लम खुल्ला मेरे ऊपर आक्रमण कर सके; मै यहाँ बैठा हूं देखें कौन आता है।" मलिक नुसरत सुबाह सरदावतदार ने जो कि बहुत बड़ा मसखरा था और जो उस सभा में भी उपस्थित था और जिसने अनेक अनुचित बातें कही थी, सुल्तान को उत्तर दिया और कहा, "अन्नदाता भली भाँति जानते हैं कि लोग नशे मे इसी प्रकार व्यर्थ बातें किया करते हैं। हमें गर्व है कि आप हमारा पालन पोषण अपने पुत्रों की भाँति करते हैं। हम आपकी हत्या किस प्रकार कर सकते हैं और आपसे अधिक दयालु तथा कृपालु कोई अन्य बादशाह कैसे पा सकते है ? आप भी हमारी अनर्गल बातों पर जो कि हमने नशे मे कीं थी कोई ध्यान न दे, कारण कि आप को भी हमारे जैसे मलिक तथा मलिक जादे प्राप्त नही हो सकते।"

(१९२) सुल्तान उस समय अमीरो पर भी क्रोध करता जा रहा था और मदिरा पान भी करता जाता था। मलिक नुसरत सुबाह की प्रेम भरी बातों मे उसकी आँखें डब डबा आई और उन लोगों को मृत्यु दंड के योग्य अपराध करने पर भी क्षमा कर दिया। नुसरत-सुबाह को अपने हाथ से प्याला दिया और अपने साथ मदिरा पान करने के लिये कहा। उन दुष्ट और अनुचित बातें करने वाले अमीरों को जिन्हे देश निकाला देने के लिये बुलवाया गया था, अपनी अपनी अक्ता को वापस भेजे जाने की आज्ञा दे दी। उन्हे आदेश दिया गया कि एक वर्ष तक वे अपनी अक़्ता मे रहें और शहर (देहली) मे न आयें।

कटु आलोचना करने वालों को सुल्तान का उत्तर

सुल्तान जलालुद्दीन ने अनेक बार मदिरा पान की महफिलों में अनर्गल बातें करने वाले बकवादियों तथा दुष्टों को चेतावनी दे दी थी कि तुम मदिरा पान के समय यह नही सोचते कि तुम्हारी जबान से क्या निकल रहा है और तुम अपनी जबान पर कोई रोक टोक नहीं करते। तुम जो अपनी महफिलों मे कहा करते हो, बादशाही दूसरी वस्तु का नाम है, तो मैं भी तुम लोगों के सिरों को खीरे, ककड़ी की भाँति काट डालने की शक्ति रखता हूं, किन्तु मै मुसलमान हूं, मै अहंकार तथा अत्याचार द्वारा बादशाही नही कर सकता। मारकाट और हत्या मुझमे नही पाई जाती, किन्तु तुम जैसे दुष्टों से मुझे कोई भय नही।

तुम मे इतनी शक्ति भी नही कि शिकार में कटार चला सको। वेश्यागमन, व्यभिचार, मदिरापान, जुए, बकवाद और व्यर्थ बातें करने के अतिरिक्त तुम्हारे पास कोई अन्य कार्य नही। तुममे इतना साहस और हिम्मत कहाँ कि मुझसे युद्ध कर सको। यदि मैं तलवार खीच लूं तो तुम जैसे सौ दो सौ दुष्टो को अपने सामने से भगा सकता हूं। मै युद्धस्थल में अकेला रहूंगा और तुम जैसे चालीस बकवादी चौहरे अस्त्र शस्त्र लेकर आ जायें तो भी मुझे विश्वास है कि मेरा कुछ नही बिगाड़ सकते। फिर तुम मुझे कौनसी हानि पहुँचा सकते हो।

(१९३) दुष्टो ! तुम मेरे विषय में अनुचित बातें किया करते हो और कहा करते हो कि मै बादशाही करना नही जानता और मैं बादशाही के योग्य नहीं हूं। तुम यह क्या कहते हो ! मै इसी समय आदेश दे सकता हूं कि तुम्हें दरबार के सामने ले जाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाय।

यदि बादशाही मारकाट, हत्या और दूसरों को बन्दी बनाने का नाम है तो यह मुझ से कदापि नही हो सकता, और यह मै कदापि न करूंगा। मैं प्रतिदिन एक सिपारा[1] क़ुरान पढ़ता हूं। पाँचो समय की नमाज पढ़ता हूं। ला इलाहा इल्लिल्लाह मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह कहने वालों तथा कलमा पढ़ने वालों की हत्या उनके बुरे विचारों तथा कार्यों पर किस प्रकार कराई

१. क़ुरान तीस भागों में विभक्त है। उसका प्रत्येक भाग सिपारा कहलाता है।

जा सकती है कारण कि हमारे पैगम्बर ने मुरतिदों तथा स्त्री रखते हुये भी अन्य स्त्रियों मे व्यभिचार करने वालों के अतिरिक्त किसी के विषय मे भी मृत्यु दंड की आज्ञा नही दी है। मै समझता हूं कि तुम्हें मेरा भय नही और तुम ऊट पटाँग बातें करने से बाज़ नही आते, किन्तु क्या तुम्हें मेरे मंझले पुत्र अरकली ख़ाँ का भी भय नहीं और तुम यह नहीं जानते कि उसका स्वभाव कितना कठोर है। यदि जो कुछ तुम सोचते हो या कहते हो वह सुनले तो तुम्हें जीवित न छोड़ेगा और न जाने क्या-क्या अनुचित बातें कर डालेगा। यदि मैं उसे सैकड़ों बार भी मना करूंगा तो भी वह मेरी न सुनेगा।"

सुल्तान जलालुद्दीन के गुण

(१९४) सुल्तान जलालुद्दीन में अनेक नैतिकता पूर्ण बातें पाई जाती थी। एक सब से अच्छी और उत्कृष्ट बात उसमें यह थी कि वह अपने मलिकों, अमीरों पदाधिकारियों और उन लोगों के विषय मे जिनको कि उसने उन्नति दे रक्खी थी न तो कुछ कहता और न उन्हें कोई हानि पहुंचाता था। उन्हें अपराध करने पर भी न तो दण्ड देता और न क़ैद करवाता। वह उन्हे किसी कष्ट मे न देख सकता था। उनसे माता-पिता के तुल्य व्यवहार करता और अपने पुत्रों तथा सम्बन्धियों की भाँति उनकी देख रेख करता। यदि अपने किसी सहायक, मित्र अथवा विश्वास पात्र से क्रोधित हो जाता तो उन्हे अपने मंझले पुत्र के क्रोध से डरवाता। उसने अपनी मलिकी तथा बादशाही के समय मे किसी भी पदाधिकारी एवं विश्वासपात्र को कोई दण्ड न दिया था। न उनकी अक्ता जब्त की और न उन्हें अपने पदों से वंचित किया।

सुल्तान जलालुद्दीन कहा करता था कि, "मुझे इस बात से बड़ी लज्जा आती है कि किसी को मै कोई अक्ता अथवा पद प्रदान करूँ और फिर उससे उसे वंचित करदूं, अथवा उसे कष्ट पहुँचाऊँ। यदि मै अपने कर्मचारियों को हानि पहुँचाने लगूँगा तो मेरे ऊपर कौन विश्वास करेगा।"

क्योंकि मलिक, अमीर, पदाधिकारी तथा अन्य सभी व्यक्ति सुल्तान जलालुद्दीन का महत्त्व न समझते थे और उसके कृपापात्र होकर कृतज्ञता प्रकट न करते थे वरन् उसकी निन्दा करते और भगवान् की इतनी बड़ी देन को ठुकराते रहते, और उसके विषय में यह कहा करते थे कि उसमें राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध के संचालन की योग्यता नही, अतः भगवान् ने उन्हे सुल्तान अलाउद्दीन जैसे कठोर तथा आतंकमय बादशाह के अधीन कर दिया, यहाँ तक कि उनमे से किसी का नाम और चिह्न भी शेष न रह सका।

सुल्तान के उत्कृष्ट चरित्र का एक प्रशसनीय गुण यह था कि उस समय जबकि सुल्तान जलालुद्दीन सुल्तान बल्बन का सर जानदार था और जब कैथल की अक़्ता तथा सामाने की न्याबत उसे प्रदान की गई और वह सामाने पहुँचा तो सुल्तान जलालुद्दीन के दीवान के कर्मचारियों ने सामाने के प्रसिद्ध कवि मौलाना सिराजुद्दीन सावी से भी कर वसूल कर लिया। अन्य देहदारों[1] की भाँति उससे भी व्यवहार किया गया। मौलाना सिराजुद्दीन ने सुल्तान जलालुद्दीन की प्रशंसा में कुछ छन्द लिखे और उन्हें दीवान के कर्मचारियों के सम्मुख उपस्थित किया, किन्तु सुल्तान जलालुद्दीन ने उसके ऊपर कोई ध्यान न दिया और अपने कर्मचारियों को उसे कष्ट पहुँचाने से न रोका। मौलाना सिराजुद्दीन सावी ने उस कष्ट से दुःखी होकर ख़लजीनामे की रचना की और उसमें सुल्तान जलालुद्दीन की बड़ी निन्दा की। वह ख़लजी-नामा जिसमें सुल्तान जलालुद्दीन की निन्दा भरी थी सुल्तान को उसी समय जबकि वह नायब था प्राप्त हो गया।

(१९५) सिराजुद्दीन सावी को ज्ञात हुआ कि सुल्तान उससे बदला लेना चाहता है। वह भयभीत होकर सामना छोड़कर दूसरी ओर चल दिया।

---

१. ग्राम के अधिकारियों।

उस समय जबकि सुल्तान जलालुद्दीन सामाने का नायब तथा कैथल का मुक़्ता था, उस ने कैथल के मण्डाहरों के एक गाँव का विनाश करा दिया। उस पकड़ धकड़ और मारकाट में एक मण्डाहर ने सुल्तान का तलवार से मुक़ाबिला किया। सुल्तान के मुँह पर तलवार के ऐसे दो हाथ लगाये कि घाव का निशान सुल्तान के चेहरे से आजीवन न मिट सका। जब सुल्तान जलालुद्दीन बादशाह हुआ और उसको बादशाही करते एक वर्ष हो चुका तो मौलाना सिराजुद्दीन सावी और कैथल का वह मण्डाहर अपनी-अपनी जानों से हाथ धोकर और लोगों से विदा होकर अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए सुल्तान के दरबार मे पहुँचे। वे अपनी गर्दनें रस्सी मे बाँध कर सुल्तान जलालुद्दीन के दरबार मे खड़े हो गये। सुल्तान जलालुद्दीन को उन लोगों के आने तथा मृत्यु की प्रतीक्षा करने के समाचार पहुंचाये गये। सुल्तान ने उसी समय उन्हें अपने सम्मुख बुलवाया। मौलाना सिराजुद्दीन सावी के सामने खड़े होकर उसका आलिगन किया। उसे खिलअत प्रदान की और अपना विशेष नदीम (मुसाहिब) नियुक्त किया। उसका गाँव उसे वापस कर दिया और दूसरा गाँव भी उसकी इनाम की भूमि मैं मिला दिया। उसने आदेश दिया कि उसी समय दोनों गाँव के प्रदान किये जाने से सम्बन्धित आदेश लिखकर पत्र वाहकों के हाथ उसके पुत्रों के पास सामाने भेज दिये जायं। तत्पश्चात् अपराधी मण्डाहर को अपने सम्मुख बुलवाया। उसको सम्मानित करते हुये खिलअत, घोडा और इनाम प्रदान किये। जो लोग उपस्थित थे उनसे कहा कि "मैंने अपने जीवन मे न जाने कितने लोगों से युद्ध किया है और न जाने कितने लोगों की हत्या की है, किन्तु मैंने इस मण्डाहर के समान कोई अन्य वीर नहीं देखा।"

(१९६) उसका वेतन एक लाख जीतल निश्चित किया और आदेश दिया कि उसे मलिक खुर्रम के अधीन वकीलदर नियुक्त किया जाय। वह मण्डाहर भी मलिक खुर्रम तथा अन्य प्रतिष्ठित मित्रों के साथ राजसिहासन के सम्मुख सलाम को हाजिर होता रहे। उपर्युक्त बातों को सुनकर देहली के गण्य मान्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने सुल्तान के लिये भगवान् से प्रार्थना की और उसकी क्षमा की कहानियाँ संसार में शेष रह गईं और इतिहास मे लिखे जाने योग्य हो गईं।

अलमुजाहिद फ़ी सबी लिल्लाह की पदवी

सुल्तान की सत्यवादी बातों में से एक प्रसिद्ध बात यह है कि उसका अपनी बादशाही के समय मे यह विचार हुआ कि उसने मुगलों से वर्षो तक जिहाद किया है, यदि उसे जुमे के खुतबों में अलमुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह[1] कहा जाय तो उचित होगा। सुल्तान ने अपने पुत्रो की माता मलिकये जहाँ से कहा कि जब क़ाज़ी तथा सद्र किसी शुभ कार्य विवाह आदि की बधाई के लिये महल मे आयें तो उनसे वह सन्देश कहा जाय और उनसे कहा जाय कि वे मुझसे प्रार्थना करें कि मै उनको इस बात की आज्ञा दे दूँ कि वे मुझे खुतबों में अलमुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह कहा करें।

भगवान की दया से उन्ही दिनों में सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन की पुत्री का विवाह क़द्रखाँ से हो गया। सद्र और प्रतिष्ठित व्यक्ति शाहज़ादे के विवाह की बधाई के लिये महल में गये। जब वे बधाई दे चुके तो मलिकये जहाँ ने जिस प्रकार सुल्तान ने उससे कहा था, देहली के सद्रों को सदेश भेजा कि तुम लोग सुल्तान से निवेदन करो कि वह खुत्बों में अलमुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह की पदवी धारण कर लें। शहर के सद्रों ने मलिकये जहां के सन्देश की बड़ी प्रशंसा की और कहा कि "यह बड़ा उचित और आवश्यक है कि ऐसे बादशाह को जिसने वर्षों तक मुग़लों से युद्ध किया है, अलमुजाहिद फ़ीसबीलिल्लाह कहा जाय।"

१. भगवान् के लिये युद्ध करने वाला।

जब महीने की पहली चाँद रात को सद्र और शहर के गण्य मान्य व्यक्ति सुल्तान को बधाई देने गये और सुल्तान ने उन्हें दस्त बोस करने की आज्ञा देकर सम्मानित किया तो क़ाज़ी फ़ख़रुद्दीन नाक़ेला ने जो कि अपने समय का अल्लामा (आचार्य) था उपर्युक्त विषय पर एक प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया। सद्रों तथा उपस्थित व्यक्तियों की इच्छा चाऊशों ने ऊँचे स्वर में प्रकट की और निवेदन किया कि सुल्तान जुमे के दिन अपने आपको मिम्बर से अलमुजाहिद फ़ीसबी.लिल्लाह कहने की आज्ञा प्रदान करे।

(१९७) सुल्तान जलालुद्दीन ने जब यह प्रार्थना सुनी तो समझ गया कि मलिकये जहाँ ने इन लोगों से ऐसा करने के लिए कहा है। सुल्तान की आँखें डबडबा आईं। उसने सद्रों से कहा कि "मैंने महमूद की माता अर्थात् मलिकये जहाँ से कहा था, कि तुम लोगों से इस विषय में निवेदन करे कि तुम लोग मुझसे इस प्रकार का आग्रह करो। तत्पश्चात् मैंने इस विषय पर स्वयं तीन चार दिन तक सोच विचार किया। मुझे यह याद नहीं कि मैंने कभी भी अपने जीवन में बिना किसी स्वार्थ अथवा लालच के केवल भगवान् के लिये तलवार चलाई हो या भगवान् के शत्रुओं पर कोई तीर फेंका हो या भगवान के लिये युद्ध किया हो।

मैंने उसी समय अपनी आकांक्षा से लज्जित होकर पश्चात्ताप किया था। मैंने मुग़लों से जितने भी युद्ध किये, वे सब के सब अपने नाम तथा प्रसिद्ध होने के लिए किये। मेरे सामने अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने का विचार प्रबल रहा। सत्य के लिये जिस प्रकार जिहाद करना चाहिए तथा अपने प्राणों की बलि देनी चाहिये, मैंने वैसा नही किया।" शहर के सद्रों ने इस विषय में प्रयत्न और आग्रह किया, किन्तु सुल्तान ने इसकी आज्ञा न दी कि उसे खुतबों में अलमुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह कहा जाय।

सुल्तान का कला से प्रेम

सुल्तान की प्रत्यक्ष एवं हार्दिक सच्चाई उपर्युक्त बातों से भलीभाँति स्पष्ट होती है। सुल्तान जलालुद्दीन को कला से बड़ा प्रेम था और कलाकारों को वह आश्रय देता था। वह कविता भी कर सकता था और ग़ज़ल तथा दुबैती[1] लिख सकता था। उसके कला से प्रेम का इससे स्पष्ट प्रमाण और क्या हो सकता है कि अमीर खुसरो जो कि प्राचीन तथा अपने समकालीन कवियों में सर्वश्रेष्ठ था, उस का उसी समय से कृपा पात्र था, जबकि सुल्तान अर्ज़े ममालिक था। सुल्तान उसका बड़ा आदर सम्मान करता था। एक हज़ार दो सौ तनके जो कि अमीर खुसरो के पिता का वेतन था, वही उसने अमीर खुसरो के लिए निश्चित किये थे। अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति से उसे घोड़े, वस्त्र और इनाम देता था।

(१९८) जब वह बादशाह हुआ तो अमीर खुसरो उसके दरबार का विश्वास पात्र बन गया। उसे मुसहफ़दारी[2] का पद प्रदान किया गया। जो खिलअत बड़े-बड़े अमीरों को प्रदान की जाती वही अमीर खुसरो को भी श्वेत पेटी के साथ प्रदान की जाती थी।

मलिक सादुद्दीन मन्तक़ी जिसकी मीठी मीठी बातों पर सभी लोग लट्टू रहते थे, पहले एक क़लन्दर था। उसे सुल्तान ने बहुत बड़ा अमीर बना दिया और नयाबत क़रीबगी तब्ल[3] पताका और अक़्ता प्रदान किये। सुल्तान के उत्तम स्वभाव ऊँचे चरित्र और दिल की सफ़ाई के कारण उसकी भोग विलास की महफ़िलों में एक से एक बढ़ कर व्यक्ति अद्वितीय, नदीम, सुन्दर साक़ी, युवतियां और रमणियाँ तथा चित्ताकर्षक गायक एकत्र हो

१ एक प्रकार की कविता।

२ शाही पुस्तकालय की देख रेख करने वालों का अफ़सर।

३ बहुत बड़ा अमीर नियुक्त किया तथा राजसीय चिह्न प्रदान किये।

गये थे। ऐसे लोग केवल स्वर्ग ही में मिल सकते थे। सुल्तान ने अपने उच्च स्वभाव तथा चरित्र के कारण मदिरापान की महफ़िलों में शाही आतंक को बिल्कुल त्याग दिया था। अपने मित्रों को उसने आज्ञा दे दी थी कि वे अपने घरों से दरबारी कपड़े मोज़ा आदि उतार कर बारानी[1] पहनकर आयें और निश्चिन्त होकर बैठें।

उसकी महफ़िल के साथी एक दूसरे से बिना डर और भय के बातचीत और हंसी मज़ाक़ करते थे। सुल्तान अपने कुछ साथियों के साथ चौरस खेलता तो कुछ के साथ शतरंज। लोग उसके साथ खेलते समय उससे किसी प्रकार से न झिझकते और उन्हें किसी बात का भय न रहता। वे अपने आपको महफ़िल में तथा महफ़िल के बाहर सुरक्षित समझते। न तो उसके मित्रों को और न अन्य लोगों को अत्याचार अथवा बन्दी बनाये जाने का भय था।

सुल्तान की महफ़िल के निम्नांकित साथी थे। मलिक ताजुद्दीन कूची, मलिक अइज़्ज़ुद्दीन ग़ौरी, मलिक क़ीर, मलिक नुसरत सुबाह, मलिक अहमद चप, मलिक कमालुद्दीन अबुल मआली, मलिक नसीरुद्दीन कुहरामी और मलिक सादुद्दीन मन्तक़ी।

(१९९) उपर्युक्त मलिकों के समान व्यक्ति जो सब हँसी मजाक़ की बातों में सब से बढ़ चढ़कर और बड़े उत्तम स्वभाव के थे, वे सुल्तान की महफ़िल मे मदिरापान करते थे। उनमें से प्रत्येक स्वयं महफ़िलें करने, मीठी-मीठी बातें करने, चुटकुले कहने और कविता पढ़ने में अद्वितीय था। उनका मुक़ाबला न तो महफिल में कोई कर सकता था और न रणक्षेत्र में।

सुल्तान के नदीम, साक़ी, गायक आदि

ताजुद्दीन इराक़ी, अमीर ख़ुसरो, मुईद जाजर्मी, पिसरे ऐबक दुआगो, मुईद दीवाना, सद्र आली, अमीर अरसलां कुलाही, इख़्तयार बाग और ताज ख़तीब उसके नदीम थे। उनका मुकाबला कविता, गद्य रचना, इतिहास के ज्ञान, कला और बुद्धिमत्ता मे कोई अन्य अमीर न कर सकता था। अमीर ख़ासा और हमीद राजा सुल्तान की महफ़िलों मे नई गजलें पढते। प्रत्येक दिन अमीर ख़ुसरो उसकी महफ़िल मे नई गजल लाता था। सुल्तान, अमीर ख़ुसरो की गजलों पर आसक्त था, और उसे बहुत धन सम्पत्ति प्रदान किया करता था। सुल्तान की महफ़िल के साक़ी हैबतख़ाँ और निजाम ख़रीतादार के पुत्र थे। यल्दुज उनका सरदार था। उनके सौन्दर्य, ख़ूबसूरती और कृत्रिम भाव पर प्रत्येक धर्मनिष्ठ तथा नमाज़ी परहेज़गार सब कुछ त्याग कर अपनी कमर मे जुन्नार[2] बाँध लेता, और उन अद्वितीय तोबा (प्रतिज्ञा) तुड़वा डालने वालों के प्रेम मे नमाज पढने की चटाई को मधुशाला में पहुंचा कर बिछवा देता और वहीं जम जाता। उनके प्रेम मे सभी लोग अपना सर्वस्व लुटाकर बरबाद और बदनाम हो जाते।

सुल्तान के गायकों मे से मुहम्मद सना चंगी ढोल बजाता और फ़ुतूहा, फ़क़ाई की पुत्री, एवं नुसरत ख़ातून गाना गाती। उनके सुन्दर और मनोहर स्वर पर चिड़ियाँ हवा से नीचे उतर आती थी। सुनने वाले होश हवास खो देते, दिल बेक़ाबू हो जाता। प्राण तथा हृदय टुकड़े-टुकड़े हो जाता। दुख़्तर ख़ासा, नुसरत बीबी, मेहर अफ़रोज़ इतनी सुन्दर तथा कृत्रिम भाव वाली युवतियाँ थी, कि जिस ओर देखतीं या जो नाज़ व अन्दाज़ दिखाती। उस पर लोग लट्टू हो जाते थे। वे सुल्तान की महफिल में नृत्य करतीं। जो कोई उनका नृत्य अथवा कृत्रिम भाव देख लेता उसकी इच्छा यही होती कि वह अपने प्राण उनपर निछावर करदे, तथा जब तक जीवित रहे अपनी आखें उनके तलुओं में मलता रहे। सुल्तान की महफ़िल इतनी उत्तम थी कि उसके समान किसी ने स्वप्न मे भी न देखी थी।

---

१. एक प्रकार का लबादा जो घरों पर पहना जाता था।

२. वह पेटी जो धार्मिक ईसाई कमर मे बाँधते हैं। जनेऊ के लिये भी जन्नार शब्द का प्रयोग होता है।

(२००) अमीर खुसरो जो कि सुल्तान की महफ़िल के नदीमों का नेता था, प्रत्येक दिन उन रमणियों तथा युवतियों की सुन्दरता, मनोहर छवि, नाज़ व अन्दाज़, कृत्रिम भाव और इमरदों[1] के विषय में, जिनके कपोलों पर अभी तक रोयें न जमे थे, और जो युवतियों के समान मनोहर थे, नई नई ग़ज़लों की रचना करता। साक़ियों के मदिरापान करते समय तथा युवतियों, रमणियों और इमरदों के नाज़ व अन्दाज़ एवं कृत्रिम भाव दिखाने के समय अमीर खुसरो की ग़ज़लें पढ़ी जातीं।

इन अद्वितीय महफ़िलों में उन लोगों को भी प्रोत्साहन मिलता जो पूर्णतया निराश हो चुके थे। परेशान लोगों को दूसरा जीवन मिल जाता। विलासी अपने आप को स्वर्ग में पाते। नाज़ुक मिज़ाज लोग सब कुछ भूल जाते। उसकी महफ़िलें ऐसी होती थीं जहाँ हूरों को केवल द्वार पर बैठने तथा परियों को झाड़ू देने की आज्ञा दी जा सकती थी। केवल बड़े से बड़े पत्थर दिल वाले ही उन्हें देखकर बदमस्त न होते थे।

बरनी के सुल्तान के भोग विलास की महफ़िलों के विषय में विचार

मैं मार्ग भ्रष्ट वृद्ध जो कि इस समय पूर्णतया निराश हो चुका हूं और जब कि मेरी थोड़ी ही सी साँसें शेष हैं, तो उपर्युक्त महफ़िलों की प्रशंसा लिखते समय मेरी यह इच्छा हुई कि, मैं उन सुन्दरियों, युवतियों, रमणियों तथा युवकों को याद कर लूँ, जिनमें नाज़ व अन्दाज़ और कृत्रिम भाव भरे पड़े थे। मैं ने उनमें से कुछ के नाज़ व अन्दाज़ तथा कृत्रिम भाव देखे हैं। कुछ का गाना एवं नृत्य देखा है। मेरा जी चाहता है कि उनकी याद में जुन्नार बाँध लूँ और ब्राह्मणों का टीका अपने दुष्ट माथे पर लगाकर तथा अपना मुँह काला करके सुन्दरता के बादशाहों और खूबसूरती के आकाश के सूर्यों की याद में गलियों तथा बाज़ारों में मारा मारा फिरूँ।

(२०१) आज साठ वर्ष पश्चात् जबकि मैं उन्हें नहीं पाता तो जी चाहता है कि रोते चिल्लाते वस्त्र फाड़ते सिर व दाढ़ी के बाल नोंचते हुये, उनकी क़ब्र पर पहुंच कर अपने प्राण त्याग दूँ। मुझे अपने ऊपर बहुत ही शोक है कि न मैं धर्म के कार्य के योग्य रहा और न दुनियां के। मुझे तो अपने उच्च स्वभाव और उत्कृष्ट चरित्र के कारण बहुत ऊँचे स्थान पर होना चाहिये था, किन्तु आज जब मैं वृद्ध, बेकार, असहाय और दरिद्र होगया हूं तो पश्चाताप तथा शोक प्रकट करने के अतिरिक्त मेरे पास और कोई कार्य नहीं। निम्नांकित छन्द जिसमें मेरी दशा का पूर्णतया उल्लेख है पढ़ा करता हूं।

न मैं काफ़िर हूं और न मैं मुसलमान। न मेरे अधिकार में मेरा हृदय है और न मेरा धर्म।

मेरे हृदय के विषय में भगवान् ही को ठीक मालूम है कि वह क्या है। न मुझे कोई आशा ही है और न मुझे अपनी मुक्ति का विश्वास है। मेरे विश्वास के मार्ग में हज़ारों जगह विघ्न पड़ चुका है। मैं कहाँ जाऊँ और अपनी दशा का किससे वर्णन करूँ। न मैं किसी स्थान पर जाने के योग्य हूं और न बैठने के क़ाबिल। मेरे लिये संसार का पूरब और पश्चिम चींटी के सीने के समान है। मेरे लिये आकाश और पृथ्वी अँगूठी के छल्ले की तरह संकुचित हैं। केवल भगवान् ही मेरे कष्टों को दूर कर सकता है। मैं बहुत ही व्याकुल, शोक तथा कष्ट में हूं।

मैं सुल्तान जलालुद्दीन का उल्लेख पुनः आरम्भ करता हूं। उसकी नैतिकता, चरित्र उत्तम स्वभाव और उत्कृष्ट गुणों का स्पष्ट खुला हुआ और दृढ़ प्रमाण उस उल्लेख से बढ़कर नहीं हो सकता, जो कि मैंने अभी सुल्तान की महफ़िलों का किया है।

सुल्तान जलालुद्दीन के समय के आलिम

(२०२) जलाली राज्यकाल में अनेक कलाकार, तथा विद्वान् एकत्रित थे। विद्वानों में

---

१. किशोर।

मलिक क़ुतुबुद्दीन अलवी, मलिक ताजुद्दीन कुहरामी, मलिक मुईद जाजर्मी, मलिक सादुद्दीन अमीर बहर, ख्वाजा जलालुद्दीन अमीर चह नायब वज़ीर, मौलाना जलालुद्दीन भक्खरी, मुस्तौफ़ी ए-ममालिक, सबसे बढ़े चढ़े थे। वे बड़े-बड़े पदों तथा ऊँची ऊँची सेवाओं पर नियुक्त थे। जिस समय वे अपने अपने दीवान के उच्च पदों पर विराजमान होते हुये कोई आज्ञा देते अथवा कोई बात कहते तो वह शरा के अनुकूल होती थी। उस बादशाह के राज्य काल में किसी पदाधिकारी की प्रजा से निष्ठुर व्यवहार करने का साहस न होता था। यदि कोई शरा की आज्ञाओं के विरुद्ध लोगों के साथ व्यवहार करता तो सभी उससे घृणा करने लगते और कोई भी उस पर विश्वास न करता।

जलाली मलिक

जलाली राज्य काल में कुछ मलिक अपनी नैतिकता, उत्कृष्ट गुणों, उत्तम प्रकृति, सचरित्रता के लिये प्रसिद्ध थे, इन मलिकों में से एक मलिक क़ुतुबुद्दीन अलवी था, जो नायब मलिक नियुक्त होगया था। वह बड़ा पराक्रमी और अत्यन्त दानी था। वह लोगों से ऐसे अच्छे ढँग से व्यवहार करता था कि फिर कभी इतने बड़े अधिकारी के लिये इतने अच्छे ढंग से व्यवहार करना सम्भव न हो सका। हिम्मत की बलन्दी उसके स्वभाव में वर्त्तमान थी। उस समय जबकि लोगों के पास सोने चाँदी का अभाव था, उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र के विवाह पर दो लाख तनके खर्च किये, निकाह के दिन सौ सजे हुए घोड़े दान किये, हज़ार आदमियों को टोपी और कपड़े पहनाये। वह आजीवन दान और पुण्य में लगा रहता था।

जलाली राज्यकाल के उत्तम मलिकों में से, मलिक अहमद चप नायब अमीर हाजिब भी था, वह राज्य व्यवस्था के संचालन तथा शासन नीति समझने में अद्वितीय था। राज्य व्यवस्था के लिये जो कुछ भी उचित तथा आवश्यक होता वह उसके हृदय में तुरन्त आजाता। बुद्धिमत्ता तथा धनुष बाण चलाने में वह अपने काल में सबसे बढ़ चढ़ कर था। ख़ाक़ानी की कविता संग्रह को बड़ी अच्छी तरह समझता था, सुल्तानों के इतिहास का उसे ज्ञान था और उसकी सूझ बूझ भी बड़ी उत्तम थी।

(२०३) वह शतरंज ख़ूब खेलता था, बड़ा पराक्रमी था, एक रात्रि में सुल्तान की महफ़िल के नदीमों और गायकों को मेहमान बुलवाता, एक लाख तनका इनाम देता, दो या तीन सौ आदमियों को टोपियाँ और सैकड़ों सजे हुए घोड़े दान करता। क्योंकि उसमें बहुत से गुण थे, अतः उसकी नायब बार्बकी का ऐश्वर्य और सम्मान सबसे बढ़ चढ़ कर था। उसके चरित्र की उत्कृष्टता का उल्लेख सम्भव नहीं, जलाली राज-भवन के सभी लोग उसके इशारों पर नाचते थे।

मलिक ताजुद्दीन कूची तथा उसका भाई मलिक फ़खरुद्दीन कूची समस्त जलाली राज्यकाल में बड़े प्रतिष्ठित थे और बड़ी-बड़ी अक़्ताओं के स्वामी थे। मलिक ताजुद्दीन बड़प्पन नेतृत्व, हंसी मज़ाक़ और बोल चाल में अद्वितीय था। ऐसा मालूम होता था कि भाग्य ने सरदारी और मलिकी के वस्त्र उसके शरीर के अनुकूल सिये हैं। भगवान् ने बड़े-बड़े अमीरों के जितने गुण हो सकते थे, अर्थात् आदमी की पहिचान करना, कला से प्रेम, महफ़िलों और रणक्षेत्र में सब से बढ़ चढ़ कर होना, उसमें भर दिये थे। भगवान् ने उसको दया, धर्म, उच्च स्वभाव और अनेक विचित्र बातें प्रदान की थीं। जलाली राज्यकाल में वह अवध की अक़्ता का स्वामी था, उसका भाई मलिक फ़खरुद्दीन सुल्तान का दादबक था। वह सुल्तान के साथ उठने बैठने वालों तथा उसको परामर्श देने वालों में से था। दोनों भाई मलिक और मलिक ज़ादे थे और मलिकी एवं बड़प्पन के अनुसार कार्य करते थे। इसके उपरांत कोई अन्य ऐसा मलिक फिर दृष्टिगोचर नहीं हुआ जो दान, वीरता, नेतृत्व तथा सरदारी में उनके समान होता।

(२०४) शहर के प्रतिष्ठित और बड़े बड़े आदमी उनसे मिलना अपने लिये बहुत गर्व का विषय समझते थे। उनकी महफ़िलों में भिन्न-भिन्न कलाओं में दक्षता रखने वाले जो कि राजधानी में प्रसिद्ध थे, सदैव वर्त्तमान रहते थे। दोनों भाई कुलीन, आदर और सम्मान के योग्य व्यक्तियों तथा कलाकारों का मूल्य भली भाँति समझते थे। वे अपनी सरदारी और बड़प्पन के लिये सर्वदा प्रसिद्ध रहे।

मलिक नुसरत सुबाह अपने दान पुण्य, अच्छी-अच्छी और मीठी-मीठी बातों तथा हँसी मज़ाक़ करने, मलिकी और मलिक ज़ादगी एवं कलाकारों और प्रतिष्ठित लोगों को आश्रय देने के कारण समस्त जलाली राज्यकाल में प्रसिद्ध था। अत्यधिक दान पुण्य के कारण उसे दूसरा अलाए किशली ख़ाँ कहा जाता था। वह जिस महफ़िल में बैठता, उपस्थितगण उसकी मीठी-मीठी बातों को सुन कर तथा उसके हंसी मज़ाक़ को देखकर किसी दूसरी ओर आकर्षित न होते थे और न किसी दूसरे स्थान पर जाने की उन्हें इच्छा होती थी। शहर और आस-पास के सभी गायक तथा विलासी उसके नौकर होगये थे। जो कोई भी उस मलिक तथा मलिक ज़ादे से जो कि दान पुण्य का भंडार था, जिस किसी चीज़ की भी इच्छा करता, तो सैकड़ों आपत्तियों और कठिनाइयों पर भी जिस प्रकार सम्भव होता वह उधार लेकर, माँगने वाले को प्रदान करता। जिस दिन वह दान पुण्य न करता उस दिन वह अत्यन्त दुःखी रहता। ऐसा बहुत कम होता कि कोई भिखारी अथवा याचक उसके द्वार से निराश होकर लौटता। यद्यपि वह सरदावातदार तथा कानोड एवं जौबाला की अक़्ता का स्वामी था, और ७०० स्वार रखता था, किन्तु हमेशा ऋणी रहता था। तक़ाज़ा करने वाले, ऋणदाता उसके द्वार पर सर्वदा उपस्थित रहा करते थे। जिस महफ़िल में वह मेहमान होता या भोग विलास में तल्लीन होता, तो गायकों, ग़ज़ल पढ़ने वालों तथा रमणियों के सिरों पर तनके एवं जीतल की वर्षा कर देता।

ज़िया बरनी की अपने भाग्य से शिकायत

(२०५) मैं ऐसे दानी तथा दानी के पुत्र एवं दानी के पोते के दर्शन कर चुका हूँ। वह मेरे पिता के घर में मेहमान हुआ करता था। यद्यपि मैं इस समय बड़ा ही विवश तथा दरिद्र होगया हूँ और माँगने वाले मेरे द्वार से निराश होकर लौट जाते हैं, किन्तु मैं एक दानी का पुत्र हूँ। मृत्यु को इस दिन से हज़ार गुना अच्छा समझता हूँ। न मेरे पास कुछ रह गया है और न मुझे कोई ऋण ही देता है। रात दिन इसी चिन्ता में घुला और मरा करता हूँ, कि किसी को कुछ दान करूँ और दिरम अथवा दीनार प्रदान करूँ। यद्यपि इस इतिहास की रचना से मुझे कोई अन्य लाभ न भी पहुँचे, किन्तु मैं इसमें कुछ दानियों के दान पुण्य का उल्लेख कर रहा हूँ जिनके विषय में मैंने अपने पूर्वजों से सुना है और जिनमें से कुछ को अपनी आँखों से देखा है। इन दानियों के दान के उल्लेख से मेरे टूटे हुए हृदय को शान्ति एवं सन्तोष प्राप्त होता है। यद्यपि मैं मृतक शरीर के समान हूँ, किन्तु उनके नाम लेकर जीवन प्राप्त कर लेता हूँ।

जलाली राज्य काल की विशेषतायें

इस तारीख़े फ़ीरोज़ शाही के संकलन कर्त्ता ने जलाली राज्यकाल में क़ुरान ख़त्म किया और लिखना पढ़ना सीखा। मैंने उन बुद्धिमानों तथा भगवान् का भय रखने वालों से जो कि मेरे पिता के पास आते जाते थे, सुना है कि जलाली राज्य बड़ा ही विचित्र राज्यकाल हुआ है। वे यह बात मेरी पिता की महफ़िलों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी किया करते थे। वह ऐसा राज्य काल था, जिसमें लोगों को दुःख पहुँचाने, दूसरे की सम्पत्ति छीन लेने,

उनके मिल्क तथा वक़्फ़ पर क़ब्ज़ा करने, दूसरों की पैत्रिक सम्पत्ति के अपहरण तथा उनके माल, दौलत पर बुरी दृष्टि डालने एवं मुसलमानों से मार पीट तथा उन्हें बन्दी बनाकर धन सम्पत्ति प्राप्त करने की घटना कभी नही घटी। यदि इस राज्य काल में कोई पदाधिकारी कोई बात शरा के विरुद्ध करता या कहता तो उसे उसका बहुत बड़ा दोष समझा जाता, उस समय के जन साधारण और विशेष व्यक्तियों के हृदय में बादशाह तथा उसके नायबों एवं पदाधिकारियों के अत्याचार और ज़ुल्म का कोई विचार न उत्पन्न होता था। न बादशाह कभी अपनी नेकी तथा भगवान् से भय और न उसके सहायक अपनी विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता, दान, दया तथा शरियत के पालन के अतिरिक्त किसी अन्य चीज़ का प्रदर्शन करते। उस राज्यकाल में कमीनों, तुच्छ लोगों, कमअसलों, धूर्तों, बाज़ारियों, अयोग्य लोगों एवं उनकी सन्तान को कोई सम्मान प्राप्त न था।

(२०६) उस समय ऐसा कभी न हुआ कि कमीने तथा अयोग्य, सम्मानित एवं धन धान्य सम्पन्न हुए हों और इस प्रकार उनकी उन्नति से प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्तियों का रक्त खौलता हो। उस राज्यकाल में ऐसा भी कभी न हुआ कि कमीने लोगों को अधिकार प्रदान किये गये हों और धूर्तों को उच्च पदाधिकारी बनाया गया हो जिससे उस समय के दानियों और बुज़ुर्गों का खून खौलता। उस राज्यकाल में अधर्मियों, बदमज़हबों, दार्शनिकों तथा नास्तिकों को किसी स्थान में प्रवेश करने की आज्ञा न थी। ईर्ष्या रखने वालों को धनवान पुरुषों तथा दानियों की धन सम्पत्ति घट जाने से कोई लाभ न होता था। अत्याचार तथा अत्याचारियों के हाथ पैर इंसाफ़ की तलवार तथा न्याय की कटार से काट डाले जाते थे। प्रत्येक व्यक्ति निर्भीक होकर अपनी सम्पत्ति बाहर लेजा सकता था और उससे लाभ उठा सकता था। लोगों से जबरदस्ती कुछ वसूल करने तथा लोगों को कष्ट पहुँचाने के द्वार बिलकुल बन्द हो गये थे।

मैंने उस समय के बुज़ुर्ग लोगों से यह भी सुना है कि वे लोग मेरे पिता की महफ़िलों में इस बात पर शोक प्रकट किया करते थे तथा शिकायत किया करते थे कि, "लोग ऐसे शुभ तथा उत्कृष्ट राज्यकाल का मूल्य नहीं समझते और इसे भगवान् की बहुत बड़ी देन समझ कर सुख शान्ति का जीवन व्यतीत करने पर अपनी असावधानी तथा मूर्खता के कारण कृतज्ञता नहीं प्रकट करते थे। वे भगवान् की इतनी बड़ी देन के लिये उसके आभारी नहीं होते कि किस प्रकार उसने ऐसे भगवान् का भय रखने वाले मुसलमान बादशाह को उनका शासक बना दिया है। वे इतनी बड़ी देन के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन न करते हुए तथा कृतघ्नता के फलस्वरूप सुल्तान जलालुद्दीन के वृद्धि जीवन की भगवान् से प्रार्थना नहीं करते। कुछ ऐसे दुष्ट भी हैं जो कि अपार धन सम्पत्ति एकत्र कर लेने के फलस्वरूप तथा शान्तिमय जीवन व्यतीत करते हुए भी अपनी दुष्टता तथा अन्धेपन के कारण कहा करते हैं कि, "खलजी, बादशाही के योग्य नहीं। सुल्तान जलालुद्दीन राज्यव्यवस्था के नियम तथा नीति नहीं जानता। वे बादशाह में सैकड़ों त्रुटियाँ निकालते हैं, और उसके पदाधिकारियों की सैकड़ों बुराइयाँ करते हैं, शीघ्र ही ऐसा होगा कि उन दुष्टों और अकृतज्ञ लोगों की दुष्टता के फलस्वरूप देश की सभी प्रजा ऐसे निरंकुश, अभिमानी, अत्याचारी तथा मनमानी करने वाले बादशाह के चंगुल में फँस जायगी कि जिसको शरियत की आज्ञाओं की न तो जानकारी होगी और न तो वह उनका पालन करेगा। लोग विवश, दरिद्र, निर्धन और निस्सहाय हो जायेंगे।

(२०७) जिस समय ऐसा निरंकुश तथा अत्याचारी बादशाह राजसिंहासन पर आसीन हो जायगा जिसे अपनी अभिलाषा पूरी करने के अतिरिक्त किसी वस्तु की चिन्ता न होगी और वह उनके (निन्दा करने वालों के) सहायकों तथा मित्रों पर अत्याचार करके उनकी धन सम्पत्ति

नष्ट कर देगा और उनकी निश्चिन्त अवस्था का अन्त हो जायगा तो फिर उन्हें सुल्तान जलालुद्दीन तथा उसके पदाधिकारियों के कार्यों की याद आयेगी। वे लोग अपने अनुभव के अनुसार कहा करते थे कि दुष्टों को पालने वाला धूर्त समय कभी भी ऐसे नेक दानी, दयालु तथा भगवान् का भय रखने वाले बादशाह को भगवान् के दासों के सिर पर विद्यमान रहने के लिये जीवित नहीं छोड़ सकता। समय की आदत, परम्परा, अत्याचार, कुलीनों को दुःख और पीड़ा पहुँचाने तथा कलाकारों का शत्रु होने, कमीनों को आश्रय देने एवं उन्नति प्रदान करने का हाल बहुत पहले से लोगों को ज्ञात है। आकाश दिल और जान से ऐसे बादशाहों का मित्र होता है और राज सिंहासन पर ऐसे शासकों को विराजमान देखना चाहता है, जोकि दुष्ट, त्रुटिपूर्ण, कमीने, पतित, अत्याचारी, नीच प्रकृति वालों को उन्नति प्रदान करता हो, जिसके राज्य में कुलीनों एवं उनकी सन्तान को दुःख कष्ट तथा पीड़ा पहुँचती हो। दानियों, दाताओं, कुलीनों तथा गण्यमान्य व्यक्तियों को आश्रय देने वाले बादशाह को सदैव दुःख, कष्ट तथा परेशानी उठानी पड़ती है, कारण कि वे लोग आकाश की प्रकृति के विरुद्ध, दुष्टता, अत्याचार, कठोरता का प्रदर्शन नहीं करते। धर्म तथा राज्य के बुज़ुर्गों को उपर्युक्त वार्ता किये हुए अधिक दिन नहीं व्यतीत हुए थे कि दुष्टों तथा धूर्तों को आश्रय देने वाले आकाश ने सुल्तान जलालुद्दीन जैसे बादशाह को, जिसका स्वभाव अमृत तुल्य था तथा जिसके समय में इस्लाम की धार्मिक एवं अन्य बातों को विशेष उन्नति प्राप्त होरही थी, सुल्तान अलाउद्दीन के हाथों, जोकि बड़ा ही कठोर और अत्याचारी था, खुल्लम खुल्ला मरवा डाला।

(२०८) सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने आश्रयदाता के विरुद्ध वह अत्याचार किया जोकि यहूदी और ज़िन्दीक़ अधर्मी भी न कर सकते थे। वह वर्षों तक राजसिंहासन पर विराजमान रहा और उसको उन्नति प्राप्त होती रही। उसके राज्य के ख़ास व आम को आकाश ने ऐसा मज़ा चखवा दिया कि किसी को भी उसकी कठोरता के कारण बोलने का साहस न होता था।

सीदी मौला की हत्या

सुल्तान जलालुद्दीन में अत्यधिक नेकी, दान और दया के होते हुए भी जलाली राज्य काल में एक बहुत बड़ी दुर्घटना यह हुई कि सीदी मौला को हाथी के पैर के नीचे कुचलवा दिया गया[1]। उसकी हत्या के पश्चात् जलाली वंश छिन्न-भिन्न हो गया। सीदी मौला की हत्या का उल्लेख इस प्रकार है: सीदी मौला ऊपर के (उत्तरी पश्चिमी सीमा) प्रदेशों का निवासी था। सुल्तान बलबन के राज्य काल के प्रथम वर्षों में वह शहर (देहली) में आया। वह बड़े विचित्र ढंग से जीवन व्यतीत करता था। खर्च करने तथा खिलाने पिलाने में उसके बराबर कोई न था, किन्तु जुमा मस्जिद में वह जुमे की नमाज़ पढ़ने न जाता था। यद्यपि वह नमाज़ पढ़ता था किन्तु जिस प्रकार धर्मनिष्ठ बुज़ुर्गों ने आज्ञा दी है उस प्रकार वह जमाअत (सामूहिक) की नमाज़ न पढ़ता था। वह बहुत मुजाहिदत तथा रियाज़त[2] किया करता था। साधारण वस्त्र तथा चादर पहनता था। रूखी और साधारण रोटी का भोजन करता था। उसके कोई स्त्री, दास अथवा दासी न थी। वह विलासिता के कभी निकट भी न गया था। किसी से कुछ न लेता था, तब भी इतना धन खर्च करता कि लोग सर्वदा

---

१. जलालुद्दीन छज्जू का विद्रोह शान्त करने के उपरान्त २ फ़र्वरी १२९१ ई० को लौटा और रणथम्बोर पर आक्रमण के लिए २२ मार्च १२९१ ई० को रवाना हुआ। अतः यह घटना इसी बीच में घटी होगी।

२. अत्यधिक नमाज़ पढ़ना तथा रोज़े रखना एवं भगवान् का भजन करना।

आश्चर्य किया करते थे। अधिक लोगों का विश्वास था कि सीदी मौला को कीमिया[1] का ज्ञान है। उसने अपने द्वार के सामने एक विशाल ख़ानक़ाह बनवाई थी। वह हज़ारों ख़र्च करता और बहुत से लोगों को खाना खिलाता। जल तथा स्थल मार्ग से यात्रा करने वाले यात्री उसकी ख़ानक़ाह में पहुँचा करते थे और उन्हें भोजन दिया जाता था। उसके दस्तरख़्वान पर नाना प्रकार के ऐसे भोजन चुने जाते जोकि बहुत बड़े-बड़े ख़ानों और मलिकों को भी प्राप्त न थे। उसकी ख़ानक़ाह में बड़ी भीड़ जमा होती थी। हज़ारों मन मैदा; ५०० जानवरों का मांस; २००, ३०० मन शकर; १००, २०० मन मिश्री ख़रीदी जाती। उसकी ख़ानक़ाह के द्वार के सामने भीड़ जमा रहती।

(२०९) उसे कोई गाँव या धन सम्पत्ति राज्य की ओर से न प्राप्त थी। किसी से .फ़ुतूह[2] भी न लेता था। यह बात चिर प्रसिद्ध है कि उसे यदि किसी व्यापारी को किसी वस्तु का मूल्य अदा करना होता या किसी को कुछ प्रदान करना पड़ता तो वह उनसे कह देता कि, "जाओ उस पत्थर या उस ईंट के नीचे इतने चाँदी के तनके रक्खे हुए हैं, उन्हें लेलो।" वे वैसा ही करते। किसी ताक़ अथवा पत्थर या ईंट के नीचे से ऐसे सोने तथा चाँदी के तनके मिल जाते जैसे कि उन्हें टकसाल से अभी-अभी निकाला गया हो और वे अभी-अभी बनाये गये हों।

जलाली राज्य काल में इस इतिहास के संकलन कर्त्ता का पिता अर्कली ख़ाँ का नायब था। उसने किलोखड़ी में एक विशाल भवन का निर्माण कराया था। मैं उस स्थान से अपने गुरुओं तथा मित्रों के साथ सीदी मौला के दर्शन को जाया करता था। मैं उसके दर्शन भी कर चुका हूँ और उसके साथ भोजन भी कर चुका हूँ। सीदी मौला के द्वार पर भीड़ रहा करती थी। अमीर, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्ति बराबर आया जाया करते थे। मैंने यह भी सुना है कि जिस समय सीदी मौला देहली आरहा था, वह शेख़ फ़रीद[3] के पास अजुधन में गया। दो तीन दिन उनकी सेवा में रहा। एक दिन शेख़ फ़रीद ने उससे कहा कि, "ऐ सीदी तू देहली जारहा है; वहाँ पहुँच कर नाम पैदा करना और अपने पास सर्व साधारण को एकत्रित करना चाहता है। तू जो उचित समझे वह कर सकता है किन्तु मेरी एक बात का विशेष ध्यान रखना। मलिकों तथा अमीरों से मेल जोल न रखना। यदि वे तेरे निवास स्थान पर आयें तो इसे अपने लिये घातक समझना कारण कि जो दरवेश भी मलिकों तथा अमीरों से मेल जोल रखता है उसका अन्त बड़ा खराब होता है।" सुल्तान बलबन के राज्य काल में, जबकि राज्य सुव्यवस्थित था, सीदी मौला, अधाधुंध ख़र्च करने, प्रतिष्ठित व्यक्तियों को दस दस पचास पचास हज़ार तनके प्रदान करने पर भी मलिकों तथा अमीरों से मेल जोल बढ़ाने में सफल न हो सका। मुइज़्ज़ी राज्य काल में सभी असावधान तथा बेख़बर थे। सीदी ने मनमाना ख़र्च आरम्भ कर दिया। लोग बहुत बड़ी संख्या में उसके द्वार पर आने जाने लगे।

(२१०) जलाली राज्य काल में उसे और उन्नति प्राप्त होगई। सुल्तान जलालुद्दीन का ज्येष्ठ पुत्र ख़ानेख़ानाँ उसका बहुत बड़ा भक्त तथा विश्वासपात्र होगया था। सीदी उसे अपना पुत्र कहा करता था। उसके अमीर तथा पदाधिकारी सीदी की सेवा में विशेषकर आया जाया करते थे। क़ाज़ी जलाल काशानी, जो कि बड़ा प्रतिष्ठित क़ाज़ी था किन्तु उसके साथ साथ बड़ा धूर्त भी था, सीदी का बड़ा प्रेमी बन चुका था। सीदी की ख़ानक़ाह में दो तीन पहर

---

१. एक प्रकार की औषधि जिसके लिये प्रसिद्ध है कि उससे सोना बनाया जा सकता है।

२. वह उपहार जो सूफ़ियों तथा अन्य धार्मिक लोगों को बिना माँगे प्रदान किया जाता है।

३. शेख़ फ़रीद की मृत्यु १२७१ ई० में हुई वे कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी के शिष्य थे और सूफ़ियों के चिश्ती सिलसिले से सम्बन्धित थे।

रात तक उपस्थित रहता। दोनों एकान्त में वार्त्ता किया करते थे। बलबनी मौला-ज़ादे, जो कि मलिकों तथा अमीरों के पुत्र थे और जलाली राज्य काल में दरिद्र होगये थे और जिनके पास काई अक़्ता न रह गई थी, बहुत बड़ी संख्या में सीदी की ख़ानक़ाह में आने जाने लगे। कोतवाल बिरंजतन और हतिया पायक बलबनी राज्य काल में बड़े वीर तथा पहलवान समझे जाते थे और इनका वेतन एक लाख जीतल तक था। वे जलाली राज्य काल में रोटियों को मुहताज होगये थे। वे सीदी के पास आने जाने लगे। प्रतिष्ठित पदच्युत अमीर भी वहीं पहुँचने लगे। वे रात में वही सोते थे और वह उन्हें कुछ न कुछ प्रदान किया करता था। लोग यह समझते थे कि सर्व साधारण उसकी सेवा में श्रद्धा होने के कारण आते जाते हैं। अन्त में यह ज्ञात हुआ कि क़ाज़ी जलाल काशानी बलबनी खानों तथा मलिकों के पुत्र, कोतवाल बिरंजतन तथा हतियापायक रात रात भर सीदी के पास बैठ कर षड़यन्त्र रचा करते हैं। सम्भव है कि वे विद्रोह करदें। कोतवाल बिरंजतन तथा हतिया पायक ने यह निश्चय किया कि जुमे के दिन जब सुल्तान सवार होकर निकले तो फ़िदाइयों[1] की भाँति उस पर प्रहार करके उसकी हत्या करदें। इस प्रकार उपद्रव करके वे सीदी मौला को ख़लीफ़ा बनाना चाहते थे। उनका विचार था कि सुल्तान नासिरुद्दीन की पुत्री का विवाह सीदी मौला से कर दिया जाय; क़ाज़ी जलाल को क़ाज़ी ख़ाँ की उपाधि देकर मुल्तान की अक़्ता प्रदान की जाय; राज्य के ऊँचे ऊँचे पद तथा अक़्ता बलबनी ख़ानज़ादे एवं मलिक-ज़ादे आपस में बाँट लें।

(२११) एक प्रतिष्ठित व्यक्ति, जो बकवादी भी था, उनके षड़यन्त्र में सम्मिलित था। वह उनका विरोधी बन गया। उसने इस होने वाले उपद्रव की सूचना सुल्तान जलालुद्दीन तक पहुँचा दी। सीदी तथा सभी अपराधी गिरफ़्तार कर लिये गये। उन्हें सुल्तान के सामने पेश किया गया। सुल्तान ने उन से सच सच हाल मालूम करने का बड़ा प्रयत्न किया किन्तु किसी ने कोई बात स्वीकार न की। उस समय अपराध स्वीकार न करने वालों से मारपीट कर अभियोग को स्वीकार करा लेने की प्रथा न थी। सुल्तान तथा अन्य सभी लोगों को उनके षड़यन्त्र का हाल मालूम था किन्तु सभी के इन्कार करने पर किसी को दंड देना सम्भव न था।

भारपुर के मैदान में आग का बहुत बड़ा और भयंकर अलाव लगाया गया। सुल्तान अपने ख़ानों तथा मलिकों को लेकर वहां गया। राज सिंहासन लगाया गया और सुल्तान उस पर विराजमान हुआ। शहर के सभी प्रतिष्ठित, सद्र, शहर के उल्मा, मशायख़, वहाँ उपस्थित थे। मजहर[2] आरम्भ हुआ। शहर के ख़ास व आम सभी उस मैदान में एकत्रित हो गये। बहुत बड़ी भीड़ जमा होगई। सुल्तान ने आज्ञा दी कि अपराधियों को आग में डाल दिया जाय ताकि झूठ और सच खुल जाय। इस विषय पर आलिमों से फ़तवा माँगा गया। समझदार आलिमों ने सर्व सम्मति से कहा कि अग्नि परीक्षा शरा के विरुद्ध है। अग्नि का काम जलाना है। जिस चीज़ का गुण जलाना है उसके द्वारा झूठ और सच को नहीं पहचाना जा सकता। इन लोगों के षड़यन्त्र का हाल केवल एक व्यक्ति को ज्ञात है। इतने बड़े अपराध में केवल एक व्यक्ति की गवाही शरा के निकट कोई महत्व नहीं रखती।

अन्त में सुल्तान ने अग्नि परीक्षा लेने का विचार त्याग दिया। क़ाज़ी जलाल को, जोकि षड़यन्त्रकारियों का नेता था, बदायूं भेज दिया और उसे बदायूं का क़ाज़ी नियुक्त कर दिया गया। खानज़ादों तथा मलिक-ज़ादों को भिन्न भिन्न दिशाओं में भेज दिया गया। उनकी भूमि और सम्पत्ति जब्त करली गई। कोतवाल बिरंजतन और हतियापायक को, जिन्होंने

---

१. वाद विवाद तथा परीक्षा के लिये जो सभा की जाती थी उसे महज़र कहते थे।

२. इस्लाम धर्म के अनुसार निर्णय करने वाली सभा।

सुल्तान की हत्या का संकल्प किया था, कड़े दंड दिये गये। सीदी मौला को बन्दी बनाकर सुल्तान के महल (सिंहासन) के सम्मुख पेश किया गया।

(२१२) सुल्तान ने उससे स्वयं वाद विवाद किया। उस मजमे में शेख़ अबू बक्र तूसी हैदरी अपने हैदरी[1] साथियों के साथ उपस्थित था। सुल्तान ने उनकी ओर देखते हुए कहा कि, "ऐ दरवेशो ! मेरा तथा इस मौला का न्याय करदो।" बहरी नामक हैदरी निर्भीक होकर सीदी के पास पहुँच गया और कुछ उस्तरे मार कर तथा एक बहुत बड़े सूजे से उसे घायल कर दिया। अर्कलीख़ाँ ने ऊपर से महावतों को संकेत किया। उन्होंने सीदी को हाथी के पैर के नीचे रोंद कर मार डाला।

उस जैसा बादशाह भी षड़यन्त्र को सहन न कर सका। दरवेशों तक के आदर तथा सम्मान का उसे ध्यान न रहा और उनके सम्मान की उसने रक्षा न की। इस इतिहास के संकलन कर्त्ता को यह याद है कि जिस दिन सीदी मौला की हत्या की गई उस दिन एक ऐसी काली आँधी चली कि संसार में अँधेरा छा गया। सीदी मौला की हत्या के उपरान्त जलाली राज्य में विघ्न पड़ गया। बुज़ुर्गों ने कहा है, कि दरवेशों की हत्या उचित नहीं है और किसी बादशाह को उससे कोई लाभ नहीं हो सकता। मौला की हत्या के पश्चात् वर्षा बन्द होगई और देहली में अकाल पड़ गया। अनाज का भाव एक जीतल प्रति सेर तक पहुंच गया। सिवालिक प्रदेश में एक बूंद पानी न बरसा। उस स्थान के हिन्दू अपने-अपने परिवार को लेकर देहली चले आये। २०, २० और ३०, ३० आदमी इकट्ठे होकर भूख के मारे यमुना नदी में डूब कर आत्म हत्या कर लेते थे। सुल्तान तथा अमीर लोग भिखारियों एवं दरिद्रों को भिक्षा प्रदान किया करते थे। धनी लोगों के भिक्षा प्रदान करने से अकाल से पीड़ित प्रजा को कुछ सहारा मिल गया था। दूसरे वर्ष निरन्तर इतनी वर्षा हुई कि किसी को भी इस प्रकार की वर्षा याद न थी।

जलाली राज्य काल का शेष हाल

सन् ६८९ हिजरी (१२९० ई०) में सुल्तान जलालुद्दीन ने रणथम्बोर पर चढ़ाई की। उस समय सुल्तान जलालुद्दीन के ज्येष्ठ पुत्र ख़ाने ख़ानाँ की मृत्यु हो चुकी थी।

(२१३) सुल्तान ने अपने मंझले पुत्र अर्कलीख़ाँ को चत्र प्रदान करके अपनी अनुपस्थिति में किलोखड़ी में नायब नियुक्त किया और स्वयं रणथम्बोर की ओर प्रस्थान किया। झायन पहुँच कर उसे उसने अपने अधिकार में कर लिया। वहाँ के मन्दिरों को कलुषित कर डाला। वहाँ की मूर्त्तियाँ तुड़वा डालीं और उन्हें जलवा दिया। झायन तथा मालवा की विलायत (प्रदेश) तहस-नहस कर डाली, अत्यधिक धन उसके हाथ लगा। उसे उसने अपनी सेना में बाँट दिया। रणथम्बोर का राय (राजा), राजकुमारों, मुक़द्दमों, तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं उनके परिवार सहित अपने क़िले में बन्द होगया। सुल्तान की इच्छा थी कि रणथम्बोर पर अधिकार जमा लिया जाय। क़िले को घेर लेने का आदेश दे दिया गया। मग़रबी तैयार की गईं। साबात एवं गरगच लगाये गये। क़िले पर अधिकार जमाने का प्रयत्न आरम्भ होगया। अभी यह तैयारियाँ हो ही रही थीं कि सुल्तान झायन से सवार होकर रणथम्बोर पहुँचा। क़िले का निरीक्षण करके चिन्ता में पड़ गया। सायंकाल फिर झायन लौट गया। दूसरे दिन राज्य के पदाधिकारियों तथा सरदारों को बुलवा भेजा। उनसे कहा कि मेरी इच्छा थी कि क़िले पर अधिकार जमालूँ, हिन्दुस्तान से और लश्कर मँगवाऊँ। कल जब मैंने

---

१. हैदरी क़लन्दर स्वतन्त्र विचार के सूफ़ी थे। उन लोगों का अन्य सूफ़ियों से सर्वदा संघर्ष रहा करता था और वे लोग छिपकर सूफ़ियों की हत्या करने से भी न चूकते थे।

किले के निरीक्षण करने के उपरान्त सोच विचार किया तो मेरी समझ में यह आया कि यह क़िला उस समय तक विजय नहीं हो सकता जब तक कि मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या इस क़िले को प्राप्त करने में अपने प्राण न त्याग दे और क़िले पर विजय प्राप्त करने हेतु न्यौछावर न होजाय। साबातों के नीचे, पाशेब बनाने तथा गरगच लगाने में अपनी जान की बलि न दे दें। मैं इस प्रकार के दस क़िलों को मुसलमानों के एक बाल को भी हानि पहुँचा कर लेने के पक्ष में नहीं। यह धन सम्पत्ति तथा माल जो इतने मुसलमानों की हत्या के उपरान्त मुझे प्राप्त होगा, वह मेरे किस काम का ? जिस समय मरे हुए लोगों की विधवायें, तथा अनाथ बालक मेरे सम्मुख लाये जायेंगे, उस समय मेरे लिये इस क़िले के प्राप्त करने का आनन्द विष से अधिक कड़ुवा हो जायगा।

(२१४) यह कह कर क़िले को विजय करने के विचार त्याग दिये और दूसरे दिन कूच करता हुआ सुरक्षित तथा बिना किसी हानि के अपनी राजधानी में पहुँच गया।

जिस समय सुल्तान अपने मलिकों तथा अमीरों से वापस हो जाने की उपयोगिता पर वार्त्तालाप कर रहा था, अहमद चप ने निवेदन किया, "जब कभी भी आक्रमणकारी किसी स्थान पर आक्रमण करने का संकल्प कर लेते थे, तो फिर वे जब तक उस स्थान को विजय न कर लेते थे कदापि वापस न होते थे। यदि संसार के अन्नदाता क़िले को विजय करने के पूर्व लौट जायेंगे, तो इस स्थान का राय (राजा) अभिमानी हो जायगा, उसके हृदय में अन्य प्रकार के विचार पैदा होने लगेंगे, बादशाह के दूसरे स्थानों पर विजय प्राप्त करने से जो भय लोगों के हृदय में बैठ गया है, वह कम हो जायगा।"

सुल्तान ने उत्तर दिया, 'ऐ अहमद, मैं भी जानता हूं कि बादशाह तथा विजेता अपनी हार्दिक आकांक्षायें पूरी करने तथा अपनी विजय प्राप्त करने की शक्ति को प्रसिद्ध बनाने के लिये, एवं देश के भिन्न-भिन्न भागों में अपनी आज्ञाओं का पालन कराने के लिये हज़ारों व्यक्तियों को ख़तरे में डाल देते हैं। क़िले पर विजय प्राप्त कर लेने की तुलना में उन्हें मुसलमानों की हत्या की चिन्ता नहीं रहती। वे दूर दूर की इक़लीमों (राज्यों) पर आक्रमण करते हैं और विजेता बनने की लालसा में मनुष्यों की हत्या की ओर कोई ध्यान नहीं देते। वे जब किसी स्थान को विजय करने का दृढ़ संकल्प कर लेते हैं (अज़मुल मुलूक) तो वह कार्य चाहे जितना भी मानव जाति के लिये कठिन हो और उसकी पुर्ति के लिये चाहे जितने मनुष्यों की हत्या क्यों न हो जाय, वे उस समय तक वापस नहीं होते जब तक कि उनके उद्देश्य की पूर्त्ति न हो जाय। वर्षों तक उसी कार्य के पीछे पड़े रहते हैं और उन्हें मानव जाति की हत्या की कोई चिन्ता नहीं रहती, मुझे यह सब बातें मालूम हैं। वर्षों हुए ये बातें मेरे सामने बादशाहों के इतिहास से पढ़ कर सुनाई गई थी।

आज भी जबकि मैं बादशाह हो गया हूं, कोई दिन ऐसा नहीं व्यतीत होता कि इतिहास के कुछ पन्ने न पढ़ूँ। तू मेरे पुत्र के स्थान पर है, तू मुझे राज-व्यवस्था के संचालन के विषय में परामर्श देता है, जैसे कि तू ही सब कुछ जानता है और मुझे कुछ ज्ञात नहीं।"

(२१५) "मेरा यह विचार है कि इस्लाम की आज्ञाओं तथा भगवान् और रसूल के आदेशों के पालन करने एवं अहंकारी तथा निरंकुश बादशाहों की परम्परा के अनुसरण करने में विशेष अन्तर है। वे लोग जो उनकी आकांक्षाओं, परम्परा तथा रीति रिवाज का पालन करते हैं, उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। मैं अपनी बादशाही के कार्य में केवल उन लोगों का अनुसरण करता हूं जो पैग़म्बरों के आदेशों का पालन करना परम आवश्यक समझते हैं, जिनका यह विश्वास है कि क़यामत अवश्य आयेगी और दुनिया में जो कुछ अच्छे बुरे कार्य किये हैं, उनका उत्तर भगवान् के सम्मुख देना होगा।

जो कुछ निरंकुश तथा अत्याचारी बादशाह अस्थाई राज्य तथा अपने सम्मान हेतु कर चुके है, वह निरर्थक है। दो चार दिन अत्याचार करने के कारण, वे नरक में जायेंगे। यद्यपि उनका अनुसरण करने मे प्रजा के हृदय मे रौब तथा भय पैदा हो जाता है किन्तु इससे लोगों के हृदय मे इस्लामी बातें इस प्रकार निकल जाती हैं, जैसे मले हुए आटे मे बाल निकल जाय। अतः मै जो कहता या करता हूं वह इस्लामी आज्ञाओं के अनुसार होता है। मुझे केवल इस्लाम की चिन्ता है। तू मेरा पुत्र है और मैने तेरा पालन-पोषण किया है, किन्तु तू बादशाहों के कार्य मेरे सम्मुख उदाहरण के रूप में रखता है। मैं राज्य के हित में जो अच्छा समझता हूँ, वह करता हूं परन्तु तू उसकी आलोचना करता है।

तुझे इतना भी नहीं ज्ञात है कि तूने राज्य व्यवस्था सम्बन्धी जितनी बातें सुनी हैं, या जिनका तुझे ज्ञान है, उन्हें मैं तुझसे अधिक सुन चुका हूं और तुझसे अधिक जानता हूं।"

अहमद चप ने उत्तर दिया, "मुझको बादशाह ही ने ढीठ बना दिया है, मुझे अनेक बार यह आदेश दिया जा चुका है कि मैं राज-व्यवस्था और शासन सम्बन्धी उचित बातों में जो कुछ भी ठीक समझूँ, उसे बादशाह के सामने कहदू। अतः मै बादशाह की सेवा में सब कुछ पेश कर दिया करता हूं। इस समय जबकि बादशाह रणथम्बोर की विजय त्याग कर लौटने के लिये तैयार हो गये हैं तो मैने यह विचार किया कि इससे लोगों के हृदय में बादशाही आज्ञाओं के पालन में बाधा पड़ जायेगी। इससे मुझे दुःख हुआ और जो कुछ भी मेरे हृदय में आया वह कह दिया। अन्नदाता यह समझते हैं कि मैंने जो कुछ आपके हित में बातें की वे ऐसी थीं जिन पर वे बादशाह आचरण करते थे जो अपने आपको भगवान् समझते थे और जिनका यह विचार था कि वे भगवान् के अधीन नही।

(२१६) अन्नदाता सुल्तान महमूद तथा सुल्तान संजर की परम्परा का अनुसरण क्यों नही करते, कारण कि इनमें से प्रत्येक ने मुहम्मदी धर्म को उन्नति देने के साथ-साथ संसार के भिन्न-भिन्न भागों पर अधिकार जमाया। उनकी महत्वाकाँक्षाओं तथा उनकी विजयों पर ध्यान क्यों नही देते।"

अहमद चप की यह बात सुन कर, सुल्तान हँसा और उसने कहा, "ऐ अहमद तू जवानी तथा राज्य की मस्ती में भ्रष्ट हो गया है। ऐ पुत्र, तुझे यह ज्ञात नही कि सुल्तान महमूद तथा सुल्तान संजर के सिलाहदार एवं रिकाबदार[1] हमसे कही अच्छे थे, उनकी प्रतिष्ठा हमसे सैकड़ों गुनी अधिक है, हममें इतना बल कहाँ कि इस अस्थायी बादशाही में, जो कि हमें थोड़े दिन के लिए मिली है, अन्य प्रदेशों पर विजय प्राप्त करें और उन्हें सुव्यवस्थित रख सकें। हे बाबा, तेरा मस्तिष्क खराब हो गया है, तू भूल कर रहा है। इस्लाम के उन बादशाहों ने दीन की रक्षा तथा धर्म का पालन किया है। तूने नही सुना कि महमूद के इतने लम्बे चौड़े राज्य मे किसी बेदीन तथा अधर्मी को निवास करने की आज्ञा प्राप्त न थी। उस धर्मनिष्ठ तथा दीन को आश्रय देने वाले बादशाह के बल और वैभव के कारण, इस्लामी बाते अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई थी। मूर्ति पूजा का विनाश कर दिया गया था, सुल्तान संजर के राज्य मे सभी लोग इस्लाम का कलमा पढ़ने लगे थे। उसके समय मे सुल्तान अलाउद्दीन जहाँ-सोज़ से युद्ध हुआ और अन्त में उसे गिरफ़्तार करके सुल्तान संजर की सेवा में उपस्थित किया गया। हम उस प्रकार के न तो मनुष्य हैं और न बादशाह और न हममें इतना बल है कि सुल्तान महमूद तथा सुल्तान संजर के मुकाबले का ख़्याल कर सकें। ऐ मूर्ख, तू अपने आपको बुज़र्चमेहर समझता है और यह नही देखता कि प्रतिदिन हिन्दू जो कि ख़ुदा और मुस्तफ़ा के शत्रु हैं बड़े

१. रिकाबदार = साधारण कर्मचारी अथवा सुल्तान के घोड़ों की ज़ीन आदि का प्रबन्ध करने वाला। रसोई का प्रबन्ध कर्त्ता भी रिकाबदार कहलाता था।

ठाठ बाट तथा शान से मेरे महल के नीचे से होकर यमुना तट पर जाते हैं, मूर्ति पूजा करते हैं और शिर्क तथा कुफ़ के आदेशों का हमारे सामने प्रचार करते हैं और हम जैसे निर्लज्ज जो कि अपने आपको मुसलमान बादशाह कहते हैं, कुछ नहीं कर सकते।

(२१७) उन्हें हमारा, हमारे अधिकार तथा बल का कोई भय नही। यदि मैं इस्लामी बादशाह होता और सच्चा बादशाह अथवा बादशाह जादा होता तथा दीन की रक्षा करने वाले बादशाहों का बल और शक्ति अपने में पाता तो मैं इस्लाम के सम्मान तथा कट्टरपन से सच्चे धर्म का पालन करने हेतु भगवान् के तथा मुस्तफ़ा के धर्म के किसी भी शत्रु को विशेष कर हिन्दुओं को जो कि मुस्तफा के धर्म के कट्टर शत्रु हैं, निश्चिन्त होकर पान का बीड़ा न खाने देता और न उन्हें श्वेत वस्त्र पहनने देता और न उन्हें मुसलमानों के मध्य ठाट बाट से जीवन व्यतीत करने देता। मेरे लिए, मेरी बादशाही के लिये और मेरे दीन की रक्षा के गुण को लज्जा आनी चाहिये कि हम इस बात की आज्ञा देते हैं कि जुमे के दिन मिम्बरों से हमारे नाम का ख़ुतबा पढ़ा जाय; ख़ुतबा पढ़ने वाले झूठ मूठ हमें इस्लाम का रक्षक बतायें। हमारे राज्य काल मे हमारे सामने तथा राजधानी में भगवान् तथा मुस्तफ़ा के धर्म के शत्रु बड़े ठाठ बाट से धन धान्य सम्पन्न होकर जीवन व्यतीत करते हैं; भोगविलास में ग्रस्त रहते हैं और मुसलमानों के मध्य में अपने ऊपर गर्व किया करते हैं, खुल्लमखुल्ला मूर्ति पूजा करते हैं, ढोल पीट पीट कर कुफ़ तथा शिर्क के आदेशों का प्रचार करते हैं। हमारे सिर पर, हमारी बादशाही पर तथा हमारे दीन की रक्षा करने पर थू है, कारण कि ख़ुदा तथा रसूल के शत्रु बड़े ठाठ से धन धान्य सम्पन्न होकर जीवन व्यतीत कर रहे हैं, किन्तु उनके रक्त की नदी नही बहाई जा सकती। हम कुछ तनके न्यौछावर के रूप में लेकर सन्तुष्ट हो जाते हैं। ऐ पुत्र तू हम लोगों की दृष्टि में अभी दूध पीता बच्चा है। अपने व्यर्थ के विचार त्याग दे। हमारी तथा हमारी बादशाही की तुलना सुल्तान महमूद एवं सुल्तान संजर तथा उनकी बादशाही मे न कर। हम उनके तुच्छ दास हैं। जब तक हम जीवित रहेंगे उनकी दासता पर अभिमान तथा गर्व करते रहेंगे। हे बाबा तुझे दुनिया का कुछ हाल नही मालूम।

(२१८) क़यामत के दिन वे अपने कार्यों का उत्तर देंगे और हम अपने कार्यों का। मैं अब वृद्ध हो चुका। मेरी अवस्था ८० वर्ष को पहुँच चुकी। अब मैं मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा हूं। मुझे ऐसे कार्य करने चाहिये जिनसे मुझे अपनी मृत्यु के पश्चात् लाभ हो। तू मेरे सामने ऐसी बात करता है, जैसे दुनिया हमारे अधिकार में सर्वदा रहेगी।"

मलिक अहमद चप राज्य-गोष्ठी से उठ कर सुल्तान के पैरों पर गिर पड़ा और उसने कहा, "वास्तव में जो कुछ अन्नदाता के हृदय में है, तथा जो कुछ अन्नदाता कहते हैं, वही आलिमों, बुद्धिमानों तथा दीन का पालन करने वालों के निकट उचित है। मै अन्नदाता के आश्रय प्रदान करने के कारण युवावस्था को प्राप्त हुआ हूं। मैं समझता हूँ कि जैसा आप करते हैं वही करते रहें, उसी से लाभ होगा।"

मुग़लों से युद्ध---

६९१ हिजरी (१२९१-९२ ई०) में हलू (हलाकू) दुष्ट के नाती अब्दुल्ला ने १०, १५ तुमन[1] मुग़ल लेकर हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया। सुल्तान जलालुद्दीन ने इस्लामी सेना एकत्रित की, बादशाही शान व शौकत तथा इस्लामी ऐश्वर्य एवं वैभव के साथ राजधानी से बाहर निकला। जो सेना भी एकत्रित हो सकी उसे लेकर मुग़ल सेना की ओर कूच किया। जब बरराम के निकट पहुँचा तो मुग़लों के मुक़द्दमे की सेना दिखाई पड़ी। इस्लामी तथा मुग़ल सेना के बीच

१. एक तुमन में दस हज़ार सैनिक होते थे।

में नदी आगई। दोनों युद्ध के लिये एक दूसरे के सामने उतर पड़े। सेना की पंक्तियाँ सजाई जाने लगी। युद्ध के लिये एक दिन निश्चित किया जाने लगा। सेना के अनुसार युद्ध के लिये एक बहुत बड़ा मैदान चुना गया। जिस समय इस बड़े युद्ध की तैयारियाँ हो रही थीं दोनों ओर के यज़कियों (अग्रगामी सेना का एक भाग) में मुठभेड़ हो गई। इस्लामी सेना के यज़की विजयी रहे।

(२१९) मुग़ल यज़कियों के कुछ आदमी गिरफ़्तार करके सुल्तान के सामने लाये गये, यहाँ तक कि एक दिन मुग़लों के मुक़द्दमे की सेना के कुछ लोगों ने नदी पार करली। इस्लामी सेना का मुक़द्दमा आगे बढ़ा। दोनों मुक़द्दमों में बड़ा घमासान युद्ध हुआ। सुल्तान की सेना का मुक़द्दमा विजयी रहा, मुग़लों की बहुत बड़ी संख्या तलवार के घाट उतार दी गई। मुग़लों के एक दो अमीराने हज़ारा[1] तथा कुछ सद्दा[2] अमीर गिरफ़्तार करके राजसिंहासन के सामने लाये गये। अन्त में दोनों ओर से राजदूतों ने आना जाना प्रारम्भ कर दिया। दोनों दलों को युद्ध से, जिसमें कि अनेक भय हैं, रोकने का प्रयत्न प्रारम्भ हो गया। सुल्तान तथा दुष्ट हलू के नाती अब्दुल्ला की भेंट करादी गई।

सुल्तान ने उसे अपना पुत्र और उसने सुल्तान को अपना पिता मान लिया। सन्धि के पश्चात् दोनों सेनायें एक दूसरे से क्रय विक्रय करने लगीं तथा एक दूसरे को उपहार भेंट करने लगी। अब्दुल्ला मुग़लों की सेना लेकर लौट गया।

दुष्ट चँगेज़ ख़ाँ का नाती उलगू अपने हज़ारा तथा सद्दा मुग़ल सरदारों के साथ सुल्तान से मिल गया। सभी मुगल कलमा पढ़कर मुसलमान हो गये, सुल्तान ने उलगू को अपना दामाद बना लिया। जो मुगल उलगू के साथ आये थे वे अपनी स्त्री तथा बच्चों को भी शहर देहली में ले आये। सुल्तान ने सबका वेतन निश्चित कर दिया। वे लोग किलोखड़ी, ग़यासपुर इन्द्रपत तथा तिलोका के आसपास घर बनाकर बस गये। उनकी बस्तियाँ मुगलपुर के नाम से प्रसिद्ध हो गईं, सुल्तान जलालुद्दीन ने उन मुगलों को एक दो वर्ष तक वेतन दिये किन्तु हिन्दुस्तान की जलवायु तथा शहर के निकट के स्थानों का निवास उनके अनुकूल न सिद्ध हुआ। इनमे से बहुत से अपनी स्त्री तथा बालकों सहित अपने अपने देशों को वापस लौट गये। उनमें से कुछ गण्य मान्य मुग़ल इसी देश में रहने लगे। बादशाह ने उनके लिये गाँव तथा वेतन निश्चित कर दिये। यह लोग मुसलमानों से मिल जुलकर रहने लगे तथा उनमें शादी विवाह करने लगे। वे नव मुस्लिम के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

६९१ हिजरी का शेष हाल

(२२०) इस वर्ष के अन्त में सुल्तान ने मन्दावर की ओर प्रस्थान किया और एक ही धावे मे उस पर अधिकार जमा लिया। उसके आस पास के स्थानों को विध्वंस करा दिया और बहुत कुछ धन सम्पत्ति लेकर वापस हुआ। दूसरी बार झायन पर आक्रमण किया। इस बार भी झायन को तहस नहस कर दिया। सेना को बहुत कुछ धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। विजय के पश्चात् सुल्तान वापस लौट गया।

जिस वर्ष सुल्तान जलालुद्दीन ने मन्दावर पर आक्रमण किया था, उस समय सुल्तान अलाउद्दीन कड़े का मुक़्ता था। उसने सुल्तान जलालुद्दीन से आज्ञा प्राप्त करके कड़े का लश्कर लेकर भिल्सा पर आक्रमण किया, इस विजय द्वारा उसे अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। एक पीतल की मूर्ति जो कि उस प्रदेश के हिन्दुओं की देवी थी, लदवाकर नाना प्रकार की धन

---

१. हज़ार सवारों के अमीर।
२. सौ सवारों के अफ़सर।

सम्पत्ति के साथ सुल्तान की सेवा में देहली भेज दिया। उस मूर्ति को बदायूँ दरवाज़े पर लटकवा दिया, जिससे कि लोग शिक्षा ग्रहण करें।

सुल्तान अलाउद्दीन जलालुद्दीन का भतीजा तथा दामाद था। सुल्तान ही ने उसका पालन पोषण किया था। जिस समय वह भिल्सा से अत्यधिक धन सम्पत्ति लाया, तो सुल्तान ने उसका सम्मान बढ़ाने के लिये उसे अर्ज़ेममालिक नियुक्त कर दिया। कड़े की अक़्ता के साथ-साथ अवध की अक़्ता भी उसे प्रदान करदी।

जब सुल्तान अलाउद्दीन भिल्सा गया तो उसे देवगीर की धन सम्पत्ति तथा हाथी आदि का हाल ज्ञात हुआ। वहाँ के निवासियों से देवगीर जाने के विषय में पूछताछ की। उसने ठान ली कि कड़े पहुँच कर वह तैयारी प्रारम्भ कर देगा और सवार तथा प्यादों की बहुत बड़ी संख्या लेकर देवगीर पर आक्रमण कर देगा; सुल्तान जलालुद्दीन को भी इसके विषय मे कोई सूचना न देगा। जब वह देहली पहुँचा तो उसने अपने ऊपर सुल्तान की विशेष दया तथा कृपा पाई। कड़े तथा अवध की अक़्ता के फ़वाज़िल[1] अदा करने से क्षमा माँग ली। उसने निवेदन किया कि, "मैंने सुना है कि चन्देरी तथा उसके आसपास के प्रदेश वालों को देहली के लाव लश्कर की कोई चिन्ता नहीं। यदि आज्ञा हो तो मैं अपनी अक़्ता के फ़वाजिल से नये सवार तथा प्यादे भरती करके उन प्रदेशों के ऊपर आक्रमण करदूँ और वहाँ से इतनी धन सम्पत्ति लूट लाऊँ कि जिसका कोई अनुमान भी न हो सके और अपनी अक़्ता का फ़वाज़िल भी एक साथ दीवान (भूमि कर विभाग) में दाख़िल करदूँगा।"

(२२१) सुल्तान जलालुद्दीन ने, जिसका हृदय बिल्कुल साफ़ था, उस पर विश्वास कर लिया और यह नहीं समझा कि सुल्तान अलाउद्दीन अपनी सास तथा धर्मपत्नी से असन्तुष्ट है, उसका हृदय बिलकुल पलट गया है। उसकी यह इच्छा है कि मलकये जहाँ तथा अपनी धर्मपत्नी के अत्याचारो से मुक्ति पाने के लिए किसी दूसरे राज्य अथवा प्रदेश को अपने अधिकार में करके, वहीं निवास करना आरम्भ करदे और फिर इस ओर कभी न आये। सुल्तान ने अलाउद्दीन को नये सवार तथा प्यादे भरती करने की आज्ञा प्रदान करदी तथा दोनों अक़्ताओं के फ़वाज़िल की माँग भी कुछ समय के लिये स्थगित करदी। इस लोभ से कि वह अत्यधिक धन सम्पत्ति लायेगा, उसे लौट जाने की आज्ञा देदी। सुल्तान अलाउद्दीन अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु देहली मे कड़े की ओर लौट गया।

सुल्तान अलाउद्दीन के चचा, ससुर और आश्रयदाता सुल्तान जलालुद्दीन से विरोध के कारण; और सुल्तान अलाउद्दीन के देवगीर प्रस्थान करने का हाल तथा देवगीर से हाथी, धन सम्पत्ति जवाहरात आदि लाना।

सुल्तान अलाउद्दीन की सास मलकये जहाँ ने, जो कि सुल्तान जलालुद्दीन की धर्मपत्नी थी, उसे विशेष कष्ट पहुँचाये थे। वह अपनी धर्मपत्नी के विरोध के कारण भी, जो कि सुल्तान जलालुद्दीन की पुत्री थी, बड़ा दुःखी था। सुल्तान जलालुद्दीन मलकये जहाँ के पूर्णतया वश में था, अतः अलाउद्दीन उससे और भी भयभीत रहता था। सुल्तान जलालुद्दीन के ऐश्वर्य तथा वैभव के कारण उसका साहस न होता था कि अपनी स्त्री की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हुए सुल्तान से कोई बात कह सके। अपने अनादर तथा अपमान के भय से भी वह अपनी दशा किसी दूसरे को भी न बता सकता था। इसके फलस्वरूप वह सदैव दुःखी रहता था।

१. अक़्ता के कर का वह भाग जो समस्त व्यय निकालने के उपरान्त शेष रहता था और शाही राज्य-कोषों में जमा किया जाता था।

(२२२) वह कड़े में अपने विश्वास पात्रों से परामर्श किया करता था कि किसी दूसरे स्थान पर अधिकार जमा कर वहीं निवास आरम्भ करदे। जिस समय सुल्तान अलाउद्दीन भिल्सा की ओर गया उसे देवगीर की धन सम्पत्ति का हाल ज्ञात हुआ। उसने यह निश्चय कर लिया था कि इस समय यदि उससे फ़वाज़िल तथा महसूल की रक़म न मांगी गई तो वह तीन चार हज़ार सवार तथा दो हज़ार पायक उस धन से एकत्रित करके कड़े से चलकर देवगीर पर आक्रमण कर देगा। लोगों मे यह प्रसिद्ध कर देगा कि वह चन्देरी के विनाश के लिए जा रहा है किन्तु हृदय मे उसने देवगीर पर आक्रमण करने का संकल्प कर लिया था, परन्तु किसी के सामने देवगीर का नाम न लेता था। अपनी अनुपस्थिति में इस इतिहास के संकलन कर्त्ता के चचा मलिक अलाउलमुल्क को, जो कि उसका बड़ा विश्वास पात्र था, कड़े का नायब नियुक्त किया। कूच करता हुआ एलिचपुर पहुँचा। घाटी लाजौरा मे पहुँचने के पश्चात् उसके विषय मे किसी को कुछ न मालूम हो सका। मेरा चचा सुल्तान जलालुद्दीन के पास कड़े से बराबर प्रार्थना पत्र भेजता रहता और उसको बराबर यह लिख भेजता था कि सुल्तान अलाउद्दीन विद्रोहियों के प्रदेशों को विध्वंस करने में लगा हुआ है। आजकल मे उसका प्रार्थना पत्र सुल्तान की सेवा में पहुंच जायगा। इस कारण कि सुल्तान अलाउद्दीन का पालन पोषण सुल्तान जलालुद्दीन ने किया था और उसी ने उसको उन्नति प्रदान की थी, सुल्तान ने कभी इस बात पर ध्यान भी नही दिया कि सुल्तान अलाउद्दीन का हृदय उसकी ओर से फिर गया है। महल के प्रतिष्ठित लोगो तथा शहर के बुद्धिमानों ने सुल्तान अलाउद्दीन की अनुपस्थिति से समझ लिया कि वह अपनी सास के विरोध तथा अपनी धर्मपत्नी की आज्ञा उल्लंघन के कारण किसी अन्य प्रदेश को चला गया है। यह अनुमान तथा विचार सर्व साधारण भी करने लगे थे।

जिस समय सुल्तान अलाउद्दीन अपने सवार तथा प्यादों की सेना लेकर लाजौरा को घाटी मे पहुंचा, उस समय रामदेव की सेना उसके पुत्र के साथ किसी दूर के स्थान को गई थी। देवगीर के लोगों ने प्राचीन काल से अब तक इस्लाम के विषय में कुछ न सुना था और मरहठा भूमि पर कभी भी इस्लामी सेना न पहुँची थी। कोई बादशाह, खान अथवा मलिक वहाँ न पहुंच सका था।

(२२३) देवगीर में उस समय अपार सोना चाँदी, मोती, जवाहरात तथा बहुमूल्य वस्तुयें एकत्रित थीं। जब रामदेव को इस्लामी सेना के पहुँचने का समाचार मिला तो जो कुछ सेना वर्त्तमान थी, उसे अपने राजाओं मे से एक की अधीनता में घाटी लाजौरा की ओर रवाना किया। सुल्तान अलाउद्दीन ने रामदेव की सेना को युद्ध करके परास्त कर दिया, तत्पश्चात् देवगीर पहुँच गया।

पहले ही दिन लगभग ३० हाथी और कई हज़ार घोड़े रामदेव के हाथी ख़ाने तथा अस्तबल से प्राप्त कर लिये। रामदेव ने उपस्थित होकर उसकी अधीनता स्वीकार करली। सुल्तान अलाउद्दीन को देवगीर में इतना सोना, चाँदी, जवाहरात मोती, बहुमूल्य वस्तुयें, रेशमी वस्त्र तथा शाल दुशाले प्राप्त हुए कि वे दो क़रन[1] मे अधिक प्रयोग में आते रहे। प्रत्येक राज्य-काल और समय में बादशाहों ने इसमे से अपार धन व्यय किया किन्तु सुल्तान अलाउद्दीन के लाये हुए हाथियों, धन सम्पत्ति, जवाहरात आदि में से अब भी बहुत कुछ देहली के कोष मे वर्त्तमान हैं।

जलाली राज्य का शेष हाल--

सन् ६९५ हिजरी (१२९५-९६ ई०) में सुल्तान जलालुद्दीन ने गवालियर की ओर

---

१. एक करन दस मे लेकर तीस साल तक का होता है।

कूच किया और कुछ समय तक वहीं रुका रहा। सुल्तान जलालुद्दीन की सेना में यह खबर पहुंच गई कि कड़े के अमीर सुल्तान अलाउद्दीन ने देवगीर पर विजय प्राप्त करके अपार धन सम्पत्ति और हाथियों पर अधिकार जमा लिया है। अब वहाँ से लौट कर कड़े जा रहा है। सुल्तान जलालुद्दीन यह सूचना पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने साधारण स्वभाव के कारण यह समझ लिया कि वह मेरा पुत्र और भतीजा है। जो कुछ वह ला रहा है मुझी को मिलेगा। सुल्तान अलाउद्दीन के आने के समाचार से प्रसन्न होकर उसने भोग-विलास गोष्ठी का आयोजन कराया, मदिरा पान किया गया।

(२२४) सुल्तान जलालुद्दीन तथा उसके सहायकों एवं सम्बन्धियों को यह समाचार बराबर मिलते जाते थे कि सुल्तान अलाउद्दीन देवगीर से इतनी धन सम्पत्ति ला रहा है जो कि देहली के किसी बादशाह के राजकोष में न आई थी। एक दिन सुल्तान जलालुद्दीन ने एकान्त में सभा का आयोजन किया। उसमें कुछ परामर्शदाताओं तथा राज्य सम्बन्धी सभी बातों की जानकारी रखने वालों को बुलवाया गया। सुल्तान ने मलिक अहमद चप तथा मलिक फ़खरुद्दीन कूची से, जो कि उसके राज्य के बड़े अनुभवी व्यक्तियों में से थे, पूछा कि अलाउद्दीन देवगीर से अपार धन तथा हाथी ला रहा है। इस अवसर पर हमें क्या करना चाहिये ? हम जिस स्थान पर हैं वहीं ठहरे रहें अथवा अलाउद्दीन की सेना की ओर प्रस्थान करें या शहर देहली लौट जायँ।

मलिक अहमद चप नायब बार्बक ने जो, कि परामर्शदाताओं में सर्वश्रेष्ठ था, किसी के कुछ कहने के पूर्व सुल्तान से निवेदन किया कि, "अपार धन सम्पत्ति तथा हाथी अधिकार में आजाने से बड़ी आपत्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। जिसे ये वस्तुयें मिल जाती हैं, वह इतना अभिमानी तथा गर्व-पूर्ण हो जाता है कि वह अपने हाथ पैर को भी नहीं पहचान सकता। कड़े के मुक़्ता अलाउद्दीन के पास मलिक छज्जू के साथी, विद्रोह करने वाले, अनेक विद्रोही, विरोधी तथा दुष्ट लोग एकत्रित हो गये हैं। वे बिना किसी आदेश के उसे देवगीर की इक़लीम (राज्य) में ले गये और उन्होंने युद्ध करके अपार धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया है। प्राचीन बादशाहों ने कहा है कि "धन सम्पत्ति और उपद्रव, उपद्रव एवं धन सम्पत्ति' अर्थात् धन सम्पत्ति एवं उपद्रव एक दूसरे के अधीन हैं। भगवान ही जानता है कि इतनी धन सम्पत्ति देखकर अलाउद्दीन के हृदय में विद्रोह की कौन-कौन सी भावनायें उत्पन्न न हुई होंगी। मै तो यह उचित समझता हूं कि अन्नदाता शीघ्रातिशीघ्र चन्देरी की ओर कूच करें। अलाउद्दीन के पहुँचने के पूर्व ही उसका मार्ग रोकदें।

(२२५) जब वह बादशाह के लश्कर को अपने निकट पहुँच जाने की सूचना पायेगा, तो वह विवश होकर, चाहे उसकी इच्छा हो अथवा न हो, राजसिंहासन के सम्मुख उपस्थित होगा। बादशाह को चाहिये कि उस समय उसकी अपार धन सम्पत्ति, सोना, जवाहरात, मोती तथा हाथी और घोड़े, जो कि उपद्रव की जड़ हैं, उससे ले लें। उसे अपने पास से धन सम्पत्ति तथा लश्कर प्रदान करते हुए सम्मानित करें। चाहें तो अन्य अक़्ता भी उसे दे दें और चाहें तो अपने साथ शहर देहली ले जायें और चाहे कड़े लौट जाने की आज्ञा प्रदान करदें। यदि अन्नदाता इस कार्य को बहुत बड़ा कार्य नहीं समझते और इस बात पर विश्वास करते हैं कि वह उसका पुत्र, दामाद तथा पाला हुआ है, तो वे प्राचीन बादशाहों के अनुभव को निरर्थक कर देंगे। यदि बिना उससे धन सम्पत्ति, हाथी जवाहरात तथा मोती लिये देहली लौट जायेंगे और मलिक अलाउद्दीन की हिन्दुस्तान की सेना के साथ अपार धन सम्पत्ति लेकर जो कि दस बादशाहों की बादशाही के तुल्य है, कुशलता पूर्वक कड़े पहुँचने देंगे तो अपने राज्य को बहुत बड़ी आपत्ति में डाल देंगे, और हम सब के विनाश की सामग्री एकत्रित कर देंगे। हाथी

तथा धन सम्पत्ति प्राप्त करने का इससे उचित अवसर और कोई नहीं। अलाउद्दीन की सेना थकी हुई है और वह तैयार भी नही। वह खुश खुश लूट की धन सम्पत्ति लिये चली आ रही है। यदि बादशाह का लश्कर, जो कि सुव्यवस्थित, तैयार और बहुत बड़ी संख्या में है, आगे बढ जायगा तो अलाउद्दीन का इतना साहस नही हो सकता कि वह धन सम्पत्ति तथा हाथी पेश करने में संकोच कर सके। इसके अतिरिक्त दास को ज्ञात है कि मलिक अलाउद्दीन वर्षो से मलकये जहाँ तथा अपनी पत्नी से असन्तुष्ट है। मलकये जहाँ के भय से कोई भी राजसिंहासन के सम्मुख यह समाचार नहीं कह सका है। जो कोई भी असन्तुष्ट हो उससे राज्य-भक्त होने की आशा न रखनी चाहिये। सेवक की समझ मे बादशाह के राज्य के हित की जो बात आई वह बादशाह की सेवा मे निवेदन करदी। जो बादशाह का आदेश होगा, वही उचित है।"

(२२६) क्योंकि सुल्तान जलालुद्दीन की मृत्यु का समय आ चुका था तथा उसका राज्य छिनने वाला था अत: उसे अहमद चप की बात अच्छी न लगी। मलिक अहमद चप की बातों से सुल्तान ने असन्तुष्ट होकर कहा कि, "तूने मेरे सामने के बालक को सिंह बना कर पेश कर दिया। मैंने अलाउद्दीन के विषय में कौनसी बुरी बात की है, जिससे वह मेरा विरोध करेगा और धन सम्पत्ति तथा हाथी मेरे सामने न लायेगा।" सुल्तान ने उस सभा में मलिक फ़खरुद्दीन कूची, कमालुद्दीन अबुल मआली तथा नसीरुद्दीन कुहरामी से कहा कि, "तुम लोगों ने अहमद के विचार सुने, अब तुम इसके विषय मे क्या परामर्श देते हो। साफ-साफ मुझसे कहदो।"

मलिक फखरुद्दीन कूची को भगवान् का भय न रहा। यद्यपि वह समझता था कि मलिक अहमद चप ने जो कुछ कहा, वह ठीक है किन्तु उसने देखा कि सुल्तान को उसकी बातें अच्छी नही लगी। अत. उसने सुल्तान की हाँ मे हां मिलाते हुये उसको प्रसन्न करने के लिये कहा कि, "मलिक अलाउद्दीन के धन सम्पत्ति तथा हाथी प्राप्त करने के समाचार अभी तक सत्य नही सिद्ध हुये है। किसी विश्वस्त सूत्र द्वारा यह समाचार राजसिंहासन के सम्मुख नहीं पहुँचे हैं। जो समाचार मिल रहे हैं उनके विषय में यह नही कहा जा सकता कि वे झूठे हैं या सच। यह मसल मशहूर है कि पानी देखने के पूर्व मोज़ा नहीं उतारा जा सकता। यदि हम आगे कूच करके उनका मार्ग रोक देंगे, तो वे बादशाही लश्कर की सूचना पाकर भयभीत हो जायेंगे और बिना आदेश के, देवगीर पर आक्रमण करने के डर से किसी दूसरी ओर भाग जायेंगे, मवासों तथा जंगलों मे घुस जायेंगे और वहीं निवास करने लगेंगे। जो धन सम्पत्ति उन्होने प्राप्त की है उसका विनाश हो जायगा। इस प्रकार सर्व साधारण को बड़ा कष्ट पहुंचेगा, और वे छिन्न भिन्न हो जायेंगे। हमारे लिये यह आवश्यक नहीं कि हम उनके पीछे देवगीर की ओर प्रस्थान करें और उन पर आक्रमण करे। यह किसी ने नहीं बताया कि किसी क़ौम के विद्रोह या विरोध करने से पूर्व उस पर आक्रमण कर दिया जाय। रमजान का महीना आ गया है। देहली का खरबूजा मिश्री की भाँति मीठा हो चुका है।"

(२२७) "मुझे यह उचित जान पड़ता है कि बादशाह स्वयं शहर (देहली) की ओर लौट चलें। रमजान का महीना राजधानी मे व्यतीत करें। यदि यह सिद्ध हो जाय कि मलिक अलाउद्दीन हाथी तथा धन सम्पत्ति लाया है तो उसे सकुशल सब कुछ लेकर कड़े पहुंच जाने दे ताकि वह किसी अन्य विलायत अथवा दूर के स्थान पर न चला जाय। उसके प्रार्थना पत्र राजसिंहासन के सम्मुख आने दे। उस के हृदय की अच्छाई तथा बुराई एवं मिजाज की नेकी और बदी उसके प्रार्थना पत्रों से स्पष्ट हो जायगी। यदि उसे किसी प्रकार का विरोध

करते हुए देखा जायगा तो सुल्तानी लश्कर एक ही धावे में उसे तथा उसकी सेना को क्षीण कर सकता है। वह हम से बचकर कहाँ जायगा। हिन्दुस्तानी सवार तथा प्यादे एक बार सुल्तानी लश्कर के हाथों हानि उठा चुके हैं; उनमें किसको साहस हो सकता है कि सुल्तानी सेना का मुक़ाबला करे। यदि मलिक अलाउद्दीन को विद्रोह करता हुआ पाया जायगा, तो उसे गिरफ़्तार करके अन्नदाता के सम्मुख पेश कर दिया जायगा।"

मलिक अहमद चप ने फ़खरुद्दीन कूची से कहा कि, "बात इस सीमा तक पहुँच चुकी है और यह कहना उचित है कि चाकू हड्डी तक पहुँच चुका है, अब चापलूसी तथा खुशामद क्यों करते हो और जानबूझ कर सच्चाई को क्यों छिपाते हो। यदि मलिक अलाउद्दीन हाथी तथा धन सम्पत्ति लेकर कुशलता पूर्वक कड़े पहुंच जायगा और उसे दो तीन महीने का समय मिल जायगा। तो वह अपने हाथी तथा धन सम्पत्ति लेकर सरयू नदी पार करके लखनौती पहुँच जायगा फिर उसका पीछा कौन करेगा। मैं या तुम।" सुल्तान ने अहमद चप से कहा, "तू सदा से अलाउद्दीन के प्रति दुर्भावना रखता चला आया है। वह मेरी गोद का पाला हुआ है। उसकी गर्दन पर मेरे अनेक हक़ हैं, वह मेरा विरोध किस प्रकार कर सकता है। यदि मेरे पुत्र ही मुझ से विरोध करने लगें तो वह भी विरोध करने लगेगा।" वाद-विवाद हेतु अहमद चप ने पुनः निवेदन किया कि, "यदि अन्नदाता, इस स्थान से राजधानी की ओर लौट जायेंगे तो हमारी हत्या अपने हाथों से करा देंगे।" यह कहकर वह सुल्तान की परामर्श-गोष्ठी से उठ गया। उठते समय हाथ मलता जाता था और शोक प्रकट करते हुए बार बार यह छन्द पढता जाता था :—

छन्द

(२२८) "जब मनुष्य का भाग्य अन्धकार मे पड़ जाता है,
तो वह ऐसे कार्य करता है, जो उसके हित के विरुद्ध होते हैं।"

सुल्तान जलालुद्दीन ने अपने सरल हृदय तथा सत्यता के कारण सुल्तान अलाउद्दीन पर विश्वास कर लिया। मलिक फ़खरुद्दीन कूची की राय से गवालियर से देहली की ओर लौट गया और किलोखड़ी पहुँच गया। सुल्तान को पहुँचें हुए अधिक दिन न बीते थे कि यह समाचार लगातार आने लगे कि सुल्तान अलाउद्दीन अपार सोना, जवाहरात, मोती, बहुमूल्य वस्तुयें तथा हाथी घोडे लेकर कड़े पहुँच गया है। उसी बीच में उसका प्रार्थना पत्र सुल्तान जलालुद्दीन को प्राप्त हुआ कि, "मैं यह अपार ख़ज़ाना, जवाहरात, मोती, ३१ हाथी, घोड़े और बहुमूल्य वस्तुयें अन्नदाता की सेवा में भेंट करने के लिये लाया हूं; किन्तु मैं एक साल से अधिक इस युद्ध में लगा रहा हूं और बिना आदेश के उस इक़लीम (राज्य) पर आक्रमण करने चला गया। इस बीच में न तो मुझे सुल्तान का कोई फरमान प्राप्त हुआ और न मैंने कोई प्रार्थना पत्र सुल्तान की सेवा में भेजा। मुझे नही ज्ञात कि मेरी अनुपस्थिति मैं मेरे विषय में मेरे शत्रुओं ने राज सिहासन के सम्मुख क्या क्या बातें कही हैं। मै और मेरे साथी अत्यन्त भयभीत हैं। यदि बादशाह अपने हाथ से और अपनी मुहर लगाकर मेरे पास, मेरे उन साथियों के लिये, जो कि मेरे कारण अपने प्राणों पर खेल गये थे, कोई फरमान भेजदें (ब-खत्ते तौकीय) तो मैं जो हाथी, धन सम्पत्ति आदि लाया हूं, वह सुल्तान की सेवा में भेंट कर दूंगा।" सुल्तान अलाउद्दीन इसी प्रकार की धोखे और मक्कारी की बातें लिख लिख कर सुल्तान जलालुद्दीन को भेजता रहा और लखनौती जाने की तैयारी करता रहा। ज़फर खां को अवध भेज कर सरयू नदी द्वारा प्रस्थान करने के लिये नौकायें तैयार कराना आरम्भ कर दिया। अपने सम्बन्धियों तथा साथियों से परामर्श करके यह निश्चय किया कि, "जब मुझे इसकी सूचना मिलेगी कि सुल्तान

जलालुद्दीन ने कड़े की ओर प्रस्थान करने के लिये अपने शिविर देहली के बाहर लगा दिये हैं तो मैं अपने हाथी, धन सम्पत्ति, सोना, तथा सैनिकों के परिवार को लेकर सरयू नदी होता हुआ लखनौती चला जाऊँगा।

(२२९) लखनौती पर अपना अधिकार जमा लूगा जिससे देहली से कोई व्यक्ति मेरे पास न पहुँच सके।" जलाली राज्य के सभी पदाधिकारी तथा शहर के बुद्धिमान लोग यह समझ गये थे और एक दूसरे से कहा करते थे कि, "न तो मलिक अलाउद्दीन सुल्तान जलालुद्दीन के पास आयेगा और न हाथी तथा धन सम्पति भेजेगा। वह जो कुछ लिखता है सब झूठ तथा छल हैं। वह हाथी धन सम्पत्ति तथा हिन्दुस्तान की सेना लेकर लखनौती चला जायगा।" सुल्तान जलालुद्दीन के सामने साफ़ साफ यह बात करने का किसी को साहस न था। यदि कोई विश्वास पात्र सुल्तान अलाउद्दीन के विषय में कोई समाचार पहुँचाता तो सुल्तान जलालुद्दीन उससे गरम हो जाता और कहता कि, "लोगों की यह इच्छा है कि मेरे बालक को मेरे हाथ से हानि पहुँचवा दें। उसके विषय में लोग बढ़ा चढ़ाकर मुझसे कहते हैं।"

सुल्तान जलालुद्दीन ने अत्यन्त कृपा तथा दया पूर्वक एक आश्वासन-पत्र अपने हाथों से लिखकर अपने दो बड़े विश्वास पात्रों के हाथ अलाउद्दीन के पास कड़े भेजा। जब सुल्तान के विश्वास पात्र उसका पत्र लेकर कड़े पहुंचे तो उन्होंने देखा कि सब काम बिगड़ चुका है। सुल्तान अलाउद्दीन तथा उसकी समस्त सेना सुल्तान जलालुद्दीन से फिर गई है। विश्वास पात्रों ने बड़ा प्रयत्न किया कि किसी प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन तथा उसकी सेना के विरोध के समाचार सुल्तान जलालुद्दीन को लिख भेजे किन्तु वे किसी प्रकार कड़े से पत्र न भिजवा सके। वे इसी सोच विचार में थे कि वर्षा आरम्भ हो गई, मार्गों में पानी भर गया, व रमज़ान का महीना आ गया।

सुल्तान अलाउद्दीन का भाई अल्मास बेग, जो कि सुल्तान का भतीजा और दामाद था, तथा आखुरबकी के पद पर नियुक्त था, बराबर सुल्तान से कहा करता था कि, "लोगों ने मेरे भाई को बहुत डरा दिया है। ऐसा न हो कि मेरा भाई अन्नदाता के भय तथा लज्जा से विष खाकर या पानी में (डूब कर) आत्म हत्या करले।"

(२३०) इसके कुछ दिन पश्चात् सुल्तान अलाउद्दीन का पत्र अल्लास बेग को प्राप्त हुआ, जिसमें लिखा था कि, "मैंने सुल्तान की आज्ञा का उल्लंघन किया है। मैं हर समय अपनी पगड़ी में विष छिपाये रहता हूं। यदि सुल्तान अकेले मेरे पास आकर मुझे आश्वासन दें तो मुझे संतोष हो सकता है अन्यथा मैं विष खालूँगा या हाथी तथा धन सम्पत्ति लेकर जहाँ जी चाहेगा चला जाऊँगा।" यह पत्र सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने परामर्शदाताओं के परामर्श से अपने भाई को इस आशय से लिखा कि सुल्तान जलालुद्दीन लालच में अकेला कड़े पहुँच जायगा और उसकी हत्या करादी जायगी। सुल्तान अलाउद्दीन के भाई ने सुल्तान जलालुद्दीन के सामने वह पत्र खोल कर रख दिया। क्योंकि सुल्तान जलालुद्दीन का अन्तिम समय आ चुका था अतः उसने उस मक्कारी तथा छल से युक्त पत्र पर विश्वास कर लिया। बिना सोचे समझे सुल्तान अलाउद्दीन के भाई अल्मास बेग को कड़े की ओर रवाना कर दिया और उससे कहा कि शीघ्रातिशीघ्र अला-उद्दीन के पास पहुंच कर उसे किसी अन्य स्थान पर जाने से रोक दे और कहदे कि "मैं अकेला कड़े आ रहा हूं। वह मेरा पुत्र और मेरी आँखों का प्रकाश है। मै उसको प्रोत्साहन देने के लिये आ रहा हूं।"

अल्मास बेग नौका पर सवार होकर राजदूत की भाँति सातवें आठवें दिन अपने भाई के पास कड़े पहुँच गया। सुल्तान ने आज्ञा दी कि खुशी के ढोल बजाये जायँ कारण कि 'मेरा भाई मेरे पास पहुँच चुका है। अब मुझे कोई भय या सोच नहीं।' उन बुद्धिमानों ने, जो कि सुल्तान

अलाउद्दीन के विश्वास पात्र थे, उससे कहा कि "हमने लखनौती जाने का विचार त्याग दिया। सुल्तान जलालुद्दीन धन सम्पत्ति तथा हाथी की लालच में अन्धा तथा बहरा हो गया है। वह अपने आप को इतने बड़े संकट में डाल कर तेरे पास आ रहा है, अब तेरा जो चाहे वह कर।"

(२३१) अल्मास बेग को उसके भाई के पास भेजने के पश्चात् सुल्तान जलालुद्दीन ने, जिसकी घात में मौत बैठी थी, कुछ सोच विचार न किया तथा किसी विश्वास पात्र की बात की परवाह न की। अपने सभी शुभचिन्तकों से बड़े आतंक से पेश आता रहा। धन सम्पत्ति तथा हाथियों की लालसा ने उसे अन्धा और बहरा बना दिया था। अपने कुछ विशेष व्यक्ति तथा १००० वीर सवार लेकर किलोखडी से प्रस्थान किया और डम्हाई पहुँचा। नदी द्वारा यात्रा करना निश्चय किया। उसने अहमद चप को लश्कर का सरदार नियुक्त करके आज्ञा दी कि वह ख़ुश्की के मार्ग से कड़े की ओर प्रस्थान करे। स्वयं नौका पर सवार होकर नौकाओं को कड़े की ओर चलने की आज्ञा दी। चारों ओर वर्षा की अधिकता से बाढ़ आ चुकी थी। संसार भर में पानी भरा हुआ था और मौत सुल्तान के बाल खींचती हुई लिये जा रही थी। रमज़ान मास की सत्रह तारीख़ को सुल्तान नौका पर सवार होकर कड़े पहुंचा, यहाँ तक कि गँगा नदी दिखाई पड़ी।

अलाउद्दीन और अलाई लोगों ने जब यह सुना कि सुल्तान जलालुद्दीन आ रहा है, तो उन लोगों ने उसकी हत्या के विषय में निश्चय कर लिया। सुल्तान अलाउद्दीन ने जलालुद्दीन के कड़ा पहुँचने के पूर्व गंगा नदी कड़े से पार करली थी। हाथी, धन सम्पत्ति तथा सेना लेकर गंगा नदी के उस पार कड़ा मानिक पुर के बीच में अपने शिविर लगा दिये थे। उनके गंगा पार करने के पश्चात् सुल्तान जलालुद्दीन का चत्र दृष्टिगोचर हुआ। अलाउद्दीन की सेना तैयार होगई। सब ने हथियार लगा लिये। हाथियों तथा घोड़ों पर हौदे एवं ज़ीन कस लिये। सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने भाई अल्मास बेग को अपनी ओर से स्वागत के लिये सुल्तान जलालुद्दीन के पास नाव पर सवार कर के भेजा और उसे आदेश दे दिया कि जिस प्रकार हो सके सुल्तान को छल द्वारा इस पर तैयार करदे कि वह उन हज़ार वीर सवारों को जिन्हें वह अपने साथ लाया है वहीं छोड़ दे और इस स्थान पर न लाये। स्वयं कुछ गिने चुने आदमियों के साथ, जहाँ मेरा लश्कर उतरा हैं, चला आये।

(२३२) दुष्ट अल्मास बेग नाव पर बैठ कर शीघ्रातिशीघ्र सुल्तान जलालुद्दीन के पास पहुँचा। उसने देखा कि कुछ नौकायें सुल्तान के साथ साथ आ रही हैं जिन पर अनेक शूर वीर सवार हैं। उसने सुल्तान से कहा कि "मेरा भाई सब कुछ त्याग कर भागजाने को तैयार है। मुझे अन्नदाता की कृपा पर बड़ा विश्वास है। यदि मैं न पहुंच जाता तो भगवान् जाने वह किस ओर निकल जाता और कहाँ भाग जाता। यदि अन्नदाता उसके पास शीघ्रातिशीघ्र न पहुँच जायेंगे तो वह आत्म हत्या कर लेगा। समस्त धन सम्पत्ति का विनाश हो जायेगा। यदि इस समय उसने हथियार-बन्द सवारों को अन्नदाता के साथ नौका पर बैठा हुआ देखा तो तुरन्त आत्म हत्या कर लेगा।"

सुल्तान ने आदेश दिया कि, वे सवार तथा नौकायें, जो उसके साथ आ रही हैं, नदी तट पर ही रुक जायँ। सुल्तान जलालुद्दीन अपने साथ दो नौकाएँ तथा कुछ विश्वास पात्र एवं दास लेकर नदी के दूसरे तट की ओर रवाना हुआ। जैसे ही दोनों नौकायें चलीं, सुल्तान की मौत उसके निकट आने लगी। दुष्ट तथा छली अल्मास बेग ने सुल्तान से निवेदन किया कि "इन मलिकों तथा विश्वास पात्रों को जो नौका में बैटे हैं आदेश दे दिया जाय कि वे अपने अस्त्र-शस्त्र खोल कर रख दें। ऐसा न हो कि उनके मेरे भाई के निकट पहुँचते ही, मेरा भाई भयभीत

हो जाय।" सुल्तान इस छल को भी न समझ सका और अपने विश्वास पात्रों को आदेश दे दिया कि अपनी कमर से हथियार खोल कर रख दें। जब सुल्तान की दोनों नौकाएँ गंगा के बीच मे पहुँचीं तो मलिकों तथा अमीरों की दृष्टि सुल्तान अलाउद्दीन के लश्कर पर पड़ी। उन्होंने देखा कि सुल्तान अलाउद्दीन की समस्त सेना हथियार लगाये है। हाथी तथा घोड़ों पर हौदे एवं जीन कसी हुई हैं। भिन्न भिन्न स्थानों पर टोलियाँ खड़ी हुई हैं। मलिक तथा अमीर एवं वे लोग जो कि दोनों नौकाओं पर सवार थे समझ गये कि अल्मास बेग अपने चचा तथा आश्रयदाता को अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से छल कपट करके दूसरी ओर हत्या कराने ले जा रहा है। सब ने अपनी जान से हाथ धो लिये और कुरान के सूरे[1] पढ़ना आरम्भ कर दिये।

(२३३) मलिक खुर्रम वकीलदर ने अल्मास बेग से कहा कि, "तूने हमारे हथियार खुलवा दिये और हमारे सवारों को भी नदी तट के आगे बढने न दिया। तेरी सेना हथियार लगाये युद्ध के लिये तैयार है। तुम्हारे हाथी तथा घोड़ों पर हौदे एवं जीनें कसी हुई हैं। यह क्या बात है और इसका क्या अर्थ है?" अल्मास बेग समझ गया कि मलिक खुर्रम को उसके षड्यन्त्र का पता लग गया है। उसने उत्तर दिया कि "मेरे भाई की इच्छा है कि सुसज्जित सेना के साथ खाकबोस (धरती चुम्बन) करे।" सुल्तान को मौत ने इतना अन्धा बना दिया था कि वह उनके षड्यन्त्र को अपनी आँखों से देखकर भी गंगा के बीच ही से न लौट गया और नौकाओं को वापस लौटाने का आदेश न दिया। अल्मास बेग से उसने कहा, 'मैं इतनी दूर से रोजा रखने के बावजूद यहाँ आया हूं, किन्तु अलाउद्दीन से इतना भी नही हो सकता और उसकी यह भी इच्छा नही होती कि नौका पर सवार होकर मेरे स्वागत के लिये आये।" अल्मास बेग ने सुल्तान को उत्तर दिया कि, "मेरे भाई की आकाक्षा यह है कि जब अन्नदाता उस ओर उतर जायं तो वह अपने हाथियों, मोती तथा जवाहरात के सन्दूकों एवं अमीरों को लेकर दस्त बोस (हाथ चूमना) करे। अभी स्पष्ट हो जायगा कि उसने किस प्रकार अन्नदाता के इफ्तार (रोजा खोलने) का प्रबन्ध किया है। अन्नदाता सेवक तथा अपने पुत्र के घर मे इफ़्तार करे जिससे, जब तक हम जीवित रहें, इस पर समस्त संसार में गर्व करते रहे।"

अल्मास बेग ने इस प्रकार सुल्तान को धोखा दे दिया। वह अपने दोनों भतीजों, दामादों तथा अपने पोषितों पर इतना विश्वास करता था कि उसने कुछ न कहा और उस निद्रा से न जागा। नौका में रहल (टिकटी) पर क़ुरान रक्खे हुए कुरान पढता जाता था और इस प्रकार निर्भीक होकर जा रहा था जिस प्रकार पिता अपने पुत्रों के घर पर जाते हैं। नौका के अन्य सवारों को अपनी मौत दिखाई दे रही थी। वे जिस प्रकार मरते समय सूरे यासीन[2] पढ़ी जाती है वैसे पढ रहे थे।

(२३४) जब सुल्तान जलालुद्दीन दूसरी (दोपहर पश्चात्) की नमाज के उचित समय पर नदी तट पर पहुंचा और अपने कुछ विश्वास पात्रों को लेकर नौका से उतरा तो सुल्तान अलाउद्दीन आगे बढा और अपने अमीरों तथा गण्य मान्य व्यक्तियों को लेकर खाकबोस किया; सुल्तान के निकट पहुँचा, उसके पैरों पर गिर पड़ा। सुल्तान जलालुद्दीन ने कृपालु पिता की भाँति उसके नेत्रों तथा कपोलों का चुम्बन किया। उसकी दाढी पकड़ी और प्रेम से दो तमांचे उसके गालों पर मारे। उससे कहा, "ऐ! बाल्यावस्था में मेरी गोद मे बैठकर मेरे कपड़ों पर पेशाब कर दिया करता था। वह गन्ध अभी तक मेरे वस्त्रों पर विद्यमान है। तू मुझसे क्यों

---

१. कुरान के भिन्न भिन्न भागों मे अनेक छोटे छोटे भाग हैं; ये भाग सूरे कहलाते हैं।

२. कुरान का एक सूरा जो लोगों के मरने के समय तथा अन्य कष्ट के अवसरों पर पढ़ा जाता है।

डरता है। यह तूने क्यों सोच लिया कि मैं तुझे कोई हानि पहुँचाऊँगा। मैंने तुझे उस समय से जबकि तू दूध पीता बच्चा था पाल-पोस कर क्या इसलिये बड़ा किया है कि युवावस्था में तेरी हत्या करदूँ। मैं तुझे सर्वदा अपने पुत्रों से भी अधिक प्रिय समझता था और अब भी समझता हूँ। मुझसे इतना भय किस लिए कर रहा है कि मुझ जैसे रोज़ेदार को इस दशा से बुलवाया कि मेरे और तेरे अतिरिक्त यहाँ कोई अन्य नहीं। तुझे इन अजनबी लोगों पर विश्वास है जो कि धन सम्पत्ति की लालच से तेरे चारों ओर एकत्रित हो गये हैं और यदि धन सम्पत्ति न पायें तो तुझ से पृथक् हो जायें; किन्तु चाहे जो कुछ हो जाय मेरा तुझसे प्रेम कम न होगा।"

यह कह कर अलाउद्दीन का हाथ पकड़ा और अपनी नौका की ओर खींचा और कहा कि, "ऐ अलाउद्दीन तू मुझसे कब तक डरता रहेगा। तूने मेरा खून पानी कर दिया है।" जिस समय सुल्तान जलालुद्दीन अलाउद्दीन का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींच रहा था, उसी समय पत्थर का सा हृदय रखने वाले षड्यन्त्रकारी, जिन्हें पहले से सब कुछ समझा दिया गया था, अपने काम पर तैयार हो गये। महमूद सालिम ने, जो कि सामने का एक नीच मुफ़रिद (साधारण सैनिक) तथा मुफ़रिद-ज़ादा था, सुल्तान पर तलवार से प्रहार कर दिया। उस की तलवार का घाव पूरा न लगा। सुल्तान का हाथ कट गया। महमूद ने तलवार का दूसरा हाथ लगाया।

(२३५) सुल्तान ज़ख्मी होकर नदी की ओर भागा। नदी की ओर भागते समय उसने कहा कि, "ऐ अभागे अला! तूने यह क्या किया?" दुष्ट इख्तियारुद्दीन सुल्तान के पीछे दौड़ा और उस जैसे शत्रुओं को क्षीण कर देने वाले तथा सुन्नी मुसलमानों के लिए राज्य विजय करने वाले को भूमि पर गिरा दिया; उस जैसे बादशाह का सिर उसके शरीर से पृथक् कर दिया। उसी प्रकार खून टपकता हुआ सिर सुल्तान अलाउद्दीन के सामने ले गया। मैंने सुना है कि सुल्तान ने सिर कटते समय दो बार शहादत के कलमे पढ़े और इफ़तार के समय शहीद हो गया[१]।

सुल्तान के कुछ विश्वासपात्र, जो कि उसके साथ आये थे और जिनमें से कुछ नौका से नीचे उतर चुके थे तथा कुछ नौका ही में बैठे थे, मार डाले गये। षड्यन्त्रकारी भाग्य तथा अत्याचारी एवं निर्दयी आकाश ने इस प्रकार का अत्याचार, विनाश, मक्कारी, षड्यन्त्र, हरामखोरी, निर्लज्जता तथा संगदिली उन दुष्ट छली और हरामखोरों के द्वारा प्रकट कराई। राज्य के प्रेम तथा दुनिया के लोभ में, जो कि आदम से लेकर इस समय तक न किसी के पास रही है और न क़यामत तक रहेगी, भतीजे और दामाद ने, जिसका पालन पोषण बाल्यावस्था ही से उसके चचा तथा ससुर के द्वारा हुआ था, खुल्लम खुल्ला १७ रमज़ान को उसकी हत्या करदी, अपने चचा ससुर, पालक, आश्रयदाता, बादशाह और स्वामी का सिर उसके शरीर से पृथक् कराके भाले की नोक के ऊपर समस्त कड़े तथा मानिकपुर में इस प्रकार घुमवाया जिस प्रकार विरोधियों तथा विद्रोहियों के सिर घुमाये जाते हैं। तत्पश्चात् अवध भेज दिया। वहाँ भी सिर घुमवाया गया उन काफ़िरों का सा हृदय रखने वालों ने तथा उन लोगों ने जिनका मुंह हमेशा काला रहे उस जैसे

---

१ तबक़ाते अकबरी के लेखक के अनुसार सुल्तान जलालुद्दीन के कड़ा आने के समय मलिक अलाउद्दीन शेख कर्क मजज़ूब के पास जो कड़े में दफ़न हैं, गया। उसने बड़ी नम्रता से उनके सम्मुख अपने उपहार रखे। मजज़ूब ने सिर उठा कर कहा,

छन्द 'जो कोई भी युद्ध करेगा
उसका सिर नाव में और शरीर गंगा में होगा।'

(तबक़ाते अकबरी पृ० १३६)

मुसलमान बादशाह के इस्लाम पर भी ध्यान न दिया और यह भी ख्याल न किया कि वह उन का सम्बन्धी है तथा उन्होंने उसका नमक खाया है।

(२३६) उसका रक्त तथा अनेक निर्दोष सुन्नियों का रक्त रमज़ान के पवित्र महीने में इफ़तार के समय पानी के समान बहा दिया। उन लोगों ने कुछ दिनों तक साथ रहने वाले अस्थाई संसार के कारण इस प्रकार का कुफ़, अत्याचार तथा पाप किया कि जिससे उनके मुख पर ऐसी कालिख लग गई जो कि किसी प्रकार न तो कयामत तक और न इसके पश्चात् उनके मुख से धुल सकती है। उन्होंने कुछ समय के भोग-विलास के लिये ऐसा बड़ा पाप किया कि जिसका दंड आकाश से पाताल तक नहीं समा सकता। इस बात का बहुत दुःख तथा यह बड़े खेद का विषय है कि उन जैसे दुष्टों की दुष्टता, हरामख़ोरी तथा निर्लज्जता पर उसी समय आकाश से भगवान् के क्रोध के पत्थरों की वर्षा न हुई और जहन्नुम के आग की लपट उनके पैरों के नीचे उत्पन्न न होगई और उन सब कठोर हृदय रखने वाले अत्याचारियों, हरामख़ोरों तथा उन लोगों को जिन्हें मुसलमान नहीं कहा जा सकता, नष्ट भ्रष्ट न कर दिया। आकाश से कष्टों तथा मुसीबतों के तूफ़ान की वर्षा न हुई और उन अभागे, काफ़िरों जैसी आदत रखने वालों का नाम व निशान भी पृथ्वी से मिट न गया; दुर्घटनाओं की बाढ़ द्वारा वे अभागे अन्धकार के कुएँ में न गिर पड़े। उन हराम-ख़ोरों के विनाश होजाने से ही संसार वाले शिक्षा ग्रहण कर सकते थे।

सुल्तान अलाउद्दीन का बादशाह घोषित होना

उसी समय उस रक्त-पात के पश्चात्, जबकि सुल्तान के कटे हुए शीश से रक्त की बूंदें टपक रही थीं, उन अभागे नामर्दों ने सुल्तान जलालुद्दीन का चत्र लाकर अलाउद्दीन के सिर पर लगा दिया। उनकी आँखों से लज्जा का अन्त हो चुका था। उन्होंने बेईमानी और इस्लाम के विरुद्ध हाथियों पर सवार होकर सुल्तान अलाउद्दीन की बादशाही की घोषणा करादी। उन दुष्ट तथा छली व्यक्तियों का कुछ ही वर्षों के भीतर और सुल्तान अलाउद्दीन का उनसे कुछ वर्ष पश्चात् विनाश हो गया। उन्हें थोड़ा-सा समय अवश्य मिल गया किन्तु वे अधिक समय तक वर्त्तमान न रह सके।

(२३७) तीन् चार साल से अधिक न तो छली उलुग़ ख़ाँ जीवित रहा और न संकेत करने वाला नुसरत ख़ाँ, न उपद्रव मचाने वाला ज़फ़र ख़ाँ और न मेरा चचा अलाउलमुल्क कोतवाल, न मलिक असग़री सरदावतदार और न मलिक जूना दादबक जो सबके सब इस षड्यन्त्र में सम्मिलित थे, शेष रह गये। जो लोग सुल्तान जलालुद्दीन को परामर्श देते थे, वे भी अब जीवित नहीं। सालिम दोज़ख़ी का पुत्र जिसने सर्व प्रथम तलवार मारी थी, एक दो वर्ष के बीच ही में घुल-घुल कर मर गया। अभागा इख़्तियारुद्दीन हूद, जिसने कि उस जैसे बादशाह का सिर काटा था, शीघ्र पागल हो गया। मरते समय चिल्लाता था कि सुल्तान जलालुद्दीन हाथ में नंगी तलवार लिये मेरा सिर काटने आया है। यद्यपि सुल्तान अलाउद्दीन इस नीच कार्य करने के उपरान्त कुछ समय तक राज सिंहासन पर विद्यमान रहा और कुछ समय तक सभी कार्य उसकी इच्छानुसार सम्पन्न होते रहे और उसके पुत्रों, स्त्रियों, लावलश्कर, धन सम्पत्ति में वृद्धि होती रही किन्तु अपने आश्रयदाता का तथा इतने निर्दोषों का रक्त बहाने के कारण, छली आकाश ने उसका भी विनाश कर दिया। उसने फ़िरऔन से भी अधिक रक्त पात किया था किन्तु उसके घरबार का उसी के हाथों विनाश हो गया। इस दुष्ट भाग्य ने उसके पुत्रों को उसी के हाथों बन्दी बनवाया तथा उसके विश्वासपात्रों की उसी के हाथों हत्या कराई। उस गुलाम द्वारा जिसका वह पालक तथा आश्रयदाता था, उसके पुत्रों को अन्धा करा दिया। उसके मौलाज़ादे (दास) द्वारा उसके पुत्रों को खीरे ककड़ी की तरह कटवा

डाला। उसकी पुत्रियों को हिन्दुओं के हाथ पहुँचवा दिया। जिस प्रकार सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या का बदला उसके घर बार तथा आश्रयदाताओं को मिला उस प्रकार किसी अग्नि पूजा करने वाले काफ़िर तथा मुग़ल को भी न मिला होगा।

इस तारीखे फ़ीरोज़शाही के संकलन कर्त्ता ने इस ग्रंथ की भूमिका में यह शर्त लिखदी है कि वह जो कुछ इस इतिहास में लिखेगा, सच सच लिखेगा। वह प्रत्येक के गुणों तथा अवगुणों का उल्लेख इस इतिहास में करेगा। लोगों की अच्छाइयों को स्पष्ट करेगा और बुराइयों को न छिपायेगा।

(२३८) यदि मैं साधारण रूप से कुछ लिखदूँ तथा कोई बात छिपा जाऊँ और केवल अच्छाइयाँ ही प्रकट करूँ तथा बुराइयों को स्पष्ट न करूँ तो इस इतिहास का कोई पाठक मेरे इतिहास पर विश्वास न करेगा। मुझे भगवान् के यहाँ मुक्ति न प्राप्त होगी। उपर्युक्त बात को ध्यान में रखते हुए मैंने सुल्तान अलाउद्दीन द्वारा उसके आश्रयदाता की हत्या का हाल भी लिख दिया है और उसकी राज्य-व्यवस्था तथा विजयों के विषय में भी जो कुछ मुझे जानकारी है, वह भी मैं लेखनी-बद्ध कर रहा हूँ।

मलकये जहाँ द्वारा रुकनुद्दीन इब्राहीम का बादशाह बनाया जाना-

जब सुल्तान जलालुद्दीन की शहादत की सूचना मलिक अहमद चप को, जो खुश्की के मार्ग से सेना ला रहा था, मिली, तो वह उसी स्थान से लौट पड़ा और देहली की ओर चल खड़ा हुआ। सेना वर्षा तथा कीचड़ के कारण थक कर बहुत चूर हो चुकी थी, किन्तु उसे भी लौटना पड़ा। सब अपने अपने घरों को किसी प्रकार दुम दबा कर भागे।

सुल्तान जलालुद्दीन की पत्नी मलकये जहाँ ने, जिसे धैर्य न था, अपनी मूर्खता के कारण राज्य के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से परामर्श न किया और अरकली खाँ के, जो कि बहुत बड़ा शूरवीर था, मुल्तान से देहली आने की प्रतीक्षा न की और न उसे मुल्तान से बुलवाया वरन् जल्दी में बिना सोचे समझे और किसी से परामर्श न लेकर सुल्तान जलालुद्दीन के लघु पुत्र रुकनुद्दीन इब्राहीम को, जो कि नवयुवक तथा अनुभवहीन था, राज सिंहासन पर बिठा दिया। वह अमीर, प्रतिष्ठित और गण्य मान्य व्यक्तियों तथा मलिकों को किलोखड़ी से देहली ले आई और स्वयं कूशके सब्ज़ (हरे राजभवन) में रहने लगी। राज्य व्यवस्था सम्बन्धी पद तथा अक़्तायें उन जलाली मलिकों एवं अमीरों को प्रदान कर दिये जो उस समय देहली में विद्यमान थे। इस प्रकार मलकये जहाँ ने राज्य-व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध प्रारम्भ कर दिया। सब प्रार्थना पत्र उसके सामने पेश किये जाते और वह स्वयं आज्ञायें देती थी।

(२३९) अरकली खाँ अपनी माता के रंगढंग तथा समझ बूझ से बड़ा खिन्न हुआ और मुल्तान ही में रह गया, शहर देहली न आया। इस प्रकार सुल्तान जलालुद्दीन के घर ही में माता तथा पुत्र के बीच में विरोध उत्पन्न होगया। अलाउद्दीन को कड़े में अरकली खाँ के न आने तथा माता एवं पुत्र के विरोध का हाल मालूम होगया। शत्रु के घर का परस्पर बैर उसे अपने लिये बड़ा ही लाभप्रद दृष्टिगोचर हुआ। अरकली खाँ के मुल्तान से न आने पर वह बड़ा प्रसन्न हुआ।

उसी वर्षा में, जिस के समान वर्षा किसी की स्मृति में न हुई थी, सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या के पश्चात् धन दौलत लुटाता, सेना तथा लश्कर एकत्रित करता हुआ यमुना तट पर पहुँचा। जलाली मलिकों तथा अमीरों को तीस तीस और चालीस चालीस मन सोना देकर अपनी ओर मिला लिया। उन नामर्दों ने सोने की लालच में, जो कि मृतक शरीर के समान है नमक-हरामी तथा नमकहलाली में कोई फ़र्क़ न समझा। वे मलक्रये जहाँ तथा सुल्तान जलालुद्दीन के लघु पुत्र सुल्तान रुकनुद्दीन इब्राहीम को पीठ दिखाकर अलाउद्दीन से मिल गये।

पांच मास पश्चात् अलाउद्दीन एक बहुत बड़ी सेना लेकर देहली के दो तीन कोस निकट पहुँच गया। उसके ये पाँच मास यात्रा में व्यतीत हुए थे। मलकये जहाँ, सुल्तान रूकनुद्दीन इब्राहीम को लेकर शहर देहली से भाग कर मुल्तान की ओर चली गई। कुछ जलाली राजभक्त अमीर घरबार तथा अपने परिवार का त्याग कर मलकये जहाँ एवं रुकनुद्दीन के साथ मुल्तान चले गये।

सुल्तान अलाउद्दीन, सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या तथा कड़े से प्रस्थान करने के ५ मास पश्चात् देहली पहुँच गया। देहली के राज सिंहासन पर विराजमान हुआ। लोगों को इतनी धन सम्पत्ति बाँटी कि किसी को भी उस दुष्ट के सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या करने पर कोई आपत्ति दृष्टिगोचर न हुई। लोग उसकी बादशाही की ओर आकर्षित हो गये। उसके धन सम्पत्ति लुटाने के कारण जलाली मलिक तथा अमीर अपने आश्रयदाता के पुत्रों से विश्वासघात करके अलाउद्दीन से मिल गये।

(२४०) सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या से देहली राज्य के सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियों, छोटे-बड़े, आलिम-जाहिल, बुद्धिमान, मूर्ख तथा बूढ़े और जवान लोगों ने अपनी आँखों से देख लिया कि सुल्तान जलालुद्दीन ने अपनी हत्या धन सम्पत्ति के लोभ में कराई। सुल्तान अलाउद्दीन ने भी धन सम्पत्ति के लोभ में ही इतनी दुष्टता दिखाई। जलाली मलिकों तथा अमीरों ने भी धन सम्पत्ति ही की लालच में हरामख्वारगी की।

छन्द

'सोना सभी का रक्त बहाता है और फिर भी अपने स्थान पर रहता है।
कोई ऐसा नहीं जो कि सोने से सबके रक्त का बदला ले।'

सिकन्दर सानी (द्वितीय) अस्सुल्तानुल आज़म अलाउद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह ख़लजी

सद्रे जहाँ। काजी सदुद्दीन आरिफ। क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन ब्याना। क़ाजी हमीद मुल्तानी। खिज्र खाँ शाहज़ादा। मुबारक खाँ शाहज़ादा। शादी खां शाहज़ादा। फ़रीद खाँ शाहज़ादा। उसमान खां शाहज़ादा। मलिक शिहाबुद्दीन, लघु पुत्र, शाहजादा। उलुग़ खाँ अलमास बेग, भाई। नुसरत खाँ वज़ीर। ज़फ़र खाँ अर्जे ममालिक, अलप खाँ अमीर मुल्तानी, मलिक अलाउल मुल्क कोतवाल, मलिक फखरुद्दीन जूना दादबक। मलिक बद्रुद्दीन असगरी सरदावतदार। मलिक ताजुद्दीन काफूरी। ख़्वाजा उमदतुल मुल्क अलादबीर। मलिक अइज्जुद्दीन जैश। नसीरुल मुल्क। ख़्वाजा हाजी। मलिक मुईनुद्दीन, सैयद मलिक ताजुद्दीन जाफ़र। मलिक अइजुद्दीन दबीर। मलिक कमालुद्दीन दबीर। मलिक हमीदुद्दीन नायब वकीलदर ग़ाज़ी। मलिक शेखेक बारगाह अर्थात् सुल्तान तुगलुक। मलिक नसीरुद्दीन कुलाहे ज़र। मलिक मुहम्मद शाह। मलिक हमीदुद्दीन अमीर कोह। मलिक अलाउद्दीन अयार कोतवाल।

(२४१) इख्त्यारुद्दीन मल अफग़ान। मलिक ऐनुल मुल्क मुल्तानी। मलिक हसन बेगी खास हाजिब। मलिक इख्त्यारुद्दीन तिगीन। मलिक असदुद्दीन सालारी। मलिक सैयद ज़हीरुद्दीन। मलिक जब्बारुद्दीन तमर। मलिक कमालुद्दीन ग़ुर्ग। मलिक काफ़ूर हज़ार दीनारी अर्थात् मलिकनायब। मलिक काफ़ूर मरहटा नायब वकीलदर। मलिक दीनार शहन-ए-पील। मलिक अताबक आखुरबक। मलिक शाहीन नायब बारबक। मलिक फ़खरुद्दीन खण्ड, नसीर खाँ का भतीजा। मलिक अशबक खुदावन्द ज़ादा हाशी गर। मलिक क़ीर बेग। मलिक क़ीरान अमीर शिकार। मलिक रुक्नुद्दीन अंबा। मलिक अइज्जुद्दीन लग़ाय खाँ। हलवी किताब खाँ।

---

(२४२) [प्रशंसा के योग्य भगवान् है जो कि दोनों लोकों का पालने वाला है। बहुत बहुत दरूद तथा सलाम मुहम्मद साहब एवं उनकी संतान पर।]

सुल्तान अलाउद्दीन का देहली की ओर प्रस्थान

शुभचिन्तक ज़िया बरनी इस प्रकार निवेदन करता है कि जब ६९५ हिजरी (१२९५-९६ ई०) में सुल्तान अलाउद्दीन सिंहासनारूढ़ हुआ तो उसने अपने भाई, मलिक नुसरत जलेसरी, मलिक हिज़ब्रुद्दीन तथा अपने अमीर मजलिस संजर खुस्रपुरा को क्रमशः उलुग़ख़ाँ, नुसरत ख़ाँ, ज़फ़रख़ाँ तथा अलपख़ाँ की पदवियाँ प्रदान कीं; अपने प्रतिष्ठित मित्रों को अमीर तथा अमीरों को मलिक नियुक्त कर दिया; अपने प्राचीन विश्वास पात्रों में से प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार उन्नति प्रदान की। अपने ख़ानों, मलिकों तथा अमीरों को नये सवार भरती करने के लिये तनके दिये। वे लोग जिन्हें अत्यधिक धन प्राप्त हो चुका था और जो राज्य व्यवस्था तथा दीन सम्बन्धी कार्यों में अनुचित आचरण करने लगे थे, उनसे प्रजा को धोखा देने, सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या का अपराध छिपाने तथा कूटनीति के कारण कुछ न कहा और सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियों को इनाम इकराम बाँटता रहा। वह शहर (देहली) पहुँचने की तैयारियाँ किया करता था, किन्तु वर्षा की अधिकता कीचड़ तथा मार्ग में पानी भर जाने के कारण वह विलम्ब करना चाहता था और उसकी इच्छा यह थी कि किसी शुभ अवसर पर देहली की ओर प्रस्थान करे।

(२४३) उसे सुल्तान जलालुद्दीन के मंझले पुत्र अरकली ख़ाँ का बड़ा भय था, कारण कि वह अपने समय का रुस्तम तथा बड़ा शूरवीर था। वह इसी असमंजस में था कि देहली से सूचना मिली कि वह न आयेगा। सुल्तान अलाउद्दीन ने उसका न आना अपने भाग्य के हित में समझा। वह समझ गया कि सुल्तान रुक्नुद्दीन इब्राहीम देहली के राज सिंहासन पर विराजमान न रह सकेगा, और न जलाली राज-कोष में इतनी धन सम्पत्ति ही है कि नई सेना तैयार की जा सकेगी। उसने इस स्थिति से लाभ उठाकर वर्षा के मध्य ही में देहली की ओर प्रस्थान कर दिया। उस वष वर्षा की अधिकता के कारण गङ्गा तथा यमुना समुद्र बन गई थीं। प्रत्येक नदी गङ्गा तथा यमुना बन गई थी। कीचड़ तथा मार्ग में पानी भर जाने के कारण यात्रा बड़ी दुर्गम हो गई थी।

सुल्तान अलाउद्दीन उसी समय अपने हाथी, धन सम्पत्ति तथा लश्कर लेकर कड़े के बाहर निकला। अपने ख़ानों, मलिकों तथा अमीरों को आदेश दिया कि वे नये सवारों की भरती का विशेष प्रयत्न करें। वेतन निर्धारित करने में न तो कोई चिन्ता करें और न किसी बात पर ध्यान दें। साल और महीना कुछ न देखें। बिना सोचे विचारे धन सम्पत्ति ख़र्च करते जायें। धन सम्पत्ति के लुटाने के कारण बहुत बड़ी सेना एकत्रित हो गई। जिस समय सुल्तान अलाउद्दीन देहली की ओर प्रस्थान कर रहा था, उसने एक हलकी, छोटी मंजनीक़ बनवाई थी। ५ मन सोने के सितारे प्रत्येक दिन प्रत्येक पड़ाव पर जहाँ सुल्तान के शिविर लगते उसके शिविर में प्रवेश करने के समय लुटाये जाते। द्वार के सामने एक मंजनीक़ रखी रहती। उससे दर्शकों के ऊपर सोने की वर्षा की जाती थी। लोग चारों ओर से वहाँ एकत्रित हो जाते थे और उन सितारों को चुनते जाते थे। प्रत्येक दिन सुल्तानी शिविर के द्वार पर अधिक से अधिक भीड़ एकत्रित होने लगी। दो तीन सप्ताह में हिन्दुस्तान के सभी भागों तथा क़स्बों में यह प्रसिद्ध हो गया कि सुल्तान अलाउद्दीन देहली पर अधिकार जमाने के लिये प्रस्थान कर रहा है और प्रजा को सोना लुटा रहा है। असंख्य सवार भरती कर रहा है। चारों ओर से सैनिक तथा जन-साधारण सुल्तानी सेना के पास भाग भाग कर आने लगे।

(२४४) जब सुल्तान अलाउद्दीन बदायूं पहुँचा तो छप्पन हज़ार सवार तथा साठ हज़ार प्यादे उस वर्षा में उसकी सेना में भरती हो गये थे, और बहुत बड़ी भीड़ उसके पास एकत्रित हो गई थी। जिस समय सुल्तान अलाउद्दीन बरन पहुँचा, नुसरत खाँ नमाज़गाह के मैदान में बरन के प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्तियों, सर्वसाधारण सैनिकों को सेना में भरती करने लगा। वेतन के विषय में तथा ज़मानत लेने में उसने किसी बात पर ध्यान न दिया। वह खुल्लमखुल्ला कहता था कि, "यदि देहली का राज्य हमको प्राप्त हो जायगा तो जितनी धन सम्पत्ति हम इस समय खर्च कर रहे हैं उसकी सौ गुना एक ही वर्ष में एकत्रित कर लेंगे, और अपने राज कोष में जमा कर लेंगे। यदि राज्य हमको न प्राप्त हुआ तो यह कहीं अच्छा है कि जो धन सम्पत्ति हमने इतने परिश्रम से देवगीर से प्राप्त की है, वह हमारे शत्रुओं के पास पहुँचने की अपेक्षा सर्व साधारण को प्राप्त हो जाय।"

सुल्तान अलाउद्दीन ने बरन पहुँचकर एक सेना ज़फ़र खाँ को दे दी और उसे आदेश दिया कि वह कोल के मार्ग से आये; जिस प्रकार सुल्तान बदायूं और बरन के मार्ग से कूच कर रहा था उसी प्रकार वह कोल के मार्ग से प्रस्थान करे। मलिक ताजुद्दीन कूची, मलिक अमाजी आखुर बक, मलिक अमीर अली दीवाना, मलिक उस्मान अमीर आखुर, मलिक अमीर कलाँ, मलिक उमर सुर्खा, मलिक हिरनमार जो कि जलाली राज्य के प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य मलिक एवं अमीर थे, और जो सुल्तान अलाउद्दीन एवं ज़फ़र खाँ से युद्ध करने के लिये देहली से नियुक्त हुये थे, बरन आकर सुल्तान अलाउद्दीन से मिल गये। इन लोगों को बीस बीस मन और तीस तीस मन सोना प्रदान किया गया। इन मलिकों तथा अमीरों के साथ जो सैनिक आये थे उनमें से प्रत्येक को तीन तीन हज़ार तनके नक़द इनाम दिये गये।

जलाली सहायक तथा कर्मचारी नष्ट भ्रष्ट हो गये। जो अमीर देहली में रह गये थे वे बड़े असमंजस में पड़े हुये थे। जो मलिक सुल्तान अलाउद्दीन से मिल गये थे, वे खुल्लम खुल्ला कहते थे कि, "(देहली) शहर वाले हमारी निंदा करते हुये कहते हैं कि हमने विश्वास घात किया है और हम अपने आश्रयदाता के पुत्र को पीठ दिखाकर शत्रु से मिल गये हैं। वे न्याय से इतना भी नहीं समझते कि जलाली राज्य तो उसी दिन छिन्न भिन्न हो गया जिस दिन सुल्तान जलालुद्दीन किलोखड़ी के राजभवन से सवार होकर अपनी इच्छा से कड़े की ओर गया और देखभाल कर तथा जानबूझ कर अपना एवं अपने विश्वास पात्रों के सिर कटवा दिये। अब हम सुल्तान अलाउद्दीन से मिल जाने के अतिरिक्त कर ही क्या सकते हैं।"

(२४५) जिस समय मलिक सुल्तान अलाउद्दीन से मिल गये और जलाली उपकरण का विनाश हो गया तो मल्कये जहाँ ने जो कि मूर्खों की सरदार थी, अरकली खाँ को मुल्तान से बुलवा भेजा। उसे लिखा कि, "मुझ से वड़ी भूल हुई कि मैंने तेरे होते हुए भी अपने कनिष्ठ पुत्र को राज सिंहासन पर बिठा दिया। कोई मलिक तथा अमीर उसका साथ नहीं देता। अधिकतर मलिक सुल्तान अलाउद्दीन से मिल गये हैं। राज्य हाथ से निकला जा रहा है। यदि हो सके तो शीघ्रातिशीघ्र पहुँचकर पिता के राज सिंहासन पर विराजमान हो जा। हमारा निवेदन स्वीकार कर ले। तू इस भाई से, जो कि सिंहासनारूढ़ हो गया है, बड़ा है और राज्य के योग्य है। वह तेरी सेवा करता रहेगा। मैं स्त्री हूँ और स्त्रियों के बुद्धि नहीं होती। मैंने बड़ी भूल की। अपनी माता की भूल पर ध्यान न दे। अपने पिता का राज्य सँभाल। यदि तू क्रोधवश न आयेगा तो सुल्तान अलाउद्दीन, जो कि बड़े वैभव तथा शक्ति के साथ आ रहा है, देहली पर अपना अधिकार जमा लेगा। वह न तो तुझे ही जीवित छोड़ेगा और न हमको।"

अरकली खाँ अपनी माता के बुलाने पर न आया बल्कि उसे लिख भेजा कि, "इस समय

जबकि मलिक तथा सैनिक हमारे शत्रु से मिल गये हैं, तो मेरे आने से क्या लाभ होगा ?" सुल्तान अलाउद्दीन को जब ज्ञात हुआ कि अरकली खाँ अपनी माता के बुलाने पर न आया तो अपनी सेना में खुशी के ढोल बजवाये। इस कारण कि यमुना बाढ़ पर थी तथा नौकाएँ उपलब्ध न थीं, सुल्तान अलाउद्दीन को कुछ समय तक यमुना तट पर ठहरना पड़ा। यमुना तट पर कुछ समय रुकने के पश्चात् उसके भाग्य का सितारा चमका और नदी का पानी कम हो गया।

(२४६) सुल्तान अलाउद्दीन ने अपनी समस्त सेना के साथ लकड़ी के पुल से नदी पार की। जूद मैदान में पहुँचा। सुल्तान रुक्नुद्दीन इब्राहीम अपनी सेना लेकर राजसी ठाठ बाट से शहर के बाहर निकला और अलाउद्दीन की सेना के सामने पड़ाव डाल दिया। वह सुल्तान अलाउद्दीन से युद्ध करना चाहता था किन्तु आधी रात के लगभग सुल्तान रुक्नुद्दीन इब्राहीम की सेना का बायाँ भाग शोर गुल मचाता हुआ सुल्तान अलाउद्दीन से जा मिला।

सुल्तान अलाउद्दीन का देहली में प्रवेश

सुल्तान रुक्नुद्दीन की पराजय हुई। उसने आखिरी पहर रात में बदायूं द्वार खुलवाकर शहर में प्रवेश किया। राजकोष से कुछ सोने के तनकों की थैलियाँ तथा अस्तबल से कुछ चुने हुये घोड़े लेकर अपनी माता तथा स्त्रियों के साथ रातों रात ग़ज़नी दरवाज़े से निकल कर मुल्तान की ओर चल दिया। मलिक क़ुतुबुद्दीन अलवी और उसके पुत्र तथा मलिक अहमद चप अपना घरबार छोड़कर मल्कये जहाँ एवं सुल्तान रुक्नुद्दीन इब्राहीम के साथ मुल्तान की ओर चल खड़े हुए।

दूसरे दिन सुल्तान अलाउद्दीन राजसी ठाठ बाट से सवार होकर सीरी के मैदान में पहुँचा और वहीं उतर पड़ा। उसकी बादशाही पक्की हो गई। सीरी में ही उसने सेना के शिविर लगवा दिये। दीवानों (विभागों) के अधिकारी शहनगाने पील तथा कोतवाल क्रमशः अपने हाथी और क़िलों की कुञ्जियाँ लेकर उपस्थित हुए। क़ाज़ी, सद्र और शहर के गण्यमान्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति भी सुल्तान अलाउद्दीन के पास आये। नये सिरे से कारोबार तथा शासन प्रबन्ध आरम्भ हो गया। अत्यधिक धन सम्पत्ति तथा लावलश्कर के द्वारा, इस बात पर विचार किये बिना कि सुल्तान अलाउद्दीन की (बैअत) अधीनता कोई स्वीकार करेगा भी अथवा नहीं, उसके नाम का खुतबा देहली में पढ़वा दिया गया और टकसालों में उसके नाम के सिक्के बनने लगे। ६९५ हि० (१२९६ ई०) के अन्त में सुल्तान अलाउद्दीन ने बहुत बड़े लावलश्कर तथा ऐश्वर्य से शहर में प्रवेश किया। राज महल में पहुँच कर देहली के राज सिंहासन पर विराजमान हुआ। कूशके लाल (लाल राजभवन) में अपनी राजधानी बनाई।

(२४७) इस कारण कि सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने खज़ाने में अपार धन सम्पत्ति एकत्रित करली थी, उसने नाना प्रकार से प्रजा पर धन सम्पत्ति की वर्षा आरम्भ कर दी। लोगों की थैलियाँ और खीसे तनके और जीतल से भर गये। लोग भोग विलास मदिरापान तथा ऐश व आराम में ग्रस्त हो गये। शहर में अनेक स्थानों पर विचित्र क़ुब्बे सजाये गये। शराब, शरबत और पान वितरित किये गये। प्रत्येक घर में महफ़िलें होने लगीं। मलिकों, अमीरों, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्तियों ने प्रीतिभोज देना लेना आरम्भ कर दिया। मदिरापान, रमणियों, गायकों तथा विदूषकों का आदर सम्मान होने लगा। सुल्तान अलाउद्दीन युवावस्था की मस्ती तथा अपार धन सम्पत्ति, लावलश्कर और हाथी घोड़ों के कारण भोग विलास में ग्रस्त हो गया। अत्यधिक इनाम इकराम देकर प्रजा को अपना हितैषी तथा राज-भक्त बना लिया। उन जलाली अमीरों को जो उससे मिल गये थे, अपनी कूटनीति से उच्च पद तथा अक़्ता प्रदान कीं।

नये पद

ख्वाजए खतीर को, जो कि मंत्रियों में बड़ा प्रसिद्ध था, अपना वज़ीर बनाया। दावर मलिक के पिता, क़ाज़ी सद्रे जहाँ सद्रुद्दीन आरिफ़ को क़ाज़िए ममालिक नियुक्त किया। सैयद अजली शेखुल इस्लामी और खितावत के पदों पर पिछले सैयद अजल शेखुल इस्लाम और खतीब को उसी प्रकार रहने दिया। मलिक अमीरुद्दीन के पिता उमदतुल मुल्क तथा मलिक अइज्जुद्दीन को दीवाने इन्शा प्रदान की। उमदतुल मुल्क के पुत्रों अर्थात् मलिक हमीदुद्दीन एवं मलिक अइज्जुद्दीन को जो अपनी बुद्धिमत्ता, अनुभव, बुजुर्गी, बुजुर्ग जादगी और नाना प्रकार के गुणों तथा कुशलता के कारण अद्वितीय थे, उच्च पद प्रदान किये। एक को अपना विश्वास-पात्र बनाया और दूसरे को दीवाने इन्शा प्रदान की।

(२४८) नुसरत खाँ यद्यपि नायब मलिक था किन्तु सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष में कोतवाल नियुक्त हुआ। दादबकीए हज़रत मलिक फ़खरुद्दीन कूची को प्रदान की गई। ज़फ़र खाँ अर्ज़ेममालिक नियुक्त किया गया। मलिक अबाची जलाली आखुर बक बनाया गया। मलिक हिरनमार नायब बार्बक नियुक्त हुआ। सुल्तान अलाउद्दीन का दरबार जलाली तथा अलाई अमीरों से इस प्रकार सुशोभित हो गया कि वैसी शोभा किसी अन्य राज्य में देखी न गई। इस इतिहास के संकलन कर्त्ता के चाचा अलाउल मुल्क को सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष में ही कड़ा तथा अवध प्रदान किये गये। मलिक जूना क़दीम को नियाबत तथा वकीलदरी प्रदान की गई। संकलन कर्त्ता के पिता मुईदुलमुल्क को नियाबत तथा बरन की ख्वाजगी प्रदान की गई। योग्य, कार्य कुशल, प्रसिद्ध तथा गण्यमान्य व्यक्तियों को उच्च पद और बड़ी बड़ी अक़्तायें प्रदान की गईं। देहली तथा अन्य प्रदेश उपवन एवं उद्यान बन गये। वक़्फ़ वालों के पास इम्लाक तथा अवक़ाफ़, मफ़रूज़ियों[1] की ज़मीनें, अदरार[2] पाने वालों तथा इनाम के मालिकों की ज़मीनें उन्हीं के पास रहने दीं। जिनके पास जो कुछ था उससे बहुत कुछ बढ़ा चढ़ाकर दिया गया। प्रजा को नये-नये पद दिये गये। प्रजा ने धन सम्पत्ति के लोभ में कभी यह कहा भी नहीं कि सुल्तान अलाउद्दीन ने कितना बड़ा अनर्थ किया और कितनी नमक हरामी की। सर्वसाधारण को भोग विलास में ग्रस्त होने के फलस्वरूप किसी बात की चिन्ता न रही।

सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष में ही प्राचीन तथा नवीन अलाई सेना एक बहुत बड़ी संख्या में एकत्र हो गई थी। इनमें से प्रत्येक को वार्षिक वेतन तथा अर्द्ध वार्षिक वेतन इनाम के रूप में नक़द प्रदान किया गया था। उस वर्ष विशेष तथा सर्व साधारण भोग विलास में ग्रस्त रहे। मुझे इस बात की स्मृति नहीं कि इससे पूर्व किसी समय या काल में लोग इस सीमा तक भोग विलास में तल्लीन रहे हों।

सुल्तान जलालुद्दीन के पुत्रों का विनाश, तथा मलिकों एवं प्रजा से धन सम्पत्ति प्राप्त होना

(२४९) सुल्तान अलाउद्दीन ने देहली के राज सिंहासन पर विराजमान होते ही सुल्तान जलालुद्दीन के पुत्रों का विनाश परम आवश्यक समझा। उलुग़ खाँ, ज़फ़र खाँ, तथा मलिकों और अमीरों को तीस चालीस हज़ार सवार देकर मुल्तान की ओर रवाना किया। उन्होंने मुल्तान पहुँचकर मुल्तान को घेर लिया। एक दो महीने वे उसे घेरे रहे। कोतवाल तथा मुल्तान निवासी जलालुद्दीन के पुत्रों के विरोधी बन गये। कुछ अमीर छिप छिप कर उलुग़ खाँ तथा ज़फ़र खाँ के पास आते जाते थे। सुल्तान जलालुद्दीन के पुत्रों ने शेखुल इस्लाम, शेख रुक्नुद्दीन

---

१. वह भूमि जो नये क़िलों आदि की रक्षा के लिये उन लोगों को दी जाती थीं जो वहाँ बसाये जाते थे।

१. धर्म तथा सहायता के लिये भूमि पाने वालों की भूमि मिल्क इम्लाक अथवा अदरार कहलाती थी।

को बीच में डालकर उलुग़ ख़ाँ से सन्धि करनी चाही। शेख़ द्वारा उन लोगों से वचन ले लिया। इसके पश्चात् वे अपने मलिकों तथा अमीरों के साथ उलुग़ ख़ाँ के पास आने जाने लगे। उलुग़ ख़ाँ उनका आदर सम्मान करता था और अपने शिविर के पास उन्हें स्थान देता था।

उन्होंने मुल्तान से देहली की ओर विजय-पत्र भिजवा दिये। देहली में क़ुब्बे सजाये गये। ख़ुशी के ढोल पीटे गये। मुल्तान का विजय पत्र मिम्बरों[1] पर पढ़ा गया और भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भेज दिया गया। पूरा हिन्दुस्तान सुल्तान अलाउद्दीन के अधीन हो गया। कोई विरोधी तथा मुक़ाबला करने वाला न रहा।

उलुग़ख़ाँ तथा ज़फ़रख़ाँ सुल्तान जलालुद्दीन के पुत्रों को, जो कि चत्र के स्वामी थे, तथा उनके मलिकों एवं अमीरों को साथ लेकर विजय एवं सफलता प्राप्त करके मुल्तान से देहली की ओर रवाना हुए। नुसरत ख़ाँ को देहली से भेजा गया। वह मार्ग में उलुग़ख़ाँ से मिला। सुल्तान जलालुद्दीन के दोनों पुत्रों, उसके दामाद उलग़ू तथा अहमद चप नायब अमीर हाजिब की आँखों में सलाई फेर दी गई। उनकी स्त्रियों को उनसे पृथक् कर दिया गया। नुसरत ख़ाँ ने उनकी धन सम्पत्ति, दास दासियों को तथा जो कुछ भी उनके पास था, छीन लिया। जलालुद्दीन के पुत्र को हाँसी के क़िले में क़ैद कर दिया गया। अरकली ख़ाँ के सभी पुत्रों की हत्या करदी गई। मल्कये जहाँ, उनकी स्त्रियाँ तथा अहमद चप देहली लाये गये और इन्हें उनके घरों में क़ैद कर दिया गया।

(२५०) सिंहासनारोहण के दूसरे वर्ष नुसरत ख़ाँ को वज़ीर नियुक्त किया गया। इस इतिहास के संकलन कर्त्ता के चचा अलाउल मुल्क तथा अन्य मलिकों एवं अमीरों को कड़े से बुलवाया गया। जो कुछ धन सम्पत्ति तथा हाथी उसने वहाँ छोड़े थे, वे भी मँगवाये गये। अलाउल मुल्क, जो कि बहुत ही मोटा और बेकार हो चुका था, प्राचीन मलिकुल उमरा के स्थान पर देहली का कोतवाल बनाया गया। समस्त ताज़ीक बन्दी उसको सौंप दिये गये। इसी वर्ष जलाली मलिकों और अमीरों की धन सम्पत्ति तथा इम्लाक पर हाथ साफ़ करना प्रारम्भ हो गया। नुसरत ख़ाँ ने धन सम्पत्ति प्राप्त करने में बड़ी कठोरता दिखाई, और हज़ारों की धन सम्पत्ति प्राप्त करली। जिस बहाने से भी सम्भव हुआ, राज-कोष में धन सम्पत्ति एकत्रित करने लगा। पिछली तथा वर्त्तमान बातों की पूछताछ आरम्भ कर दी गई।

मुग़लों का आक्रमण

इसी वर्ष अर्थात् ६९६ हि० (१२९६-९७ ई०) में मुग़लों के आक्रमण का भय आरम्भ हो गया। कुछ मुग़ल सिन्ध नदी पार करके आसपास की विलायत में घुस आये। उलुग़ख़ाँ तथा ज़फ़रख़ाँ को अलाई तथा जलाली अमीरों एवं अत्यधिक सेना के साथ मुग़लों से युद्ध करने के लिये भेजा गया। जालन्धर की सीमा पर इस्लामी तथा दुष्टों की सेना में युद्ध हुआ। इस्लामी पताकाओं को विजय प्राप्त हुई। असंख्य मुग़ल मारे गये और क़ैद हुये। उनके कटे शीश देहली भेज दिये गये। मुल्तान की विजय तथा सुल्तान जलालुद्दीन के पुत्रों के बन्दी बना लिये जाने के कारण अलाई राज्य की धाक बैठ चुकी थी, मुग़लों की विजय से उसमें और वृद्धि हो गई। उसका ऐश्वर्य तथा वैभव बहुत बढ़ गया। शहर (देहली) में विजय-पत्र पढ़ा गया। ढोल पीटे गये। क़ुब्बे सजाये गये। ख़ुशियाँ मनाई गईं। समारोहों का आयोजन किया गया। अलाई राज्य दृढ़ हो गया।

जलाली अमीरों का विनाश

उन सब जलाली अमीरों को, जो कि अपने आश्रयदाता से विश्वासघात करके सुल्तान

१. मस्जिद का मंच।

अलाउद्दीन से मिल गये थे तथा मनों सोना, पद, अक़्ता प्राप्त कर चुके थे, शहर और लश्कर में गिरफ़्तार करवा लिया गया। कुछ को क़िलों में क़ैद कर लिया गया, कुछ की आँखों में सलाई फेर कर अंधा बना दिया गया और कुछ की हत्या करा दी गई। वह धन सम्पत्ति, जो कि उन्होंने सुल्तान अलाउद्दीन से प्राप्त की थी, उनके घर बार माल असबाब द्वारा वसूल कर ली गई।

(२५१) राज्य की ओर से उनके घरों पर अधिकार जमा लिया गया। उनके गाँव को ख़ालसे में पुनः सम्मिलित कर लिया गया। उनके पुत्रों के पास कोई चीज़ शेष न छोड़ी गई। उनके लावलश्कर पर अलाई अमीरों के अधिकार स्थापित हो गये। उनके घर बार तहस-नहस कर दिये गये। समस्त जलाली तथा अलाई अमीरों और मलिकों में से केवल तीन व्यक्ति अलाउद्दीन द्वारा मुक्त हो सके और अलाई राज्य-काल के अन्त तक उन्हें किसी प्रकार की कोई क्षति न पहुँची। इनमें से एक मलिक क़ुतुबुद्दीन अलवी, दूसरा नसीरुद्दीन शहनए पील और तीसरा क़दर ख़ाँ का पिता मलिक अमीर जमाली ख़लजी थे। इन तीनों व्यक्तियों ने सुल्तान जलालुद्दीन तथा उसके पुत्रों से विश्वासघात न किया और सुल्तान अलाउद्दीन से धन सम्पत्ति न प्राप्त की। यह तीनों व्यक्ति सुरक्षित रह गये। अन्य जलाली अमीरों का समूल विच्छेदन कर दिया गया। इसी वर्ष नुसरत ख़ाँ ने पूछ ताछ करके अपहरण द्वारा एक करोड़ की धन सम्पत्ति प्राप्त करके राजकोष में दाखिल की।

गुजरात की विजय

अलाई सिंहासनारोहण के तीसरे वर्ष के आरम्भ में उलुग़ ख़ाँ और नुसरत ख़ाँ, अमीरों तथा सरदारों को और एक बहुत बड़ी सेना को लेकर गुजरात पर चढ़ाई करने के लिये रवाना हुये। नहरवाला तथा गुजरात की सभी विलायतों (प्रदेशों) का विनाश कर दिया गया। गुजरात का कर्णराय नहरवाले से भाग कर देवगीर में रामदेव के पास चला गया। रायकर्ण की स्त्रियों, पुत्रियों, ख़ज़ाने तथा हाथियों पर इस्लामी सेना ने अपना अधिकार जमा लिया। गुजरात प्रदेश का सब धन लूट लिया गया। वह मूर्त्ति, जिसे सुल्तान महमूद की विजय तथा मनात के खंडन के उपरान्त सोमनाथ के नाम से प्रसिद्ध कर दिया गया था, और जिसे हिन्दू अपना भगवान् मानते थे, वहाँ से देहली भेज दी गई। देहली में वह लोगों के पैरों के नीचे रौंदने के लिये डाल दी गई।

नुसरत ख़ाँ ने खम्भायत की ओर प्रस्थान किया। वहाँ के ख़्वाजों के पास अत्यधिक धन सम्पत्ति हो गई थी। उसे वहाँ से वहुत जवाहरात तथा बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त हुईं। नुसरत ख़ाँ ने काफ़ूर हज़ार दीनारी को जो कि बाद में मलिक नायब हो गया था, और सुल्तान अलाउद्दीन जिसके रूप पर आसक्त हो गया था, उसके ख़्वाजा से ज़बरदस्ती छीन लिया और उसे सुल्तान अलाउद्दीन के पास भेज दिया। इस प्रकार गुजरात को विध्वंस करने के पश्चात उलुग ख़ाँ तथा नुसरतख़ाँ लूट द्वारा प्राप्त की हुई अपार धन सम्पत्ति लेकर वापस हुये।

(२५२) लौटते समय लश्कर वालों पर ख़ुम्स[1] तथा ग़नीमत[2] की पूछताछ करते समय बड़ा अत्याचार हुआ। उन्हें कड़े दण्ड दिये गये। वे जो कुछ लिखवाते उस पर कोई विश्वास न किया जाता और उनसे उसकी अपेक्षा कहीं अधिक माँगा जाता। सोना, चाँदी जवाहरात, बहुमूल्य वस्तुयें तथा अन्य वस्तुयें लोगों से ज़बरदस्ती वसूल करली गईं। उन्हें नाना

---

१. $\frac{1}{5}$ जो देहली के सुल्तान सैनिकों को प्रदान करते थे। इस्लामी नियमानुसार बादशाह को $\frac{1}{5}$ मिलना चाहिये।

२. लूट का माल।

प्रकार के कष्ट पहुँचाये गये। सैनिक अत्यधिक कष्ट तथा पूछताछ से बहुत परेशान हो गये। उस सेना में नव मुसलमान अमीर तथा सवार बहुत बड़ी संख्या में थे। उन सब ने गिरोह बन्दी करके दो तीन हज़ार की संख्या में एकत्रित होकर विद्रोह कर दिया। नुसरत ख़ाँ के भाई मलिक अइज़्ज़ुद्दीन को, जो उलुग़ख़ाँ का अमीर हाजिब था, मार डाला। शोर मचाते हुये, उलुगख़ाँ के शिविर में घुस गये। उलुग़ख़ाँ किसी प्रकार बाहर निकल सका. और किसी न किसी युक्ति से नुसरत खाँ के शिविर में पहुँच गया। सुल्तान अलाउद्दीन का भानजा उलुग़ख़ाँ के शिविर में सो रहा था। विद्रोहियों ने उसे उलुग़ख़ाँ समझ कर उसकी हत्या कर दी। समस्त सेना में हाहाकार मच गया। ऐसा प्रतीत होता था कि पूरे लश्कर का विनाश हो जायगा। क्योंकि अलाई भाग्य, उन्नति पर था, अत: वह उपद्रव शीघ्र ही शान्त हो गया। लश्कर के सवार तथा प्यादे नुसरतख़ाँ के शिविर के सामने एकत्रित हो गये। सब मुसलमान सवार तथा अमीर छिन्न भिन्न हो गये। वे लोग, जिन्होंने विद्रोह तथा उपद्रव कर दिया था, भाग खड़े हुये और रायों तथा विद्रोहियों से मिल गये। लश्कर में लूट के माल के विषय में पूछ ताछ बन्द कर दी गई। उलुग़ख़ाँ तथा नुसरत ख़ाँ धन सम्पत्ति, हाथी, दास तथा गुजरात की लूट का माल लेकर देहली पहुँच गये।

(२५३) जब नव मुसलमानों के विद्रोह की सुचना देहली पहुँची तो सुल्तान अलाउद्दीन ने उस निरंकुशता के कारण, जो कि उसके मस्तिष्क में उत्पन्न हो गई थी, आदेश दिया कि विशेष तथा साधारण विद्रोहियों की स्त्रियों और बालकों को बन्दी बनाकर बन्दीगृह में डाल दिया जाय। पुरुषों के अपराध के कारण उनकी स्त्रियों और बालकों को बन्दी बनाया जाना उसी तिथि से आरम्भ हुआ। इससे पूर्व देहली में पुरुषों के अपराध के कारण उनकी स्त्रियों और बालकों को कोई दण्ड न दिया जाता था, अपराधियों के स्त्रियों और बालकों को पकड़वाकर बन्दी न बनाया जाता था।

उसी समय स्त्रियों और बालकों के बन्दी बनाये जाने के अत्याचार से बढ़कर नुसरतख़ाँ द्वारा देहली में लोगों ने उससे भी बड़ा अत्याचार देखा। नुसरतख़ाँ ने अपने भाई के रक्त का बदला लेने के लिये उन लोगों की स्त्रियों को अपमानित तथा लज्जित किया जिन्होंने उसके भाई की हत्या की थी। उन्हें व्यभिचारियों को दे दिया गया कि उन असहाय स्त्रियों से व्यभिचार करायें। उनके बच्चों के विषय में यह आदेश दिया कि उन्हें उनकी माताओं के सामने मार डाला जाय। ऐसा अत्याचार किसी भी धर्म अथवा मज़हब में न हुआ होगा। वह इस विषय में जो कुछ भी करता उसे देख देखकर देहली निवासी स्तब्ध हो जाते थे और प्रत्येक का हृदय काँप उठता था।

सिविस्तान की विजय

जिस वर्ष उलुग़ख़ाँ तथा नुसरतख़ाँ को गुजरात पर आक्रमण करने के लिये भेजा गया था, ज़फ़रख़ाँ को सिविस्तान की ओर भेजा गया। सिविस्तान पर सिल्दी तथा उसके भाई एवं अन्य मुग़लों ने अधिकार जमा लिया था। ज़फ़रख़ाँ एक बहुत बड़ी सेना लेकर सिविस्तान पहुँचा और सिविस्तान के क़िले को घेर लिया। तलवार, फरसे, भाले और नेज़े द्वारा क़िले पर अधिकार जमा लिया। बिना मग़रबी, मंजनीक तथा अरादा का प्रयोग किये और साबात, पाशेब तथा गर्गच के सिविस्तान के क़िले पर अपना अधिकार जमा लिया और सिल्दी, उसके भाई तथा अन्य मुग़लों से क़िला छीन लिया। मुग़ल अन्दर से क़िले के चारों ओर बाणों की वर्षा करते थे और उनकी अधिकता से चिड़ियाँ भी क़िले के निकट आने का साहस न करती थीं किन्तु इस पर भी ज़फ़रख़ाँ ने तलवार और फरसे से उस पर विजय प्राप्त कर ली।

ज़फ़रख़ाँ से ईर्ष्या

(२५४) सिल्दी तथा उसका भाई और समस्त मुग़ल एवं उनके स्त्री और बालक गिरफ़्तार हुये। सभी पकड़ लिये गये। प्रत्येक को तौक़ और ज़ंजीरों में बंधवाकर देहली भेज दिया गया। इस विजय के कारण ज़फ़रख़ाँ की धाक सभी के हृदय पर बैठ गई। सुल्तान अलाउद्दीन ने उसकी वीरता, साहस और बहादुरी के कारण उससे ईर्ष्या रखनी आरम्भ कर दी, कारण कि उसे हिन्दुस्तान का रुस्तम समझा जाने लगा था। सुल्तान अलाउद्दीन के भाई उलुग़ख़ाँ को भी इस कारण कि वह बड़ा वीर, साहसी और बहादुर था, उससे शत्रुता हो गई। उस वर्ष वह सामाने की अक़्ता का स्वामी था। सुल्तान अलाउद्दीन, जो उसके प्रसिद्ध हो जाने के कारण उससे द्वेष रखने लगा था, इस बात पर सोच विचार करने लगा कि इन दो बातों में से कोई बात की जाय। या तो उस पर कृपा दृष्टि दिखाकर उसे कुछ हज़ार सवार देकर लखनौती की ओर भेज दिया जाय जिससे वह लखनौती पर अधिकार जमाकर वहीं निवास आरम्भ कर दे और उसी स्थान से हाथी तथा उपहार (कर) उसके पास भेजता रहे, या किसी उपाय से उसे विष दे दिया जाय या उसकी आंखों में सलाई फिरवा कर (अंधा करके) अपने पास से पृथक् कर दिया जाय।

क़ुतलुग़ ख़्वाजा मुग़ल का आक्रमण

उपर्युक्त साल के अन्त में ज़ुलऐन के पुत्र क़ुतलुग़ ख़्वाजा ने बीस तुमन (२०,०००) मुग़ल लेकर हिन्दुस्तान पर आक्रमण कर दिया। मावराउन-नहर से एक बहुत बड़ी सेना तैयार करके चल खड़ा हुआ। सिन्ध नदी पार की। पड़ाव पर पड़ाव पार करता हुआ देहली के निकट पहुँच गया। उस वर्ष मुग़लों ने देहली पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया था, अतः उन्होंने मार्ग की विलायतों (प्रदेशों) का विनाश नहीं किया। क़िलों को कोई हानि नहीं पहुँचाई। उन दुष्टों के कारण जिनकी सेना चींटियों तथा टिड्डी दल से भी अधिक थी, विलायतों (प्रदेशों) को कोई हानि नहीं पहुँची और उन्होंने विलायतों को लूट खसोट कर बरबाद नहीं किया, कारण कि वे सीधे देहली पर आक्रमण करना चाहते थे।

(२५५) उनके आक्रमण से देहली वालों को बड़ी चिन्ता हो गई। आसपास के क़स्बों तथा स्थानों के निवासी देहली के हिसार (चहार दीवारी) में पहुँच गये। उस समय पुराना हिसार (चहार दीवारी) निर्मित न कराया गया था। लोगों को इससे पूर्व इतना चिन्तित कभी देखा या सुना न गया था। शहर (देहली) के छोटे बड़े सभी असमंजस में पड़े हुए थे। शहर (देहली) में इतनी भीड़ हो गई कि किसी गली अथवा बाज़ार या मस्जिद में किसी मनुष्य के टिकने का स्थान न रह गया था। शहर में प्रत्येक वस्तु का भाव बहुत चढ़ गया। बंजारों तथा व्यापारियों के मार्ग बन्द हो गये। सुल्तान अलाउद्दीन बड़े ऐश्वर्य तथा वैभव से शहर के बाहर निकला। सुल्तानी शिविर सीरी में लगा दिये गये। देहली के चारों ओर से मलिकों, अमीरों तथा सैनिकों को बुलवाया गया। उन दिनों संकलन कर्त्ता का चचा अलाउलमुल्क, सुल्तान उलाउद्दीन का बड़ा विश्वास पात्र तथा परामर्श दाता था। वह देहली का कोतवाल था। सुल्तान शहर और अपनी स्त्रियाँ तथा ख़ज़ाना उसके सिपुर्द करके उस महायुद्ध के लिये शहर के बाहर निकल खड़ा हुआ।

मलिक अलाउलमुल्क उसे सीरी में विदा करने आया। उसने एकान्त में सुल्तान से कहा कि, "प्राचीन बादशाह तथा हमसे पहले के वज़ीर जो जहाँदारी और जहाँबानी (राज्य व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध) कर चुके है, बड़े-बड़े युद्धों से सर्वदा अपने आप को पृथक् रखते थे, कारण कि यह नहीं कहा जा सकता कि महायुद्धों में क्षणभर में क्या से क्या हो जाय और

किसको विजय प्राप्त हो जाय। अपने बराबर वालों से भी, जिनके द्वारा राज्य को भय और प्रजा को ख़तरा होता है यथा-सम्भव बचने का परामर्श करते रहे हैं। इक़लीमों (राज्यों) के बादशाहों की वसीअतों (परामर्शों) में लिखा है कि युद्ध तराज़ू के पलड़े के समान होता है। कुछ मनुष्यों के एक ओर ज़ोर लगा देने से एक पलड़ा भारी हो जाता है और दूसरा पलड़ा हल्का हो जाता है। उस समय कार्य इतना बिगड़ जाता है कि फिर उसको सुधारने का कोई उपाय समझ में नहीं आता है। यद्यपि युद्ध में सेना-अध्यक्षों को पराजय के उपरान्त अधिक भय नहीं होता और उनके कार्यों के सुव्यवस्थित हो जाने की आशा समाप्त नहीं हो जाती किन्तु अपने बराबर वालों से युद्ध में, जिसमें राज्य के हाथ से निकल जाने का भय होता है, बादशाह बहुत सोच विचार किया करते थे।"

(२५६) "ऐसी अवस्था में जिस युक्ति तथा जिस उपाय से भी सम्भव होता उस ख़तरे को अपने निकट से हटाने का प्रयत्न किया करते थे।[1] अतः इस महायुद्ध के समय जिसे प्राचीन बादशाह टालने का प्रयास किया करते थे, बादशाह ने किस कारण बिना सोचे समझे और बिना परामर्श के उनसे युद्ध करने की ठान ली है। अन्नदाता मुग़लों से युद्ध करने के समय, जो एक लाख से अधिक हैं, कौहान शुतरी क्यों त्यागते हैं। स्वयं एक लश्कर लेकर अलग रहें। मुग़लों से जो कि चीटियों और टिड्डियों से भी अधिक हैं, युद्ध कुछ थोड़े समय तक टालते रहें और यह देखते रहें कि वे लोग क्या करते हैं, क्या होता है और बात किस सीमा तक पहुँच जाती है। यदि युद्ध के अतिरिक्त कोई उपाय दृष्टिगोचर न हो तो उनसे युद्ध करें। उनके पास धन सम्पत्ति बिल्कुल नहीं है। अतः अन्नदाता समस्त प्रजा को लेकर क़िले में निवास करने लगें। इतनी बड़ी सेना, जो उनके पास है और जिसमें से वे दस सवार भी पृथक् नहीं करते, थोड़े समय तक भी बिना भोजन सामग्री के नहीं चल सकती। कुछ दिन पश्चात् जब हमें उनके उद्देश्य, इरादों तथा विचार का पता चल जाय तो हम कार्यकुशल दूत उनके पास भेजें। सम्भव है कि वे परेशान होकर लौट जायें और लोगों को लूटना आरंभ कर दें। उस अवसर पर अन्नदाता उन लोगों का पीछा करने के लिये कूच करें तो बहुत उत्तम होगा।"

उपर्युक्त वार्त्ता के पश्चात् अलाउलमुल्क ने निवेदन किया कि, "मैं प्राचीन दास हूँ। सर्वदा प्रत्येक अवसर पर जो कुछ भी मेरी समझ में आया मैंने निवेदन कर दिया। अधिकतर मुझे सम्मानित किया गया। इस महायुद्ध के अवसर पर भी जो कुछ सेवक की समझ में आया निवेदन कर दिया। अन्नदाता की समझ में जो कुछ भी आये वह अत्युत्तम है। बादशाह की राय सभी रायों से बढ़ चढ़ कर होती है। मुग़लों को भगाने के विषय में जो बातें मेरी समझ में आयेंगी, उन्हें अन्नदाता के शुभ कानों तक पहुँचाता रहूँगा।"

(२५७) "इस समय उपर्युक्त दुष्टों ने बहुत बड़ी सेना लेकर हम पर आक्रमण किया है। भगवान् ने हमें भी एक बहुत बड़ा सुव्यवस्थित लश्कर प्रदान किया है, किन्तु हमारे लश्कर में अधिकतर हिन्दुस्तानी सैनिक हैं। वे आजीवन हिन्दुओं से युद्ध करते रहे हैं। इन्होंने कभी मुग़लों से युद्ध नहीं किया है। वे मुग़लों के घात लगाने, वापस लौटने तथा अन्य चालों और मक्कारियों के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं रखते। इस अवसर पर मुग़लों को किसी उचित युक्ति से लौटा दिया जाय। तत्पश्चात् देहली की सेना को इस प्रकार तैयार किया जाय कि वह सर्वदा मुग़लों से युद्ध करने की इच्छा किया करे।"

सुल्तान अलाउद्दीन ने जब अलाउलमुल्क की बातें सुनीं जिनसे कि उसकी राजभक्ति का पता चलता था तो उसने अलाउलमुल्क की राजभक्ति तथा उसके हितैषी होने पर उसकी बड़ी

१. फ़तावा-ए-जहाँदारी।

प्रशंसा की। अपने खानों और बड़े बड़े मलिकों को बुलवा कर परामर्श किया। उस सभा में सबसे कहा कि, "तुम लोग जानते हो कि अलाउलमुल्क वज़ीर तथा वज़ीरज़ादा है। वह हमारा हितैषी तथा राज भक्त है। वह हमें उस समय से अब तक बराबर परामर्श देता आया है, जबकि हम मलिक थे। हमने उसे मोटा हो जाने के कारण कोतवाली प्रदान करदी है किन्तु विज़ारत उसी का हक़ है। उसने इस समय तर्क वितर्क द्वारा मुग़लों से युद्ध न करने के विषय में कुछ परामर्श दिये हैं। मैं चाहता हूँ कि उन्हें तुम लोगों के सम्मुख, कारण कि तुम लोग मेरे राज्य के स्तम्भ हो, पेश करूँ और फिर इसका उत्तर दूँ। तुम लोग भी सुनते रहो।" सुल्तान ने उस सभा में अलाउलमुल्क की ओर मुड़ कर कहा कि, "ऐ अलाउलमुल्क तू मेरा निष्कपट दास तथा पुराना सेवक है। तुझे इस बात का दावा है कि तू वज़ीर तथा बुद्धिमान है, किन्तु इस समय अपने आश्रयदाता, स्वामी तथा बादशाह से सच सच बात सुन। तूने मेरे सामने यह मसल कही है कि ऊँटों का चुराना तथा कुबड़े बन कर चलना उचित नहीं। इसी प्रकार देहली की बादशाही करना और तेरे इस परामर्श पर आचरण करना सम्भव नहीं कि कोहान शुतरी की जाय और मुग़लों से हानि के भय के कारण युद्ध न किया जाय।"

(२५८) "मुझे यह उचित नहीं जान पड़ता कि मुग़लों को नामर्दों की भाँति मक्कारी तथा किसी न किसी युक्ति से भगा दूँ। यदि मैं तेरे कथनानुसार आचरण करूँ तो मेरे समकालीन तथा भविष्य में लोग मेरी खिल्ली उड़ायेंगे और मुझे नामर्द समझेंगे। मेरे विरोधी और शत्रु जो कि अपने देश से दो हज़ार कोस से चल कर मुझ से युद्ध करने के लिए आये हैं और देहली के मीनारे के निकट पहुँच चुके हैं, उनसे युद्ध करने के विषय में तू मुझे विलम्ब करने तथा नामर्दी दिखाने के परामर्श देता है। मैं इस समय कोहाने शुतरी करूँ और बतख तथा मुर्ग़ी की तरह अण्डों पर बैठ जाऊँ। उन्हें किसी युक्ति से भगादूँ। यदि मैं तेरे कथनानुसार आचरण करूँगा तो मैं किसे मुँह दिखाऊँगा। अपनी स्त्रियों के महल में किस प्रकार जाऊँगा। मेरी प्रजा मेरी गणना किन लोगों में करेगी। विद्रोही तथा विरोधी मुझमें कौन सी ऐसी वीरता तथा बहादुरी देखेंगे जिससे प्रभावित होकर वे मेरे आज्ञाकारी बन सकेंगे। जो कुछ भी हो मैं कल सीरी से कीली के मैदान में जाऊँगा और क़ुतलुग़ ख्वाजा तथा उसकी सेना से युद्ध करूँगा। फिर चाहे भगवान् मुझे अथवा उसे विजय प्रदान करे।"

"ऐ अलाउलमुल्क ! मैंने शहर की कोतवाली तुझे दे दी है। मैंने अपनी स्त्रियाँ, ख़ज़ाना एवं समस्त प्रजा तुझे सौंप दी। मुझे या इन्हें जिस किसी को भी विजय प्राप्त हो, तू दरवाज़ों तथा ख़ज़ानों की जियाँ रख देना। उसी का आज्ञाकारी हो जाना। तू इतनी बुद्धि और समझ रख कर यह नहीं जानता कि युद्ध को टालने तथा युक्ति से कार्य लेने का अवसर उस समय होता है जबकि शत्रु आक्रमण करने के लिये तैयार होकर न पहुँच गया हो। जब शत्रु इतनी बड़ी सेना लेकर मुक़ाबले के लिये आ जाय तो फिर इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं कि उसका सामना किया जाय और अपने प्राण हथेलियों पर रख कर तलवार, गदा तथा तीर से दुश्मन के मस्तिष्क का नशा दूर कर दिया जाय। अब मेरे सामने इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं।"

(२५९) "तू घर में बैठने वालों की कथा का वर्णन कर रहा है। वह खुल्लम खुल्ला सामना करने वालों के लिये उचित नहीं। जो पवित्रता की बातें घर में बैठ कर ४ गज़ कपड़ा लपेट कर कही जाती हैं[1], वे रण क्षेत्र में तथा युद्धस्थल में जहाँ रक्तपात हो रहा हो और

---

[1] आलिमों तथा विद्वानों की बातें

ख़ून की नदियाँ बह रही हों शोभा नहीं देतीं। तू जो यह कहता है कि मैंने मुग़लों को भगाने के विषय में सोच विचार कर लिया है तो मैं तेरे परामर्श उस समय सुनूँगा जब कि मैं इस युद्ध से मुक्त हो जाऊँगा या इस युद्ध का विचार त्याग दूँगा। तू नवीसिन्दा (मुन्शी) तथा नवीसिन्दा का पुत्र है, इसी कारण तेरे मस्तिष्क में ऐसी बातें आईं जो कि तूने मुझसे कहीं।"

अलाउलमुल्क ने निवेदन किया कि, "मैं प्राचीन सेवक हूं। प्रत्येक समय जो कुछ मेरे मस्तिष्क में आया मैंने निवेदन कर दिया।" सुल्तान ने उत्तर दिया कि, "तू राजभक्त है। मैंने सर्वदा तेरा परामर्श स्वीकार किया है किन्तु इस अवसर पर बुद्धि से काम लेना उचित नहीं। इस समय रक्तपात, ख़ून बहाने, अपनी जान से हाथ धो लेने और नंगी तलवारें लेकर शत्रुओं पर टूट पड़ने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं।" अलाउलमुल्क ने दस्तबोस (हाथ चूमकर) करके उसे विदा किया और शहर में लौट आया। सब दरवाज़े बन्द करवा दिये। केवल बदायूं दरवाज़ा खुला रक्खा। शहर के छोटे बड़े सभी चिन्ता में पड़ गये और भगवान् से प्रार्थना करने लगे।

अलाउद्दीन का क़ुतलुग़ ख़्वाजा से युद्ध, मुग़लों की पराजय, ज़फ़रख़ाँ तथा अन्य अमीरों का शहीद होना :

(२६०) सुल्तान अलाउद्दीन इस्लामी लश्कर लेकर सीरी से कीली पहुँचा, और वहीं डेरे डाल दिये। क़ुतलुग़ ख़्वाजा मुग़ल सेना लेकर मुक़ाबले के लिये वहीं उतर पड़ा। क्योंकि इससे पूर्व किसी अन्य राज्य-काल अथवा शासन-काल में इतनी बड़ी दो सेनाओं का युद्ध न हुआ था अतः सभी चकित तथा स्तब्ध थे। दोनों सेनाओं ने एक दूसरे के सामने अपनी पंक्तियाँ जमाकर युद्ध की प्रतीक्षा करनी आरम्भ करदी। ज़फ़रख़ाँ दाहिनी ओर की सेना का सरदार था। उसने तथा उसके अधीन सेना के अमीरों ने तलवार म्यान से खींचकर मुग़लों पर आक्रमण कर दिया और मुग़ल सेना से भिड़ गये। मुग़ल सामना न कर सके, हारकर भाग निकले। इस्लामी सेना ने उनका पीछा न किया किन्तु ज़फ़रख़ाँ, जो कि अपने समय का रुस्तम तथा शूरवीर था, उनका पीछा करने से बाज़ न आया। मुग़ल सेना को तलवार के घाट उतारता हुआ भगाने लगा। उनके शीश काटता जाता था यहाँ तक कि अठारह कोस तक उनका पीछा किया। मुग़लों को वापस लौटने का साहस न हो सका। वे इस प्रकार घबड़ा कर भाग रहे थे कि उन्हें किसी बात की भी सुध बुध न थी। उलुग़ख़ाँ, जो कि बाईं ओर की सेना का सरदार था और जिसके लश्कर में अत्यधिक सैनिक तथा प्रतिष्ठित अमीर थे, ज़फ़रख़ां से शत्रुता रखने के कारण अपने स्थान से न हिला और ज़फ़रख़ाँ की सहायता को न गया। दुष्ट तरग़ी अपने तुमन लिए हुए पीछे से घात लगाये बैठा था। मुग़ल वृक्षों पर चढ़ गये। ज़फ़रख़ाँ का कोई भी सवार उन्हें न देख सका। तरग़ी ने देखा कि ज़फ़रख़ाँ मुग़ल सेना का पीछा करता हुआ बढ़ता चला जा रहा है, उसके पीछे उसकी सहायता को कोई अन्य सेना नहीं आ रही है, उसने ज़फ़रख़ाँ के पीछे से उस पर आक्रमण कर दिया। मुग़ल सेना ने चारों ओर से उसे घेर लिया। उसे इस प्रकार घेर कर उस पर वाणों की वर्षा आरम्भ करदी। उसका घोड़ा घायल हो गया। वह अपने समय का शूरवीर तथा सेना की पक्तियों को छिन्न भिन्न करने वाला, पैदल हो गया। अपने निषंग से वाणों की वर्षा आरम्भ करदी। उसके प्रत्येक तीर ने किसी न किसी मुग़ल सवार को ज़मीन पर गिरा दिया।

(२६१) इस बीच में क़ुतलुग़ ख़्वाजा ने उसे सन्देश भेजा कि, "मुझसे मिल जा। मैं तुझे अपने पिता के पास ले जाऊँगा। वह तुझे देहली के बादशाह से कहीं अधिक सम्मानित करेगा।" ज़फ़रख़ां ने उसकी बात पर ध्यान न दिया। मुग़लों ने समझ लिया कि उसे

जीवित बन्दी बनाना असम्भव है। चारों ओर से उस पर टूट पड़े और उसे शहीद कर दिया। उसके शहीद हो जाने के पश्चात् उसकी सेना के सभी अमीरों को शहीद कर दिया गया। ज़फ़रख़ाँ के हाथियों को घायल कर दिया गया और महावतों की हत्या करदी गई। मुग़लों ने इसके पश्चात् रात में कुछ विश्राम किया। ज़फ़रख़ाँ के आक्रमण के कारण मुग़लों के हृदय बड़े भयभीत हो गये थे। रात के अन्तिम पहर उस स्थान से चल खड़े हुये और देहली से ३० कोस के फ़ासले पर पहुँच कर पड़ाव डाला। वहाँ से बीस बीस कोस पर पड़ाव करते हुए अपने राज्य की सीमा पर पहुँच गये। किसी पड़ाव पर न ठहरे। ज़फर ख़ाँ के आक्रमण का भय उनके हृदयों पर वर्षों तक बैठा रहा। यदि उनके पशु कभी पानी न पीते तो वे उनसे कहते कि "क्या ज़फ़रख़ाँ को देख लिया है जो पानी नहीं पीते।"

अलाउद्दीन का अभिमान तथा विचित्र योजनायें

इसके पश्चात् इतनी बड़ी सेना ने कभी देहली के निकटवर्ती स्थानों पर आक्रमण नहीं किया। सुल्तान अलाउद्दीन कीली से वापस हुआ। मुगलों की पराजय तथा जफ़रख़ाँ की मृत्यु को, जो बिना किसी अपयश के हो गई, अपनी बहुत बड़ी विजय समझता रहा। सिंहासनारूढ़ होने के तीन वर्ष के बीच में अलाउद्दीन को भोग विलास में ग्रस्त रहने तथा महफ़िलें और जश्न करने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न रह गया था। लगातार युद्ध हुये किन्तु प्रत्येक में उसे विजय प्राप्त हुई। प्रत्येक वर्ष उसके दो तीन पुत्र पैदा हुए। प्रत्येक विजय के उपरान्त क़ुब्बे सजाये गये और ख़ुशियां मनाई गईं। राज्य के सभी कार्य उसकी इच्छानुसार होते रहे। राजकोष में अपार धन सम्पत्ति एकत्रित हो गई।

(२६२) वह प्रत्येक दिन जवाहरात और राजभवन में मोतियों से भरे हुये असंख्य सन्दूक़ देखा करता। शहर तथा निकटवर्ती हयशालाओं में ७० सहस्त्र घोड़े विद्यमान थे। दो तीन इक़्लीमें उसकी आज्ञाकारी थीं। कोई विद्रोही अथवा मुक़ाबिला करने वाला उसे दिखाई न देता था। इन नाना प्रकार की सुविधाओं ने उसे मदान्ध कर दिया। उसके मस्तिष्क में भिन्न भिन्न प्रकार की ऐसी इच्छायें पैदा होने लगीं जिनकी पूर्त्ति न तो वह और न उसके समान सैकड़ों अन्य बादशाह कर सकते थे। उसने ऐसी ऐसी बातें सोचनी आरम्भ करदीं जिन पर इससे पूर्व किसी अन्य बादशाह ने विचार भी न किया था। उसे असावधानी बदमस्ती, गर्व, अभिमान, मूर्खता और अज्ञानता में अपने हाथ पैर की भी सुध बुध न रही। उसने एक से एक असम्भव और कठिन योजनाओं पर विचार करना आरम्भ कर दिया। उसके हृदय में ऐसी लालसायें उत्पन्न होने लगीं जो कि कभी पूरी ही न हो सकती थीं। उसे किसी ज्ञान अथवा विज्ञान से सम्बन्ध न था। वह कभी किसी आलिम के साथ उठा बैठा भी न था। पत्र लिखना पढ़ना भी न जानता था। वह क्रूर स्वभाव, कठोर अन्तस्थल वाला तथा पाषाण हृदय का था। जितनी ही उसे सफलता प्राप्त होती गई, भाग्य उन्नतिशील होता रहा तथा इच्छायें पूर्ण होती रहीं, उतना ही वह मदान्ध होता गया।

उपर्युक्त बात कहने का उद्देश्य यह है कि सुल्तान अलाउद्दीन उन दिनों उस असावधानी तथा बदमस्ती में अपनी परामर्श गोष्टियों में कहा करता था कि "मुझे दो महान कार्य करने हैं।" इन दो महान कार्यों के विषय में वह अपने मित्रों तथा विश्वास पात्रों से परामर्श किया करता था। अपने मित्र मलिकों से वह प्रश्न किया करता कि "किस प्रकार मैं इन दो महान कार्यों को सफलता पूर्वक कर सकता हूँ।" उन दो कार्यों में से जिन पर वह विचार विनिमय किया करता था एक यह है कि उसके कथनानुसार 'ख़ुदा ने पैग़म्बर अलैहिस्सलाम (मुहम्मद साहब) को चार मित्र प्रदान किये थे। उनके बल तथा ऐश्वर्य से उन्होंने एक शरीअत तथा दीन (धर्म)

निकाला। उस शरीअत तथा दीन के निकालने के कारण पैग़म्बर का नाम क़यामत तक चलता रहेगा।'

(२६३) 'पैग़म्बर अलैहिस्सलाम की मृत्यु के पश्चात् जो कोई भी अपने आपको मुसलमान कहता या समझता है, अपने आपको उनकी उम्मत[1] का एक व्यक्ति ख़याल करता है। मुझे भी ख़ुदा ने चार मित्र प्रदान किये हैं। प्रथम उलुग़ ख़ाँ, द्वितीय ज़फ़रख़ाँ, तृतीय नुसरत ख़ाँ, चतुर्थ अलपख़ाँ। मेरे भाग्य से इन्हें बादशाहों के समान वैभव तथा ऐश्वर्य प्राप्त हो गया है। यदि मैं चाहूँ तो इन चार मित्रों के बल पर एक नया दीन अथवा धर्म चला दूं। मेरी तथा मेरे मित्रों की तलवार के भय से सभी व्यक्ति मेरे प्रदर्शित मार्ग पर चलने लगेंगे। उस दीन तथा धर्म के फलस्वरूप मेरा और मेरे मित्रों का नाम पैग़म्बर तथा पैग़म्बर के मित्रों के नाम के समान क़यामत तक शेष रहेगा।' मदिरापान की गोष्ठियों में मदान्धता, जवानी, मूर्खता, असावधानी, असभ्यता तथा निर्भीकता के कारण उपर्युक्त बातें खुल्लम खुल्ला बिना कुछ सोचे समझे किया करता था। नये धर्म तथा दीन चलाने के विषय में मलिकों से परामर्श-गोष्टियों में परामर्श करता रहता। उपस्थित जनों से प्रश्न किया करता कि 'किस प्रकार कोई ऐसी बात की जाय जिससे मेरा नाम क़यामत तक शेष रहे। जो कुछ मैं कर जाऊँ, उस पर लोग मेरी मृत्यु तथा मेरे अन्त के उपरान्त भी आचरण करते रहें।'

दूसरी महान योजना के विषय में वह उपस्थित जनों से कहा करता कि 'मेरे पास अत्यधिक धन सम्पत्ति, हाथी तथा लाव-लश्कर एकत्रित हो गये हैं। मेरी इच्छा है कि मैं देहली किसी को सौंप कर स्वयं सिकन्दर की भाँति विश्व विजय करने के लिये निकल पड़ूं। समस्त संसार अपने अधिकार में करलूं।' वह कुछ लड़ाइयों में अपनी इच्छानुसार विजय प्राप्त कर लेने के कारण अपने आपको ख़ुतबे तथा सिक्कों में सिकन्दर सानी (द्वितीय) कहलवाने तथा लिखवाने लगा था। मदिरापान करते समय वह डींग मारते हुये कहा करता था कि 'जिस राज्य पर भी मैं विजय प्राप्त कर लूँगा, उसे अपने राज्य के किसी विश्वासपात्र को सौंप दूंगा और स्वयं अन्य इक़्लीमों (राज्यों) पर अधिकार जमाने के लिये आगे चल दूंगा। मेरा मुक़ाबिला कौन कर सकेगा।'

(२६४) उसकी महफ़िलों के उपस्थित जन यह जानते हुये कि धन सम्पत्ति, हाथी, घोड़ों, लाव-लश्कर तथा जन्म की मूर्खता ने उसे मदान्ध और असावधान कर दिया है और वह, दोनों बातें मदान्धता, मूर्खता, अनभिज्ञता तथा कुछ न समझने बूझने के कारण करता है, किन्तु वे उसके क्रूर स्वभाव तथा कठोर हृदय के भय से उससे कुछ न कहते और उसके बदमस्त होने के कारण उसकी बातों की प्रशंसा किया करते थे। उसके कठोर स्वभाव को अच्छी लगने वाली झूठी सच्ची बातें, उदाहरण द्वारा कह दिया करते थे। वह समझने लगा था कि जो कुछ असम्भव तथा अनहोनी बातें उसके हृदय तथा वाणी से निकलती हैं वे अवश्य पूरी हो जायँगी। वे व्यर्थ बातें, जो वह अपनी मदिरापान की गोष्टियों में किया करता था, शहर में प्रसिद्ध हो गई थीं। शहर के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति उनकी खिल्ली उड़ाते और उन्हें उसकी शठता तथा मूर्खता का कारण समझते। कुछ बुद्धिमान व्यक्ति बहुत डर गये। वे एक दूसरे से कहते कि यह मनुष्य अत्यन्त निरंकुश है। उसे कोई जानकारी अथवा ज्ञान नहीं! अपार धन सम्पत्ति से बड़े बड़े ज्ञानी पुरुष अन्धे हो जाते हैं। असावधान तथा अज्ञानियों को इससे जो हानि पहुँचती है, उसका अनुमान नहीं किया जा सकता। वह इसी कारण असावधान हो गया है। यदि शैतान उसे बहकाकर उसके हृदय में यह बात डाल दे कि

१. अनुयायी। मुहम्मद साहब के अनुयायी उनकी उम्मत कहलाते हैं।

धर्म तथा दीन के विषय में जो बुरे विचार उसके मस्तिष्क में उत्पन्न हो गये हैं, उनका पालन दूसरों से कराया जाय और वह उनके पालन कराने हेतु साठ सत्तर हज़ार आदमियों की हत्या करा दे, तो फिर मुसलमानों तथा इस्लाम की क्या दशा होगी।

अलाउल मुल्क का सुल्तान को परामर्श

मेरा चचा अलाउल मुल्क कोतवाल देहली, मोटा हो जाने के कारण हर महीने की पहली तारीख़ को सुल्तान अलाउद्दीन को सलाम करने के लिये जाया करता था और उसके साथ मदिरा पान करता था। इस पहली तारीख़ को भी वह हमेशा की तरह सुल्तान की सेवा में गया और मदिरा पान किया। सुल्तान अलाउद्दीन ने अपनी इन दोनों असम्भव योजनाओं के विषय में उससे प्रश्न किया। अलाउलमुल्क ने दूसरों से भी सुन रखा था कि सुल्तान उपर्युक्त बातें अपनी महफ़िलों में किया करता है और उपस्थित जन उसकी हाँ में हाँ मिलाया करते हैं। कोई भी उसकी मदान्धता तथा कठोर स्वभाव के कारण सत्य बात उसके सम्मुख नहीं कह सकता।

(२६५) उस दिन उसने उपर्युक्त बातें, जिनके विषय में सुल्तान ने उसकी राय पूछी थी, सुल्तान की ज़बान से भी सुन लीं। अलाउलमुल्क ने उत्तर दिया कि "यदि अन्नदाता मदिरा को महफ़िल से हटवा दें और इन चार मलिकों के अतिरिक्त, जो कि इस सभा में इस समय उपस्थित हैं, किसी अन्य को न आने दें, तो मैं इन दो महान योजनाओं के विषय में जो कुछ मेरी समझ में आता है खुल्लम खुल्ला निवेदन करूँगा।" सुल्तान अलाउद्दीन ने आदेश दिया कि महफ़िल से शराब हटाली जाय। उलुग़ख़ाँ, ज़फ़रख़ाँ, नुसरतख़ाँ तथा अलपख़ाँ के अतिरिक्त उस सभा में कोई उपस्थित न रहे। अन्य अमीरों को लौटा दिया गया। सुल्तान ने अलाउलमुल्क से कहा कि "इन दो महान योजनाओं के समाधान के विषय में जो कुछ तेरी राय हो या जो कुछ तू समझता हो, वह मेरे इन चारों मित्रों के समक्ष कह जिससे मैं उन पर आचरण करूँ।"

अलाउलमुल्क ने क्षमा-याचना के पश्चात् निवेदन किया कि "अन्नदाता को दीन, शरीअत तथा मज़हब का नाम भी अपनी ज़बान पर कदापि न लाना चाहिये। यह नबियों का कर्त्तव्य है, बादशाहों का कार्य नहीं। दीन तथा शरीअत का आसमानी[1] वही से सम्बन्ध है। मनुष्य के प्रयास तथा सोच विचार और दीन एवं शरीअत का संचालन कदापि नहीं हो सकता। आदम (आदि पुरुष) से इस समय तक दीन तथा शरीअत का संचालन नबियों और रसूलों द्वारा हुआ है। बादशाहों का काम राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध करना है। जब से संसार बना है तथा जब तक वर्त्तमान रहेगा, कोई बादशाह नबूअत[2] न कर सकेगा, किन्तु कुछ पैग़म्बरों ने बादशाही की है। अन्नदाता के इस सेवक का निवेदन यह है कि इसके पश्चात् दीन शरीअत तथा धर्म की स्थापना की बात, जो कि पैग़म्बरों का कर्त्तव्य है और जिसका हमारे पैग़म्बर के उपरान्त अन्त हो चुका है, बादशाह की ज़बान से मदिरापान की गोष्ठियों तथा अन्य सभाओं में कभी न निकले।"

(२६६) "इस प्रकार की बात कि बादशाह नया धर्म तथा दीन चलाना चाहता है, यदि विशेष तथा साधारण व्यक्तियों के कान में पहुँचेंगी तो सभी लोग बादशाह का विरोध करने लगेंगे और कोई मुसलमान भी बादशाह के निकट न आयेगा। प्रत्येक दिशा से उपद्रव आरम्भ हो जायगा। इन बातों से राज्य व्यवस्था में विघ्न पड़ जायगा। अन्नदाता ने सुना होगा कि

---

१. ऐश्वर्य प्रेरणा, क़ुरान के अनुसार मुहम्मद साहब उस समय तक कोई बात न करते थे जब तक कि वही द्वारा उसके विषय में उन्हें भगवान् की इच्छा न ज्ञात हो जाती थी।

२. नबी न हो सकेगा।

चंगेज़ खाँ ने मुसलमानों के नगरों में ख़ून की नदियाँ बहा दीं किन्तु मुग़लों का धर्म तथा उनकी आज्ञायें लोगों में प्रचलित न हो सकीं वरन् अधिकतर मुग़ल मुसलमान हो गये और उन्होंने दीने मुहम्मदी (इस्लाम) स्वीकार कर लिया। कोई भी मुसलमान मुग़ल न हुआ और किसी ने भी मुग़लों का धर्म स्वीकार न किया। मैं राजभक्त हूँ। मेरा प्राण, मेरा जीवन तथा मेरा रोम-रोम बादशाह से सम्बन्धित हैं। यदि बादशाह के राज्य में किसी प्रकार का उपद्रव उठ खड़ा होगा तो न मैं और न मेरा परिवार और न मेरे नौकर चाकर जीवित रह पायेंगे। यदि मैं कोई ऐसी बात देखूँ जिससे बादशाह के राज्य में विघ्न पड़ने का भय हो और मैं उसे स्पष्ट बयान न करदूँ, तो मैं अपने ऊपर, अपने प्राणों पर, अपने परिवार पर तथा अपने नौकर चाकरों पर बड़ा अत्याचार करूँगा। जिस प्रकार की बातें अन्नदाता की ज़बान से निकलती हैं, उनसे इतना बड़ा उपद्रव उठ खड़ा होगा कि उसे सैकड़ों बुज़ुर्चमेहर[1] भी दबा न सकेंगे। जो लोग बादशाह के निष्कपट हितैषी तथा राजभक्त होने का दावा करते हैं और बादशाह की महफ़िलों में उपर्युक्त बातें सुनकर हाँ में हाँ में मिलाते रहते हैं और प्रशंसा करते रहते हैं, उन्होंने कभी भी बादशाह के नमक के हक़ का ध्यान नहीं रखा।"

सुल्तान अलाउद्दीन ने अलाउलमुल्क की बातें सुनकर सोचना तथा विचार करना आरम्भ कर दिया। सुल्तान अलाउद्दीन के चारों मित्रों को अलाउलमुल्क की वार्त्ता बहुत पसन्द आई। उन्होंने इस बात की प्रतीक्षा करनी आरम्भ कर दी कि सुल्तान अलाउलमुल्क की बातों का क्या उत्तर देता है।

(२६७) थोड़ी देर बाद सुल्तान ने अलाउलमुल्क से कहा कि, "मैं तुझे अपना विश्वास पात्र समझता हूँ। तेरे ऊपर मैं इतनी कृपा दृष्टि इसी कारण रखता हूँ कि तुझे राज-भक्त समझता हूँ। मैंने अनेक बार देखा तथा परीक्षा की है कि तूने मेरे सम्मुख जो बात भी कही वह सच सच और ठीक ठीक कही। कभी भी सच बात को न छिपाया। मैंने इस समय मनन किया तो मेरी समझ में यह आया कि जो कुछ तू कहता है, ठीक है। मुझे इस प्रकार की बातें न करनी चाहिये। इसके पश्चात् किसी भी सभा में मुझ से कोई इस प्रकार की बातें न सुनेगा। भगवान् तेरा भला करे और तेरे माता पिता का कल्याण करे कि तूने मेरे सामने सच-सच बातें कहीं और मेरे नमक का ध्यान रखा। दूसरी योजना के विषय में तेरी क्या राय है। वह ठीक है या गलत।"

अलाउलमुल्क ने दूसरी योजना के विषय में, जो कि जहाँगीरी (दिग्विजय) से सम्बन्धित थी, सुल्तान अलाउद्दीन के सम्मुख निवेदन किया कि, "दूसरी योजना बड़े-बड़े सुल्तानों के उत्कृष्ट साहस के अनुकूल है। जहाँगीरी की प्रथा यही है कि समस्त संसार पर आक्रमण करके उस पर अधिकार जमा लिया जाय। यह सम्भव है कि अन्नदाता इतनी धन सम्पत्ति, लाव-लश्कर, हाथी घोड़ों द्वारा जो कि इस समय राजधानी में विद्यमान हैं, दूसरे देशों पर विजय प्राप्त कर लें। मैं दूसरी योजना पर आचरण करने से नहीं रोक सकता। मैं देखता हूँ कि गजशाला तथा अश्वशालाओं में असंख्य हाथी घोड़े एकत्रित हो गये हैं। राजकोष में अपार धन सम्पत्ति एकत्रित हो गई है। अन्नदाता यदि चाहें तो दो तीन लाख सवार लेकर अन्य देशों को जीत सकते हैं किन्तु बादशाह को यह भी याद रखना चाहिये और इस पर भी सोच विचार कर लेना चाहिये कि देहली तथा देहली की इक़लीम (राज्य) इतनी धन सम्पत्ति ख़र्च करने एवं इतने रक्तपात के उपरान्त प्राप्त हुई है। उसे अन्नदाता किसको सौंपेंगे। उसको कितनी सेना देंगे और स्वयं कितनी सेना लेकर सिकन्दर की भाँति विश्व विजय करने के लिए प्रस्थान करेंगे। जिस किसी को भी देहली के राजसिंहासन पर बिठायेंगे या जिस किसी को

१. अर्थात् बड़े योग्य मंत्री

भी दूसरी इक़्लीमों का सिंहासन प्रदान करेंगे, तो यह किस प्रकार सम्भव होगा कि अन्नदाता के अपनी राजधानी में लौटने तथा उन इक्लीमों से वापस होने के उपरान्त वे लोग इस युग में विद्रोह अथवा विरोध न कर देंगे।"

(२६८) "सिकन्दर के युग तथा इस युग में बड़ा अन्तर है। उस युग में और बात थी और इस युग में दूसरी बात है। उस युग के मनुष्यों का यह स्वाभाविक नियम तथा आदत थी कि यदि क़रन के क़रन[1] व्यतीत हो जाते फिर भी वे जो वचन दे देते उस पर दृढ़ रहते और उसका पालन करते थे। उस युग में छल, कपट, झूंठ, विश्वासघात, वचन का पालन न करना बहुत कम था। उस युग में यदि किसी इक़्लीम अथवा प्रदेश का कोई स्वामी सिकन्दर अथवा किसी अन्य बादशाह को कोई वचन दे देता था तो उसकी उपस्थिति तथा अनुपस्थिति में अपने वचन से न फिर सकता था। इस समय अरस्तू के समान वज़ीर कहाँ हैं। उसके विशेष तथा साधारण व्यक्ति एवं संसार वाले जो कि इतनी बड़ी संख्या में थे और भिन्न भिन्न प्रदेशों में फैले हुए थे तथा अधिकार एवं सुख सम्पन्नता का जीवन व्यतीत कर रहे थे, सर्वदा उसके अधीन रहते थे और उसके वचन, आज्ञाओं, धर्म एवं ईमान पर विश्वास रखते थे। उसकी विजारत और नियाबत बिना लाव-लश्कर की सहायता के स्वीकार कर लेते थे, यहाँ तक कि सिकन्दर की अनुपस्थिति में उसके आदेशों तथा आज्ञाओं का विरोध किसी ने सूई की नौक के बराबर भी न किया। किसी ने भी कोई विरोध तथा विद्रोह न किया जब सिकन्दर ३२ वर्ष पश्चात् दिग्विजय का कार्य कर चुका और अपनी इक्लीम (राज्य) की राजधानी में वापस आया तो अन्य इक्लीमें उसकी आज्ञाकारी तथा सुव्यवस्थित बनी रहीं। एक क़रन अपितु इससे अधिक कोई उपद्रव अथवा विद्रोह उसके देश में न उठा। इसके विरुद्ध हमारे युग तथा काल के मनुष्य विशेष कर हिन्दू ऐसे है कि वे कदापि अपने वचन तथा अपनी बातों का पालन नही कर सकते। यदि वे वैभव तथा ऐश्वर्य वाले बादशाह को अपने सिर पर नही पाते और सवार, प्यादे, तलवार तथा फर्सा चलाने वालों को अपने प्राणों एवं धन सम्पत्ति पर नही देखते तो किसी भी दशा में उसके आज्ञाकारी नहीं बनते। ख़िराज नहीं अदा करते। सैकड़ों पाप तथा विद्रोह करते हैं। अन्नदाता की इक्लीमें हिन्दुस्तान की इक़्लीमें हैं। अन्नदाता की अनुपस्थिति विशेष कर वर्षों की अनुपस्थिति में ऐसे मनुष्य जिनके वचन तथा कार्य पर विश्वास नही किया जा सकता और जो किसी प्रकार राज भक्त नहीं कहे जा सकते अवश्य विद्रोह कर देंगे।"

(२६९) सुल्तान अलाउद्दीन ने अलाउलमुल्क से प्रश्न किया कि, "मेरे अधिकार में इतनी धन सम्पत्ति तथा हाथी घोड़े आ चुके हैं, तो फिर ऐसी दशा में यदि मैं दिग्विजय न करूँ और दूसरी इक्लीमों को अपने अधिकार मे न लाऊँ और केवल देहली के राज्य को पर्याप्त समझ लूं तो फिर उस धन सम्पत्ति से क्या लाभ होगा? मैं किस प्रकार दिग्विजेता कहलाया जा सकूंगा?" अलाउलमुल्क ने उत्तर दिया कि, "मै बादशाह का प्राचीन दास हूँ। मुझे यह उचित जान पड़ता है कि, बादशाह इन दो महान् कार्यों को सभी कार्यों से बढ़ चढ़कर समझें और इन्हें सफलता पूर्वक कर लेने के पश्चात दूसरे कार्य प्रारम्भ करें।" सुल्तान अलाउद्दीन ने पूछा, "कि वे दो कार्य कौन कौन से है जिन्हें सबसे बढ़चढ़कर कहा जा सकता है?" अलाउलमुल्क ने उत्तर दिया कि "इनमें से एक यह है कि हिन्दुस्तान की समस्त इक़्लीमों को अपना आज्ञाकारी तथा राजभक्त बना लिया जाय। इस प्रकार रणथम्भोर, चित्तौड़, चन्देरी, मालवा, धार, उज्जैन, और पूरब दिशा के स्थान सरयू तट तक, सिवालिक प्रदेश, जालौर तक, मुल्तान से मरीला तक, और पालम से लाहौर तथा दीपालपुर के सभी स्थान इस प्रकार आज्ञाकारी

---

१ दस, बीस अथवा तीस वर्ष।

तथा राज-भक्त बन जायें कि कोई भी उपद्रव तथा विद्रोह का नाम न ले सके। दूसरा महान् कार्य यह है कि मुल्तान के मार्ग से मुग़लों के भय का अन्त कर दिया जाय। मुगलों के आक्रमण का मार्ग इस प्रकार बन्द हो सकता है कि उस दिशा के क़िलों पर विश्वास पात्र कोतवाल नियुक्त किये जायें। क़िलों की मरम्मत कराई जाय। खन्दकें (खाई) खुदवाई जायें। बहुत बड़ी संख्या में अस्त्र-शस्त्र एकत्रित किये जायें। मन्जनीक तथा अरोद का प्रबन्ध किया जाय। कार्य कुशल तथा वीर सैनिक नियुक्त किये जायें, दयूपालपुर और मुल्तान में योग्य सेना नायक तथा सवार नियुक्त किये जायें। मुग़लों के आक्रमण बन्द कर दिये जायें। मुगलों को हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने से पूर्णतया रोक देना इस बात पर निर्भर है कि अनुभवी सेना नायक तथा चुनी हुई सुव्यवस्थित सेना नियुक्त की जाय जिसके सैनिक बड़े कार्य कुशल, अनुभवी और वीर हों।"

(२७०) "इन दो महान कार्यों अर्थात हिन्दुस्तान की इक़्लीमों तथा प्रदेशों से हिन्दुओं के विद्रोह के दमन तथा मुग़लों का आक्रमण, प्रतिष्ठित एवं गण्यमान्य व्यक्तियों की नियुक्ति द्वारा शान्त कर लेने के उपरान्त, बादशाह को चाहिये कि बादशाह निश्चित होकर देहली को सुव्यवस्थित बनाये, कारण कि वह राज्य का केन्द्र है। बादशाह को चाहिये कि राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों पर हृदय से ध्यान दे, कारण कि केन्द्र के सुव्यवस्थित हो जाने से समस्त देश सुव्यवस्थित हो जायगा। अपने विशेष प्रदेशों को सुव्यवस्थित कर लेने के उपरान्त बादशाह अपने राज-सिंहासन पर विराजमान होकर दिग्विजय कर सकता है। प्रत्येक दिशा में अपने हितैषी तथा निष्कपट दासों एवं राजभक्त अमीरों को सुसज्जित तथा पर्याप्त सेना देकर भेज दिया जाय। वे दूर की इक्लीमों में पहुँच कर उन पर अपना अधिकार जमायें। हिन्दुस्तान की इक़्लीमों तथा प्रदेशों को विध्वंस कर दें। धन सम्पत्ति तथा हाथी, घोड़े राजाओं महाराजाओं के पास शेष न रहने दें। उन्हे बादशाह का अधीन बना दे। इक़्लीम तथा प्रदेश राजाओं, इक़्लीमदारों तथा उन प्रदेश के स्वामियों को पुनः वापस दे दें और यह शर्त करलें कि वे प्रत्येक वर्ष हाथी, घोड़े, धन सम्पत्ति अन्नदाता की सेवा में भेजते रहें।"

उपर्युक्त वार्ता के पश्चात् अलाउलमुल्क ने धरती चुम्बन किया और कहा कि, "जो कुछ सेवक ने निवेदन किया, वह उस समय तक सम्भव नहीं जब तक बादशाह अत्यधिक मदिरापान त्याग न दें, सर्वदा समारोह तथा महफ़िलें करना, रात दिन शिकार खेलना छोड़ न दें अपने देश की राजधानी में स्वयं विद्यमान न रहें और उसे सुव्यवस्थित न करें। निष्कपट दासों तथा परामर्श दाताओं से राज्य व्यवस्था एवं शासन व्यवस्था सम्बन्धी बातों में परामर्श न किया करें।"

"बादशाह के अत्यधिक मदिरापान से समस्त कार्यों में विघ्न तथा दोष उत्पन्न हो जाते हैं। उचित परामर्श के बिना राज्य व्यवस्था सम्बन्धी कोई कार्य पूरा नहीं हो सकता। अत्यधिक शिकार खेलने से भी लोगों को छल तथा मक्कारी करने का अवसर प्राप्त हो जाता है। बादशाह के प्राण संकट में होते हैं। जब राज्य के समस्त विशेष तथा सर्व साधारण व्यक्तियों को विश्वास हो जाता है कि बादशाह रात दिन मदिरापान तथा शिकार में ग्रस्त रहता है तो बादशाह का भय लोगों के हृदय पर नही बैठ पाता।"

(२७१) "षड्यन्त्रकारी, षड्यन्त्र प्रारम्भ कर देते हैं। यदि बिना मदिरापान तथा शिकार के जीवन व्यतीत करना कठिन हो तो दूसरी नमाज़ के उपरान्त[१] बिना महफ़िल तथा मित्रों के एकान्त में मदिरा पान करें। इतनी मदिरा न पीलें कि बेहोश हो जायें। शिकार के लिये सीरी में एक महल बनवा लें। उस महल के चारों ओर बहुत बड़ा खुला हुआ मैदान है। उन्ही मैदानों में शिकार खेलें तथा शिकरे उड़ायें। इस प्रकार शिकार की तृष्णा पूरी करलें,

१. रात्रि की नमाज़ के उपरान्त।

जिससे राज्य का लोभ रखने वालों तथा षड्यन्त्रकारियों के मस्तिष्क में बुरे विचार उत्पन्न न हों। हमें केवल बादशाह के जीवन तथा राज्य की दृढता से सम्बन्ध है। हमारा जीवन तथा हमारे घरबार का जीवन बादशाह के जीवन तथा बादशाह के राज्य की दृढ़ता पर निर्भर है। भगवान् न करें कि यह राज्य किसी अन्य के हाथ में चला जाय तो फिर न तो हम न हमारा परिवार और न हमारे घर बार में से ही कोई जीवित रह सकेगा।"

जब सुल्तान अलाउद्दीन ने अलाउलमुल्क की बातें सुनी तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उससे कहा कि, "जो कुछ बातें तूने कहीं है, वे बिल्कुल ठीक हैं। हम वही करेंगे, जो कि भगवान् ने तेरी जबान से निकलवाया है।" सुल्तान ने अलाउलमुल्क को ज़रदोज़ी की ख़िलअत सूरते[1] शेर, कमरबाफ़्त, आधा मन सोना, दस हज़ार तनके, दो उत्तम घोड़े तथा दो गाँव इनाम में दिये। उन चारों खानों ने, जो सुल्तान के सम्मुख सुबह से दोपहर तक अलाउलमुल्क की वह बातें जो उसने राज सिंहासन के सम्मुख कहीं, सुन रहे थे, अलाउलमुल्क के तीन चार हजार तनके और दो-तीन सजे हुए घोड़े घर भेजे। उपर्युक्त राय वजीरों तथा वजीरी का पेशा करने वालों और शहर के बुद्धिमानों को ज्ञात हुई। उन्होंने अलाउलमुल्क की सम्मति, विचार तथा सूझ-बूझ की बड़ी प्रशंसा की। यह घटना उस समय से सम्बन्धित है जबकि ज़फ़र खाँ जीवित था। सिविस्तान के युद्ध के उपरान्त दरबार में उपस्थित हुआ था। दुष्ट कुतलुग़ ख्वाजा से अभी तक युद्ध न हुआ था।

रणथम्भोर पर आक्रमण

(२७२) सर्व प्रथम सुल्तान अलाउद्दीन ने रणथम्भोर पर विजय प्राप्त करना आवश्यक समझा, कारण कि वह देहली के निकट था और देहली के पिथौराराय का नाती हमीर देव उस क़िले का स्वामी था। बयाना की अक़्ता के स्वामी उलुग़खाँ को उसे विजय करने के लिए भेजा। नुसरत खाँ को जो उस वर्ष कड़े का मुक़्ता था आदेश भेजा कि कड़े की समस्त सेना तथा हिन्दुस्तान को सभी अक़्ताओं की सेनाओं को लेकर रणथम्भोर की ओर प्रस्थान करे और रणथम्भोर की विजय में उलुग़खाँ को सहायता प्रदान करे। उलुग़खाँ और नुसरतखाँ ने झायन पर अधिकार जमा लिया। रणथम्भोर का किला घेर लिया और क़िला जीतने में लग गये। एक दिन नुसरतखाँ क़िले के निकट पाशेब बंधवाने तथा गरगच लगवाने में तल्लीन था। क़िले के भीतर से मग़रबी पत्थर फेंके जा रहे थे। अचानक एक पत्थर नुसरत खाँ के लगा और वह घायल हो गया। दो तीन दिन उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई। यह समाचार सुल्तान अलाउद्दीन को मिला तो वह राजसी ठाठ बाट से शहर से बाहर निकल कर रणथम्भोर की तरफ़ रवाना हुआ।

सुल्तान अलाउद्दीन का रणथम्भोर की ओर प्रस्थान तथा तिलपट में रुकना। अकत खाँ[2] का तिलपट में विद्रोह करना।

जब सुल्तान अलाउद्दीन देहली से रणथम्भोर के क़िले पर विजय प्राप्त करने के लिये रवाना हुआ तो कुछ दिन के लिये तिलपट में रुककर प्रतीक्षा की। प्रत्येक दिन शिकार के लिये प्रस्थान करता और शिकार खेलता। एक दिन पिछले दिनों की भाँति शिकार के लिये गया हुआ था। रात में निकट के एक गांव में दस बारह सवारों के साथ उतर पड़ा और वहीं रुक गया। अपने शिविर में न आया।

---

१ इसका अर्थ स्पष्ट नहीं, लेखक का अभिप्राय बहुमूल्य वस्त्र से है।

२. पुस्तक में उलुग़ खाँ है।

(२७३) दूसरे दिन सूर्य उदय होने के पूर्व आदेश दिया कि शिकार के लिये घेरा डाल दिया जाय। दरबार के पदाधिकारी तथा सवारों की सेना शिकारों के घेरने में लगी हुई थी। सुल्तान मैदान में विद्यमान था और एक मोढ़े पर बैठा था। कुछ व्यक्ति सुल्तान के चारों ओर थे। सुल्तान इस बात की प्रतीक्षा देख रहा था कि जब शिकार घेरे में ले लिये जायं तो फिर सवार हो। इसी बीच में सुल्तान के भतीजे अकत ख़ाँ ने जो कि वकीलदर था, विद्रोह कर दिया। उसने यह सोचा कि जिस प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन अपने चचा की हत्या करके राज-सिंहासन पर विराजमान हो गया है, उसी प्रकार मैं भी सुल्तान अलाउद्दीन की हत्या करके राज सिंहासन पर विराजमान हो जाऊं। इस दूषित विचार से अकतख़ाँ कुछ नव मुसलमान धनुर्धारी सवारों को, जो कि उसके प्राचीन दास थे, लेकर शेर शेर चिल्लाता हुआ सुल्तान अलाउद्दीन तक पहुँच गया। उसके निकट पहुँच कर धनुर्धारियों ने कुछ तीर सुल्तान की ओर फेंके। वह शीत-ऋतु के कारण दगला[1] तथा क़िबा पहने था। जब वे बाणों की वर्षा कर रहे थे तो वह तुरन्त मोढ़े से उतर कर उसी मोढ़े को ढाल बनाकर तीर रोकने लगा। बहुत से तीर मोढ़े में लगे। दो तीर सुल्तान के बाज़ू में भी लगे। सुल्तान का बाज़ू उससे घायल हो गया किन्तु कोई घातक तीर उसके न लगा। जिस समय नव मुसलमान, सुल्तान पर तीरों की वर्षा कर रहे थे, उसका एक दास जिसका नाम मानक था, सुल्तान के सामने ढाल बनकर खड़ा हो गया। उसने तीन चार तीर अपने ऊपर रोक लिये और घायल हो गया। सुल्तान के पायक दास, जो कि सुल्तान के पीछे खड़े होते थे, अपनी ढालों से सुल्तान की रक्षा करने लगे।

जब अकतख़ाँ अपने सवारों को लेकर सुल्तान के निकट पहुँचा और सवारों ने घोड़ों से उतरकर सुल्तान का सिर काटना चाहा तो देखा कि पायक तलवारें खींचे हुये युद्ध के लिये तैयार हैं। वे विद्रोही विरोध तथा उपद्रव करने के कारण घोड़े से उतरने का साहस न कर सके और सुल्तान पर हाथ न उठा सके।

(२७४) इसी बीच मे पायकों ने चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया कि सुल्तान की मृत्यु हो गई। अकतख़ाँ जवान, मूर्ख, अनुभवशून्य तथा अनभिज्ञ था। उसे कोई बुद्धि अथवा समझ न थी। इस सीमा तक विद्रोह करने के उपरान्त भी जब कि वह कुछ धनुर्धारी सवारों को लेकर सुल्तान के निकट पहुँच गया था, यह न सोचा कि अपना विद्रोह पूरा करले और सुल्तान का शीश उसके शरीर से पृथक् कर दे, तत्पश्चात् कोई अन्य कार्य करे। उसने अपनी मूर्खता के कारण बड़ी जल्दी कर दी। पायकों की बात पर विश्वास कर लिया और लौट पड़ा। शीघ्रातिशीघ्र तिलपट के मैदान में पहुँच गया और वहाँ से सवार होकर सुल्तानी शिविर मे प्रविष्ट हो गया। अलाई राज सिंहासन पर विराजमान हुआ। सुल्तानी शिविर में पहुँचकर उसने घोषणा कर दी कि मैंने सुल्तान की हत्या कर दी है। लोगों ने सोचा कि उसने सुल्तान की हत्या न की होती तो वह सुल्तानी शिविर में प्रविष्ट न होता और न अलाई राज-सिंहासन पर बैठने का साहस कर सकता और न दरबार ही कर सकता था। सेना में हाहाकार मच गया और लोग इधर उधर होने लगे। हाथियों पर हौदे कसकर दरबार के सामने लाये गये। दरबार के कर्मचारी उपस्थित हुये। प्रत्येक अपने अपने स्थान पर खड़ा हो गया। नक़ीब नारे लगाने लगे। क़ुरान पढ़ने वाले क़ुरान पढ़ने लगे। गायकों ने गाना प्रारम्भ कर दिया। लश्कर के गण्य मान्य व्यक्तियों ने उस अभागे को बादशाही की बधाई देते हुये दस्तबोस किया। उपहार भेंट किये गये। हाजिबों ने बिस्मिल्लाह[2] के नारे लगाये। अभागा अकत ख़ाँ सिर से पैर तक अज्ञानता तथा मूर्खता से भरा था। उसी समय अन्तःपुर की

---

१. रुई का मोटा वस्त्र।

२. अल्लाह के नाम से।

ओर रवाना हुआ। मलिक दीनार हरमी[1] ने अन्दर जाने की आज्ञा न दी। अपने मित्रों को लेकर हथियार लगा कर अन्तःपुर के द्वार पर बैठ गया। अभागे अकतखाँ से कहा, "मुझे सुल्तान अलाउद्दीन का सिर दिखाओ तब अन्तःपुर में जाने दूँगा।"

(२७५) जिस स्थान पर सुल्तान अलाउद्दीन तीर से घायल हुआ था वहाँ सवारों ने उसका साथ छोड़ दिया और वे लोग शोरगुल मचाने लगे। सभी ने भिन्न भिन्न मार्ग ग्रहण कर लिए। सुल्तान अलाउद्दीन के पास सवार और प्यादों में से लगभग साठ सत्तर व्यक्ति शेष रह गये थे। जब अकत खाँ के वापस चले जाने के पश्चात सुल्तान अलाउद्दीन को होश आया तो उन सवारों ने देखा कि सुल्तान के बाजू में दो घाव लग गये हैं। घावों से अत्यधिक रक्त निकल चुका है। उन्होंने घाव धोये और उन्हें बाँध कर बाजू रूमाल से गर्दन में लटका दिया। जब सुल्तान के होश हवास ठीक हुए तो उसने सोचा कि मलिकों, अमीरों तथा सैनिकों की बहुत बड़ी संख्या अकत खाँ की सहायक होगी अन्यथा वह बिना बल के इस प्रकार का विद्रोह न कर सकता था। सुल्तान ने सोचा कि लश्कर को छोड़कर झायन में उलुग़ खाँ के पास पहुँच जाये, और रात दिन यात्रा करके भाई के पास पहुँच कर जो कुछ भी उपाय करना हो वह करे। चाहे राज्य पर पुनः अधिकार जमाने का प्रयत्न करे अथवा किसी अन्य स्थान को चला जाय। इस प्रकार जो उचित हो वह करे। यह सोच कर वह झायन को प्रस्थान करने की तैयारी कर रहा था। प्राचीन उमदतुल मुल्क के पुत्र मलिक हमीदुद्दीन ने, जो कि नायब वकीलदर तथा अपने समय का अरस्तू और बुजर्चमेहर था, सुल्तान अलाउद्दीन को झायन जाने से मना किया। उसने निवेदन किया कि, "अन्नदाता को इसी समय शिविर की ओर प्रस्थान करना चाहिये कारण कि सेना अन्नदाता की दास है और उसे अन्नदाता द्वारा आश्रय प्राप्त हुआ है। जैसे ही प्रजा सुल्तानी चत्र देखेगी और सेना वाले यह समझ जायेंगे कि अन्नदाता सुरक्षित हैं, तो वे अन्नदाता से मिल जायेंगे। हाथियों को उपस्थित करेंगे और इसी समय दुष्ट अकत खाँ का सिर काटकर भाले की नोक पर चढ़ा देंगे, किन्तु यदि रात व्यतीत हो गई और प्रजा को यह न ज्ञात हुआ कि बादशाह हृष्ट पुष्ट तथा सुरक्षित है तो बहुत से लोग उस दुष्ट के सहायक हो जायँगे और फिर बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। जब प्रजा उसकी सहायक हो जायगी तथा उसकी अधीनता स्वीकार कर लेगी तो फिर अन्नदाता के भय से उससे अलग न हो सकेगी।"

(२७६) सुल्तान अलाउद्दीन को हमीद की राय पसन्द आ गई। उसी समय सवार होकर सेना की ओर चल खड़ा हुआ। मार्ग में जिस सवार ने सुल्तान अलाउद्दीन को सुरक्षित देखा, सुल्तान से मिल गया। सुल्तान शिविर में पहुँचा। पाँच छः सौ सवार सुल्तान अलाउद्दीन के निकट एकत्रित हो गये। जब सुल्तान सेना के निकट पहुँचा तो वह एक ऊँचे स्थान पर चढ़ गया और अपने आप को सब लोगों को दिखला दिया। जैसे ही लश्कर वालों में से बहुतों की दृष्टि सुल्तान अलाउद्दीन के चत्र पर पड़ी तो सैनिकों की बहुत बड़ी संख्या तथा दरबार के कर्मचारी समस्त हाथियों को लेकर उसके पास पहुँच गये। अकत खाँ अपने शिविर के पीछे से निकल कर एक घोड़े पर सवार होकर अफ़ग़ानपुर की ओर भाग गया। सुल्तान अलाउद्दीन उस बलन्दी से राजसी ठाठ बाट तथा ऐश्वर्य से उतर कर अपने दरबार में गया और अपने राज सिंहासन पर विराजमान हुआ तथा दरबारे आम किया।

मलिक अइज्जुद्दीन यगाँ खाँ तथा मलिक नसीरुद्दीन नूरखाँ ने अकतखाँ का पीछा किया। उसे अफ़ग़ानपुर के गाँव में पकड़ लिया। उसका सिर काट डाला और उसे सुल्तानी शिविर में ले आये। सुल्तान ने आदेश दिया कि विद्रोही का कटा शीश भाले की नोक पर चढ़ा कर

१ अन्तःपुर का रक्षक

समस्त सेना में घुमाया जाय और शहर देहली भी भेज दिया जाय। सिर देहली शहर से विजय पत्र के साथ उलुग़ख़ाँ के पास झायन भेज दिया गया। उसके छोटे भाई की, जिसकी उपाधि क़ुतलुग़ ख्वाजा थी, उसी समय हत्या कर दी गई। कुछ दिन वह उसी स्थान पर लश्कर के साथ रुका रहा। उन पदाधिकारियों, सवारों तथा अन्य लोगों के विषय में जिन्हें अकतख़ाँ के विद्रोह की सूचना तथा जानकारी थी पूछ ताछ की गई और उन्हें गिरफ़्तार करा लिया गया। लोहे के कोड़े मार मार कर उनकी हत्या करदी गई। उनके घरबार पर सुल्तानी अधिकार स्थापित हो गया। उनके परिवार को बन्दी बना कर देहली के आसपास के क़िलों में भेज दिया गया।

विद्रोहियों के विषय में पूछताछ करने तथा अकतख़ाँ के उपद्रव को शान्त करने के पश्चात् सुल्तान अलाउद्दीन लगातार कूच करता हुआ रणथम्भोर की ओर रवाना हुआ और वहाँ पहुँच कर डेरे डाल दिये। अकतख़ाँ के सहायक शेप विद्रोहियों को दंड दिया गया।

(२७७) इससे पूर्व क़िले को घेर रक्खा गया था। सुल्तान के पहुँचने के उपरान्त इसमें और तेज़ी होगई। राज्य के चारों ओर से बोरियाँ लाई गई। उनके थैले बना बना कर सेना में बाँट दिये गये। थैलों में बालू भरी गई और वे ख़न्दक़ों (खाई) में डाल दिये गये। पाशेब बाँधे गये। गरगच लगाये गये। क़िले वालों ने मग़रबी पत्थर द्वारा पाशेबों को हानि पहुँचानी प्रारम्भ कर दी। वे क़िले के ऊपर से आग फेकते थे और लोग दोनों ओर से मारे जाते थे। झायन की विलायत (प्रदेश) पर धार तक आक्रमण करके अधिकार जमा लिया गया।

सुल्तान अलाउद्दीन के भानजों, मलिक उमर तथा मंगू ख़ाँ का बदायूँ और अवध में, जहाँ की अक़्ता के वे स्वामी थे, विद्रोह, तथा विद्रोह की सूचना का रणथम्भोर पहुँचना।

जिस समय सुल्तान अकत ख़ाँ के सहायक विद्रोहियों से निश्चित होकर क़िले पर अधिकार जमाने का प्रयत्न कर रहा था और समस्त सेना को इसी कार्य में लगा दिया था, उसे सूचना मिली कि अमीर उमर तथा मंगू ख़ाँ ने सुल्तान की अनुपस्थिति एवं उसके क़िला जीतने में ग्रस्त होने तथा रणथम्भोर के क़िले की विजय को कठिन समझ कर विद्रोह कर दिया है। वे हिन्दुस्तान की प्रजा एकत्रित कर रहे हैं। सुल्तान ने हिन्दुस्तान के कुछ बड़े-बड़े अमीरों को उनके विरुद्ध नियुक्त किया। उन्होंने यद्यपि विद्रोह प्रारम्भ कर दिया था, किन्तु वे विशेष तैयारी न कर सके थे, अतः दोनों भाई गिरफ़्तार हुये और बन्दी बनाकर सुल्तान के पास रणथम्भोर में भेज दिये गये।

(२७८) सुल्तान अलाउद्दीन बड़े कड़े स्वभाव, कठोर हृदय वाला और सख़्त दिल था। अपने दोनों भानजों को अपने सामने दण्ड दिलवाया। उनकी आँखें ख़रबूज़े की फाँक के समान चाक़ू से निकलवालीं। उनके घर बार विध्वन्स करा दिये। उनके सहायक सवार तथा प्यादों में से बहुत से भाग गये और छिन्न-भिन्न हो गये। बहुत से हिन्दुस्तानी अमीरों द्वारा गिरफ़्तार होकर क़ैद कर दिये गये।

मलिकुल उमरा फ़ख़रुद्दीन कोतवाल के मौला[1] हाजी का विद्रोह

सुल्तान अलाउद्दीन रणथम्भोर के क़िले पर अधिकार जमाने में अपनी समस्त सेना के साथ लगा हुआ था कि इसी बीच में मलिक फ़ख़रुद्दीन भूतपूर्व कोतवाल के मौला हाजी ने देहली में विद्रोह कर दिया और विशेष उत्पात प्रारम्भ कर दिया। उसके विद्रोह की सूचना

१—दास।

तीसरे दिन रणथम्भोर में सुल्तान को प्राप्त हुई। उस विद्रोह में देहली की प्रजा तथा सैनिक इधर उधर हो गये। हाजी, भूतपूर्व कोतवाल मलिकुल उमरा का मौला था। वह बड़ा ही धूर्त, छली, कपटी और षड्यन्त्रकारी था। जिस समय सुल्तान अलाउद्दीन अपनी समस्त सेना के साथ रणथम्भोर के किले में युद्ध कर रहा था और वहाँ पर मनुष्यों की बहुत बड़ी संख्या में हत्या हो रही थी और लोग अपने जीवन से निराश हो गये थे, उपर्युक्त हाजी मौला ख़ालसे का शहना था और कोतवाल का नाम तिर्मिज़ी था। शहर देहली के निवासी उसके अत्याचार तथा ज़ुल्म से बड़े परेशान थे। उसने बदायूँ दरवाज़े की ओर एक भवन निर्माण कराया था और द्वार के निकट के भवन में निवास करता था तथा वहीं रहता था।' दीवाने विज़ारत के लिये सीरी के मैदान में छप्पर डलवा दिये थे। वहीं से वह शासन प्रबन्ध करता था। अहमद अयाज़ का पिता अलाउद्दीन अयाज हिसारे नव का कोतवाल था। उपर्युक्त विद्रोही हाजी मौला ने देखा कि शहर रिक्त है और शहर वाले तिर्मिज़ी कोतवाल के अत्याचार से बड़े पीड़ित हैं।

(२७९) उसने यह सुना कि सेना रणथम्भोर के क़िले की विजय में बड़ी परेशान है और सैनिक बराबर क़िले की विजय में मारे जा रहे हैं। लोग बहुत तंग आ चुके हैं और सुल्तान की तीन वर्षीय रोक टोक के भय से सेना से एक व्यक्ति का पृथक् होना भी सम्भव नहीं। दुष्ट हाजी मौला ने यह विचार करके कि शहर के लोग तथा सैनिक अपनी परेशानियों के कारण उसके सहायक बन जायेंगे, भूतपूर्व कोतवालियों[१] को अपनी ओर मिलाना आरम्भ कर दिया और बहुत बड़ा उपद्रव खड़ा कर दिया। इतनी भीषण अग्नि प्रज्वलित कर दी कि उसकी लपट आकाश तक पहुँचती थी। रमज़ान महीने की दोपहर को जब कि सूर्य मिथुन राशि में था और लोग गर्म हवा के कारण अपने घरों में घुसे हुये आराम कर रहे थे तथा आदमियों का चलना फिरना भी कम हो गया था, उपर्युक्त हाजी मौला एक फ़रमान, दिखाने के लिये, अपनी बग़ल में दाबकर, कुछ नंगी तलवारें लिये हुये पायकों को लेकर बदायूँ दरवाज़े तक पहुँच गया। सैनिक तिर्मिज़ी कोतवाल के घर के सामने खड़े कर दिये। यह बहाना करके कि मैं सुल्तान के पास से आ रहा हूँ और फ़रमान लाया हूँ, कोतवाल को जो कि विश्राम कर रहा था और जिसके निकट सैनिक तथा अन्य मनुष्य न थे, घर के भीतर से द्वार पर बुलवाया। कोतवाल नींद से उठकर जूतियाँ पहनकर घर के द्वार के सामने पहुँचा। जैसे ही हाजी मौला ने तिर्मिज़ी कोतवाल को देखा, उसने अपने पायकों को आदेश दिया कि वे उसके कंठ पर प्रहार कर दें। उसका शीश उसके शरीर से पृथक् करदें। अपनी बग़ल से फ़रमाने तुग़रा निकाल कर उपस्थित जनों को दिखा दिया कि मैंने इस फ़रमान के अनुसार कोतवाल की हत्या कराई है। लोग चुप हो गये। उन द्वारों को जो कि तिर्मिज़ी कोतवाल के सुपुर्द थे, दरवाज़ों के नक़ीबों से बन्द करवा दिया कारण कि नक़ीब पहले ही से मिले थे। शहर के घरों के द्वार बन्द होने लगे।

(२८०) उपर्युक्त हाजी ने कोतवाल तिर्मिज़ी की हत्या के उपरान्त हिसारे नव (नई चहार दीवारी) के कोतवाल अलाउद्दीन अयाज़ को बुलवाया। वह उसकी भी हत्या करा देना चाहता था। उसे सूचना भेजी कि शाही फ़रमान लेकर आया हूँ, आकर उसमें जो कुछ है सुनजा। विद्रोहियों में से एक ने जिससे उसकी जानकारी थी, उसे सब कुछ बता दिया था। हिसारे नव का कोतवाल न आया। अपने आपको तैयार करके हिसारे नव के द्वार बन्द करवा दिये। हाजी मौला अन्य विद्रोहियों के साथ कूशकेलाल में पहुँचा। सफ़हये ताक़ (सिंहासन के स्थान) में विराजमान हुआ। समस्त अलाई बन्दियों को मुक्त कर दिया। बहुत से उसके मित्र

२—इस वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं।

१. कोतवाल के सम्बन्धियों तथा सहायकों।

हो गये। राज्य कोष से सोने के तनकों की थैलियाँ निकलवालीं। प्रजा को सोना बाँटना आरम्भ कर दिया। राजकीय अस्त्र-शस्त्र गृह से अस्त्र-शस्त्र तथा अश्वशाला से घोड़े विद्रोहियों को प्रदान किये। जो कोई भी उसका सहायक हो जाता, उसी के पल्लू में सोने के तनके डलवा दिये जाते। एक अलवी के, जो शहेनजफ़ का नाती कहलाता था और जिसकी माँ का वंश सुल्तान शम्सुद्दीन से मिलता था. साथ हाजी मौला राजभवन से सवार होकर, घर गया। उस बेचारे को कूशके-लाल में लाकर ज़बरदस्ती राज सिंहासन पर बिठा दिया। सद्रों तथा गण्यमान्य व्यक्तियों को उनके घरों से अत्याचार पूर्वक बुलवाया और उस अलवी से दस्तबोस करने तथा उसके आगे झुकने पर विवश किया। इस प्रकार उपद्रव की अग्नि बढ़ती गई। बहुत से अभागे जिनका अन्तिम समय निकट आ गया था, धन सम्पत्ति के लोभ से जानबूझ कर उससे मिल गये। वह विद्रोहियों को ऊंचे ऊँचे सरकारी पद प्रदान करता था तथा अलवी से दस्तबोस करवाता था। लोग सुल्तान अलाउद्दीन तथा उन अभागों के भय से खाना पीना और सोना तक भूल गये थे। रात दिन असमंजस में पड़े रहते। उन सात आठ दिन के बीच में जब कि हाजी मौला ने इस प्रकार विद्रोह कर दिया था सुल्तान अलाउद्दीन को कई बार ये समाचार मिले, किन्तु लश्कर वालों को सब बातें न मालूम हुईं और कोई उपद्रव न उठ खड़ा हुआ।

(२८१) विद्रोह के तीसरे चौथे दिन हाजी मलिक हमीदुद्दीन अमीर कोह ने अपने पुत्रों तथा निकटवर्त्तियों को लेकर, जिनमें से प्रत्येक शेर बबर था, पश्चिम दिशा का द्वार खुलवा लिया। वे सब शहर में घुस आये और भन्दर काल द्वार तक पहुँच गये। उसने तथा विद्रोहियों ने एक दूसरे के ऊपर खूब तीर चलाये। उस समय विद्रोहियों और विरोधियों ने अपने प्राणों से हाथ धो लिये थे और हाजी से खूब धन सम्पत्ति प्राप्त की थी। दो दिन पश्चात् मलिक हमीदुद्दीन अमीर कोह उसके पुत्र तथा अन्य निष्कपट हितैषी एवं राजभक्त लोगों ने विद्रोहियों पर विजय प्राप्त करली। ज़फ़रखाँ के कुछ मित्र जो अर्ज़[1] के लिये अमरोहे से शहर देहली में आये थे, मलिक अमीर कोह तथा उसके पुत्रों के मित्र हो गये। मलिक अमीर कोह भन्दर काल द्वार के अन्दर घुस गया। मोजादौज़ों[2] उसके और हाजी मौला के बीच में युद्ध होने लगा। अमीर कोह ने घोड़े से नीचे उतर कर हाजी मौला को ज़मीन पर पटक दिया, और उसके सीने पर सवार हो गया। हाजी के सहायकों ने वीर तथा निष्कपट अमीर कोह के कई तलवारें मारीं और उसके शरीर के कई अंग ज़ख्मी कर दिये किन्तु उसने जब तक हाजी मौला की हत्या न कर ली, उस समय तक वह उसके सीने के नीचे न उतरा।

हाजी मौला की हत्या के पश्चात् अलाई राजभक्त कूशके लाल (लाल राजभवन) में पहुंचे। उस बेचारे अलवी का शीश उसके शरीर से पृथक् कर दिया और शहर भर में भाले की नोक पर चढ़ा कर घुमाया। विजय पत्र तथा हाजी मौला की हत्या के समाचार रणथम्भौर में सुल्तान अलाउद्दीन के पास भेज दिये।

देहली में जिस प्रकार विद्रोह तथा उपद्रव उठ रहे थे और जिस प्रकार देहली का विनाश किया जा रहा था, वह सुल्तान अलाउद्दीन को ज्ञात होता रहता था किन्तु उसने रणथम्भोर का क़िला जीतने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। अतः वह अपने स्थान से न हिला और देहली की ओर प्रस्थान न किया। जितनी सेना भी क़िले की विजय में लगी हुईं थी, वह सब की सब परेशान हो चुकी थी किन्तु सुल्तान अलाउद्दीन के भय और डर से कोई सवार अथवा प्यादा

---

१. अपनी सेना का निरीक्षण कराने।

२. जूता बनाने वालों।

न तो देहली की ओर प्रस्थान कर सकता था और न किसी अन्य ओर। पाँच छः दिन के भीतर जितने लोग भी हाजी मौला के सहायक बन गये थे तथा उससे धन सम्पत्ति प्राप्त कर चुके थे, वे सब गिरफ़्तार कर लिये गये। जो कुछ धन सम्पत्ति उसने लोगों को प्रदान करदी थी वह सब की सब ख़ज़ाने में वापस ले ली गई।

(२८२) छः सात दिन में शीघ्रातिशीघ्र उलुग़ ख़ाँ रणथम्भौर से देहली पहुँचा। मुइज़्ज़ी राजभवन में उतरा। सभी विद्रोही पेश किये गये और सब की हत्या कर दी गई। रक्त की नदी बहा दी गई। उन विद्रोहियों के कारण भूतपूर्व कोतवाल मलिकुल उमरा के पुत्रों तथा पोतों को भी जिन्हें इस विद्रोह की कोई सूचना भी न थी, तलवार के घाट उतरवा दिया गया। मलिकुल उमरा के घर बार का विनाश कर दिया गया और उनका नाम व निशान भी संसार में इस कारण शेष न रहने दिया गया, कि संसार वाले उससे शिक्षा ग्रहण कर सकें।

विद्रोहों के कारणों का मालूम किया जाना

जब सुल्तान अलाउद्दीन ने गुजरात के नव मुसलमानों के विद्रोह से लेकर हाजी मौला के विद्रोह तक लगातार चार विद्रोह देखे तो वह असावधानी तथा ग़फ़लत की नींद से जागा, एवं नाना प्रकार के नशों से सावधान हो गया। रणथम्भौर के क़िले पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करता था और रात दिन लोगों से एकान्त में परामर्श भी किया करता था। अला-दबीर के पुत्रों मलिक हमीदुद्दीन तथा मलिक अइज़्ज़ुद्दीन एवं मलिक ऐनुलमुल्क मुल्तानी जिनमें से प्रत्येक परामर्श देने के विषय में आसिफ़ तथा बुज़ुर्चमिहर था एवं कुछ अन्य बुद्धिमानों को अपने सम्मुख बैठाकर उनसे परामर्श तथा वाद-विवाद करता कि विद्रोहों का क्या कारण है। सुल्तान अलाउद्दीन कहा करता था कि यदि पता चल जाय तो मैं उन कारणों और उन बातों ही का अन्त कर दूँ जिससे विद्रोह न हो सके।

कई दिन तथा कई रात के पश्चात् उन गण्यमान्य व्यक्तियों ने निश्चय किया कि विद्रोह के चार कारण हैं। प्रथम बादशाह का प्रजा की अच्छी बुरी बातों से अनभिज्ञ होना। द्वितीय मदिरापान, कारण कि मदिरापान की गोष्ठियों में लोग अपने दिलों का मैल निकाल कर एक दूसरे के मित्र हो जाते है और विद्रोह कर देते हैं, तथा उपद्रव खड़ा कर देते हैं।

(२८३) तीसरे मलिकों और अमीरों की एक दूसरे से मेल मुहब्बत, रिश्तेदारी तथा आना जाना। इस मेल जोल तथा रिश्तेदारी के कारण यदि इनमें से किसी एक पर कोई आपत्ति आ जाती है तो सभी एक दूसरे के सहायक बन जाते हैं। चतुर्थ, धन सम्पत्ति जिसके कारण लोगों के मस्तिष्क में विद्रोह, विरोध षड्यन्त्र तथा नमकहरामी का ख़्याल पैदा होता रहता है। यदि लोगों के पास धन सम्पत्ति न हो और सभी अपने अपने कार्यों में लगे रहें तो किसी को भी विद्रोह अथवा षड्यंत्र का ख़्याल न होगा।

सुल्तान अलाउद्दीन ने हाजी मौला के विद्रोह के उपरान्त बड़े परिश्रम तथा रक्त पात के पश्चात् रणथम्भौर के क़िले पर अपना अधिकार जमा लिया। रायहमीर देव तथा उन नव मुसलमानों की जो कि गुजरात के विद्रोह के उपरान्त भाग कर उसकी शरण में पहुँच गये थे, हत्या करा दी। रणथम्भौर तथा उस स्थान के आसपास की विलायत (प्रदेश) एवं वहाँ का सब कुछ उलुग़ ख़ाँ के सिपुर्द कर दिया। सुल्तान रणथम्भौर से लौट कर देहली पहुँचा। इस कारण कि वह शहरियों से रुष्ट था, उसने सद्रों की एक बहुत बड़ी संख्या को अन्य स्थानों पर भेज दिया और ख़ुद भी शहर में न गया। शहर के निकट की आबादी में ठहरा। उलुग़ ख़ाँ ने सुल्तान की अनुपस्थिति में चार पाँच महीने में बहुत बड़ी सेना एकत्रित कर ली थी। उसने तिलंग तथा माबर पर आक्रमण करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था, किन्तु उसकी मौत

आ चुकी थी। मुल्तान के शहर में प्रवेश करने के पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गई। उपद्रव के भय से उसे उसी के घर में दफ़न कर दिया गया। सुल्तान को उसकी मृत्यु का बड़ा दुःख हुआ। उसने उसकी आत्मा की शान्ति के लिये बड़ा दान पुण्य किया।

सुल्तान अलाउद्दीन ने विद्रोहों के कारण दूर करने का संकल्प कर लिया था। सर्व प्रथम उसने लोगों की धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमाना परमावश्यक समझा। उसने आदेश दिया कि जहाँ कहीं और जिस किसी के पास भी मिल्क, इनाम तथा वक़्फ़ की ज़मीन हो उसे खालसे में मिला लिया जाय। जबरदस्ती तथा लूट खसोट का हाथ प्रजा पर छोड़ दिया।

(२८४) जिस उपाय से भी सम्भव था, लोगों से धन सम्पत्ति लेनी आरम्भ कर दी। बहुत बड़ी संख्या में से किसी के पास धन सम्पत्ति न रहने दी। यहाँ तक कि मलिकों, अमीरों उच्च पदाधिकारियों, मुल्तानियों तथा साहुओं के पास भी धन सम्पत्ति शेष न रही। देहली तथा राज्य के अन्य प्रदेशों के निवासियों के पास कोई भी वज़ीफा, इनाम, मफरूज़ तथा वक़्फ़ की जमीन न रही। केवल कुछ लोगों के पास कुछ हज़ार तनके रह गये। समस्त प्रजा जीविकोपार्जन में इस प्रकार लग गई कि कभी विद्रोह का नाम भी किसी की जबान से न निकलता था।

विद्रोह के दूसरे कारण को दूर करने के लिये उसने यह आयोजन किया कि प्रत्येक समाचार गुप्तचरों की एक बहुत बड़ी संख्या द्वारा उसके पास पहुँचने लगा। लोगों की अच्छी या बुरी कोई भी बात सुल्तान अलाउद्दीन से छिपी न रहती थी और कोई साँस भी न ले सकता था। मलिकों, अमीरों गण्यमान्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों और पदाधिकारियों एवं सरकारी कर्मचारियों के घर में जो कोई बात भी होती वह उस तक गुप्तचरों द्वारा तुरन्त पहुँच जाती। जो सूचना उसे मिलती उसे पाकर वह चुप न हो जाता वरन् उसके विषय में पूछताछ आरम्भ कर देता। गुप्तचरों का कार्य इस सीमा तक पहुंच गया था कि मलिकों को हज़ार-सुतून (राज भवन) के भीतर भी किसी बात के कहने का साहस न होता था। यदि वे कोई बात करते तो संकेत द्वारा करते। अपने घरों में रात दिन गुप्तचरों के भय से काँपा करते। वे कोई बात या कार्य ऐसा न करते जिससे दण्ड तथा सज़ा का भय होता। बाज़ार के समस्त समाचार क्रय विक्रय का हाल तथा अन्य बातें सुल्तान तक गुप्तचरों द्वारा पहुँचती रहती थीं और उचित प्रबन्ध होता रहता था।

विद्रोह रोकने का तीसरा कारण दूर करने के लिये मदिरापान तथा शराब बेचने की मनाही कर दी गई। यहाँ तक कि अन्त में कच्ची शराब, ताड़ी, भाँग तथा जुए का भी अन्त कर दिया गया, शराब व ताड़ी की मनाही पर विशेष बल दिया जाने लगा। जगह जगह पर क़ैद-खाने तथा कुयें बनवाये गये। मदिरापान करने वालों, जुआरियों तथा शराब व ताड़ी बनाने वालों को शहर के बाहर निकलवा दिया गया और भिन्न-भिन्न स्थानों पर भेज दिया गया। उनसे जो अत्यधिक कर प्राप्त होता था, उसे दफ़्तरों से निकलवा दिया गया।

(२८५) सर्व प्रथम सुल्तान ने आदेश दिया कि उसकी महफ़िलों की सुराहियों, बोतलों तथा चाँदी और सोने के अन्य बर्तनों एवं शराब पीने के शीशे के बर्तनों को तुड़वा डाला जाय। बदायूँ दरवाज़े के सामने टूटे हुये टुकड़े ढेर कर दिये गये। सुल्तान की महफ़िल में भी पी जाने वाली शराब के बर्तन तथा मटके बदायूँ दरवाज़े के सामने लाये गये और उन्हें ज़मीन पर लुढ़का दिया गया। ज़मीन पर इतनी शराब फेंक दी गई कि वर्षाऋतु के समान कीचड़ हो गयी। सुल्तान अलाउद्दीन ने मदिरापान की महफिलें बिलकुल त्याग दीं। मलिकों को आदेश दिया गया कि वे हाथियों पर बैठकर देहली दरवाज़े तक गलियों, मुहल्लों, बाज़ारों तथा सरायों में यह सूचना करादें कि न तो कोई मदिरापान करे और न शराब बेचे। कोई शराब के निकट भी न जाय। जिन लोगों को कुछ लज्जा तथा अपने सम्मान का ख़्याल था उन्होंने

पहिली ही सूचना पर मदिरापान त्याग दिया। निर्लज्जों, व्यभिचारियों, दुष्टों, दुराचारियों तथा भोगियों एवं विलासियों ने अपने अपने घरों मे भट्टियाँ बनवालीं और शकर से शराब खींचनी आरम्भ कर दी। इस प्रकार वे शराब खींचते, पीते और चोरा चोरी बड़े मूल्य पर बेचते थे। ऊपर से कस्तूरी मल देते थे। बोझों, घास और लकड़ी के गट्ठों में छिपाकर किसी न किसी बहाने तथा उपाय से चोरा चोरी शहर में शराब ले जाते थे। गुप्तचर बड़ी पूछताछ और खोज किया करते थे। नक़ीब दरवाज़ों के भीतर तथा दरवाज़ों के बरीद (संदेश वाहक) बड़ी पूछताछ किया करते थे। शराब तथा शराब के प्रेमियों को गिरफ़्तार करके महल के सामने उपस्थित करते। उनके लिये आदेश था कि मदिरा को गज-गृह में भेज दिया जाय जिससे वह हाथियों को पिला दी जाय। जिन लोगों ने शराब बेची हो या जो शराब शहर में लाये हों या जिन्होंने शराब पी हो, इन तीनों प्रकार के लोगों को पिटवाया जाय। उन्हें क़ैद करके कुछ दिनों तक बन्दी गृहों मे रक्खा जाता था। जब लोग बहुत बढ़ गये तो बदायूँ दरवाज़े के सामने जहाँ से लोग बराबर आया जाया करते थे, क़ैदियों के लिये कुँये खुदवाये गये। शराब पीने वालों और बेचने वालों को उन कुँओं में डाल दिया जाता था।

(२८६) कुछ तो कुँओं मे स्थान न होने के कारण तथा कष्ट से कुँयें ही में मर जाते थे। कुछ लोग जो थोड़े समय उपरान्त बाहर लाये जाते उनके आधे प्राण निकल चुके होते थे। बहुत समय तक वे दवा करते तब कहीं जाकर उनमें शक्ति आती। क़ैद के कुँओं के भय से बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने मदिरापान त्याग दी। जो लोग किसी प्रकार शराब पीने से न रुक सकते थे वे यमुना पार करके दस बारह कोस दूर जाकर मदिरापान करते, किन्तु ग़यासपुर, इन्द्रपत, किलोखड़ी तथा चार पाँच कोस तक के क़स्बों में कोई मदिरापान नहीं कर सकता था और न शराब बेच सकता था।

कुछ मदिरा के मतवाले अलबत्ता अपने घरों ही में मदिरापान करते, शराब बनाते और बेचते थे। वे अनादृत तथा अपमानित किये जाते और क़ैद के कुँओं में डाल दिये जाते। जब मदिरा की मनाही से लोगों को बड़ा कष्ट होने लगा तो सुल्तान अलाउद्दीन ने आदेश दिया कि यदि कोई अपने घर में गुप्त रूप से भट्टी से शराब निकाले, अपना घर बन्द करके मदिरापान करे और किसी प्रकार की महफ़िल तथा सभा न करे और शराब न बेचे तो गुप्तचर उसे कोई कष्ट न पहुँचायें और उसके घर में घुसकर उसे गिरफ़्तार न करें। जिस तिथि से शहर में शराब व ताड़ी की मनाही करदी गई उस तिथि से विद्रोह की वार्त्ता समाप्त हो गई और विद्रोह का भय न रहा।

सुल्तान अलाउद्दीन ने विद्रोह के कारणों के समूलोच्छेदन के लिये चौथा आदेश यह दिया कि मलिक, अमीर, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्ति एक दूसरे के घरों पर न जायं, दावतें न करे और एक स्थान पर एकत्रित न हों। जब तक राज सिंहासन के सम्मुख निवेदन न करलें तथा आज्ञा न प्राप्त कर लें, एक दूसरे के यहाँ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित न करें। अपने घरों में अन्य लोगों को आने जाने की आज्ञा न दें। इस आदेश का भी इस कठोरता से पालन हुआ कि कोई अन्य मलिकों तथा अमीरों के घर न जा सकता था। दावतें तथा प्रीतिभोज जिनके कारण अत्यधिक लोग एक स्थान पर एकत्रित होते हैं बन्द हो गये। समस्त अमीर तथा मलिक गुप्तचरों के भय से बड़े सावधान रहने लगे।

(२८७) किसी स्थान पर एकत्रित न होते और न कोई महफ़िल करते। न तो अधिक बात करते और न सुनते। विद्रोह, उपद्रव, षड्यन्त्र तथा विरोध की बातें अपने निकट न होने देते। यदि किसी स्थान पर जाते तो किसी को इतना साहस न होता था कि किसी से कोई बात कह या सुन सकता या कुछ लोग एक स्थान पर क्षण भर के लिए बैठ सकते और अपने

दुःख तथा कष्टों का रोना रो सकते। मलिक एक दूसरे से संकेत द्वारा वार्त्ता किया करते थे। इस मनाही के कारण सुल्तान अलाउद्दीन को किसी षड्यंत्र अथवा विरोध की सूचना न मिल सकी और कोई अशान्ति न हुई।

उपर्युक्त आदेशों के लागू कर देने के उपरान्त सुल्तान ने बुद्धिमानों को उन अधिनियमों तथा क़ानूनों के तैयार करने के विषय में आज्ञा दी जिनके द्वारा हिन्दुओं को दबाया जा सके और धन सम्पत्ति, जो कि विद्रोह तथा उपद्रव की जड़ है, उनके घरों में शेष न रहने पाये। खूत तथा बलाहर, खिराज (भूमि कर) अदा करने में एक नियम का पालन करें और निर्बल लोगों को धन-धान्य लोगों के स्थान पर ख़िराज न देना पड़े। हिन्दुओं के पास इतना शेष न रह जाय कि वे घोड़ों पर सवार हो सकें, हथियार लगा सकें, अच्छे वस्त्र पहन सकें तथा निश्चिन्त होकर आराम से जीवन व्यतीत कर सकें।

उपर्युक्त कार्य के लिये, जो कि राज्य व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों में सर्व श्रेष्ठ है, दो अधिनियम बनाये गये।

प्रथम जो लोग कृषि करते थे उन्हें आदेश दिया गया कि वे अपनी भूमि का, ठीक-ठीक पैमायश द्वारा प्रति बिस्वा पैदावार के अनुसार कर अदा करें। पैदावार का आधा बिना किसी कमी के दे दिया करें। इसमें खूतों और बलाहरों किसी के लिये कोई अन्तर नहीं। खूतों के पास खूती का हक़ (पारिश्रमिक) भी न रहने पावे।

दूसरे यह कि भैंस बकरी या जो कोई भी दूध देने वाला जानवर हो उसकी चराई वसूल की जाय। चराई निश्चित कर दी गई। प्रत्येक घर के स्वामी से घर का कर वसूल किया जाय। ख़िराज वसूल करने में कोई कमी बेशी तथा अनुचित बात न की जाय। अधिकार सम्पन्न लोगों का बोझ बलहीनों पर न पड़ने पाये। अधिकार सम्पन्न तथा बलहीन खिराज के विषय में एक ही आदेश का पालन करें। इस कार्य में जो आमिल, नवीसंदे (मुन्शी) मुतसर्रिफ़ तथा कारकुन घूस लेते एवं धन अपहरण करते थे, पदच्युत कर दिये गये।[1]

(२८८) उस समय शरफ़क़ाई नायब वज़ीर ममालिक था। वह सुलेख तथा नवीसिन्दिगी में पूरे राज्य में अद्वितीय था। सूझ बूझ बुद्धिमत्ता रचना तथा वार्त्ता में अपने काल के सभी मनुष्यों से बढ़ चढ़कर था। उसके कुछ वर्षों के प्रयत्न तथा प्रयास से समस्त शहर के निकट के देहातों क़स्बों, विलायतों, दुआबा के बीच के सभी स्थानों में बयाना से झायन, पालम से दीपालपुर तथा लाहौर से सामाने और सुनाम की सभी विलायतों रेवाड़ी से नागौर कड़े से कानूदी और अमरोहे से अफ़ग़ानपुर, बदायूं खरक कोयला और समस्त कटिहर में ख़िराज वसूल करने के लिये एक नियम से नाप कराई गई और प्रति बिस्वा पैदावार के अनुसार कर वसूल

१. उसने विलायतों में कुछ नियम लागू किये जिनसे शक्तिशाली तथा बलहीन प्रजा में कोई अन्तर न रहे, और मुक़द्दमों तथा चौधरियों का ग़रीब प्रजा पर कोई अधिकार न रहने पाये। उसने आदेश दिया कि (भूमि) की नाप के अनुसार आधा करके रूप में बिना किसी कमी के वसूल कर लिया जाय। मुक़द्दम चौधरी तथा समस्त प्रजा को बराबर समझा जाय। शक्तिशाली लोगों का बोझ बलहीनों पर न पड़ने पाये। मुकद्दम जो कुछ भी मुक़द्दमी का पारिश्रमिक वसूल करें उसे खज़ाने में दाखिल करदें। मुक़द्दम स्वयं तथा समस्त प्रजा के पास खेती बाड़ी के लिये चार बैलों से अधिक और दो भैंस तथा दो गायों और बारह बकरियों से अधिक न रहने चाहिये। चराई का कर भी गाय भैंस तथा बकरियों के अनुसार लिया जाय। आमिल तथा मुन्शी इतनी सावधानी से कार्य करें कि एक जीतल का भी अपहरण न हो सके। यदि अपने पारिश्रमिक के अतिरिक्त कुछ भी वसूल कर लेते तो पटवारी के कागजों का निरीक्षण होता। जिस किसी के नाम कोई धन निकलता, वह उसी समय बड़ी कठोरता से वसूल कर लिया जाता। (तारीखे फ़रिश्ता पृ० १०६. तबक़ाते अकबरी पृ० १५३)

किया गया। सभी गाँवों से करही[1] तथा चराई वसूल होने लगी। इस कार्य को इतने सुव्यवस्थित ढंग से किया कि चौधरियों, खूतों और मुक़द्दमों में विरोध, विद्रोह, घोड़े पर सवार होना, हथियार लगाना, अच्छे वस्त्र पहनना तथा पान खाना पूर्णतया बन्द हो गया। खिराज अदा करने के विषय में सभी एक आदेश का पालन करते थे। वे इतने आज्ञाकारी हो गये कि दीवान का एक सरहंग (चपरासी) कस्बों के बीसियों, खूतों, मुक़द्दमों तथा चौधरियों को एक रस्सी में बाँधकर खिराज अदा करने के लिये मारता पीटता था। हिन्दुओं के लिये सिर उठाना संभव न था। हिन्दुओं के घरों में सोने चाँदी, तनके और जीतल तथा धन सम्पत्ति का जिसके कारण लोग षड्यन्त्र और विद्रोह करते हैं, चिह्न भी न रह गया था। दरिद्रता के कारण खूतों तथा मुक़द्दमों की स्त्रियाँ मुसलमानों के घर जा जाकर काम करने लगी और मजदूरी पाने लगी।

इसी शरफ़ क़ाई नायब वज़ीर ने सरकारी कर तथा सरकारी रुपये की मुशरिफ़ों आमिलों, दफ़्तरों के पदाधिकारियों, गुमाश्तों और कर वसूल करने वालों से इस प्रकार पूछताछ करनी तथा देखभाल करनी आरम्भ करदी कि यदि किसी भी पटवारी की बही से एक जीतल भी उसके जिम्मे निकलता तो उसे कठोर दण्ड दिये जाते और उसे बन्दी-गृह में डाल दिया जाता।

(२८९) यह संभव न था कि कोई भी एक तनके का भी अपहरण कर सके; कोई किसी हिन्दू अथवा मुसलमान से घूँस ले सके। आमिलों मुतसर्रिफ़ों तथा पदाधिकारियों को इस प्रकार दरिद्र एवं विवश कर दिया था कि मुतसर्रिफ़ों तथा कर्मचारियों को हजार पाँच सौ तनकों के कारण वर्षों तक बन्दीगृह में रक्खा जाता। राजकीय सेवा, तसर्रुफ तथा पदाधिकारी होना लोग बुख़ार से भी अधिक बुरी समझने लगे थे। नवीसिन्दगी बहुत बड़ा दोष समझा जाता था। नवीसिन्दे को लोग अपनी पुत्री विवाह में न देते थे। तसर्रुफ़ का कार्य वे लोग स्वीकार करते जो कि अपने प्राणों से हाथ धो लेते थे। अधिकतर मुतसर्रिफ तथा आमिल शिक़ में क़ैद रहते और दण्ड भोगा करते।

सुल्तान अलाउद्दीन ऐसा बादशाह था जिसे किसी विद्या की जानकारी न थी। वह कभी आलिमों के साथ भी उठता बैठता न था। जब वह सिंहासनारूढ़ हुआ तो उसके हृदय में यह बैठ गया कि राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध एवं शरीअत के आदेश और बातें एक दूसरे से बिलकुल विभिन्न हैं। बादशाही की बातें बादशाह से सम्बन्धित हैं और शरीअत के आदेश क़ाजिओं तथा मुफ़्तियों के सिपुर्द हैं। उपर्युक्त विश्वास के अनुसार राज्य व्यवस्था में वह जो कुछ उचित समझता, चाहे वह शरा के अनुसार हो चाहे शरा के विरुद्ध, कर डालता था। राज्य व्यवस्था के विषय में किसी मसले अथवा रवायत के विषय में जानकारी न प्राप्त करता।

बुद्धिमान लोग उसके पास बहुत कम आने जाते थे। केवल क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन बयाना, मौलाना जहीर लंग तथा मौलाना मशीद कुहरामी दस्तरख़ान पर बैठने के लिये नियुक्त थे। वे अमीरों के साथ बाहर दस्तरख्वान पर बैठा करते थे। सुल्तान अलाउद्दीन के सम्मुख केवल क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन बयाना आता जाता था। वह अमीरों के साथ भी और सुल्तान के साथ भी एकान्त में उठता बैठता रहता था।

(२९०) उन्हीं दिनों जबकि ख़िराज तथा कर के वसूल करने में बड़ी कठोरता दिखाई जा रही थी, सुल्तान अलाउद्दीन ने क़ाज़ी मुग़ीस से कहा कि, "मैं आज तुझसे कुछ मसले पूछूँगा। जो कुछ सच हो मुझ से बयान कर।" क़ाज़ी मुग़ीस ने सुल्तान अलाउद्दीन को उत्तर दिया कि,

---

१. संभव है कि यह घरही अथवा घर का कर हो।

"जान पड़ता है कि मेरी मृत्यु का समय आ गया।" सुल्तान अलाउद्दीन ने कहा कि, "तूने यह किस प्रकार समझा ?" क़ाज़ी मुग़ीस ने कहा कि "अन्नदाता मुझसे दीनी मसले पूछेंगे और मै सच सच उत्तर दूँगा। अन्नदाता क्रोधित होकर मेरी हत्या करा देंगे।" सुल्तान अलाउद्दीन ने कहा कि, "मै तेरी हत्या न कराऊँगा। तुझसे जो कुछ पूछूँ मेरे सम्मुख उसके विषय में सच सच कह।" क़ाज़ी मुग़ीस ने कहा कि, "जो कुछ भी अन्नदाता पूछेंगे, उसके विषय में मैंने जो कुछ भी किताबों में पढ़ा है, बता दूँगा।"

सुल्तान अलाउद्दीन ने क़ाजी मुग़ीस से पहला मसला यह पूछा कि, "हिन्दू खिराज गुज़ार तथा खिराज़ देह (कर अदा करने वाले) के विषय में शरा की क्या आज्ञा है ?" क़ाजी ने उत्तर दिया कि, "हिन्दू खिराज गुज़ार के विषय में शरा की यह आज्ञा है कि जब दीवान का कर वसूल करने वाला उससे चाँदी माँगे तो वह बिना सोचे विचारे और बड़े आदर सम्मान तथा नम्रता से सोना अदा कर दे। यदि मुहसिल (कर वसूल करने वाला) उसके मुँह मे थूकना चाहे तो वह बिना कोई आपत्ति प्रकट किये मुँह खोल दे जिसमें वह उसके मुँह में थूक सके। उस दशा में भी वह मुहसिल (कर वसूल करने वाले) की आज्ञाओं का पालन करता रहे। इस प्रकार अपमानित करने, कठोरता प्रकट करने तथा थूकने का ध्येय यह है कि इससे ज़िम्मी का अत्यधिक आज्ञाकारी होना सिद्ध होता रहे। इस्लाम का सम्मान बढ़ाना आवश्यक है। दीन को अपमानित करना बहुत बुरा है। ख़ुदा उनको अपमानित रखने के विषय में इसी प्रकार कहता है, विशेषकर हिन्दुओं को अपमानित करना दीन के लिये अत्यावश्यक है, कारण कि वे मुस्तफ़ा के दुश्मनों मे सब से बड़े दुश्मन हैं। मुस्तफ़ा अलैहिस्सलाम ने हिन्दुओं के विषय मे यह आदेश दिया है कि उनकी हत्या करा दी जाय। उनकी धन सम्पत्ति लूट ली जाय या उन्हें बन्दी बना लिया जाय। या तो उनसे इस्लाम स्वीकार कराया जाय और या उनकी हत्या करा दी जाय और उनकी धन सम्पत्ति छीन ली जाय।

(२९१) इमामे आज़म[1] के अतिरिक्त, जिनके हम अनुयायी हैं, किसी ने भी हिन्दुओं से जजिया वसूल करने की आज्ञा नहीं दी है। दूसरे मज़हब[2] वालों ने इस प्रकार की कोई रवायत नहीं लिखी है। उनके आलिम हिन्दुओं के विषय में केवल यह आदेश देते हैं कि या तो उनकी हत्या कर दी जाय या उनसे इस्लाम स्वीकार कराया जाय।"

सुल्तान अलाउद्दीन ने क़ाजी मुग़ीस का यह उत्तर सुनकर मुस्कराते हुये कहा कि, "जो कुछ तूने कहा उसके विषय मे मुझे कोई ज्ञान नहीं किन्तु मुझे अनेक सूत्रों से ज्ञात हो चुका है कि खूत तथा मुक़द्दम अच्छे अच्छे घोड़ों पर सवार होते हैं। उत्तम वस्त्र धारण करते हैं। ईरानी धनुष मे बाण चलाते है। एक दूसरे से युद्ध किया करते हैं और शिकार खेला करते हैं। खिराज, जजिया करी और चराई का एक जीतल भी स्वयं नही देते। खूती का पारश्रमिक अलग देहातों से वसूल कर लेते हैं। महफिलें करते हैं, शराब पीते हैं और बहुत से तो बुलाने अथवा न बुलाने पर दीवान में कभी उपस्थित नहीं होते। कर वसूल करने वालों की चिंता नही करते। मुझे इस पर बड़ा गुस्सा तथा क्रोध आया और मैंने सोचा कि मैं दूसरी इक़लीमों तथा प्रदेशों पर अधिकार जमाने के विषय में सोचा करता हूँ किन्तु मेरी इक़लीम के सौ कोस के भीतर भी मेरे आदेशों का यथारूप पालन नहीं होता। मै दूसरी इक़लीमों को किस प्रकार अपना आज्ञाकारी बना सकूँगा। इसी कारण मैंने अधिनियम बनाये और प्रजा को अपना आज्ञाकारी बना लिया। ऐसा किया कि मेरे आदेश

१. इमामे अबूहनीफ़ा।
२. शाफ़ई, मालिकी, हमबली।

में सभी चूहे के बिल में घुस गये। इस समय तू यह कहता है कि शरा के आदेश भी इस विषय में यही हैं कि हिन्दुओं को अधिक से अधिक आज्ञाकारी बनाया जाय।"

इसके पश्चात् सुल्तान ने कहा कि, 'ए मौलाये मुगीस। तू बड़ा बुद्धिमान है किन्तु तुझे कोई अनुभव नहीं। मै पढ़ा लिखा नहीं किन्तु मुझे बड़ा अनुभव प्राप्त है। तू समझ ले कि हिन्दू उस समय तक मुसलमान का आज्ञाकारी नहीं होता जब तक कि वह पूर्णतया ही निर्धन तथा दरिद्र नही हो जाता। मैंने यह आदेश दे दिया है कि प्रजा के पास केवल इतना ही धन रहने दिया जाय जिससे वह प्रत्येक वर्ष कृषि तथा दूध और मट्ठे के लिये पर्याप्त हो सके और वे धन संपत्ति एकत्रित न कर पायें।"

(२९२) सुल्तान अलाउद्दीन ने क़ाजी मुगीस से दूसरा मसला यह पूछा कि, "शरीअत मे कारकुनों की चोरी रिश्वत तथा हिसाब किताब रखने वालों के मूल में से अपहरण करने के विषय मे शरा की क्या आज्ञा है।" क़ाज़ी ने उत्तर दिया कि, "इस विषय में कही कुछ भी नही लिखा है और मैंने किसी किताब मे यह नही पढ़ा कि यदि कर्मचारियों के पास उनकी जीविकोपार्जन के अनुसार धन न हो और वे बैतुलमाल से जहाँ प्रजा का खिराज एकत्रित होता है, चुरालें, धूँस लें या माल अथवा खिराज कम कर दें तो उन्हें क्या दण्ड दिया जाय। शासक जिस प्रकार उचित समझे जुर्माने कैद तथा अन्य प्रकार के दण्ड प्रदान कर सकता है किन्तु ख़जाने की चोरी के कारण हाथ काटने की आज्ञा नहीं दी गई हैं।" सुल्तान अलाउद्दीन ने उत्तर दिया कि, "मैंने दीवान के अधिकारियों को आदेश दे दिया है कि जो कुछ भी कारकुनों, मुतसर्रिफ़ों तथा आमिलों के ऊपर वाजिब हो उसे मारपीट, कड़े दण्ड तथा क़ैद के द्वारा वसूल कर लिया जाय। इस विषय में अधिक प्रयास करने पर अब सुना जाता है कि रिश्वतें कम हो चुकी है, किन्तु मैंने यह भी आदेश दे दिया है कि मुतसर्रिफ़ों तथा पदाधिकारियों का वेतन इतना निश्चित होना चाहिये कि वे आदर तथा सम्मान से अपना जीवन व्यतीत कर सकें। यदि इस पर भी वे चोरी करें और मूलधन में अपहरण करें तो उन्हें कड़े दण्ड देकर वह उनसे वसूल कर लिया जाय। तू स्वयं देख रहा हैं कि शिकों में मुतसर्रिफ़ों तथा आमिलों पर क्या बीत रही है।"

सुल्तान अलाउद्दीन ने काजी मुग़ीस से तीसरा मसला यह पूछा कि, "मैने उस समय जब कि मै मलिक था, जो धन सम्पत्ति इतने रक्त पात के उपरान्त देवगीर से प्राप्त की थी वह मेरी है या मुसलमानों के बैतुलमाल की।" क़ाजी मुग़ीस ने उत्तर दिया कि, "मेरे लिए राज सिंहासन के सम्मुख सत्य बोलने के अतिरिक्त अन्य उपाय नहीं। जो धन सम्पत्ति अन्नदाता देवगीर से लाये है वह सब इस्लामी सेना के परिश्रम से प्राप्त हुई है। जो धन सम्पत्ति इस्लामी लश्कर के बल से प्राप्त हो, वह मुसलमानों के बैतुलमाल का हक़ है। यदि अन्नदाता कहीं से अकेले कुछ धन सम्पत्ति प्राप्त करें तो वह शरा के नियम से अन्नदाता की ही होगी और वह अन्नदाता के लिए शरा के अनुसार हलाल होगी।"

(२९३) सुल्तान अलाउद्दीन क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन से इस पर बड़ा रुष्ट हुआ और उससे कहा कि "तू क्या बकता है? तुझे कुछ पता भी है कि जो धन सम्पत्ति मैंने अपने प्राणों पर खेल कर तथा अपने कर्मचारियों को भय में डालकर अपनी मलिकी के समय उन हिन्दुओं से प्राप्त की है, जिनके विषय में किसी को देहली में कोई जानकारी भी न थी और जिसे मैंने बादशाह के ख़ज़ाने में भी न भेजा और जो मैंने स्वयं खर्च करनी आरम्भ करदी, वह किस प्रकार बैतुलमाल की हो सकती है?" क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन ने उत्तर दिया कि "अन्नदाता यदि मुझसे शरीअत का मसला पूछते हैं और मैं उसका उत्तर वही नहीं देता जो कि मैं पुस्तकों मे पढ़ चुका हूं और अन्नदाता मेरी परीक्षा के लिये वही प्रश्न किसी अन्य आलिम से करते

हैं और वह मेरे उस कथन के विरुद्ध होता है जो कि मैं बादशाह को खुश करने के लिए करता हूं, तो फिर अन्नदाता मेरे ऊपर किस प्रकार विश्वास कर सकेंगे और मुझसे शरा के आदेशों के विषय में किस प्रकार कोई प्रश्न कर सकेंगे !"

सुल्तान अलाउद्दीन ने क़ाजी मुगीस से चौथा मसला यह पूछा कि मेरा तथा मेरे पुत्रों का बैतुलमाल में क्या हक है ! क़ाजी मुग़ीस ने उत्तर दिया कि, 'मेरी मृत्यु का समय आ गया।' सुल्तान अलाउद्दीन ने कहा कि तेरी मृत्यु का समय किस प्रकार आ गया ?" क़ाजी मुगीस ने उत्तर दिया कि, "अन्नदाता ने मुझ से जो यह मसला पूछा है तो मैं यदि इसका उत्तर सच सच देता हूँ तो अन्नदाता मुझ से रुष्ठ हो जायेंगे और मेरी हत्या करा देंगे। यदि मैं झूठ बोलता हूं तो कल क़यामत में नरक में डाला जाऊँगा।" सुल्तान अलाउद्दीन ने कहा कि, "मुझे शरा के आदेश बता। मैं तेरी हत्या न कराऊँगा।" क़ाजी मुगीस ने उत्तर दिया कि, 'यदि अन्नदाता खुलफ़ाये राशेदीन[1] का अनुसरण करते हैं और सर्वोच्च श्रेणी प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, तो अन्नदाता उतना ही ले सकते हैं जितना कि जिहाद के दूसरे सैनिकों के लिये अन्नदाता ने निश्चित किया है अर्थात् २३४ तनके अन्नदाता को अपने तथा अपनी स्त्रियों के खर्च के लिये लेना चाहिये।'

(२९४) 'यदि अन्नदाता मध्य का मार्ग ग्रहण करें और यह समझें कि जितना सभी सैनिक लेते है उतना वह भी लेगा तो उलिल अमरी का सम्मान नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा, तो अन्नदाता को भी उतना ही अपने तथा अपनी स्त्रियों के लिये लेना चाहिये जितना कि अन्य प्रतिष्ठित अमीरों अर्थात् मलिक क़ीरान, मलिक क़ीरबेग, मलिक नायब वकीलदर तथा मलिक खास हाजिब को प्रदान किया गया है। यदि अन्नदाता उलमाये दुनिया की आज्ञानुसार बैतुलमाल से अपने तथा अपनी स्त्रियों के खर्च के लिये धन सम्पत्ति लेते हैं तो अन्नदाता को यह धन सम्पत्ति दूसरों की अपेक्षा अधिक से अधिक इतनी लेनी चाहिये जिससे उलिल अमरी का वैभव नष्ट न हो और अन्नदाता दूसरों से बढ़ चढ़कर दिखाई पड़ें। इन तीनों नियमों के अतिरिक्त जो कि मैंने अन्नदाता के सम्मुख बयान किये है, यदि किसी अन्य नियम पर कार्य करते है और बैतुलमाल से लाखों और करोड़ों का धन लेते हैं और अपनी स्त्रियों को सोने तथा जवाहरात के उपहार देते है, तो इसके लिये क़यामत में पूछताछ की जायगी।"

सुल्तान अलाउद्दीन बड़ा क्रोधित हुआ और उसने काजी मुगीस से कहा कि, "मेरी तलवार से नहीं डरता और कहता है कि मेरे अन्तःपुर में जो धन सम्पत्ति व्यय होती है, वह शरा के विरुद्ध है।" काजी मुगीस ने उत्तर दिया कि, "मै अन्नदाता की तलवार से बहुत डरता हूँ और अपनी पगड़ी को अपना कफन समझता हूँ, किन्तु अन्नदाता मुझ से शरा के मसले पूछते हैं तो मुझे जैसा ज्ञात है मै वही उत्तर दूँगा। यदि अन्नदाता मुझ से राजनीति के विषय में प्रश्न करें तो मै उत्तर दूँगा कि जो कुछ अन्तःपुर में खर्च होता है, उससे हज़ार गुना अधिक खर्च होना चाहिये, कारण कि इससे लोगों की दृष्टि में बादशाह का सम्मान बहुत बढ़ जाता है। बादशाह के वैभव को उन्नति देना राजनीति के लिये परमावश्यक है।"

(२९५) उपर्युक्त मसलों की पूछताछ के पश्चात् सुल्तान अलाउद्दीन ने क़ाजी मुग़ीस से कहा कि, "तू इस प्रकार जो मेरे कार्यों को शरा के विरुद्ध बताता है, तो यह बता कि मैंने उन सवारों के विषय में जो कि अर्ज़ के लिये नही आते हैं उनसे तीन वर्ष का वेतन वसूल कर लेने की आज्ञा दे रक्खी है, शराब पीने वालों तथा शराब बेचने वालों को बन्दियों के कुँएं मे डलवा देता हूँ और जो स्त्री रखते हुये भी किसी की स्त्री भगा ले जाता है उसे मैं कड़े दण्ड

१. मुहम्मद साहब के बाद के प्रथम चार खलीफ़ा।

देता हूँ और स्त्री छीन लेता हूँ, विद्रोहियों को जिस प्रकार अपमानित करता हूँ तथा दण्ड देता हूँ, उनके स्त्री और बालकों का विनाश कर देता हूँ, राज्य कर को बड़ी कठोरता और क्रूरता से वसूल करता हूँ, यहाँ तक कि एक जीतल भी शेष नही रहता, लोगों को क़ैद में और शिकन्जे मे रखता हूँ, माल के क़दियों को कठोर दण्ड देता हूँ, तो तू यह कहेगा कि यह सब शरा के विरुद्ध है"। क़ाजी मुगीसुद्दीन सभा से उठ गया, कुछ पीछे हटा और अपना शीश धरती पर रखकर उसने उच्च स्वर में कहा कि, "दुनिया का बादशाह चाहे मुझ भिखारी को जीवित रक्खे चाहे मेरे टुकड़े टुकड़े कर देने की आज्ञा कर दे किन्तु मैं यही कहूँगा कि यह सब शरा के विरुद्ध है। मुहम्मद अलैहिस्सलाम की हदीसों तथा आलिमों की रवायतों में किसी स्थान पर यह नही लिखा है कि अपनी आज्ञाओं का पालन कराने के लिये उलिल अम्र का जो जी चाहे वह करे।"

सुल्तान अलाउद्दीन ने उपर्युक्त बात सुनकर कुछ न कहा। जूतियाँ पहन कर अन्तःपुर के अन्दर चला गया। काजी मुगीस भी अपने घर चला गया। दूसरे दिन अपने घर वालों से अन्तिम विदाई ली। दान-पुण्य किया। स्नान किया और मृत्यु के लिये तैयार होकर राज-भवन की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान के सामने उपस्थित हुआ। सुल्तान अलाउद्दीन ने उसे अपने सम्मुख बुलवाया। उसका आदर सम्मान किया। जो वस्त्र पहने था उसी को १००० तनके के साथ दे दिया और कहा कि, "क़ाजीमुगीस, मैंने कोई किताब नहीं पढ़ी और न पढ़ा लिखा हूँ किन्तु कई पुश्त से मुसलमान हूँ तथा मुसलमान का पुत्र हूँ। विद्रोह को रोकने के लिये (कारण कि विद्रोह में हजारों आदमी मारे जाते हैं), जो कुछ भी राज्य के हित में अच्छा समझता हूँ वही आदेश लोगों को देता हूं। लोग विरोध तथा षड्यन्त्र करते हैं, मेरी आज्ञाओं का पालन नही करते, तो मुझे इस बात की आवश्यकता होती है कि उनके विषय में कड़े से कड़े दण्ड दिये जाने का आदेश दूँ, जिससे वे लोग आज्ञाकारी बन जायँ।"

(२९६) "मै नही समझता कि यह आज्ञायें शरा के अनुसार हैं या शरा के विरुद्ध। मै जो कुछ राज्य के लिये उचित समझता हुँ तथा जिन बातों में राज्य का भला देखता हूँ, उन्ही को आज्ञा देता हुँ। मुझे नही ज्ञात कि भगवान् कल कयामत में मुझे क्या दण्ड देगा किन्तु ऐ मौलानाये मुगीस! मैं एक बात की प्रार्थना भगवान् से किया करता हूँ! वह यह है कि ऐ भगवान्! तू यह जानता है कि मेरे राज्य में यदि कोई किसी स्त्री से व्यभिचार करता है, तो इससे मेरे राज्य को कोई क्षति नहीं पहुँचती, यदि कोई मदिरापान करले तो उससे भी कोई हानि मुझे नही पहुँचती, यदि कोई चोरी करले तो भी वह मेरे बाप की दी हुई धन सम्पत्ति मुझ से नही छीनता, जिससे मुझे कोई दुःख हो, यदि कोई धन प्राप्त कर लेता है और नामज़दी[1] नही करता तो नामज़दी के समय १०–२० मनुष्यों के उपस्थित न होने से कार्य नहीं रुक सकता। इन चारों समूहों के विषय में मैं पैग़म्बरों के आदेशों का पालन करता, किन्तु इस युग में ऐसे आदमी पैदा हो गये हैं जो कि एक से लाख तक वरन् पाँच सौ लाख तक अपितु सो हज़ार लाख तक बातें बनाने के अतिरिक्त और छल कपट के अलावा इस लोक तथा परलोक में किसी कार्य से सम्बन्धित नही रहते।"

"मैं जाहिल हूँ तथा पढ़ना लिखना नहीं जानता। अलहमदो, क़ुलहो अल्लाह[2],

---

१. सेना का एकत्रीकरण तथा निरीक्षण।

२. क़ुरान के सूरे जो नमाज़ तथा अन्य अवसरों पर पढ़े जाते हैं।

दुआ-ए-क़ुनूत,[1] तहैयात[2] के अतिरिक्त कुछ नहीं पढ़ सकता। मैंने अपने राज्य में आदेश दे दिया है कि यदि कोई विवाहित व्यक्ति किसी अन्य की स्त्री से व्यभिचार करे तो उसे खस्सी कर दिया जाय। इतने कठोर तथा अत्याचार पूर्ण आदेश पर भी ऐसे लोग दरबार में पेश होते रहते हैं जो कि दूसरों की स्त्रियों से व्यभिचार करते हैं। जो लोग वेतन पाते हैं और नामज़दी के समय उपस्थित नहीं होते, उनसे तीन वर्ष का वेतन ले लिया जाता है किन्तु इस पर भी कोई ऐसी नामज़दी नहीं व्यतीत होती कि सौ तथा दो सौ आदमियों का वेतन ज़ब्त न किया जाय। वेतन ले लेते हैं और फिर भी उपस्थित नहीं होते, अतः वे बन्दी गृह में डाल दिये जाते हैं। नवीसिन्दों तथा आमिलों में से लगभग दस हज़ार नवीसिन्दों को भिखारी बना दिया। उनके शरीर में कीड़े डलवा दिये किन्तु इस पर भी यह समूह चोरी से बाज नहीं आता।"

(२९७) "ऐसा ज्ञात होता है कि नवीसिन्दगी के साथ चोरी भी माँ के पेट से लेकर पैदा हुये हैं। शराब पीने तथा बेचने के अपराध में इतने व्यक्तियों की बन्दियों के कुँओं में हत्या करा दी और अभी तक हत्या हो रही है किन्तु फिर भी लोग शराब पीते तथा बेचते हैं। लोग अपने अपराधों को नहीं त्यागते तो मैं किस प्रकार बाज आऊँ।"

मौलाना शम्सुद्दीन के देहली न आने के कारण

जिस वर्ष सुल्तान अलाउद्दीन ने क़ाज़ी मुग़ीस से उपर्युक्त मसले पूछे, संसार का एक अद्वितीय मुहद्दिस[3] मौलाना शम्सुद्दीन तुर्क नामक ४०० हदीस की किताबें लेकर मुल्तान पहुँचा। जब उसने यह सुना कि सुल्तान अलाउद्दीन नमाज़ नहीं पढ़ता और जुमे की नमाज़ में भी अधिकतर अनुपस्थित रहता है तो आगे न बढ़ा और शेखुलइस्लाम सद्रुद्दीन के पुत्र शेख शम्सुद्दीन फ़ज़लुल्लाह का चेला बन गया। वहाँ से उसने एक हदीस की पुस्तक पर टिप्पणी लिखकर जिसमें सुल्तान की अत्यधिक प्रशंसा की गई थी तथा एक फारसी की पुस्तक सुल्तान के पास भेजी। उसने उस पुस्तक में लिखा था कि "मैं मिश्र के बादशाह तथा देहली के निवासियों की सेवा करने के लिये आया था। मेरा विचार था कि मैं खुदा और मुस्तफ़ा के लिये हदीस के ज्ञान का देहली में प्रचार करूँ और मुसलमानों को अधर्मी विद्वानों की मनगढ़न्त बातों पर आचरण करने से रोक सकूँ किन्तु जब मैंने यह सुना कि बादशाह नमाज़ नहीं पढ़ता, जुमे में उपस्थित नहीं होता तो मैं मुल्तान ही से लौटा जाता हूँ। मैंने बादशाह के दो तीन ऐसे गुण सुने हैं जो कि धर्मनिष्ठ बादशाहों में होने चाहियें। वे गुण जो धर्मनिष्ठ बादशाह में होने चाहियें वे इस युग तथा इस काल के बादशाह में भी पाये जाते हैं। उनमें से एक यह है कि हिन्दुओं को लज्जित, पतित, अपमानित और दरिद्र बना दिया है। मैंने सुना है कि हिन्दुओं की स्त्रियाँ तथा बालक मुसलमानों के द्वार पर भीख माँगा करती हैं। ऐ बादशाहे इस्लाम! तेरी यह धर्मनिष्ठता प्रशंसनीय है। तू मुहम्मद साहब के धर्म की खूब रक्षा कर रहा है। यदि इसी आचरण के कारण तेरे सभी पापों में से जो आकाश से पाताल तक के पापों से भी अधिक हों, चिड़िया के एक पंख के बराबर भी बख्शे जाने से रह जायँ तो कल क़यामत में तू मेरा दामन पकड़ लेना।"

(२९८) "मैंने सुना है कि अनाज तथा अन्य वस्तुयें तूने इतनी सस्ती करदी हैं कि उससे एक सुई के नोक से भी अधिक मूल्य पर कोई कुछ नहीं बेच सकता। इस इतने महान कार्य के लिये जिसमें मानवता को अत्यधिक लाभ होता है, इस्लामी बादशाह बीसियों और तीसियों

---

१. नमाज़ की दुआ।
२. नमाज़ के सलाम।
३. हदीस वेत्ता।

वर्ष तक प्रयत्नशील रहे हैं किन्तु फिर भी यह बात किसी को प्राप्त नहीं हुई परन्तु बादशाहे इस्लाम को इसमें बड़ी सफलता प्राप्त हो गई है। तीसरे यह कि मैंने सुना है कि बादशाह ने सभी नशे की वस्तुओं की मनाही करदी है। दुराचार तथा व्यभिचार दुराचारियों तथा व्यभिचारियों के गले में विष से भी अधिक कड़वा बन गया है! वाह! वाह! क्या कहना! ऐ बादशाह! तुझको इतनी सफलता प्राप्त हुई है। चौथे मैंने यह सुना है कि बाज़ारियों तथा बाजार वालों को जो कि घृणा के पात्र हैं, चूहे के बिल में भगा दिया है। बाज़ारियों के छल कपट, झूठ और विश्वास-घात का पूर्णतया अन्त कर दिया है। इसे भी साधारण बात न समझना चाहिये। तुझे बाजारियों के विषय में जो सफलता प्राप्त हुई है, वह आदम से लेकर इस समय तक किसी बादशाह को प्राप्त न हो सकी। ऐ बादशाह! तू बधाई का पात्र है, कारण कि इन चार कार्यों की वजह से तुझे नबियों के मध्य में स्थान मिलेगा।"

"तेरे विषय में जो सबसे बुरी बात, जिसे न खुदा पसन्द करता है न कोई नबी न वली और न कोई अन्य, वह यह है कि तूने अपने राज्य का न्याय विभाग जो कि धर्म-सम्बन्धी कार्यों मे बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य है और जो किसी ऐसे को प्रदान न होना चाहिये जो कि दुनिया को अपना शत्रु न समझता हो, वह तूने हमीद मुल्तानी बच्चे को जिसके पूर्वज विश्वास-घात के अतिरिक्त किसी अन्य कार्य के लिए प्रसिद्ध नहीं थे, प्रदान कर दिया है। किसी क़ाज़ी के दीन के विषय में कोई सावधानी प्रकट नही करता। तूने शरा की आज्ञाओं का संचालन लालचियों तथा साँसारिक व्यक्तियों को प्रदान कर दिया है। भगवान् के लिए इस कार्य से डर, कारण कि क़यामत में इस अपराध के लिए तुझे ऐसा दण्ड भोगना पड़ेगा कि तू उसे सहन न कर सकेगा। दूसरे मैंने यह सुना है कि तेरे शहर में लोगों ने मुस्तफ़ा की हदीस को त्याग दिया है। वे विद्वानों की बताई हुई रवायत पर आचरण करते हैं।"

(२९९) 'मेरी समझ में यह नही आता कि जिस नगर में हदीस के होते हुए रवायत पर आचरण किया जाता है वह नगर मिट्टी का ढेर क्यों नहीं हो जाता। आकाश से उस नगर पर कष्टों की वर्षा क्यों नहीं होती। तीसरे मैंने यह सुना है कि तेरे शहर में दुष्ट आलिम (भगवान् उनका मुँह काला करे) मस्जिदों मे किताबें खोले हुये बैठे रहते हैं और बुरे-बुरे फ़तवे दिया करते हैं। तावील[1] छल तथा कपट से मुसलमानों के अधिकारों का विनाश कर देते हैं। वादी तथा प्रतिवादी दोनों को डुबा देते हैं और स्वयं भी डूब जाते है किन्तु मैंने यह भी सुना है कि यह दोनों बातें निर्लज्ज तथा बेईमान क़ाजी के कारण होती रहती हैं, जो कि तेरा विश्वास पात्र है। तेरे कानों तक यह बातें नहीं पहुँचती अन्यथा तू कभी मुहम्मद साहब के धर्म में इतना बड़ा अत्याचार न करता।"

मुहद्दिस ने हदीस की वह पुस्तक तथा दूसरी पुस्तक बहाउद्दीन दबीर को भेजी। दुष्ट बहाउद्दीन ने हदीस की पुस्तक सुल्तान अलाउद्दीन की सेवा में पहुँचा दी किन्तु दूसरी पुस्तक न पहुँचाई। क़ाज़ी हमीद मुल्तानी के पक्ष के कारण उसे छुपा लिया। इस इतिहास के सँकलन कर्त्ता ने मलिक क़ीराबेग से सुना है कि सुल्तान अलाउद्दीन को सादमन्तक़ी द्वारा ज्ञात हुआ कि इस प्रकार की एक पुस्तक आई है। उसने वह पुस्तक माँगी और उसकी इच्छा हुई कि बहाउद्दीन तथा उसके पुत्र को इस कारण कि बहाउद्दीन ने वह पुस्तक पेश न की थी, अपने बीच से हटा दे। क्योंकि मौलाना शम्सुद्दीन तुर्क निराश होकर लौट गया, सुल्तान सर्वदा पश्चाताप करता रहा।

---

१. इस प्रकार अर्थ बताना जिससे देखने में किसी आदेश का उल्लंघन भी न हो और उसके द्वारा जिसके लिए अर्थ बताया गया हो, उसे लाभ भी प्राप्त हो जाय।

सुल्तान अलाउद्दीन ने रणथम्भोर से देहली पहुँचकर प्रजा पर बड़ी कठोरता तथा सख़्ती दिखाई। पूछताछ तथा कड़े दंड के द्वार खोल दिये गये। इसके कुछ समय पश्चात् ही उलुग़खाँ बीमार हुआ और शहर (देहली) पहुँचने के पूर्व ही एक मंज़िल पर उसकी मृत्यु हो गई। शाहरे नव में मलिक अइज़्ज़ुद्दीन बुरख़ाँ को मन्त्री नियुक्त किया गया। शाहरे नव में भी देहली के आसपास के स्थानों के समान भूमि की नाप तथा प्रति बिस्वा पैदावार के अनुसार ख़िराज लिया जाने लगा।

चित्तौड़ विजय तथा तरग़ी मुग़ल का आक्रमण

सुल्तान अलाउद्दीन ने पुनः शहर देहली से सेना लेकर चित्तौड़ पर चढ़ाई की। चित्तौड़ को घेर लिया और शीघ्रातिशीघ्र क़िले पर विजय प्राप्त करके शहर लौट आया। सुल्तान के वापस आ जाने पर मुग़लों के आक्रमण का भय पुनः आरम्भ हो गया।

(३००) मुगलों ने मावराउन्नहर में सुना कि सुल्तान अलाउद्दीन सेना लेकर एक दूर के क़िले पर चढ़ाई करने गया है। वह उस क़िले की विजय में लगा हुआ है और देहली ख़ाली है। तरग़ी बारह तुमन सवार लेकर कूच करता हुआ देहली के निकट अचानक पहुँच गया।

जिस वर्ष सुल्तान अलाउद्दीन ने चित्तौड़ की विजय के लिये प्रस्थान किया, उसी वर्ष मलिक फ़ख़रुद्दीन जूना दादबके हज़रत तथा नुसरतख़ाँ के भतीजे और कड़े के मुक़्ता मलिक भज्जू को हिन्दुस्तान के सभी अमीरों तथा सवार और प्यादों की सेना देकर अरंगल की ओर भेजा गया। जब वे अरंगल पहुँचे तो वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो गई। वर्षा-ऋतु के आरम्भ हो जाने से हिन्दुस्तानी सेना को अरंगल में कोई सफलता प्राप्त न हुई। शीत ऋतु के आरम्भ में सेना को बड़ी क्षति पहुँची और माल असबाब नष्ट हो गया। वे पुनः हिन्दुस्तान लौट आये।

जिस वर्ष सुल्तान अलाउद्दीन चित्तौड़ की विजय के उपरान्त देहली लौटा उसी वर्ष उस सेना को जो कि सुल्तान के साथ-साथ वर्षा ऋतु में विजय के लिये गई थी बड़ी क्षति पहुँची। सुल्तान को देहली पहुँचे एक मास भी व्यतीत न हुआ था और सेना का अर्ज़ (निरीक्षण) भी न हो सका था कि मुगलों के आक्रमण की चिन्ता हो गई। दुष्ट तरग़ी ३०–४० हज़ार सवार लेकर धावे मारता हुआ पहुंच गया और यमुना तट पर डेरे डाल दिये। प्रजा का शहर में आना जाना भी रुक गया। उस वर्ष सेना पर यह दुर्घटना पड़ गई कि सुल्तान अलाउद्दीन को चित्तौड़ की विजय से लौटने के उपरान्त इतना समय न मिल सका था कि देहली की सेना के घोड़े तथा अस्त्र सुव्यवस्थित कर सकता। चित्तौड़ की सेना को बड़ी क्षति पहुंची थी। उधर मलिक फ़ख़रुद्दीन जूना दादबक और हिन्दुस्तान के लश्कर को अत्यधिक हानि पहुँची और वे बिना किसी साज़ व सामान के अरंगल से हिन्दुस्तान की अक़्ताओं को लौटे थे। मुग़लों के मार्ग रोक लेने के कारण तथा वहीं डेरे डाल देने की वजह से हिन्दुस्तान के लश्कर का कोई सवार अथवा प्यादा शहर में न पहुँच सकता था।

(३०१) मुल्तान, सामाने तथा दीपालपुर की सेना इतनी सुव्यवस्थित न थी कि मुगलों की सेना का विनाश कर सकती और सुल्तानी लश्कर से सीरी में मिल सकती। हिन्दुस्तान के लश्कर को बुलवाया गया किन्तु मुग़लों के मार्ग रोक देने के कारण वे कोल तथा बरन के आगे न बढ़ सके। मुग़लों ने यमुना से समस्त मार्गों को रोक दिया था। सुल्तान अलाउद्दीन को विवश होकर उन्हीं थोड़े से सवारों को लेकर जो कि शहर देहली में थे, शहर से बाहर निकलना पड़ा। सेना के शिविर सीरी में लगाये गये। मुगलों के अत्यधिक

होने तथा उनके टूट पड़ने के भय से सुल्तान को अपनी सेना के चारों ओर खाई खुदवानी पड़ी। खाई के चारों ओर लोगों ने इस प्रकार लकड़ी की दीवारें खड़ी कर दीं कि एक तरह का लकड़ी का क़िला बन गया। उसने इस प्रकार मुग़लों को एक दम टूट पड़ने से रोक दिया। चारों ओर चौकी पहरे और रक्षा के लिये लोगों ने जागना प्रारम्भ कर दिया। मुग़लों ने अपनी सेना को अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित करके युद्ध की प्रतीक्षा करनी प्रारम्भ कर दी किन्तु रण-क्षेत्र में किसी बड़े युद्ध का अवसर न मिल पाता था। सुल्तान ने प्रत्येक सेना तथा अलंग[1] से पाँच पाँच हाथियों पर हौदे कसवाकर खड़े करवा दिये थे। पैदल सेना रक्षा कर रही थी। मुग़ल चारों ओर से आक्रमण करते और इस बात का प्रयत्न करते कि एक बार सुल्तानी लश्कर पर टूट पड़ें और सेना का विनाश करदें।

मुग़लों के आक्रमण का भय तथा मुग़लों की चिन्ता जितनी उस वर्ष देहली में देखी गई उतनी किसी वर्ष तथा किसी युग में भी न देखी गई। यदि तरग़ी यमुना तट पर एक मास और रुक जाता तो देहली में हाहाकार मच जाता और देहली हाथ से निकल जाती। भय तथा चिन्ता के कारण देहली वालों के लिये बाहर से अन्न जल तथा ईंधन लाना भी असम्भव हो गया था। बंजारों ने ग़ल्ला लाना पूर्णतया बन्दकर दिया था। सभी लोग मुग़लों से बड़े भयभीत थे। मुग़ल सवार सुभानी चौतरे, मोरी, हदही और हौज़े सुल्तानी तक धावे मारते थे।

(३०२) उपर्युक्त स्थानों पर पहुँचकर मदिरापान करते और अनाज तथा अन्य सामग्री सरकारी गोदाम की अपेक्षा सस्ते मूल्य पर बेचते थे। अनाज का इतना कष्ट न था। दोनों ओर की सेनाओं के अग्रिम दल में दो तीन बार मुठभेड़ तथा युद्ध भी हुआ परन्तु किसी को विजय प्राप्त न हुई।

भगवान् की कृपा से तरग़ी ने सुल्तानी लश्कर से युद्ध करने का साहस न किया और आक्रमण न कर सका। निस्सहाय लोगों की प्रार्थना से दो महीने पश्चात् तरग़ी अपनी सेना लेकर लौट गया और लूटता खसोटता अपने राज्य की ओर चल दिया। उस समय इस्लामी सेना को मुग़लों से क्षति न पहुँचना और शहर देहली का सुरक्षित रह जाना बुद्धिमान लोग अपने युग की एक अद्भुत वस्तु समझते थे, कारण कि मुग़लों ने अत्यधिक सेना लेकर आक्रमण किया था। सुल्तानी सेना के पहुँचने के मार्ग रोक दिये थे। साज़ व सामान पर क़ब्ज़ा कर लिया था और बादशाही सेना के पास कुछ न रह गया था। दूसरी सेना भी न आई और मुग़लों को विजय तथा सफलता भी न प्राप्त हो सकी।

क़िलों का निर्माण तथा बाज़ार के भावों पर नियन्त्रण

तरग़ी के आक्रमण के भय के, जो कि एक बहुत बड़ा भय था, अन्त हो जाने के पश्चात् सुल्तान अलाउद्दीन असावधानी की निद्रा से जागा और दूसरे स्थानों पर आक्रमण करना तथा क़िलों का विजय करना रोक दिया। सीरी में एक महल निर्मित कराया और सीरी ही में निवास करना आरम्भ कर दिया। सीरी को राजधानी बनाया और उसे आबाद तथा सुव्यवस्थित किया। देहली के हिसार (चहार दीवारी) का निर्माण कराया और यह आदेश दिया कि मुग़लों के आक्रमण के मार्ग के जितने भी क़िले पुराने हो गये हों, उनको पुनः निर्माण कराया जाय। जिस स्थान पर क़िले की आवश्यकता हो वहाँ नया क़िला बनवाया जाय। मुग़लों के आक्रमण के मार्ग के क़िलों में प्रतिष्ठित तथा कार्यकुशल कोतवाल नियुक्त करके उन्हें आज्ञा दी कि वे अत्यधिक मंजनीक़ तथा अरादे तैयार रक्खे। चतुर मुफ़रिद (सैनिक) नियुक्त करें। हर प्रकार

१. वह दीवार जो अपनी रक्षा के लिये बनाई गई थी।

के अस्त्र-शस्त्र तैयार रक्खें। अनाज तथा चारा पर्याप्त मात्रा में अपने पास एकत्रित रक्खें। सामाने तथा द्यूपालपुर में बहुत बड़ी संख्या में चुनी हुई और कार्यकुशल सेना नियुक्त की जाय। मुग़लों के आक्रमण के मार्ग के अक़्ता अनुभवी अमीरों, वालियों तथा प्रतिष्ठित सेना नायकों को प्रदान किये गये।

(३०३) सुल्तान अलाउद्दीन मुग़लों को रोकने के उपर्युक्त उपायों के उपरान्त अपने परामर्शदाताओं से रात दिन इस विषय पर वाद-विवाद करने लगा और उनसे इस बात पर परामर्श करने लगा कि मुग़लों को क्षीण करने तथा उनके विनाश के लिये क्या करना चाहिये। पर्याप्त वाद-विवाद तथा सोच-विचार के उपरान्त सुल्तान एवं उसके परामर्शदाताओं ने यह निश्चय किया कि बहुत बड़ी संख्या में सेना भरती करनी चाहिये। सभी चुने हुये तथा अनुभवी सैनिकों, धनुर्धारियों, सवारों तथा अस्त्र-शस्त्र एवं यकअस्पा सुव्यवस्थित और तैयार रखने चाहिये। मुग़लों के विनाश का इससे उचित कोई अन्य उपाय नहीं। सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने परामर्श दाताओं से जो कि बड़े बुद्धिमान तथा ज्ञानसम्पन्न थे, परामर्श के उपरान्त यह निश्चय किया कि अत्यधिक चुने हुये योग्य सैनिक, धनुर्धारी तथा सवार उस समय तक तैयार नही हो सकते जब तक कि अत्यधिक धन खर्च न किया जाय। जो कुछ आरम्भ में निश्चय हो गया हो, वही प्रत्येक वर्ष प्रदान न किया जाय। सुल्तान ने कहा कि, "यदि बहुत बड़ी संख्या में सैनिक भरती कर लिये जायँ और प्रत्येक वर्ष उन्हें निश्चित धन प्रदान किया जाय तो यद्यपि मेरे पास बहुत बड़ा खज़ाना है किन्तु वह पाँच छः वर्ष से अधिक नहीं चल सकता। बिना ख़ज़ाने के शासन-प्रबन्ध संभव नहीं। मैं चाहता हूँ कि बहुत बड़ी-संख्या में सेना एकत्रित की जाय। यकअस्पा और चुने हुये धनुर्धारी नियुक्त किये जायँ। अस्त्र-शस्त्र सुव्यवस्थित रक्खे जायें और यह बात वर्षों तक होती रहे। २३४ तनके मुरत्तब को दिये जायें। ७८ तनके दो अस्पा को और दिये जायें और उससे दो घोड़े तथा उसी के अनुसार सामान तैयार रखने की आशा रक्खी जाय। यकअस्पा तथा उसका साज़ो सामान यकअस्पा की योग्यतानुसार माँगा जाय। अतः तुम लोग राय दो कि मैंने सेना की अधिकता तथा उसको सुव्यवस्थित रखने के विषय में जो सोच रक्खा है वह किस प्रकार पूरा हो सकता है।"

(३०४) सुल्तान अलाउद्दीन के दरबार के परामर्शदाताओं ने अत्यधिक सोच विचार करने के उपरान्त तथा एक दूसरे से सलाह करने के पश्चात् सर्व सम्मति से राज-सिंहासन के सम्मुख निवेदन किया कि "बादशाह ने थोड़े वेतन पर अत्यधिक तथा सुव्यवस्थित सेना रखने का जो विचार कर रक्खा है, उसमें उस समय तक सफलता प्राप्त नहीं हो सकती जब तक कि घोड़े, अस्त्र-शस्त्र, अन्य साज़ व सामान, सेना तथा सैनिकों के स्त्री और बालकों के लिये जीवन सामग्री सस्ती न हो जाय, प्रत्येक चीज़ का मूल्य गिर न जाय। यदि बादशाह द्वारा समस्त सामग्री सस्ती हो जाती है तो जैसा कि बादशाह ने सोच रक्खा है थोड़े वेतन में अत्यधिक सेना भरती हो जायगी और सुव्यवस्थित रहेगी। सेना की अधिकता से मुग़लों के आक्रमण का भय समाप्त हो जायगा।"

सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने परामर्शदाताओं, अनुभवी वज़ीरों तथा समय का शीतोष्ण देखे हुये व्यक्तियों से परामर्श किया कि मुझे क्या करना चाहिये, जिससे जीवन सामग्री, हत्या, अत्याचार, निरंकुशता तथा अत्यधिक दण्ड के बिना सस्ती हो जाये। वज़ीरों तथा सुल्तान अलाउद्दीन के परामर्श दाताओं ने निवेदन किया कि, "जिस समय तक अनाज को सस्ता करने के लिये दृढ़ तथा उचित अधिनियम न बनाये जायेंगे, उस समय तक जीवन सामग्री अत्यधिक सस्ती नहीं हो सकती। सर्व प्रथम अनाज को सस्ता करने के लिये, जिससे कि सभी को लाभ होता है, कुछ अधिनियम बनाये गये। उन अधिनियमों के दृढ़ हो जाने से अनाज

सस्ता हो गया और वर्षों तक सस्ता रहा। वे अधिनियम निम्नांकित हैं।

पहला नियमः 'भाव राज्य की ओर से निश्चित किया जाना।' दूसरा नियमः 'सुल्तान की ओर से अत्यधिक मात्रा में अनाज एकत्रित किया जाना।' तीसरा नियमः 'मण्डी में शहनों तथा विश्वासपात्रों को अधिकार सम्पन्न बनाकर नियुक्त किया जाना।' चौथा नियमः 'राज्य के प्रदेशों के बंजारों का रजिस्टर रक्खा जाना तथा उनका शह्न-ए-मण्डी के अधीन बनाया जाना।'

(३०५) पाँचवाँ नियम यह था कि 'दुआबा तथा उसके आसपास के सौ कोस के प्रदेश में इस प्रकार ख़िराज निश्चित किया गया कि प्रजा दस मन से अधिक अनाज एकत्रित न कर सकती थी और ख़िराज वसूल करने में इतनी कठोरता दिखाई जाती थी कि प्रजा को अनाज खलियान ही में बंजारों के हाथ बेचने पर विवश हो जाना पड़ता[1] था।' छठा नियम यह बनाया गया कि 'कारकुनों तथा वुलात[2] से यह लिखवा लिया जाता था कि वे ग़ल्ला खलियान ही मे बंजारों को दिला दिया करेंगे।' अनाज को सस्ता करने का सातवाँ नियम यह था कि 'विश्वासपात्र बरीद, मण्डी में नियुक्त किये गये और शहना तथा बरीद, मण्डी के समस्त समाचार सुल्तान के सम्मुख पेश किया करते थे।' अनाज को सस्ता करने का आठवाँ नियम यह बनाया गया कि 'वर्षा न होने पर बिना लोगों की आवश्यकता के एक दाना अनाज भी मण्डी से न ख़रीदा जा सकता था।' उपर्युक्त आठों नियमों के दृढ़ हो जाने के उपरान्त अलाई राज्य द्वारा अनाज का जो भाव निश्चित हुआ वह वर्षा होने अथवा न होने पर एक पैसा भी निश्चित भाव से न बढ़ा।

भाव निश्चित करने के विषय में पहला नियम इस प्रकार लागू किया गया। गेहूँ ७½ जीतल प्रतिमन, जौ ४ जीतल प्रति मन, धान ५ जीतल प्रतिमन, उर्द ५ जीतल प्रतिमन, चना ५ जीतल प्रतिमन, मौंठ ३ जीतल प्रतिमन। वर्षों तक अनाज इसी भाव पर बिकता रहा। जब तक सुल्तान अलाउद्दीन जीवित रहा तब तक वर्षा होने न होने अर्थात किसी अवस्था में अनाज का भाव एक पैसा भी अधिक न हो सका। मण्डी के भाव का स्थायी रूप में निश्चित हो जाना एक अद्भुत बात थी।

अनाज को स्थायी रूप से सस्ता करने के लिए दूसरी व्यवस्था यह की गई कि मलिक क़ुबूल उलुग़ख़ाँनी को जो कि बड़ा ही योग्य, अनुभवी तथा सुल्तान का विश्वासपात्र था, मण्डी का शहना नियुक्त किया गया। उपर्युक्त मण्डी के शहना को विशाल अक़्ता प्रदान की गई। अत्यधिक सवारों और प्यादों द्वारा उसके अधिकार तथा वैभव को बढ़ा दिया गया। उसके मित्रों में से अनुभवी तथा योग्य लोगों को चुनकर राज्य की ओर से उसका नायब नियुक्त किया गया। प्रतिष्ठित राज्यभक्त बरीद, मण्डी में नियुक्त किये गये।

(३०६) अनाज के सस्तेपन को स्थायी बनाने के लिए तीसरा नियम यह निश्चित किया गया कि सुल्तानी ग़ुदाम में अत्यधिक मात्रा में अनाज एकत्रित किया जाय। सुल्तान अलाउद्दीन ने आदेश दिया कि ख़ालसे के क़स्बों तथा दुआब से ख़िराज के स्थान पर अनाज वसूल किया जाय। उस अनाज को शहर में सरकारी ग़ुदाम में पहुँचा दिया जाय। यह भी आदेश दिया गया कि शहरेनव तथा उसकी विलायतों[3] में सरकारी हिस्से का आधा ग़ल्ले के रूप

१. इस वाक्य में "न तलबन्द" शब्द का प्रयोग हुआ है किन्तु इस स्थान पर "बे तलबन्द" होना चाहिये। "न्" का बिन्दु नीचे हो जाने से "ब" हो जायगा। अतः यह छापे की अशुद्धि है।

२. प्रदेश के शासक।

३. किलोखड़ी एवं उसके अधीन प्रदेश में।

में लिया जाय और सब झायन और झायन के क़स्बों में एकत्रित कर दिया जाय। यह ग़ल्ला शहर के बंजारों के हाथ बेचा जाय। इस व्यवस्था से देहली में इतना सरकारी ग़ल्ला पहुँच जाता था कि देहली में कोई ऐसा मुहल्ला न था जहाँ दो तीन घर सरकारी अनाज से न भरे हों। जब वर्षा न होती अथवा किसी कारण बंजारों को मण्डी में ग़ल्ला पहुँचाने में विलम्ब हो जाता तो सरकारी गुदामों से मण्डी में अनाज भेज दिया जाता और सरकारी भाव पर बिकता तथा प्रजा की आवश्यकता के अनुसार दिया जाता। शहरे नव में सरकारी गुदाम से व्यापारियों को अनाज बेचा जाता था। इन दो नियमों से मण्डी में अनाज की कमी न होती थी और सुल्तान द्वारा निश्चित किये हुए भाव से एक दाँग (पैसा) भी अधिक गल्ला न बिकता था।

अनाज का भाव स्थायी रूप से सस्ता करने के लिये चौथा नियम यह बनाया गया कि व्यापारियों को मण्डी के शहना मलिक क़बूल के सिपुर्द कर दिया गया। सुल्तान अलाउद्दीन ने आदेश दे दिया था कि राज्य के समस्त प्रदेशों के व्यापारी मण्डी के शहना की प्रजा समझे जायँ। उनके मुक़द्दमों को बन्दी बना कर शहना के सिपुर्द कर दिया जाय। मण्डी के शहना को आदेश दिया कि व्यापारियों के मुक़द्दमों को बन्दी बना कर अपने सामने मण्डी मे उपस्थित रखे। जब तक कि वे सब मिलकर एक दूसरे की ज़मानत लिख कर न दें और स्त्री, बालक, जानवर, मवेशी तथा माल-असबाब उपस्थित न करें और यमुना तट के देहातों में निवास आरम्भ न कर दें और जब तक शहनये मण्डी की ओर से उनके तथा उनके स्त्री बालकों के ऊपर शहने नियुक्त न हो जायँ और बंजारे उनकी ज़मानत न कर ले उस समय तक मुक़द्दमों की गर्दन से तौक़ तथा जंजीर न निकाली जाय। उपर्युक्त अधिनियमों के स्थायी हो जाने के कारण मण्डी में इतना अनाज पहुँचना आरम्भ हो गया कि सरकारी अनाज की आवश्यकता भी न होती थी और अनाज निश्चित मूल्य से एक दाँग (पैसा) भी अधिक न बिक सकता था।

(३०७) अनाज को सस्ता करने के लिये पाँचवाँ नियम यह था कि एहतिकार[१] की मनाही कर दी गई। अलाई राज्य काल में एहतिकार की मनाही इस सख़्ती से की गई थी कि व्यापारियों, गाव वालों, बंजारों के अतिरिक्त कोई भी एक मन ग़ल्ले का एहतिकार न कर सकता था और एक मन या आधा मन ग़ल्ला भी सुल्तानी भाव से एक दाँग या दिरहम अधिक पर न बेच सकता था। यदि कोई चोर बाज़ारी करने के लिये अनाज एकत्रित करता था तो वह अनाज सरकार की ओर से ज़ब्त कर लिया जाता था। दुआब के कारकुनों तथा नायबों से दीवाने आला में यह लिखवा लिया जाता था कि कोई मनुष्य भी अपनी विलायत में चोर बाज़ारी के उद्देश्य से अनाज एकत्रित न करेगा। यदि यह पता चल जाता कि दुआब की विलायत के किसी व्यक्ति ने एहतिकार किया है तो नायबो तथा मुतसर्रिफ़ों को बन्दी बना लिया जाता था। उनसे जवाब तलब किया जाता था। एहतिकार की मनाही के नियमों के दृढ़ हो जाने से मण्डी में अनाज का भाव सरकारी भाव से, वर्षा होने तथा न होने दोनों ही दशाओं में, एक दाँग या एक दिरहम न बढ़ सकता था।

ग़ल्ले के भाव को स्थायी रूप से सस्ता करने के लिये छठा नियम यह था कि विलायत के मुतसर्रिफ़ों तथा कारकुनों से यह लिखवा लिया जाता था कि वे व्यापारियों को प्रजा से अनाज की क़ीमत लेकर खलियान ही में दिला दिया करेंगे। सुल्तान ने यह आदेश दे दिया था कि दीवाने आला द्वारा दुआब की विलायतों (जो कि शहर देहली के निकट हैं) के मुतसर्रिफ़ों तथा शहनों से यह लिखवा लिया जाय कि वे प्रजा से इस कठोरता से ख़िराज वसूल करें

---

१. चोर बाज़ारी। ग़ल्ले को इस आशय से एकत्रित करना कि भविष्य में उसे अधिक मूल्य पर बेचा जाय।

कि प्रजा अनाज अपने घरों में खलियान से न ला सके और एहतिकार न कर सके। खलियान ही से प्रजा सस्ते मूल्य पर व्यापारियों के हाथ अनाज बेच दे। उपर्युक्त नियमों के स्थायी हो जाने से व्यापारी मण्डी में अनाज ले जाने के विषय में कोई आपत्ति प्रकट न कर सकते थे। अनाज बराबर मण्डी में पहुँचता रहता था। गाँव वाले अपने लाभ के लिये जितना अनाज सम्भव हो सकता था स्वयं खलियान से मण्डी में लाकर सरकारी भाव पर बेच देते थे।

(३०८) अनाज का मूल्य सस्ता करने के लिये सातवाँ नियम यह था कि मण्डी के भाव तथा मण्डी के प्रबन्ध के स्थायी रूप से चलने के समाचार सुल्तान को मिलते रहते थे। सुल्तान अलाउद्दीन को प्रत्येक दिन मण्डी के भाव की सूचना तथा मण्डी की सुव्यवस्था के समाचार तीन सूत्रों से प्राप्त होते थे। सर्व प्रथम मण्डी के भाव की सूचना, तथा मण्डी का हाल शहन-ए-मण्डा पहुँचाता था। तत्पश्चात् मण्डी के बरीद समस्त सूचना भेजते थे। बरीद के अतिरिक्त मण्डी में मुनहियान (गुप्तचर) भी नियुक्त होते थे, जो कि समस्त सूचना पहुँचाते थे। यदि बरीद, गुप्तचरों तथा शहन-ए-मण्डा की सूचना में कोई अन्तर होता तो शहन-ए-मण्डा को कठोर दण्ड दिये जाते थे। इस कारण कि मण्डी के कर्मचारियों को यह बात भली भाँति ज्ञात थी कि मण्डी के समस्त समाचार तथा ख़बरें तीन सूत्रों से सुल्तान तक पहुँचती रहती हैं तो वे इतना साहस भी न कर सकते थे कि मण्डी के अधिनियमों का सुई की नोक के बराबर भी उल्लंघन कर सकें।

अलाई राज्य के सभी बुद्धिमान मण्डी के भाव के स्थायी होने पर चकित तथा स्तब्ध थे, कारण कि यदि केवल वर्षा होने तथा फ़स्ल के अच्छे होने पर मण्डी का भाव स्थायी रहता तो इसमें कोई आश्चर्यजनक बात न थी, किन्तु अलाई राज्य काल की सब से आश्चर्य-जनक बात यह थी कि जिस साल वर्षा न होती, और वर्षा न होने पर अकाल पड़ जाना आवश्यक है, देहली में कोई अकाल न पड़ता। न तो सरकारी ग़ल्ले और न व्यापारियों के ग़ल्ले का मूल्य निश्चित मूल्य से एक दाँग भी बढ़ सकता था। यह बात उस समय की अत्यन्त आश्चर्यजनक बातों में से एक बात समझी जाती है। यह सफलता उसके अतिरिक्त किसी अन्य बादशाह को प्राप्त न हुई। यदि वर्षा न होने पर शहन-ए-मण्डा एक दो बार यह निवेदन कर देता कि अनाज का भाव आधा जीतल बढ़ गया है तो इसके कारण उसको बीसियों कोड़े खाने पड़ते। वर्षा न होने पर प्रत्येक मुहल्ले की दैनिक आवश्यकता के अनुसार मुहल्ले के व्यापारियों को मण्डी से ग़ल्ला प्रदान कर दिया जाता था। आधे मन तक मण्डी के साधारण ख़रीददारों को दिया जाता था।

(३०९) इसी प्रकार उन प्रतिष्ठित और गण्यमान्य व्यक्तियों को भी, जिनके पास भूमि तथा गाँव न थे, मण्डी से ग़ल्ला प्रदान किया जाता था। यदि वर्षा न होने पर लोगों की भीड़ के कारण कोई दरिद्र या निर्बल व्यक्ति कुचल जाता और प्रजा के मण्डी में आने जाने की देखभाल न हो पाती और यह समाचार सुल्तान को प्राप्त होता तो मण्डी के शहना को कठोर दण्ड दिये जाते थे।

अन्य सामग्री को, अर्थात् कपड़ा, शकर, मिश्री, मेवा, घी, चौपाये तथा जलाने के तेल को स्थायी रूप से सस्ता रखने के लिये पाँच नियम बनाये गये। इन पाँचों नियमों के दृढ़ हो जाने से राज्य द्वारा निर्धारित भाव बढ़ न सका और प्रजा को बड़ी सुगमता हो गई। समस्त सामग्रियों को सस्ता करने के लिये पाँच नियम बनाये गये। वे इस प्रकार हैं—सराये अदल, भाव का निश्चित होना, राज्य के प्रदेशों के व्यापारियों का रजिस्टर रक्खा जाना, ख़ज़ाने से प्रतिष्ठित और मालदार मुल्तानियों को माल का दिया जाना और सराये अदल का उनके सिपुर्द होना. प्रतिष्ठित और बडे बडे आदमियों के काम में आने वाली बहुमूल्य वस्तुओं के लिये

रईस (हाकिम) के परवाने की आवश्यकता। इन पाँचों नियमों के स्थायी हो जाने के उपरान्त जब तक सुल्तान अलाउद्दीन जीवित रहा उस समय तक कोई सामग्री सरकार द्वारा निर्धारित किये हुये भाव से एक जीतल अथवा दांग अधिक न बिक सकी।

कपड़े को स्थायी रूप से सस्ता करने के लिये पहला नियम यह था कि एक सराय अदल बनवाई गई। बदायूँ दरवाजे के भीतर कूशिके सब्ज़ (हरे राज भवन) की ओर एक मैदान वर्षों से बेकार पड़ा था, उस मैदान का नाम सराय अदल रक्खा गया।

सुल्तान अलाउद्दीन ने आदेश दे दिया कि सुल्तानी माल से जो कपड़ा भी लाया जाय और शहर तथा शहर के आसपास के व्यापारी जो कपड़ा भी लावे, वह सराये अदल के अतिरिक्त किसी घर अथवा बाज़ार में न ले जाया जाय। उसे सराये अदल में लाया जाय और सरकारी भाव पर बेचा जाय। यदि कोई किसी घर या बाजार में कोई कपड़ा लाता या सरकारी भाव से एक जीतल अधिक पर भी बेचता तो वह कपड़ा ज़ब्त कर लिया जाता।

(३१०) कपड़े के स्वामी को कठोर दण्ड दिये जाते। इस अधिनियम के कारण एक तनके से १०० तनके तक का और १००० से दस हज़ार तनके के कपड़े सराये अदल के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर नहीं ले जाये जा सकते थे।

कपड़ों को सस्ता करने के लिये दूसरा नियम यह बनाया गया कि कपड़े के भाव निश्चित कर दिये गये। कुछ रेशमी कपड़ों के भाव इस प्रकार हैं। खज़ देहली १६ तनका, खज़कौंला ६ तनका, मशरूशेरी उत्तम ३ तनका, बुरद उत्तम दवाले लाल के साथ (लाल पट्टियों का धारीदार कपड़ा) ६ जीतल, बुरद साधारण ३½ जीतल, अस्तर लाल नागौरी २४ जीतल, अस्तर साधारण १२ जीतल, शीरीन बाफ़्त उत्तम ५ तनका, शीरीन बाफ़्त औसत ३ तनका, शीरीन बाफ़्त साधारण २ तनका, सिलाहती उत्तम ६ तनका, सिलाहती औसत ४ तनका, सिलाहती साधारण २ तनका, किर्पास (मलमल) बारीक २० गज़ १ तनका, किर्पास साधारण ४० गज़ १ तनका, चादर १० जीतल। मिश्री २½ जीतल प्रति सेर, शकरतरी १½ जीतल प्रति सेर, लाल शकर १½ जीतल में ३ सेर, रोगने सतूर (घी) १ जीतल में १½ सेर, तेल सरसों १ जीतल में तीन सेर, नमक ५ जीतल प्रति मन। अन्य सामग्रियों का मूल्य उत्तम तथा साधारण इन्ही सामग्रियों के मूल्य के समान समझना चाहिये, जिनका उल्लेख मैंने ऊपर किया। सराये अदल प्रातःकाल से रात की अन्तिम नमाज़ के समय तक खुली रहती। जिन्हें जिस चीज़ की आवश्यकता होती, वे उपर्युक्त भाव पर ख़रीदते। अन्य लोग बिना किसी आवश्यकता के वहाँ न जाते।

कपड़ों को स्थायी रूप से सस्ता करने का तीसरा नियम यह था कि शहर तथा आस-पास के व्यापारियों के नाम रईस के रजिस्ट्रों में लिख लिये गये थे। सुल्तान अलाउद्दीन ने आदेश दे दिया था कि सौदागरों तथा राज्य के आसपास के व्यापारियों के नाम चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान, दीवाने रियासत के रजिस्ट्रों में लिख लिये जायें।

(३११) शहर के तथा बाहर के सभी व्यापारियों के लिये अधिनियम बना दिये जायँ। इस प्रकार सुल्तान के आदेशानुसार व्यापारियों के लिये नियम बना दिये गये और उनसे लिखित रूप में ले लिया गया कि जिस प्रकार वे इससे पूर्व शहर में सामान लाते थे, उतना ही और उसी प्रकार प्रत्येक वर्ष सराये अदल में पहुँचा दिया करेंगे और सरकारी भाव पर बेचेंगे। इस प्रकार इस नियम के स्थायी हो जाने से राज्य में किसी कपड़े की कमी नहीं हुई। मीज़ानी व्यापारी[1] राज्य के चारों ओर से इस नियम के अनुसार इतना कपड़ा सराये अदल में ले आते थे कि वह बहुत दिनों तक सराये अदल में पड़ा रहता और न बिकता।

---

१. वे व्यापारी जो उपर्युक्त नियम का पालन करते थे।

चौथा नियम कपड़े को स्थायी रूप से सस्ता करने के लिए यह था कि मुल्तानियों को खज़ाने से इस उद्देश्य से माल दिया जाता था कि वे राज्य के भिन्न-भिन्न प्रदेशों से सामान ला सकें और सरकारी भाव पर सराये ग्रदल में बेच सकें। सुल्तान ग्रलाउद्दीन ने यह आदेश दे दिया था कि मुल्तानियों को २० लाख तनके की धन सम्पत्ति दे दी जाय। उन्हें सराये ग्रदल का अधिकारी बना दिया जाय। मुल्तानियों को यह आज्ञा दी गई कि वे कपड़े राज्य की भिन्न-भिन्न दिशाओं से लाकर सरकारी भाव पर सराये ग्रदल में बेचें। जब व्यापारियों का कपड़ा न पहुँच पाता तो इस नियम के द्वारा कपड़े के पहुँच जाने से सामान स्थायी रूप से सस्ता रहने लगा।

कपड़े को स्थायी रूप से सस्ता करने के लिये पाँचवाँ नियम यह था कि रईस को उत्तम वस्तुओं के लिये परवाना[1] देना पड़ता था, सुल्तान ग्रलाउद्दीन ने आदेश दे दिया था कि उत्तम प्रकार के कपड़े अर्थात् तस्बीह, तबरेज़ी, मुनहरे काम के कपड़े, देहली की खज, कमख़्वाब, शशतरी, हरीरी, चीनी, भीरम, देवगीरी और इसी प्रकार के अन्य कपड़े जिनका सर्व साधारण से कोई सम्बन्ध नहीं होता, वे उस समय तक सराये ग्रदल से न बेचे जायँ जब तक कि वे स्वयं लिखित प्रार्थना न करें और रईस उनके लिये परवाना न देदे। रईस, अमीरों, मलिकों, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्तियों के लिये बहुत देखभाल कर उत्तम वस्त्र के लिये परवाने देता था।

(३१२) जिस किसी के विषय में यह समझता कि वह व्यापारी नहीं है[2] और वह इस लालच से सराये ग्रदल से सस्ते मूल्य पर कपड़े लेता है कि दूसरों के हाथ किसी दूसरे स्थान पर सराये ग्रदल की अपेक्षा चौगुने पंचगुने दाम पर बेच दे, तो उसे परवाना नहीं दिया जाता था। बहुमूल्य वस्त्र के लिये परवाने की शर्त इस कारण लगादी गई थी कि क्या शहर के तथा क्या शहर के बाहर के, सभी इस बात का प्रयास किया करते थे कि उत्तम, बहुमूल्य तथा अद्‌भुत वस्त्र जो कि दूसरे स्थानों पर न प्राप्त होते थे, सराये ग्रदल से सरकारी भाव पर लेकर अन्य स्थानों पर लेजाकर अधिक मूल्य पर बेच दें।

उपर्युक्त पाँचों अधिनियमों के स्थायी रूप से लागू होने के उपरान्त देहली में कपड़े बहुत सस्ते हो गये और वर्षों तक सस्ते रहे। वृद्ध व्यक्ति अलाई राज्य में प्रत्येक वस्तु के इतना सस्ते हो जाने पर स्तब्ध थे। उस युग के बुद्धिमान लोग कहा करते थे कि सुल्तान ग्रलाउद्दीन को भाव को सस्ता करने तथा इसे स्थायी बनाने में चार कारणों से सफलता प्राप्त हुई है। प्रथम, आदेशों की कठोरता, कारण कि उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन कदापि न हो सकता था। द्वितीय, खिराज की अधिकता, कारण कि अत्यधिक खिराज वसूल हो जाने से प्रजा दरिद्र हो गई थी और अनाज तथा कपड़ा सरकारी भाव पर बिकता था। तीसरे, प्रजा का निर्धन होना, यह मसल उस युग के मनुष्यों के विषय में कही जा सकती थी, कि ऊँट का भाव एक दाँग हो गया था, किन्तु दाँग किसी को प्राप्त न था। चतुर्थ, ऐसे कठोर तथा अपने ऊपर अधिकार रखने वाले पदाधिकारी नियुक्त हो गये थे जो कि न तो घूंस लेते थे और न किसी की रिआयत करते थे।

घोड़ों, दासों तथा चौपायों का भाव सस्ता करने के लिए चार नियम बनाये गये, जो शीघ्र ही स्थायी हो गये। वे चार नियम निम्नांकित हैं: उनका वर्गीकरण तथा उनका मूल्य निश्चित होना; कीसादार तथा व्यापारियों के लिए उनके ख़रीदने के विषय में मनाही; दलालों पर सख़्ती तथा उनके साथ कठोरता, प्रत्येक बाज़ारी के क्रय विक्रय के विषय में पूछ

१. आज्ञा पत्र।
२. "व्यापारी है" होना चाहिये।

ताछ। राज्य द्वारा इन चारों नियमों के लागू तथा स्थायी हो जाने के उपरान्त घोड़े, दास और चौपाये इतने सस्ते हो गये जितना कि अलाई राज्य के उपरान्त फिर कभी न हो सके।

(३१३) पहला नियम घोड़ों के वर्गीकरण तथा उनके मूल्य के निश्चित किये जाने के विषय में इस प्रकार है। जो घोड़े सेना के लिये दीवान में पेश किये जाते थे, तीन वर्गों में विभाजित किये गये। उनका मूल्य निश्चित करके दलालों को दे दिया गया। प्रथम वर्ग का मूल्य १०० तनके से १२० तनके तक, दूसरे वर्ग का मूल्य ८० तनके से ९० तनके तक, तीसरे वर्ग का मूल्य ६५ तनके से ७० तनके तक। जो घोड़े दीवान में न पेश किये जा सकते थे वे टट्टू कहलाते थे। उनका मूल्य १० तनके से २५ तनके तक होता था।

दूसरा नियम जिससे घोड़े स्थायी रूप से सस्ते हो गये, यह था कि व्यापारी तथा धनी लोग न तो स्वयं घोड़े ख़रीद सकते थे और न किसी अन्य के द्वारा ख़रीद कर ले सकते थे। सुल्तान अलाउद्दीन ने उपर्युक्त नियम को जिससे बढ़कर घोड़ों को सस्ता करने के विषय में कोई अन्य नियम नहीं, स्थायी बनाने के लिये यह आदेश दे दिया था कि कोई व्यापारी बाज़ार मे घोड़े के निकट भी न जाने पाये। अनेक घोड़ों के व्यापारियों को जो वर्षों से घोड़ों के क्रय-विक्रय द्वारा लाभ उठा रहे थे और जिनकी जीविका का साधन यही था कि वे बाज़ार से बड़े-बड़े दलालों से मिले रहते थे, बड़ी क्षति पहुँची और वे कष्ट में पड़ गये। उन्हें बड़े बड़े दलालों के साथ दूर दूर क क़िलों में भेज दिया गया। व्यापारियों की मनाही द्वारा घोड़ों का भाव सस्ता हो गया।

घोड़े का भाव स्थायी रूप से सस्ता रखने के लिये तीसरा नियम यह था कि घोड़े के बड़े बड़े दलालों को जो कि बड़े निर्भीक थे और जो मन मनमाना कार्य किया करते थे, कठोर दंड दिये गये। बहुतों को शहर के बाहर निकाल दिया गया जिससे घोड़े का भाव सस्ता हो गया कारण कि घोड़ों के बड़े बड़े दलाल बाज़ार के हाकिमों के बराबर होते हैं और जब तक उनको कठोर दण्ड न दिये जायं तब तक वे दोनों ओर से घूंस लेना तथा ख़रीदने वाले और बेचने वाले की सहायता करना बन्द नहीं करते और घोड़े का मूल्य सस्ता नहीं होता। निर्लज्ज दलालों को सुमार्ग पर लाना बड़ा कठिन है। वे अलाउद्दीन के स्वभाव की कठोरता के अतिरिक्त किसी अन्य बात से ठीक न हो सकते थे। अपने तहस नहस हो जाने के भय से उन्होंने जाल बनाना बन्द कर दिया था।

(३१४) घोड़े का मूल्य स्थायी रूप से सस्ता करने के लिये चौथा नियम यह बनाया गया, कि घोड़े की नस्ल तथा मूल्य की राज्य की ओर से पूछताछ होती रहती थी। सुल्तान अलाउद्दीन प्रत्येक चालीस दिन मे दो एक बार तीनों प्रकार के घोड़ों के विषय में बड़े-बड़े दलालो से, उन्हें अपने सामने बुलवाकर पूछताछ करता था। नस्ल की पूछताछ तथा मूल्य की पूछताछ के उपरान्त, यदि वह देखता कि किसी के घोड़े के भाव में तथा उसके निश्चित किये हुए भाव में कोई अन्तर है तो वह उन को ऐसे कठोर दंड देता कि अन्य लोग इससे शिक्षा ग्रहण करते। बड़े बड़े दलाल इस भय से कि कहीं सुल्तान के सम्मुख बिना किसी सूचना के बुला न लिये जायँ, अपनी ओर से किसी प्रकार के घोड़े का मूल्य निश्चित न करते थे। वे इस प्रकार ख़रीदने तथा बेचने वाले से सरकार द्वारा निश्चित किये हुए भाव से कम या अधिक न ले सकते थे।

इसी प्रकार दासों और अन्य चौपायों के भाव को स्थायी रूप से सस्ता करने के लिए उसी प्रकार के नियम बनाये गये जिस प्रकार के नियम घोड़ों को सस्ता करने के लिये लिखे जा चुके हैं। किसी व्यापारी तथा कीसेदार (धनी) को यह साहस न हो सकता था कि वह बाज़ार में पहुँच सके या किसी प्रकार किसी दास को देख सके। कारी कनीज़ (साधारण काम

करने वाली दासियाँ) का भाव ५ तनके से १२ तनके के बीच में निश्चित किया गया। किनारी कनीज़ (रूपवान दासी) का भाव २० से ३० और ४० तनके निश्चित किया गया। दास का भाव १०० से २०० तनके तक बहुत कम निश्चित होता। यदि कोई ऐसा दास आ जाता कि जिसका मूल्य उस समय हजार दो हजार तनके होता तो उसे गुप्तचरों के भय के कारण कोई नहीं ख़रीद सकता था। रूपवान दासों के पुत्र तथा इमरदों का भाव २० से ३० तनके तक था। कारकरदा दासों (साधारण काम करने वाले दासों) का भाव १० से १५ तनके तक का था, नौकारी (अनुभव शून्य) गुलाम बच्चों का भाव ७ से ८ तनके तक था।

(३१५) बड़े बड़े दलाल अपने जीवन से इन कष्टों के कारण बड़े परेशान हो गये थे और मृत्यु की अभिलाषा किया करते थे। चौपायों के भाव स्थायी रूप से इस प्रकार निश्चित किये गये कि वे चौपाये जो इस समय ३०, ४० तनकों में मिलते हैं, वे चार तनकों, अधिक से अधिक पाँच तनकों में मिल जाते थे। जुफ़ती (जोड़े) चौपाये तीन तनके में मिल जाते थे। जिन गायों का केवल मांस खाया जा सकता था उनका मूल्य १½ तनके से दो तनके तक था। दूध देने वाली गाय का भाव ३-४ तनके था। दूध देने वाली भैंस का मूल्य १० तनके से १२ तनक तक था और उन भैंसों का मूल्य जिनका केवल मांस खाया जाता था ५ तनके से ६ तनके तक था। मोटी ताज़ी भेड़ का मूल्य १० जीतल से १२. १४ जीतल तक था। तीनों प्रकार के बाज़ारों में चीज़ें स्थायी रूप से इतनी सस्ती हो गई थी कि वास्तव मे इससे अधिक सस्ता होना सम्भव न था। उपर्युक्त तीनों बाज़ारो की देख भाल के लिये गुप्तचर नियुक्त थे। वे लोग बाज़ारों के अन्दर की अच्छी बुरी बातें, आज्ञाकारिता तथा अवज्ञा, जाल तथा छल सभी को प्रत्येक दिन सुल्तान की सेवा में पहुँचा देते थे। सुल्तान को गुप्तचरों द्वारा जो बातें ज्ञात होतीं उसकी कड़ी पूछताछ की जाती। अपराधी और आज्ञा का उल्लंघन करने वालों को पकड़वाकर कठोर दण्ड दिये जाते। गुप्तचरों के भय से साधारण तथा विशेष व्यक्ति, बाजारी तथा अन्य व्यक्ति अपने कार्यो के विषय मे सावधान रहते और सर्वदा आज्ञाकारी बने रहते तथा भय के कारण थर थर कांपा करते। किसी को इतना साहस न होता था कि आदेश के विरुद्ध सुई की नोक के बराबर भी कोई कार्य कर सके या सरकार द्वारा निश्चित किये हुए भाव में कुछ घटा बढ़ा सके अथवा किसी प्रकार से अधिक वसूल करने का लालच कर सके।

(३१६) नियमों का स्थायी रूप से पालन कराने में तथा बाज़ार के निश्चित किये हुए सस्ते भाव पर चीजें बिकवाने में बाजारियों को, जो कि दीवाने रियासत से सम्बन्धित थे, विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ा। बड़े परिश्रम से टोपी से मोज़े, कंघी से सुई, गन्ने से सब्ज़ी, पके हुए मांस से शुरुआ, हलुवाये साबूनी (साबूनी मिठाई) से रेवड़ी, उत्तम तथा साधारण रोटियाँ, मछली, पान, सुपारी, फूल, साग पात तथा बाज़ार से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का भाव सुल्तान ने अपने सामने निश्चित किया। उसकी कठोरता के कारण बाज़ार से सम्बन्धित बातें, जो कि कभी निश्चित न हो सकती थीं, स्थायी रूप से एक समान चलने लगीं। सभी चीज़ें सस्ती हो गईं। इसके लिये सुल्तान ने कुछ समझदार, निष्ठुर, क्रूर तथा कड़े दण्ड देने वाले अध्यक्ष नियुक्त किये जो कि अपनी कठोरता, क्रूरता, मार पीट तथा बन्दी बनाने एवं बाज़ारियों के शरीर से दुगना माँस कटवाने और उनके विषय में बराबर पूछताछ करते रहने के फलस्वरूप सुल्तान के बनाये हुए नियमों का पालन प्रत्येक अवस्था में, चाहे बाज़ारी रईस के सामने हों चाहे राज सिंहासन के सम्मुख, करा लेते थे। सुल्तास अलाउद्दीन ने दीवाने रियासत के शहना नियुक्त करने तथा बाज़ार की सभी वस्तुओं का भाव निश्चित करने का विशेष प्रयत्न किया, कारण कि इससे सर्वसाधारण को बड़ा लाभ होता है। सुल्तान ने रात दिन प्रयत्न करके साधारण से

साधारण वस्तु अर्थात् सुई, कंघी, जूते, जूतियों, प्याले, प्यालियों, गिलासों आदि का भाव, तथा बेचने वालों का लाभ, अपने सामने निश्चित किया और इस प्रकार निश्चित किये हुए मूल्य की सूची दीवाने रियासत में भेजदी जाती थी।

साधारण बाज़ारों से सम्बन्धित वस्तुओं का भाव स्थायी रूप से सस्ता करने के लिये उसका पहला नियम यह था कि समझदार, ईमानदार, कठोर तथा अत्याचारी अध्यक्ष नियुक्त किये गये कारण कि बाज़ारी लोग बड़े निर्लज्ज, निर्भीक, छली, कमीने, झूठे और पतित होते हैं। इस कारण कि वे अपनी वस्तुओं का भाव स्वयं निश्चित करते हैं और अपनी वस्तुओं के भाव के स्वामी होते हैं, बादशाह उनसे सर्वदा परेशान रहते हैं। बड़े बड़े मन्त्री इन झूठे लोगों के क्रय विक्रय सम्बन्धी नियमों को स्थायी रूप से लागू करने के सम्बन्ध में सर्वदा असमर्थ रहे हैं।

(३१७) सुल्तान अलाउद्दीन ने बड़े सोच विचार के उपरान्त याक़ूब नाज़िर को रियासत प्रदान की (बाजार का अध्यक्ष बनाया) कारण कि वह शहर वालों के स्वभाव से परिचित था और प्रत्येक वर्ग के क्रय विक्रय तथा अन्य व्यापार सम्बन्धी बातों की जानकारी रखता था। इसके अतिरिक्त वह बड़ा ही सच्चा, ईमानदार, कठोर, निष्ठुर, तथा क्रूर था एवं किसी की रियाअत न करता था। उसके विश्वास तथा उसके आदेशों का महत्व बढ़ाने के लिये नुज़रते मुमालिक, तथा एहेतसाबे ममालिक भी उसी के सिपुर्द करदी। दीवाने रियासय को उस जैसे रईस के कारण बड़ा मान्य तथा महत्व प्राप्त होगया। दंड की अधिकता तथा क़ैद कर लिये जाने, बन्दी बनाये जाने, लज्जित तथा अपमानित किये जाने के भय से बाज़ारी उससे कांपते रहते और सभी वस्तुयें सस्ते भाव पर बेचते थे। कभी कभी कम दे कर वे लाभ उठाने का उद्योग करते और अनभिज्ञ लोगों से छल करने का प्रयत्न करते, किन्तु उसकी क्रूरता के फलस्वरूप यह भी सम्भव न था।

बाज़ार की चीजों का स्थायी रूप से सस्ता करने का दूसरा नियम यह था कि बादशाह स्वयं बाज़ारों की साधारण से साधारण वस्तुओं के विषय में पूछ ताछ किया करता था। यदि बादशाह बाज़ारों को, जो कि कभी ठीक मार्ग पर नहीं चल सके, उचित मार्ग पर चलाना चाहें तो फिर उसे कोई रियाअत न करनी चाहिये। बाज़ारियों के विषय में पूछताछ करने में असावधानी न प्रकट करनी चाहिये, कारण कि प्राचीन बादशाहों का कथन है कि बाहर के जंगलों को कटवाना तथा दूर के मनुष्यों को अपना आज्ञाकारी बनाना, भीतर के जंगलों को कटवाने तथा बाज़ारियों को आज्ञाकारी बनाने से कहीं सरल है। सुल्तान अलाउद्दीन अपने सम्मुख बाजार की प्रत्येक वस्तु के विषय में पूछ ताछ किया करता था और सर्व साधारण को उसकी पूछ ताछ से बड़ा आश्चर्य होता था। उसकी सावधाना तथा पूछ ताछ के कारण बाज़ारों की वस्तुओं का भाव बहुत सस्ता होगया, यद्यपि यह बड़ा कठिन कार्य है।

(३१८) बाजारों की साधारण वस्तुओं को स्थायी रूप मे सस्ता बनाने का तीसरा नियम यह था कि दीवाने रियासत द्वारा शहने नियुक्त किये गये। याक़ूब नाज़िर रईसे-शहर ने प्रत्येक बाज़ार में शहने नियुक्त कर दिये थे। प्रत्येक शहने को राज्य द्वारा निश्चित भावों की सूची देदी गई और उन्हें आदेश दे दिया गया कि जिस समय बाज़ार वाले कोई वस्तु बेचें, उसी समय उसका निश्चित भाव लिख लिया जाय। जिन चीज़ों का भाव लिखा न जा सकता हो उनके विषय में शहने खरीदने वालों से बराबर पूछ ताछ किया करें। यदि कोई बाज़ारी निश्चित भाव के विरुद्ध बेचे तो उसे गिरफ़्तार करके रईस के सामने पेश करें। जो बाज़ारी कम तोलता था, उसकी भी शहना रोक टोक किया करता था। प्रत्येक बाज़ार में शहनों के स्थायी रूप से नियुक्त होजाने के कारण चीज़ों के भाव सस्ते होने में बड़ी सहायता मिली।

चीज़ों के भाव के स्थायी रूप से सस्ता होने का चौथा नियम यह था कि याक़ूब नाज़िर बाज़ारियों पर बड़ी सख़्ती करता था और कम तोलने वालों के शरीर से दुगुना मांस कटवा

लेता था। शहर के सभी बूढ़े और जवान इस बात से सहमत थे कि याक़ूब नाज़िर के समान दीवाने रियासत में किसी काल में इतनी कठोरता न दिखाई गई होगी और न दिखाई जा सकती है। प्रत्येक बाज़ारी से १०-१० और २०-२० बार भाव के विषय में पूछ ताछ करता था। प्रत्येक पूछ ताछ करने के समय तथा कम तोलने पर बिना सोचे विचारे कोड़े लगवाता था और उन पर बड़े अत्याचार करता था। इन अत्याचारों, मारपीट तथा कठोरता के कारण बाज़ार वालों ने कम तोलना बन्द कर दिया था।

यद्यपि वे निश्चित भाव पर चीज़ें बेचते थे किन्तु वे बाँट के विषय में बड़ा जाल करते थे। बड़ी बड़ी चीज़ों के बेचने में वे अत्यधिक जाल करते थे। ख़रीदने वालों, विशेषकर अनभिज्ञ तथा बालकों को बहुत ठगते थे। सुल्तान अलाउद्दीन ने जब यह देखा कि बाज़ार वाले यथा रूप सीधे मार्ग पर नहीं चलते और कम तोलने, जाल बनाने तथा बालकों एवं अनभिज्ञ लोगों को धोखा देने से बाज नहीं आते तो वह अल्प आयु तथा दासों के बालकों में से कुछ को जो कि उसके कबूतर ख़ाने में नौकर थे अपने सामने बुलवाकर १०-२० दिरम प्रदान करता और उन्हें आदेश देता कि वे बाज़ार जाकर किसी से रोटी या अन्य खाने की वस्तुयें ख़रीद कर लायें।

(३१९) कोई रोटी ख़रीदता तो कोई मांस, कोई हलवा खरीदता तो कोई रेवड़ी, कोई ख़रबूज़ा ख़रीदता तो कोई ककड़ी। सभी चीजें राज सिंहासन के सम्मुख लाई जातीं। जब ग़ुलाम बच्चे भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तुएँ ख़रीद कर राज सिंहासन के सम्मुख लाते तो रईस को बुलवाया जाता। रईस के सामने उन ग़ुलाम बच्चों की लाई हुई वस्तुओं को तुलवाया जाता। सरकारी भाव के अनुसार यदि कोई चीज़ तोल में कम होती तो ग़ुलाम बच्चों को याक़ूब रईस के सिपुर्द किया जाता। याक़ूब प्रत्येक कम तोलने वाले की दुकान पर पहुँचता और कम तोलने वाले के शरीर से जितना उसने कम तोला था, उसका दुगुना मांस कटवा कर उसके सामने डाल देता। उपर्युक्त कठोर दण्ड के कारण बाज़ार वाले पूर्णतया ठीक हो गये और कम तोलना, छल, कपट तथा अनभिज्ञ ख़रीदारों एवं बालकों को धोका देना बिल्कुल बन्द कर दिया वरन् वे कुछ अधिक ही तोलते थे जिससे कि पूछताछ के समय निश्चित भाव के अनुसार वह चीज़ कुछ अधिक रहती।

यह सब नियम, पूछताछ, आदेश, बाज़ारियों पर सख़्ती, सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात् समाप्त हो गये। उसके पुत्र सुल्तान क़ुतुबुद्दीन को अलाई राज्य के नियमों की अपेक्षा हज़ार में एक हिस्सा भी सफलता प्राप्त न हो सकी। चीज़ों के भाव के सस्ता हो जाने के उपरान्त मुरत्तब सैनिक २३४ तनकों और दो अस्पे ७८ तनकों पर बहुत बड़ी संख्या में मिलने लगे। समस्त सेना की अर्ज़ ममालिक के सामने तीर चलाने की परीक्षा ली जाती। जो अच्छे धनुर्धारी होते तथा जिनके अस्त्रशस्त्र ठीक होते उन्हें भरती कर लिया जाता, तथा उनके घोड़ों को उनके मूल्य के अनुसार दाग़ दिया जाता। जीविका सम्बन्धी सभी वस्तुओं के सस्ते हो जाने तथा लश्कर के सुव्यवस्थित एवं बहुत बड़ी संख्या में भरती हो जाने के कारण अलाउद्दीन को मुग़लों के मुक़ाबले में बड़ी सफलता प्राप्त हुई।

(३२०) जब भी मुग़ल देहली तथा उसकी विलायतों पर आक्रमण करते तो वे पराजित होते और तलवार के घाट उतार दिये जाते तथा उन्हें बन्दी बना लिया जाता। इस्लामी पताकाओं को यथारूप सफलता प्राप्त होने लगी। कई हज़ार मुग़लों की गर्दनों को रस्सियों में बँधवाकर देहली लाया जाता और हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिया जाता। मुग़लों के सिरों के चबूतरे तथा मीनार बनवाये जाते। मुग़लों की लाशों से, क्या शहर क्या रणक्षेत्र, प्रत्येक स्थान में गन्दगी फैल गई थी। इस्लामी सेना मुग़ल सैनिकों पर इतनी भारी हो गई थी कि

एक दो अस्प। दस मुगलों के गले में रस्सी बाँधकर खींच लाता। एक मुसलमान सवार सौ मुग़ल सवारों का मुक़ाबला करके भगा देता था।

एक बार मुग़लों की सेना के सरदार, अलीबेग तथा तरताक जो कि बड़े प्रतिष्ठित थे और अलीबेग जोकि दुष्ट चंगेज़ ख़ाँ का पुत्र समझा जाता था, तीस चालीस हज़ार मुग़ल सवार लेकर पहाड़ के किनारे-किनारे से होते हुए अमरोहे की विलायत तक पहुँच गये। सुल्तान अलाउद्दीन ने मलिक नायब आख़ुर बक को इस्लामी सेना देकर मुग़लों से युद्ध करने के लिये भेजा। अमरोहे के निकट दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। ख़ुदा ने इस्लामी सेना को विजय प्रदान की। अलीबेग तथा तरताक दोनों ही जीवित बन्दी बना लिये गये। मुग़ल सैनिकों की बहुत बड़ी संख्या तलवार के घाट उतार दी गई और उनका विनाश कर दिया गया। रणक्षेत्र में मुग़लों की लाशों के ढेर लग गये। अलीबेग तथा तरताक की गर्दनों को बाँध कर अन्य मुग़ल बन्दियों के साथ सुल्तान अलाउद्दीन के सामने पेश किया गया। मरे हुए मुग़लों के २० हजार घोड़े सुल्तान अलाउद्दीन के दरबार में लाये गये। चौतर-ए-सुभानी पर सुल्तान ने बहुत बड़ा दरबार किया।

(३२१) सुल्तानी दरबार से इन्द्रप्रस्थ तक दोनों पंक्तियों में सैनिक खड़े थे। उस दिन इतनी भीड़ हो गई थी और इतने आदमी एकत्रित हो गये थे कि एक गिलास जल का भाव २० जीतल तथा आधे तनके तक पहुँच गया था। उस दरबार में अलीबेग तथा तरताक को अन्य मुग़लों के साथ उनकी धन सम्पत्ति सहित, राज सिंहासन के सम्मुख पेश किया गया। बन्दी मुग़ल दरबारे आम ही में हाथियों के पैरों के नीचे कुचलवा दिये गये और उनके रक्त की नदी बह निकली।

दूसरे वर्ष पुनः दुष्ट कनक तथा मुग़ल सेना और इस्लामी सेना में खीकर के स्थान पर युद्ध हुआ। ख़ुदा ने इस्लामी लश्कर की सहायता की। मुग़ल सेना का सरदार दुष्ट कनक जीवित ही बन्दी होकर सुल्तान अलाउद्दीन के राज सिंहासन के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। उन्हें हाथियों के पैरों के नीचे कुचलवा दिया गया। इस समय भी रणक्षेत्र में तथा देहली में मुग़लों का, जो कि बन्दी बनाकर लाये गये थे, बड़ा हत्याकाण्ड हुआ। उनके सिरों द्वारा बदायूँ द्वार पर एक मीनार बनवाया गया। वह मीनार आज तक सर्व साधारण के सामने है जिसमे सुल्तान अलाउद्दीन की स्मृति वर्त्तमान है।

दूसरे वर्ष पुनः तीन बार मुग़ल अमीराने तुमन ३०, ४० हज़ार मुग़ल सवारों को लेकर धावा मारते हुए अन्धा धुन्ध सिवालिक प्रदेश में घुस आये और उन्होंने लूटमार तथा हत्याकाण्ड प्रारम्भ कर दिया। सुल्तान अलाउद्दीन ने इस्लामी लश्कर को मुग़लों से युद्ध करने के लिए यह आदेश देकर भेजा कि इस्लामी सेना मुग़लों की वापसी में जबकि मुग़ल प्यास से व्याकुल नदी तट पर पहुँचें तो उनकी हत्या करादी जाय।

इस्लामी सेना ने मुग़लों की वापसी का मार्ग रोक कर नदी तट पर शिविर लगा दिये। भगवान् की कृपा से मुग़ल सिवालिक को विध्वंस करने के उपरान्त बड़ा लम्बा धावा मार कर नदी तट पर पहुँचें। इस समय वे तथा उनके घोड़े प्यास से व्याकुल थे। इस्लामी सेना को जो कि कई दिन से उनके आने की प्रतीक्षा कर रही थी सफलता का अवसर मिल गया। मुग़ल अपनी दसों उँगलियाँ अपने मुँह में डाले हुए इस्लामी सेना से जल की भिक्षा माँगते थे। सभी स्त्री बालक तथा सैनिक इस्लामी सेना द्वारा बन्दी बना लिये गये और इस्लामी सेना को बहुत बड़ी विजय प्राप्त हुई।

(३२२) कई हज़ार मुग़लों को, गलों में रस्सियाँ डलवा कर, नरानिया के क़िले में भिजवा दिया गया। उनके स्त्री बच्चों को देहली लाया गया। वे देहली के दासों के बाज़ार

में हिन्दुस्तानी दासियों तथा गुलाम बच्चों की भाँति बेच डाले गये। मलिक खास हाजिब अलाई राज सिंहासन की ओर से नरानिया की ओर भेजा गया। उसने वहाँ पहुँच कर समस्त मुग़लों को जो कि इस विजय के उपरान्त नरानिया के क़िले में पहुँचा दिये गये थे, तलवार के घाट उतार दिया। उनके गन्दे रक्त की नदी बह निकली।

दूसरे वर्ष इक़बाल मन्दा ने मुगल सैनिकों को लेकर आक्रमण किया। सुल्तान अलाउद्दीन ने इस्लामी सेना देहली से मुग़लों से युद्ध करने के लिये भेजी। इस समय भी इस्लामी सेना तथा मुग़ल सेना मे तल्पजये अमीर अली तथा अहन पर युद्ध हुआ। इस्लामी सेना को सफलता प्राप्त हुई। इक़बाल मन्दा मारा गया। कई हज़ार मुग़ल तलवार के घाट उतार दिये गये। जो मुगल अमीराने हज़ारा तथा अमीराने सद्दा जीवित बन्दी होकर देहली आये, उन्हें हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिया गया। इकबाल मन्दा की हत्या के उपरान्त कोई भी मुग़ल जीवित वापस न हो सका। मुगल, इस्लामी लश्कर से इतना भयभीत होगये कि उनके हृदय मे हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का विचार पूर्णतया निकल गया। क़ुतबी राज्य के अन्त तक फिर मुगल हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का नाम भी न ले सके और हिन्दुस्तान की सीमा तक न पहुँच सके। उन्हें इस्लामी सेना के भय से ठीक से नींद भी न आती थी और वे स्वप्न में भी इस्लामी सैनिकों की तलवारें देखा करते थे। देहली तथा राज्य के अन्य प्रदेशों से मुगलों के भय का अन्त होगया। चारों ओर शान्ति तथा अमन होगया। जिस मार्ग से मुगल आक्रमण किया करते थे उस ओर की प्रजा निश्चिंत होकर खेती करने लगी। सुल्तान तुगलक शाह, जो उस समय गाजी मलिक कहा जाता था, तथा खुरासन एवं हिन्दुस्तान में जिसके नाम का डंका बजता था, कुत्बी राज्य के अन्त तक द्यूपालपुर तथा लाहौर की अक्ता में मुग़लों के लिये चीन की दीवार बना रहा था।

(३२३) वह भूतपूर्व शेर खाँ के स्थान पर समझा जाता था। वह शीत ऋतु में प्रत्येक वर्ष अपनी खास सेना लेकर द्यूपालपुर से निकलता और मुगलों की सीमा तक धावे मार कर उनको पूर्णतया भयभीत कर देता था। मुग़लों को इतना साहस भी न हो सकता था कि वे अपनी सीमा पर भ्रमण के लिये भी जा सकें। उसे इस सीमा तक सफलता प्राप्त होगई थी कि न किसी के हृदय में मुग़लों का भय ही शेष रह गया था और न कोई मुगलों का नाम ही लेता था।

इस प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन ने मुगलों को तहस-नहस कर दिया और मुग़लों के आक्रमण का मार्ग पूर्णतया बन्द होगया तथा बाजार के भाव सस्ते हो जाने के कारण सेना दृढ़ हो गई और चारों ओर राज्य के प्रदेशों में विश्वास के योग्य मलिकों तथा निष्कपट दासों ने समस्त प्रदेश सुव्यस्थित कर दिये। विरोधी तथा विद्रोही आज्ञाकारी बन गये, सुल्तानी ख़िराज भूमि की नाप के अनुसार तथा करही और चराई की अदायगी समस्त प्रजा के हृदय में बठ गई। विद्रोह, लम्पटपन तथा व्यर्थ की बातें करना लोगों के हृदय से निकल गया। राज्य की विशेष तथा साधारण प्रजा निश्चिन्त होकर अपने अपने कार्यों में लग गई।

रणथम्बोर, चित्तौड़, मन्डल खेड, धार, उज्जैन, माँदुखर, अलाईपुर, चन्देरी, एरिज, सिवाना तथा जालौर, जिनकी गणना सुव्यस्थित प्रदेशों में न होती थी, वालियों तथा मुक़्तों के सिपुर्द होगये। गुजरात की इक़लीम अली ख़ाँ को, मुल्तान तथा सिविस्तान ताजुलमुल्क काफ़ूरी को, द्यूपालपुर ग़ाज़ी मलिक तुग़लक शाह को, सामाना व सुनाम मलिक आखुरबक तातक को, धार व उज्जैन ऐनुलमुल्क मुल्तानी को, झायन फख़रुलमुल्क मैसरती को, चित्तौड़ मलिक अबू मुहम्मद को, चन्देरी तथा ऐरिज मलिक तमर को, बदायूँ व कोयला व कर्क मलिक दीनार

शहनएपील को, अवध मलिक बकतन को, कड़ा मलिक नसीरुद्दीन सौतलया को प्रदान किये गये। कोल, बरन, मेरठ, अमरोहा, अफ़ग़ानपुर, काबीर तथा दुआब के सभी प्रदेश एक गाँव के समान एक आज्ञा का पालन करने लगे तथा ख़ालसे में सम्मिलित होगये और सेना के वेतन के लिये सुरक्षित कर दिये गये।

(३२४) समस्त कर दाँग से दिरहम तक राजकोष में लाया जाता था और वहाँ से सेना के वेतन में तथा कारख़ानों के चलाने में ख़र्च होता था। सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने राज्य को इस प्रकार सुव्यवस्थित कर दिया था कि उस की राजधानी से दुराचार तथा व्यभिचार का पूर्णतया अन्त हो गया था। राज्य के प्रदेशों के मार्ग इस प्रकार सुरक्षित हो गये थे कि मुक़द्दम तथा ख़ूत मार्ग पर खड़े रहते और यात्रियों तथा व्यापारियों की रक्षा किया करते थे। यात्री माल व असबाब नक़दी तथा अन्य सामग्री लिये हुये जंगलों तथा मैदानों में पड़े रहते थे। उसने राज्य को इस प्रकार सुव्यवस्थित कर दिया था कि राज्य की सभी बुरी बातें, राज्य के अच्छे बुरे मामले उस तक पहुँचते रहते थे, तथा राज्य की कोई अच्छी बुरी बात उससे छिपी न रहती थी। उसकी कठोरता, सख़्ती, भय और डर राज्य के समस्त साधारण तथा विशेष व्यक्तियों के हृदय में बैठ गये थे। सर्वसाधारण के हृदय उसकी बादशाही से सन्तुष्ट हो गये थे। उसने राज्य की जड़ें इस प्रकार दृढ़ करदी थीं कि उन्हें देखकर किसी के हृदय में भी यह शंका न होती थी कि राज्य उसके वंश से इतने शीघ्र दूसरे वंश में चला जायगा। संसार में उसके भाग्य तथा इक़बाल द्वारा उसे इतनी सफलता प्राप्त हो गई थी कि राज्य के सभी कार्य उसकी इच्छानुसार पूरे होते थे। उसकी योजनायें चाहे वह समझकर और चाहे बिना समझे बूझे उनमें हाथ डालता, सफल होती रहती थीं। सुल्तान अलाउद्दीन की राज्य व्यवस्था की सफलता को उसका चमत्कार समझा जाता था। सेना की विजय तथा सफलता के विषय में जो बातें वह कहा करता था, उनके बारे में यह प्रसिद्ध था कि वे कश्फ़[1] तथा करामत (चमत्कार) द्वारा की जाती हैं।

शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया तथा अलाउद्दीन की सफलता

(३२५) धर्म तथा राज्य की जानकारी रखने वाले एवं भगवान् के निर्णय को भलीभाँति समझने की योग्यता रखने वाले, जो कि भविष्य की भी सर्वदा चिन्ता किया करते हैं और जिनका धर्म में विश्वास पृथ्वी तथा आकाश की गति से भी दृढ़ होता है, सुल्तान अलाउद्दीन की विजयों तथा सफलताओं को देखकर कहा करते थे कि जो भी विजय तथा सफलता इस्लामी पताकाओं को प्राप्त हुई, जो भी प्रजा के महत्वपूर्ण कार्य आयोजित हुये, जो भी राज्य व्यवस्था तथा शासन सम्बन्धी बातें उसके राज्य में दृष्टिगोचर हुई, वे सब की सब शेख़ुल इस्लाम निज़ामुद्दीन ग़यासपुरी के आशीर्वाद का प्रमाण हैं, कारण कि वे भगवान् के प्रिय तथा मित्र हैं। भगवान् की कृपा तथा दया की वर्षा सर्वदा उनके शीश पर हुआ करती थी। उनके शुभ व्यक्तित्व के आशीर्वाद से, कारण कि वे हमेशा भगवान् के ध्यान में लीन रहा करते थे, अलाई राज्य-काल के मनुष्यों की हार्दिक इच्छायें सर्वदा पूरी होती रहती थी। इस्लामी पताकाएँ आकाश से प्रत्येक समय विजय तथा सफलता प्राप्त करके बलन्द होती रहती थीं अन्यथा सुल्तान अलाउद्दीन का इतने पाप, हत्या, अत्याचार, रक्तपात तथा ज़ुल्म करने के कारण कश्फ़ तथा करामत से कोई सम्बन्ध हो ही न सकता था। प्रजा को शान्ति तथा इत्मिनान एवं उसका नाना प्रकार के कष्टों से सुरक्षित रहना, शेख़ निज़ामुद्दीन की इबादत के आशीर्वाद से सम्भव हो सका था। इस प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन को सफलता प्राप्त होती रहती थी।

---

१. सूफ़ियों के चमत्कार एवं दैवी प्रेरणा।

दक्षिण पर आक्रमण

सुल्तान अलाउद्दीन की सुव्यवस्था के उल्लेख से इस इतिहास के संकलन कर्ता का ध्येय यह है कि सुल्तान जब राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध की समस्याओं से निश्चिन्त हो गया और प्रत्येक दिशा में शासन सम्बन्धी सभी कार्यों में उसको इच्छानुसार सफलता प्राप्त हो गई, सीरी का क़िला निर्मित हो गया और सीरी सुव्यवस्थित तथा आबाद हो गई, तो सुल्तान अलाउद्दीन जहाँगीरी (दिग्विजय) की तैयारियाँ करने लगा।

(३२६) उसने सेना को सुव्यवस्थित किया। मुगलों की रोकथाम के लिये जो सेना तैयार की गई थी उससे पृथक् एक अन्य सेना रायों, दूसरे इक़्लीमों के ज़मादारों के विनाश तथा दक्षिणी राज्यों के राज्य से हाथी एवं धन सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए तैयार की गई।

पहली बार मलिक नायब काफ़ूर हज़ार दीनारी को अमीरों और मलिकों के साथ सायबाने लाल (लाल चत्र) देकर देवगीर की ओर भेजा गया। ख्वाजा हाजी नायब अर्ज़े ममालिक को सेना के प्रबन्ध तथा लूट की धन सम्पत्ति, हाथी आदि को लाने के लिये उसके साथ रवाना किया गया। सुल्तान अलाउद्दीन के अपनी मलकी के समय में देवगीर पर आक्रमण करने के उपरान्त कोई भी सेना देहली से देवगीर की ओर रवाना न की गई थी। रामदेव ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया था। कई वर्षों से उसने सुल्तान अलाउद्दीन के पास देहली में कोई कर न भेजा था। मलिक नायब एक सेना तैयार करके उस ओर गया। देवगीर को विध्वंस कर दिया। रामदेव तथा उसके पुत्रों को बन्दी बना लिया। उसका ख़ज़ाना तथा १७ हाथी अपने अधिकार में कर लिये। सेना को लूट द्वारा अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। देवगीर से विजय पत्र देहली को प्रेषित किया गया और मिम्बरों (मस्जिदों के मंच) के ऊपर से पढ़ा गया। ख़ुशी के नक़्क़ारे बजाये गये। मलिक नायब देवगीर से विजय तथा सफलता प्राप्त करके रामदेव एवं उसकी धन सम्पत्ति और ख़ज़ाने तथा हाथियों को लेकर देहली पहुँचा। जो कुछ लाया वह राज-सिंहासन के सम्मुख पेश किया। सुल्तान अलाउद्दीन ने रामदेव का बड़ा आदर सम्मान किया। उसको चत्र तथा रायरायों की पदवी प्रदान की। उसे एक लाख तनके दिए। उसे तथा उसके पुत्रों एवं लावलश्कर को बड़े आदर और सम्मान से देवगीर की ओर लौटा दिया। देवगीर उसको वापस कर दिया। उस तिथि से रामदेव आजीवन सुल्तान अलाउद्दीन का आज्ञाकारी बना रहा, और उसका कभी विरोध न किया। हमेशा उसकी आज्ञानुसार जीवन व्यतीत करता रहा। शहर देहली में बराबर उपहार तथा कर भेजता रहा।

(३२७) ७०९ हिजरी[1] (१३०९-१० ई०), में सुल्तान अलाउद्दीन ने फिर मलिक नायब को सायबाने लाल (लाल चत्र) देकर बड़े-बड़े मलिकों, अमीरों और बहुत बड़ी सेना के साथ अरंगल की ओर भेजा[2]। उसे आदेश दिया कि आरंगल के क़िले पर अधिकार जमाने के लिये वह ख़ूब ख़ज़ाना, जवाहरात, हाथी-घोड़े प्रदान करे। तत्पश्चात् अन्य वर्षों में धन तथा हाथी स्वीकार करे। किसी कार्य में जल्दी न करे और अत्यधिक वसूल करने का प्रयत्न न करे। लुद्दर देव को अपने पास बुलाने अथवा अपनी शक्ति व नाम के कारण देहली लाने का प्रयत्न न करे और उसे आदर सम्मान प्रदान किये जाने का लालच देकर देहली लाने पर

---

१. पुस्तक में ६०६ हिजरी लिखा है। किन्तु यह ७०६ हिजरी हो सकता है।

२. इससे पूर्व सुल्तान ने एक बहुत बड़ी सेना बंगाल के मार्ग से आरंगल पर चढ़ाई करने के लिए भेजी थी किन्तु वह असफल रही और बहुत बुरी दशा में वापस आ गई थी। ७०६ हि० में दूसरी बार मलिक नायब को एक बहुत बड़ी सेना देकर देवगीर के मार्ग से भेजा गया (तारीखे फरिश्ता पृ० ५१८)

बल न दे। उसे आदेश दिया कि, 'तू अन्य स्थान को जारहा है। वहाँ देर तक न रुकना। देहली के मलिकों तथा अमीरों से व्यवहार करने में मध्य का मार्ग ग्रहण करना। उनके साथ नैतिकता का व्यवहार करना। सेना के सरदारों की प्रतिष्ठा तथा सम्मान का ध्यान रखना। जो बड़ा कार्य करना वह ख्वाजा हाजी तथा अन्य बड़े-बड़े अमीरों के परामर्श बिना न करना, सेना पर कृपा तथा दया रखना। व्यर्थ में कठोरता न दिखाना। तू दूसरों की इकलीम (राज्य) में जारहा है। देहली से वह इक़लीम बहुत दूर है। इस बात का प्रयत्न करते रहना, कि कोई बात या कार्य तुझसे ऐसा न हो जाय जिससे कि उपद्रव उठ खड़ा हो। सैनिकों के अपराधों तथा अपहरण पर भी कोई ध्यान न देना। अमीरों, गण्य मान्य व्यक्तियों, सिपहसालारों और सेना के अधिकारियों के साथ इस प्रकार नम्र व्यवहार न करना कि वे अशिष्ट होजायें और तेरी आज्ञाओं का उल्लंघन करने लगें, और न इतनी कठोरता दिखलाना कि वे तेरे शत्रु होजायें। सेना के सरदारों की अच्छी बुरी बातों से असावधान न रहना, अमीरों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों को एक दूसरे से मिलने तथा एकत्रित होने से रोकते रहना। सोने तथा चाँदी के अतिरिक्त लूट के माल का पाँचवाँ हिस्सा प्रदान करने में कमी न करना। यदि कुछ अमीर कोई घोड़ा अथवा दास लाकर तेरे सामने पेश करें और वह तुझसे मांगें तो उसे प्रदान कर देना। यदि मलिक तथा अमीर अपने एवं अपनी सेना के लिये तुझसे उधार मांगें तो उनसे लिखवाकर उधार दे देना।"

(३२८) "जिस किसी अमीर, प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा सैनिक का घोड़ा युद्ध में मारा जाय या कोई उसे चुरा ले जाय या वह बेकार हो जाय तो अमीरों तथा मलिकों को उनके घोड़ों की अपेक्षा कहीं अच्छा घोड़ा उन्हें अपने अस्तबल से प्रदान कर देना। ख्वाजा को आदेश दे देना कि सैनिकों के घोड़ों के नष्ट तथा बेकार हो जाने के उपरान्त दीवाने अर्ज़ के कार्यालय से घोड़े दे दिये जायें। इस प्रकार घोड़ा देना जहाँदारी (राज्य व्यवस्था) के लिए आवश्यक है।

मलिक नायब तथा ख्वाजा हाजी को सुल्तान ने विदा किया। वे मलिक नायब की अक्ता राबरी के क़स्बे में गये। वहां सेना एकत्रित की। वहाँ से लगातार कूच करते हुये देवगीर तथा अरंगल की ओर रवाना हुये। हिन्दुस्तान के मलिक तथा अमीर अपने सवार एवं प्यादों को लेकर चन्देरी में मलिक नायब से मिले। उस स्थान पर सेना का अर्ज़ (निरीक्षण) हुआ। उस स्थान से मलिक नायब आसपास की सेनाओं को लेकर देवगीर पहुंचा। रायरायाँ रामदेव ने इस्लामी सेना का स्वागत किया। मलिक नायब को नाना प्रकार के उपहार भेंट किये। मलिकों तथा अमीरों को भी यादगार के रूप में चीजें दीं। जब सेना देवगीर की सीमा को पार कर रही थी रामदेव प्रत्येक दिन सायाबाने लाल (लाल चत्र) के सामने उपस्थित होकर जमीन बोस करता था। जिस समय इस्लामी सेना देवगीर की सीमा में प्रविष्ट हुई थी, रामदेव ने अधीनता सम्बन्धी सभी क्रियाओं पर विशेष आचरण किया। मलिक नायब तथा समस्त मलिकों एवं अमीरों के लिये अपने राज्य को देखते हुए भोजन तथा अन्य सामग्री जिसका वह प्रबन्ध कर सकता था, उसका प्रबन्ध किया। सुल्तानी कारखानों में अपने कारखानों से नाना प्रकार की वस्तुयें भेजी। प्रत्येक दिन अपने मुक़द्दमों को लेकर सायबाने लाल के सामने उपस्थित रहता और अधीनता प्रकट करते हुए समस्त प्रबन्ध करता। देवगीर का समस्त बाज़ार सैनिकों के लिये खुलवा दिया था। बाज़ार वालों को चेतावनी देदी कि समस्त सामग्री तथा लश्कर की आवश्यकता की वस्तुएँ सस्ते भाव पर बेची जायँ। कुछ दिन तक सेना देवगीर के आसपास के स्थानों में ठहरी और सुव्यवस्थित हुई। रामदेव ने अपने सभी आदमियों को तिलंग के मार्ग के सभी क़स्बों में भेज दिया, जिससे वे देवगीर की सीमा तक

की सभी मंज़िलों पर भोजन सामग्री अनाज तथा अन्य वस्तुयें एकत्रित करदें। यदि सेना के सामान रखने की कोई रस्सी भी खो जाय तो उसका उत्तर उन्हें देना होगा।

(३२९) वे उसी प्रकार आज्ञाकारी बने रहें जिस प्रकार देहली की प्रजा आज्ञा का पालन करती है। लश्कर का कोई व्यक्ति यदि पीछे रह जाय तो उसे अपनी सीमा से आराम के साथ लश्कर में पहुँचा दें। रामदेव ने मरहठा लश्कर के कुछ सवार तथा प्यादे सायबाने लाल (लाल चत्र) के साथ नियुक्त कर दिये थे और स्वयं मलिक नायब को कुछ मंज़िल पहुँचा कर विदा करने के उपरान्त वापस हुआ। सेना के बुद्धिमान् तथा अनुभवी लोग रामदेव की राजभक्ति, आज्ञाकारिता तथा निष्कपटता को देख-देखकर कहते थे कि उच्च कुल तथा उच्च वंश वाले इसी प्रकार का व्यवहार करते हैं जिस प्रकार रामदेव ने किया।

मलिक नायब ने तिलंग की सीमा पर पहुँच कर आसपास के क़स्बों तथा देहातों को विध्वंस कर दिया। उन स्थानों के रायों तथा मुक़द्दमों ने इस्लामी सेना की लूटमार देखकर मार्ग के सभी क़िले छोड़ दिये और अरंगल पहुंच कर क़िले में घुस गये। अरंगल का मिट्टी का क़िला बहुत लम्बा चौड़ा था। उसमें अरंगल के कार्य कुशल लोग निवास करने लगे। राय मुक़द्दम तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों, हाथियों तथा धन सम्पत्ति को लेकर पत्थर के बने हुये क़िले में घुस गया। मलिक नायब ने मिट्टी के क़िले को घेर लिया। प्रत्येक दिन बाहर तथा भीतर के लोग भीषण युद्ध करते थे। दोनों ओर से संगे मग़रबी (मग़रबी पत्थर) फेंके जाते थे और दोनों ओर के लोग घायल होते जाते थे। कुछ दिन इसी प्रकार व्यतीत हुये। तत्पश्चात् इस्लामी सेना के वीर तथा योद्धा, सीढ़ियाँ तथा कमन्दें लगा लगाकर चिड़ियों की भाँति मिट्टी के क़िले की गुमटियों पर जो कि पत्थर की गुमटियों से भी दृढ़ थीं, पहुंच गये। तलवार, तीर, भालों और कटारों से अन्दर वालों से युद्ध करके मिट्टी के क़िले वालों का दिमाग़ ठंडा कर दिया और क़िले पर अधिकार जमा लिया। क़िले के भीतर के लोगों के लिये संसार को चींटी की भी आँख से अधिक सीमित बना दिया।

(३३०) लुद्दर देव ने देखा कि सब काम बिगड़ गया है। पत्थर का क़िला भी ख़तरे में था। उसने प्रतिष्ठित ब्राह्मणों तथा प्रसिद्ध भाटों को अत्यधिक उपहार देकर मलिक नायब की सेवा में भेजा और उससे सन्धि की याचना की। यह शर्त निश्चित की गई कि वह सभी ख़ज़ाना, हाथी घोड़े, जवाहरात और बहुमूल्य वस्तुएं जो कि वर्त्तमान हैं, उपस्थित कर देगा। प्रत्येक वर्ष निश्चित धन, सम्पत्ति तथा हाथी, सरकारी ख़ज़ाने में तथा हाथी ख़ाने में देहली भेजा करेगा। मलिक नायब ने उससे सन्धि करली, और पत्थर के क़िले पर अधिकार न जमाया। वर्षों का एकत्रित किया हुआ ख़ज़ाना १०० हाथी, ७ हज़ार घोड़े, जवाहरात तथा बहुमूल्य वस्तुएँ लुद्दर देव से प्राप्त कीं और उससे लिखवा लिया कि वह भविष्य में धन सम्पत्ति तथा हाथी भेजा करेगा।

सन् ७१० हिजरी (१३१०-११ ई०) के आरम्भ में वह उपर्युक्त लूट का माल लेकर अरंगल से वापस हुआ और लौटते समय देवगीर धार तथा झायन होता हुआ देहली पहुंचा। अपने पहुंचने के पूर्व सुल्तान अलाउद्दीन की सेवा में अरंगल के विजय पत्र भेज दिये। वह विजय पत्र मिम्बरों (मस्जिदों के मंच) पर पढ़ा गया। ख़ुशी के नक़्क़ारे बजाये गये, सुल्तान ने मलिक नायब के पहुँचने के उपरान्त बदायूं द्वार के सामने के मैदान में चौतर-ए-नासिरी[1] पर दरबार किया। मलिक नायब जो सोना, जवाहरात, हाथी, घोड़े तथा बहुमूल्य वस्तुएँ लाया था, वह सुल्तान के सम्मुख पेश की गईं। शहर के निवासियों ने सभी चीज़ों के दर्शन किये।

१. यह बदायूं दरवाज़े के निकट स्थित था (तारीखे फ़रिश्ता पृ० ११९)

जिस समय मलिक नायब अरंगल के मिट्टी के क़िले पर एक दो महीने तक अधिकार जमाने में लगा हुआ था और मार्ग के एक दो थाने हाथ से निकल गये थे तथा सेना का मार्ग बन्द हो गया था, और लश्कर से देहली में कोई दूत समाचार अथवा ख़बर न पहुँच सकी, तो सुल्तान बड़ा चिन्तित हुआ। सुल्तान ने लश्कर की खैरियत के समाचार शेख निजामुद्दीन से कश्फ़ (दैवी प्रेरणा) तथा करामत (चमत्कार) द्वारा बताने की याचना की। सुल्तान का यह नियम था कि जब कभी भी वह देहली से किसी ओर कोई सेना भेजता तो वह तिलपट से, जो कि पहली मंजिल है, उस स्थान तक, जहाँ कि सेना जाती थी, जहाँ जहाँ भी थाने स्थापित करना सम्भव होता, थाने स्थापित कर देता था।

(३३१) प्रत्येक मंजिल पर दूतों के लिये घोड़ों का प्रबन्ध कर दिया जाता था। पूरे मार्ग में आधे-आधे कोस तथा चौथाई कोस पर धावा करने वाले नियुक्त किये जाते। मार्ग के क़स्बों में से प्रत्येक में और उन स्थानों मे जहाँ दूतों के लिये घोड़ों का प्रबन्ध होता, पदाधिकारी तथा समाचार लिखने वाले नियुक्त रहते। उनके द्वारा रोज़ाना, दूसरे और तीसरे दिन, यह समाचार सुल्तान को मिलता रहता था कि सेना क्या कर रही है तथा सुल्तान की कुशलता के समाचार सेना वालों को पहुँचते रहते थे। इस कारण न तो शहर में और न सेना में किसी प्रकार की कोई अफ़वाह फैल सकती थी। सेना तथा सुल्तान की कुशलता के समाचारों का एक दूसरे को मिलते रहना बड़ा लाभप्रद था। जिस समय मलिक नायब अरंगल के मिट्टी के किले पर अधिकार जमाने में लगा था, तिलंग के मार्ग बन्द हो गये थे। कुछ थाने नष्ट हो गये थे। ४० दिन से अधिक व्यतीत हो जाने पर भी सुल्तान अलाउद्दीन को सेना की कुशलता तथा अन्य समाचार न प्राप्त हुए। सुल्तान बड़ा चिन्तित रहने लगा। बुज़ुर्गों तथा शहर के प्रतिष्ठित एवं गण्यमान्य लोगों को शंका होने लगी कि सेना पर कोई बड़ी दुर्घटना पड़ गई है जिससे कोई समाचार प्राप्त नहीं हो रहा है। इसी अवस्था में सुल्तान ने मलिक क़िराबेग तथा क़ाजी मुग़ीसुद्दीन बयाना को शेख निज़ामुद्दीन के पास भेजा, और उनसे कहा कि शेख निज़ामुद्दीन को मेरा सलाम पहुँचाने के उपरान्त कहना कि, "मेरा हृदय इस्लामी सेना के विषय में कोई समाचार न मिलने से बड़ा चिन्तित है। आपको मुझसे अधिक इस्लाम की चिन्ता है। यदि नूरेबातिन[१] से आपको सेना का कुछ हाल ज्ञात हुआ हो तो उसके सम्बन्ध में मुझे भी सूचित करने का कष्ट करें। सुल्तान ने संदेशा ले जाने वालों से कहा कि "संदेशा पहुँचाने के उपरान्त शेख की जबान से जो बात या समाचार सुनो वह उसी प्रकार तुरन्त मुझे बतादो। उसमें कुछ घटाओ बढ़ाओ नहीं।" वे दोनों शेख की सेवा में गये और सुल्तान का संदेशा पहुँचाया।

(३३२) शेख ने सुल्तान का संदेशा सुनने के उपरान्त बादशाह की विजय तथा सफलता के समाचार उनको सुनाये। संदेशा लाने वालों से कहा कि इस विजय का तो कोई मूल्य ही नहीं, किन्तु मुझे अन्य विजयों की आशा है। मलिक क़िराबेग तथा क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन ख़ुश ख़ुश शेख की सेवा से लौट कर सुल्तान के पास पहुँचे और शेख से जो कुछ सुना था सुल्तान के सम्मुख ब्यान किया। सुल्तान अलाउद्दीन शेख की यह बात सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ और समझ गया कि अरंगल पर वास्तव में विजय प्राप्त हो गई है, और मेरी महत्वाकांक्षायें पूरी हो गई। अपनी पगड़ी अपने हाथों में लेकर पगड़ी के एक कोने में गाँठ लगाई, और कहा कि मैंने शेख की बात से फ़ाल (शगुन) निकाली है। मैं समझता हूँ कि शेख की ज़बान से कोई असत्य बात नहीं निकल सकती। अरंगल पर विजय प्राप्त हो गई हैं। हमें दूसरी विजयों पर भी ध्यान रखना चाहिये। भगवान् की कृपा से उसी दिन दूसरी नमाज़

---

१. हृदय का प्रकाश अर्थात भगवान की ओर से प्रेरणा।

के समय (सन्ध्या के पूर्व की नमाज़) मलिक नायब के दूत पहुँच गये और उन्होंने अरंगल का विजय-पत्र पेश किया। जुमे के दिन विजय-पत्र मिम्बरों (मस्जिद के मंच) पर पढ़ा गया और शहर में ख़ुशी के नक़्क़ारे बजाये गये, ख़ुशियाँ मनाई गईं। सुल्तान का शेख़ की प्रतिष्ठा तथा चमत्कारों में विश्वास बढ़ गया। यद्यपि सुल्तान अलाउद्दीन की शेख़ निज़ामुद्दीन से कभी भेंट न हुई थी, किन्तु सुल्तान ने अपने समस्त राज्य-काल में कोई बात ऐसी न कही जिससे शेख़ रुष्ट होते। यद्यपि शेख़ के शत्रु तथा उनसे ईर्ष्या रखने वाले शेख़ के दान-पुण्य, लोगों के शेख़ के पास बहुत बड़ी संख्या में आने जाने तथा भोजन आदि पाने के समाचार सुल्तान के कानों तक पहुँचाते रहते थे किन्तु उसने शेख़ के शत्रुओं तथा उनसे ईर्ष्या रखने वालों की बात पर कभी ध्यान न दिया। अपने राज्यकाल के अन्त में वह शेख़ का बहुत बड़ा भक्त हो गया था किन्तु फिर भी दोनों में भेंट न हुई[1]।

(३३३) ७१० हिजरी, (१३१०–११ ई०) के अन्त में सुल्तान अलाउद्दीन ने मलिक नायब को एक सुव्यवस्थित सेना देकर घोरसमुद्र तथा माबर की ओर रवाना किया। मलिक नायब तथा ख़्वाजा हाजी नायब अर्ज़ सुल्तान से शहर (देहली) में विदा हुये। राबड़ी पहुंच कर सेना एकत्रित की और कूच करते हुये देवगीर पहुँचे। रामदेव नरक में पहुँच चुका था। देवगीर से मलिक नायब कूच करता हुआ घोर समुद्र की सीमा तक पहुँच गया। पहले ही आक्रमण में घोरसमुद्र का बलाल राय इस्लामी सेना द्वारा पराजित हुआ। घोरसमुद्र विजय हो गया। ३६ हाथी तथा घोर समुद्र के सभी ख़ज़ाने पर अधिकार जमा लिया गया। विजय पत्र देहली भेज दिये गये। मलिक नायब ने घोरसमुद्र से माबर पर चढ़ाई की और वहाँ पहुंच कर माबर पर भी विजय प्राप्त करली। माबर के सोने के मन्दिर को विध्वंस कर दिया। सोने की मूर्तियां जिन्हें वर्षों से उस स्थान के हिन्दू अपना भगवान् मानते थे, तुड़वा डालीं। मन्दिर की सब धन सम्पत्ति, जड़ाऊ तथा सोने की मूर्त्तियों के टुकड़े बहुत बड़ी सख्या में सेना के ख़ज़ाने में दाख़िल हो गये। माबर दो रायों के अधीन था। माबर के उन दोनों रायों के समस्त हाथी तथा ख़ज़ाने पर अधिकार जमा लिया गया[2]। तत्पश्चात वह

१. सुल्तान नित्य शेख़ के पास दूत तथा पत्र भेजा करता था। इस प्रकार वह अपनी भक्ति का प्रदर्शन करता और शेख़ की आत्मा की शक्ति से सहायता की याचना किया करता था। (तारीख़े फ़रिश्ता पृ० ११६)

२. मलिक नायब ने बिलाल देव राजा कर्नाटक को बन्दी बना लिया और उसके राज्य को विध्वंस कर दिया। मन्दिरों को तुड़वा डाला। समस्त जड़ाऊ मूर्तियों पर अधिकार जमा लिया। एक छोटी सी चूने तथा पत्थर की मस्जिद बनवायी जिसमें अज़ान दी गई और अलाउद्दीन के नाम का ख़ुत्बा पढ़ा गया। यह मस्जिद अब भी सेतु बन्द रामेश्वर में वर्तमान है।''' एक रात को जिसके अगले दिन सेना प्रस्थान करने वाली थी, ब्राह्मणों के बीच में एक मन्दिर के नीचे गड़े हुये धन के बाटने के विषय में झगड़ा हो गया। लोगों ने चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया। एक मुसलमान को इस झगड़े का हाल ज्ञात हो गया। उसने कोतवाल को सूचना करदी। वह सब को बन्दी बनाकर मलिक नायब के पास ले गया। ब्राह्मणों ने दण्ड के भय से समस्त धन सम्पत्ति दे दी और उसके अतिरिक्त जंगल में गडे हुये छः अन्य ख़ज़ानों का पता बता दिया। मलिक नायब सब धन सम्पत्ति हाथियों पर लदवा कर माबर पहुँचा। वहाँ के मन्दिरों का विनाश कर के कई क़र्नों की धन सम्पत्ति प्राप्त करके ७११ हि० में देहली पहुँचा। ३१२ हाथी, २०,००० घोड़े, ९६ मन सोना जो लगभग दस करोड़ तनकों के बराबर था, तथा असंख्य सोने और मोती के सन्दूक़ सीरी के कूश्के हज़ार सुतून में बादशाह के सामने पेश किये। बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने अमीरों को दस-दस और पाँच-पाँच मन सोना दिया। आलिमों सूफ़ियों तथा आवश्यकता ग्रस्त लोगों को उनकी श्रेणी के अनुसार एक-एक और आधा-आधा मन सोना प्रदान किया। शेष सोने की अलाई मुहरें बनवा डालीं। मलिक नायब की कर्नाटक की विजय में किसी ने भी चाँदी का उल्लेख नहीं किया है। ऐसा ज्ञात होता है कि उस प्रदेश में चाँदी का कोई मूल्य न था। उस प्रदेश में लोग अब भी सोने का प्रयोग करते हैं। वहाँ के फ़क़ीर भी चाँदी के आभूषण पहनने में अपना अपमान समझते हैं। लोग अधिकतर सोने के बर्तनों में भोजन करते हैं। (तारीख़े फरिश्ता ११९, १२०)

विजय तथा सफलता प्राप्त करके वहाँ से वापस हुआ। अपने पहुंचने के पूर्व माबर की विजय के पत्र सुल्तान की सेवा में भेज दिये।

७११ हिजरी, (१३११ ई०) के आरम्भ में, मलिक नायब ६१२ हाथी, ९६ हज़ार मन सोना, मोती तथा जवाहरात के बहुत से सन्दूक़ एवं २० हज़ार घोड़े लेकर देहली पहुंचा। इस समय मलिक नायब ने लूट का लाया हुआ माल भिन्न-भिन्न अवसरों पर सीरी के राज-भवन में सुल्तान अलाउद्दीन के सम्मुख पेश किया। इस बार सुल्तान ने दो-दो, चार-चार, एक एक और आधा-आधा मन सोना मलिकों तथा अमीरों को प्रदान किया। देहली के सभी अनुभवी तथा वृद्ध इस बात से सहमत थे कि इतना और इस प्रकार की लूट का सामान, इतने हाथी तथा सोना जो कि माबर एवं धोरसमुद्र की विजय द्वारा देहली पहुंचा है, देहली की विजय से इस समय तक किसी युग तथा काल में न आया था। न तो किसी को इस बात की स्मृति है और न तो देहली के इतिहासों में से किसी में यह लिखा है कि इतना सोना और इतने हाथी कभी देहली आये थे।

(३३४) जिस वर्ष इतना सोना और हाथी धोरसमुद्र तथा माबर से मलिक नायब लाया उसी वर्ष तिलंग के राय लुद्दर देव ने २० हाथी अपने प्रार्थना पत्र के साथ शहर भेजे। लुद्दर देव ने सुल्तान अलाउद्दीन को प्रार्थना पत्र मे लिखा था कि "मैंने सुल्तानी सायबाने लाल के सामने जिस धन सम्पत्ति का वचन दिया था और जिसके विषय में मलिक नायब को लिखित रूप में दे दिया था, वह उपस्थित कर रहा हूं। यदि आज्ञा हो तो वह धन-सम्पत्ति देवगीर में, जिसके लिये फ़रमान हो, भिजवादी जाया करे। मैंने जो वचन दिया है तथा जो लिखित रूप मे दे चुका हूँ उस पर कार्यबद्ध रहूँगा।"

सुल्तान अलाउद्दीन के राज्य के अन्तिम वर्षों का वृतान्त

सुल्तान अलाउद्दीन के राज्य के अन्त में नाना प्रकार की विजयें प्राप्त हुई। उसके शासन सम्बन्धी कार्य उसकी इच्छानुसार पूरे हो गये किन्तु अन्त में भाग्य उससे फिर गया और उसकी क़िस्मत ठीक न रही। उसका चित्त एक दशा में न रहा। उसके पुत्र अनुशासन के बाहर हो गये और उन्होंने कुमार्ग पर चलना आरम्भ कर दिया। सुल्तान ने योग्य तथा अनुभवी वज़ीरों को पृथक् कर दिया। सोचना विचारना तथा लोगों से परामर्श करना पूर्ण-तया बन्द कर दिया। वह इस बात की इच्छा करने लगा कि समस्त अधिकार केवल एक घर में और उसी घर के दासों के हाथों में आ जायँ। राजनीति की सभी छोटी बड़ी बातें और राज्यव्यवस्था सम्बन्धी सभी कार्य केवल उसके आदेश द्वारा सम्पन्न हों। राज्यव्यवस्था में उसने इस प्रकार भूल करनी आरम्भ कर दी। पहले जैसे अरस्तू तथा बुज़र्चमेहर उसके पास न रहे जो कि उसकी अच्छाइयों और बुराइयों से उसे सूचित करते और उसके राज्य के हित की बातें उसे बताते।

नव मुसलमानों का विद्रोह

जिन वर्षों में सुल्तान मुग़लों के विनाश में लगा हुआ था उसी समय कुछ नव मुसलमान अमीरों ने जो कि वर्षों से बेकार थे और जिनकी रोटी इनाम तथा वेतन दीवानी द्वारा बन्द कर दी गई थी, अथवा कम हो गयी थी, षड्यन्त्र रचने लगे और व्यर्थ की योजनायें बनाने लगे।

(३३५) सुल्तान अलाउद्दीन को ज्ञात हुआ कि कुछ नव-मुसलमान अमीर अपनी दरिद्रता तथा अधिकार शून्यता के कारण एक दूसरे से मिल कर षड्यण्त्र रचते रहते हैं और सुल्तान के हित के विरुद्ध बातें किया करते हैं और कहा करते हैं कि प्रजा सुल्तान से परेशान हो गई

है । वह प्रजा से ज़बरदस्ती धन सम्पत्ति छीन कर अपने ख़ज़ाने में दाखिल कर लेता है । मदिरा पान, ताड़ी तथा अन्य नशे की वस्तुओं के सेवन की मनाही कर दी है। अपनी विलायतों (राज्य के प्रदेशों) से अत्यधिक कर वसूल करता है । प्रजा को बहुत ही कष्ट पहुँचा रक्खा है । यदि इस अवस्था में हम लोग विद्रोह कर दें तो सभी नव मुसलमान सवार जोकि हमारे भाई हैं, इस विद्रोह में हमारा साथ देंगे तथा सहायता करेंगे और मित्र हो जायेंगे । अन्य लोग भी हमारे विद्रोह से प्रसन्न हो जायेंगे । सभी सुल्तान अलाउद्दीन की निष्ठुरता, कठोरता तथा अत्याचार से मुक्त हो जायेंगे । उन थोड़े से अभागे विद्रोहियों ने विद्रोह करने की योजनायें बनानी प्रारम्भ कर दी । उन्होंने सोचा कि सुल्तान सैरगाह में केवल एक वस्त्र पहन कर बाज उड़ाया करता है । सैरगाह में देर तक रहता है । जिस समय वह बाज़ उड़ाया करता है सभी विश्वास पात्र बाज़ उड़ाने की लीला देखा करते हैं । किसी के हाथ में कोई अस्त्र शस्त्र नहीं होता । इस विषय की, कि उनके राज्य में विद्रोह हो जायगा, कोई चिन्ता नहीं करता । यदि नव मुसलमान सवारों में से २०० या ३०० तैयार होकर एकत्रित हो जायं और सैरगाह में आक्रमण करदें तो सम्भव है कि सुल्तान अलाउद्दीन तथा उसके विश्वास पात्रों का विनाश कर सकें । उनके षड्यन्त्र तथा उनकी योजनाओं का हाल सुल्तान को भी ज्ञात होगया ।

(३३६) उसने अपनी कठोरता, क्रूरता तथा निष्ठुरता के कारण और राज्य के हित के सामने धर्म, भाई चारे, पुत्र तथा किसी का भी ध्यान न रखने और दण्ड देते समय धर्म की आज्ञाओं की भी परवाह न करने और पिता तथा पुत्र के सम्बन्ध पर भी ध्यान न देने की वजह से आदेश दिया कि राज्य के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में जिस-जिस स्थान पर नव मुसलमान हों, उनकी एक ही दिन इस प्रकार हत्या करदी जाय कि इसके उपरान्त एक भी नव मुसलमान पृथ्वी पर जीवित न रहने पाये । उस आदेशानुसार जो कि निरंकुशता तथा अत्याचार से भरा था २०, ३० हज़ार नव मुसलमानों की जिनमें से अधिकांश को किसी बात की सूचना न थी हत्या करादी गई । उनके घरबार विध्वंस करा दिये गए । उनके स्त्री बच्चों का विनाश कर दिया गया ।

इससे पूर्व के वर्षों में इबाहती तथा बोधक शहर (देहली) में पैदा हो गए । सुल्तान अलाउद्दीन ने आदेश दिया कि विशेष पूछ ताछ करके सबको बन्दी बना लिया जाय । उन्हें कठोर दण्ड दिये जायें । दण्ड का आरा उनके सिरों पर चला दिया जाय । उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाय । उपर्युक्त दण्ड के उपरान्त किसी ने भी इबाहत का नाम भी न लिया । समस्त अलाई राज्यकाल में सेना वालों तथा राज्य के पदाधिकारियों की वीरता एवं साहस जिनके द्वारा उसका राज्य सुव्यवस्थित हो गया था, और उसकी राजनीति तथा राज्य व्यवस्था में जो रौनक़ पैदा हो गई थी उसका प्रदर्शन तीन प्रकार से होता था :

अलाई राज्य के सुव्यवस्थित होने के कारण

प्रथम इस प्रकार कि उलुगख़ाँ, नुसरत ख़ाँ, ज़फ़र ख़ाँ, अल्प ख़ाँ संकलन कर्त्ता का चचा मलिक अलाउलमुल्क, मलिक फ़ख़रुद्दीन जूना दादबक, मलिक असगरी सरदावतदार तथा मलिक ताजुद्दीन काफ़ूरी अलाई मलिकों में सर्वश्रेष्ठ थे । इनमें से प्रत्येक राज्य के बड़े-बड़े कार्यों के संचालन में अद्वितीय था । इस कारण कि वे सब सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या में उसके सहायक थे, उन्हें अलाई राज्य द्वारा अधिक लाभ प्राप्त न हुआ । तीन चार वर्ष के भीतर ही इनकी मृत्यु हो गई किन्तु वे इतने योग्य तथा कार्य कुशल थे कि एक ही धावे में बड़े-बड़े राज्यों तथा इक़्लीमों पर अधिकार जमा सकते थे और इनके परामर्श तथा इनकी राय से बड़े-बड़े विद्रोह शान्त हो सकते थे ।

(३३७) अलाई राज्य के सुव्यवस्थित होने का दूसरा कारण निम्नांकित पदाधिकारी तथा अलाई राज्य के अद्वितीय मलिक थे। मलिक हमीदुद्दीन तथा मलिक अइज़्ज़ुद्दीन जो अला-दबीर के पुत्र थे। उलुग़ ख़ाँ का दबीर मलिक ऐनुलमुल्क मुल्तानी, मलिक शरफ क़ानीनी, ख़्वाजा हाजी, मलिक हमीदुद्दीन नायब वकीलदर मलिक अइज़्ज़ुद्दीन दबीरे ममालिक, मलिक शरफ़ क़ानीनी नायब वज़ीर, ख़्वाजा हाजी नायब अर्ज़। उन चार प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा उपर्युक्त चारों दीवान जिन पर राज्य व्यवस्था तथा शासन नीति आधारित है, इस प्रकार सुव्यवस्थित हो गये थे कि उनकी तुलना किसी राज्य काल तथा युग से न हो सकती थी। यह कहना उचित है कि जिस प्रकार उन लोगों ने चारों दीवानों को सुव्यवस्थित कर दिया था उस प्रकार कोई अन्य न कर सकता था।

तीसरी बात जिससे चार पाँच वर्ष तक सुल्तान को कोई चिन्ता अथवा फ़िक्र न रही, वह उसका मलिक नायब पर आसक्त रहना था। उसने पेशवाइ-ए-मुल्क, उम्द-ए-मुल्क और देश के विश्वास पात्रों की ज़िम्मेदारी उस जैसे अयोग्य, माबून (गुदाभोग्य) हरामख़ोर तथा दुष्ट को प्रदान करदी थी। उसने उम्दतुल मुल्की का पद बहाउद्दीन दबीर को जो कि बड़ा मूर्ख था, प्रदान कर दिया। ख़्वाजा अलादबीर के पुत्रों, मलिक हमीदुद्दीन तथा मलिक अइज़्ज़ुद्दीन के अपने पद से वंचित कर दिये जाने तथा शरफ़ क़ानीनी की हत्या के उपरान्त दीवाने रिसालत, दीवाने विज़ारत तथा दीवाने इनशा के कार्यों में विघ्न पड़ गया। दीवाने अर्ज़ के अतिरिक्त तीनों अन्य दीवानों में से किसी दीवान की कोई प्रतिष्ठा शेष न रही। सुल्तान अलाउद्दीन की राजनीति सम्बन्धी कार्यों में तुच्छ लिपकों, शिक़दारों और साधारण अधिकारियों को उच्चपद प्रदान कर दिये जाने के कारण विघ्न पड़ गया। यद्यपि अलाई राज्य के अन्तिम वर्षों में मलिक क़ीरान अमीर शिकार तथा मलिक क़ीरा बेग उसके विश्वास पात्र हो गये थे किन्तु उन्हें कोई उच्च पद प्राप्त न हो सका था। वे केवल विश्वास पात्र ही थे।

सुल्तान अलाउद्दीन के गुण, चरित्र तथा कठोरता एवं निष्ठुरता

(३३८) सुल्तान में बड़े ही विचित्र प्रकार की आदतें थीं और वह बड़े विचित्र नियमों का पालन करता था। क्रोध, कठोरता, निरंकुशता, निर्दयता सुल्तान में स्वाभाविक रूप से पाई जाती थीं। उनके कारण वह दण्ड देते समय इस बात पर ध्यान न देता था कि कौनसी आज्ञा शरा के विरुद्ध है और कौनसी शरा के अनुकूल। किसी का सम्बन्धी होना या कोई अन्य बात उसे दण्ड देने से रोक न सकती थी। अपने विचार तथा शंका से जो आज्ञा वह अपराधियों के विषय में दे देता था उसी आज्ञा द्वारा बेगुनाहों तथा उन लोगों का भी बध करा देता था जिन्हें अपराध की कोई सूचना भी न होती थी। उस आतंक तथा कठोरता के कारण जो कि उसके मस्तिष्क में भर गई थी। उसके विश्वास पात्र तथा निकटवर्ती इस बात का साहस न कर सकते थे, कि किसी दरिद्र का प्रार्थना पत्र उसके सम्मुख पेश कर सकें। वे अपने भाइयों तथा पुत्रों की भी सिफ़ारिश न कर सकते थे। राज्य-व्यवस्था तथा प्रजा से सम्बन्धित कार्यों से अलाउद्दीन जो भी उचित समझता वह बिना किसी के परामर्श के कर डालता था। अपनी बादशाही के आरम्भ में वह अपने कुछ पुराने विश्वास पात्रों तथा राज्य-भक्त पदाधिकारियों से परामर्श किया करता था; किन्तु जब राज्य व्यवस्था का संचालन उसकी इच्छानुसार होने लगा तो वह असावधान तथा बदमस्त हो गया। लोगों से परामर्श करना तथा सलाह लेना पूर्णतया बन्द कर दिया। अनपढ़ होने के कारण वह समझने लगा था कि राज्य व्यवस्था तथा शासन सम्बन्धी कार्यों एवं शरा के आदेशों तथा शरा की बातों में कोई सम्बन्ध नहीं, और वे एक दूसरे से पृथक् हैं। शरई आज्ञाओं के पालन करने पर वह कोई ध्यान न देता था। नमाज़ रोज़े का न तो उसे कोई ज्ञान ही था और न जानकारी।

(३३९) उसे तक़लीदी इस्लाम[1] में साधारण लोगों के समान विश्वास था। वह बदमज़हबों तथा बद दीनों की भाँति न तो कोई बात कहता और न सुनता। अपने स्वभाव की कठोरता के कारण यदि किसी को कोई कष्ट तथा दुःख पहुँचा देता तो फिर उससे मेल करने की चिन्ता न करता और उसके घावों की परवाह न करता। उसे अपने राज्य का शत्रु समझता। जिन लोगों को वह कष्ट पहुँचाता, राज्य के बाहर निकाल देता या दण्ड देता या बन्दीगृह में डलवा देता, उन्हें पुनः कोई आशा न रहती थी। उसकी मृत्यु के उपरान्त कई हज़ार क़ैदियों तथा उन व्यक्तियों को जिन्हें राज्य के बाहर निकाल दिया गया था, उसके पुत्र सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने मुक्ति प्रदान की।

विद्वान्, अनुभवी तथा बुद्धिमान लोगों ने सुल्तान अलाउद्दीन के राज्यकाल में कुछ ऐसी विचित्र बातों का निरीक्षण किया था जिनके समान विचित्र बात किसी अन्य काल अथवा युग में न देखी गई। इसे उसकी समझ बूझ तथा भगवान् की सहायता का परिणाम कहा जा सकता है।

प्रथम विचित्र बात अनाज तथा जीवन सम्बन्धी अन्य सामग्रियों का सस्ता होना था कारण कि उनका भाव वर्षा होने अथवा न होने दोनों ही दशाओं में किसी प्रकार घटता बढ़ता न था। जब तक सुल्तान अलाउद्दीन जीवित रहा, सस्तेपन के स्थायी रूप से स्थापित रहने में कोई कमी न हो सकी। यह बात उस समय की विचित्र बातों में से कही जा सकती है।

दूसरी विचित्र बात सुल्तान अलाउद्दीन की विजय तथा सफलता थी। राज्य के शत्रुओं तथा विरोधियों एवं दूर की इक़लीमों पर जिस प्रकार उसने विजय प्राप्त की तथा उन्हें अपने अधिकार मे किया, उस प्रकार सफलता तथा विजय किसी युग में किसी अन्य को प्राप्त न हो सकी। उसके विरोधी तथा शत्रु उसकी इच्छानुसार या तो बन्दी बना लिये जाते थे या उनकी हत्या कर दी जाती थी। जिस प्रदेश अथवा क़िले पर उसकी सेना आक्रमण करती उसके विषय में ऐसा प्रतीत होता कि वे पहले ही से पराजित हो चुके हैं।

(३४०) अलाई राज्य काल की तीसरी विचित्र बात मुग़लों का विनाश तथा उन पर विजय थी। उनका इस प्रकार विनाश किसी अन्य राज्य काल में न हो सका। रण क्षेत्र में तथा दण्ड द्वारा जितने मुग़लों का हत्याकाण्ड तथा बन्दी बनाया जाना और रक्तपात उसके राज्य काल में हुआ, उतना किसी अन्य राज्य काल में सम्भव न हो सका।

चौथी विचित्र बात उसके राज्य काल के विषय में यह थी कि इतनी अधिक सेना, इतने कम वेतन पर किसी अन्य राज्य काल में न भरती हो सकी। यह बात न तो किसी इतिहास में लिखी है और न किसी को याद है कि इस प्रकार किसी अन्य राज्य काल में किसी ने भी इतनी बड़ी सुव्यवस्थित सेना भरती की हो, धनुष विद्या में इस प्रकार सेना की परीक्षा ली गई हो, तथा इस प्रकार घोड़ों का मूल्य निश्चित किया गया हो।

अलाई राज्य काल की पाँचवीं विचित्र बात, जो कि किसी अन्य राज्य काल में न देखी गई, यह थी कि विद्रोहियों तथा विरोधियों को क्षीण कर दिया गया था। आज्ञा का उल्लंघन करने वाले तथा विरोधी रायों एवं मुक़द्दमों को राज भवन के द्वार पर मत्था रगड़ने के लिए

१. तक़लीद का अर्थ, किसी बात का पालन करना है। तक़लीदी विश्वास का अर्थ यह है कि वह पूर्णतया उसी प्रकार आचरण करता था जिस प्रकार अन्य मुसलमान इस्लाम की बातों पर आचरण करते हैं और नवीन स्थिति में किसी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं समझते।

विवश कर दिया गया। प्रजा को इतना आज्ञाकारी बना लिया गया था कि वे अपनी स्त्रियों और बालकों को बेच डालते थे, किन्तु ख़िराज अदा कर देते थे। यात्रियों तथा व्यापारियों की दीपक लेकर रक्षा करते थे। इस प्रकार सफलता किसी अन्य राज्य काल में न प्राप्त हुई।

अलाई राज्य काल की छटी विचित्र बात यह थी कि राजधानी के चारों ओर के मार्ग पूर्णतया सुरक्षित थे। जो लोग लूटमार तथा डकैती किया करते थे, वे मार्गों के रक्षक बन गये थे। किसी भी यात्री के सामान की एक रस्सी भी न गुम होती थी। जितनी और जिस सीमा तक शान्ति उसके राज्य काल में विद्यमान थी उतनी किसी अन्य राज्यकाल में न देखी गई।

सातवी विचित्र बात, जो कि सभी विचित्र बातों से विचित्र है, यह थी कि बाज़ार वाले ठीक तोलते और ठीक तरह से सरकारी भाव पर सभी चीजें बेचते थे। बाज़ार वालों को ठीक करना सभी कार्यों से कठिन है। किसी बादशाह को भी इस में यथारूप सफलता प्राप्त न हो सकी। यह विचित्र बात अलाई राज्य काल में ही देखी गई कि बाजारियों को चूहों के बिलों में भगा दिया गया और उन्हें आज्ञाकारी तथा सच्चा बना दिया गया।

(३४१) अलाई राज्य काल की आठवीं विशेषता यह थी कि इस युग के बादशाह द्वारा अनेक भवन, मस्जिदें, मीनार तथा क़िले बनवाये गये। इमारतों की मरम्मत कराई गई और हौज़ खुदवाये गये। यह बात न किसी बादशाह द्वारा सम्पन्न हो सकी है और न हो सकेगी कि उसके कारख़ानों में अलाई कारखानों के समान ७० हजार भवन-निर्माता एकत्रित रहें। वे दो तीन दिन में एक महल तथा दो सप्ताह में एक किला बना डालते थे।

नवीं विचित्र बात जो अलाई राज्य काल के अन्तिम दस वर्षों में दृष्टिगोचर हुई यह थी कि उस समय अधिकतर मुसलमानों के हृदय सच्चाई नेकी न्याय तथा पवित्रता की ओर आकर्षित हो गये थे। लोग बड़ी सच्चाई से एक दूसरे से व्यवहार करते थे। सभी हिन्दू आज्ञाकारी बन गये थे। यह आदर्श न तो किसी युग तथा राज्य काल में देखा जा सका है और न देखा जा सकेगा।

दसवीं बात जो कि सभी अद्भुत बातों में विचित्र थी, यह है कि सुल्तान अलाउद्दीन के समस्त राज्य काल में बिना उसके परिश्रम तथा इरादे के प्रत्येक कौम के बुजुर्ग, प्रत्येक ज्ञान तथा कला के माहिर एकत्रित हो गये थे। ऐसे अद्वितीय तथा प्रतिष्ठित लोगों के फलस्वरूप देहली का राज्य संसार में बड़ा प्रसिद्ध हो गया था। देहली की राजधानी बग़दाद तथा मिस्र वालों के लिए ईर्ष्या की वस्तु बन गई थी। वह क़ुस्तुनतुनियाँ तथा बैतुलमुक़द्दस के समान हो गई थी। शेखी का सज्जादा (गद्दी) जो कि पैग़म्बरी की नियाबत है, अलाई राज्य के मशायख में शेखुलइस्लाम शेख निज़ामुद्दीन, शेखुलइस्लाम अलाउद्दीन, तथा शेखुलइस्लाम रुकुनुद्दीन द्वारा सुशोभित था। समस्त संसार उनके पवित्र व्यक्तित्व द्वारा उज्वल था। एक संसार उनके हाथ पर बैअत (चेला बनना) करता था। उनकी सहायता के कारण अनेक पापियों ने पाप से तोबा (एक प्रकार का पश्चात्ताप) कर ली थी। हज़ारों व्यभिचारी तथा नमाज़ न पढ़ने वाले अपने व्यभिचार एवं दुराचार त्याग कर सर्वदा नमाज़ पढ़ने लगे थे।

(३४२) वे अपने हृदय को धार्मिक बातों में लगाये रखते थे। हमेशा तोबा किया करते थे और इबादत उनके दैनिक कार्य-क्रम में सम्मिलित हो गई थी। संसार का प्रेम तथा दुनिया का लोभ जिससे मानव अच्छी बातें और उत्तम क्रम त्याग देता है, उन मशायख की

अच्छी बातों, चरित्र, संसार को त्याग देने के निरीक्षण के फलस्वरूप लोगों के हृदय से कम हो गया था। सालिकों तथा सादिक़ों (सूफ़ी तथा अन्य धर्मनिष्ठ मुसलमानों) के हृदय में नमाज़ें पढ़ने एवं भगवान् की अत्यधिक वन्दना के कारण कश्फ़ (दैवी प्रेरणा) तथा करामत (चमत्कार) की इच्छा पैदा होने लगी थी, उपर्युक्त बुज़ुर्गों की इबादत तथा अन्य बातों द्वारा लोग स्वाभाविक रूप से सत्य का अनुसरण करने लगे थे। उपर्युक्त वृद्धों की नैतिकता-पूर्ण बातों के निरीक्षण, मुजाहिदे (इबादत, रौज़ा, नमाज़ आदि) तथा रियाजत द्वारा भगवान् के प्रेमियों के चरित्र में बड़ा परिवर्तन हो गया था। धर्म के इन बादशाहों के प्रेम तथा चरित्र के प्रभाव के फल स्वरूप भगवान् की कृपा की संसार वालों पर वर्षा हुआ करती थी; आसमानी कष्टों के द्वार बन्द हो गये थे। उन धर्मनिष्ठ तथा भगवान् का भजन करने वालों के समकालीनों को अकाल एवं संक्रामक रोगों का, जिनमें से प्रत्येक एक दूसरे से बढ़कर हैं, कभी सामना न करना पड़ा। उनकी निष्कपट तथा भक्तिपूर्ण इबादत द्वारा मुग़लों के आक्रमण का भय, जिसे एक बहुत बड़ी आपत्ति समझा जाता था, पूर्णतया समाप्त हो गया था और सभी दुष्ट इस प्रकार छिन्न-भिन्न तथा क्षीण हो गये थे कि इससे अधिक सम्भव ही न था। उपर्युक्त बातों द्वारा, जो कि उस काल के उन तीन बुज़ुर्गों के शुभ अस्तित्व के फल स्वरूप दृष्टिगोचर हुई थीं, इस्लाम को बड़ा यश प्राप्त हो गया था। शरीअत तथा तरीक़त की आज्ञाओं को बड़ा यश प्राप्त हो गया था और वे प्रत्येक दिशा में चालू हो गई थीं। भगवान् प्रशंसनीय है कि अलाई राज्य काल के अन्तिम दस वर्षों में लोगों को इतनी अद्‌भुत बातें दृष्टिगोचर हुई।

(३४३) एक तो सुल्तान अलाउद्दीन ने राज्यव्यवस्था तथा शासननीति के हित के कारण दुराचार, व्यभिचार तथा नशे की वस्तुओं के सेवन की मनाही, अपनी निरंकुशता तथा दण्ड, कठोरता एवं बन्दी बना दिये जाने का भय दिलाकर, करदी थी। धन सम्पत्ति द्वारा लोग धर्म तथा राज्य में उपद्रव कर देते हैं, विलासी पाप तथा दुराचार में पड़ जाते हैं, लालची, कंजूस तथा नवयुवक एहतकार (चोर बाज़ारी) करने लगते हैं, विद्रोही तथा विरोधी विद्रोह एवं विप्लव करने लगते हैं। शान्तिप्रिय लोगों में आतंक तथा अभिमान उत्पन्न हो जाता है और वे असावधानी तथा आलस में पड़ जाते हैं। भगवान् का भजन करने वाले तथा उसके भक्त उसे भूलकर दुराचार में पड जाते हैं, किन्तु सुल्तान अलाउद्दीन ने प्रत्येक उपाय से मालदारों, धनी लोगों तथा कर्मचारियों एवं मुतसर्रिफ़ों से डण्डे के जोर से तथा बन्दी बना देने, और हत्या करा देने का भय दिलाकर धन वसूल कर लिया था। बाज़ारियों को, जो ७२ समूहों मे अपने झूठ- छल तथा कपट के लिये प्रसिद्ध हैं, सच बोलने, सच्चे तरीक़े मे बेचने तथा सत्य का मार्ग ग्रहण करने का आदी बना दिया गया। दूसरी ओर शेख़ुल इस्लाम निज़ामुद्दीन ने आम बैअत (शिष्य बनना) के द्वार खोल दिये थे और पापियों को खिरक़ा[1] तथा तोबा प्रदान करते थे। लोगों को अपना चेला बना रहे थे। सभी विशेष तथा साधारण व्यक्ति, मालदार तथा दरिद्र, मलिक तथा फ़क़ीर, विद्वान् तथा जाहिल, देहाती तथा शहरी, ग़ाज़ी, मुजाहिद (धर्म युद्ध करने वाले) स्वतन्त्र तथा दास तोबा करके धर्मनिष्ठ हो गये थे। उपर्युक्त सभी लोग इस कारण कि वह अपने आपको शेख़ का चेला समझते थे, कोई पाप न करते थे। यदि किसी शेख़ के चेले से कोई भूल हो जाती तो वह तोबा करके बैअत कर लेता था और तोबा का खिरक़ा प्राप्त कर लेता था। शेख़ का चेला होने की लज्जा से लोगों ने बहुत से पाप, जिसे वे स्पष्ट तथा चोरी चोरी करते थे, त्याग दिये। सर्वसाधारण उनका अनुसरण करने तथा उन पर विश्वास रखने के फलस्वरूप आज्ञाकारी एवं धर्मनिष्ठ हो गये थे। स्त्री-पुरुष, बूढ़े, जवान, बाज़ारी तथा साधारण व्यक्ति, दास, नौकर तथा छोटे बड़े नमाज पढ़ने लगे थे।

---

१. वह वस्त्र जो दरवेश लोग पहनते हैं तथा अपने चेलों को प्रदान करते हैं।

(३४४) उनके अधिकतर चेले नमाजे चाश्त तथा नमाजे इश्राक़ बराबर पढ़ा करते थे। लोगों ने शहर से ग़यासपुर तक भिन्न-भिन्न स्थानों पर चबूतरे बनवा दिये थे, छप्पर डलवा दिये थे। घड़े तथा अन्य बर्तन पानी से भरे रखते थ। मिट्टी के लोटे तैयार रखते और बोरियाँ बिछाये रखते थे। प्रत्येक चबूतरे, तथा छप्पर में एक हाफ़िज़ (जिसे पूरा क़ुरान कंठस्थ हो) एवं दास नियुक्त रहता था जिससे मुरीद (चेलों) तथा नेक और पवित्र लोगों को शेख़ के पास आने जाने एवं समय पर नमाज़ पढ़ने में कोई कठिनाई न हो। मार्ग मे जितने चबूतरे तथा छप्पर थे उनमें से प्रत्येक मे नमाज़ पढ़ने वालों की भीड़ रहा करती थी। लोगों ने पाप तथा पाप के विषय में वार्ता करना कम कर दिया था। लोग अधिकतर नमाज़े चाश्त तथा इश्राक़ के विषय में पूछ ताछ किया करते थे। जमाअत की नमाज़, अव्वाबीन तथा तहज्जुद, और नवाफ़िल[१] के विषय में प्रश्न किया करते थे। लोगों को इस बात की चिन्ता रहा करती थी कि प्रत्येक समय कितनी रकात नमाज़ पढ़ी जाय और प्रत्येक रकात में क्या पढ़ा जाय। क़ुरान का कौनसा सूरा तथा कौनसी आयत पढ़ी जाय। पाँचों समय की नमाज़ के उपरान्त प्रत्येक समय कौन-कौन सी नफ़लें पढ़ी जायँ और उनमें कौन-कौन सी दुआयें पढ़ी जायें। नये चेले पुराने चेलों से ग़यासपुर पहुँच कर पूछा करते थे कि शेख़ रात के समय कितनी रकात नमाज़ पढ़ते हैं। प्रत्येक रकात में क्या पढ़ते हैं। सोने के समय की नमाज़ पढने के उपरान्त मुहम्मद साहब पर कितनी बार दरुद भेजते है। शेख़ फ़रीद तथा शेख़ बख़्त्यार रात और दिन में कितनी बार दरुद भेजते थे। कितनी बार "सूर-ए-क़ुल हो अल्लाह् हो अहद[२]" पढ़ते थे। नये चेले शेख़ के पुराने चेलों से इसी प्रकार के प्रश्न किया करते थे। रोज़े, नमाज़ तथा कम भोजन करने के विषय में पूछ ताछ किया करते थे। अधिकतर लोगों ने क़ुरान को कंठस्थ करने की व्यवस्था प्रारम्भ करदी थी।

(३४५) नये चेले शेख के पुराने चेलों से सत्संग किया करते थे। पुराने चेलों के पास भगवान् की भक्ति, इबादत, संसार को त्यागने, तसव्वुफ़ की किताबें पढ़ने तथा मशायख़ (सूफ़ियों) के विषय में वार्त्ता करने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न था। संसार तथा संसार वालों के विषय में वे कभी बात न करते थे। वे किसी सांसारिक व्यक्ति के घर न जाते थे और न तो संसार के क़िस्से और न संसार वालों से मिलने के विषय में किसी से कुछ सुनते थे। इसे बहुत बड़ा पाप तथा दुराचार समझते थे। शेख़ के आशीर्वाद के फलस्वरूप लोगों ने इस प्रकार इतनी बड़ी संख्या में नमाजें पढ़ना आरम्भ कर दिया था कि सुल्तानी दरबार के बहुत से व्यक्ति, अमीर, सिलाहदार, नवीसिंदें (लिपिक) सैनिक तथा सुल्तानी दास, जो कि शेख के चेले हो गये थे, बराबर नमाज़ इश्राक तथा नमाज़े चाश्त पढ़ा करते थे। ज़िलहिज्जा की दसवीं को तथा अय्यामेबैज़[३] मे रोज़ा रखते थे। कोई ऐसा मुहल्ला न था जिसमें महीने में एक बार अथवा बीसवें दिन धर्मनिष्ठ लोग एकत्रित न होते हों और सूफ़ी लोग समा[४] न करते हों, उस समय रोते तथा आँसू न बहाते हों। शेख़ के कुछ मुरीद तरावीह[५] की नमाज़ों में मस्जिद में तथा घरों पर क़ुरान समाप्त कर देते थे। इन में से कुछ लोग जो अपने विश्वास में बड़े पक्के थे रमजान की रातों तथा जुमे की रातों में रात-रात भर नमाज़ पढ़ते थे और प्रातःकाल तक जागते रहते थे और पलक से पलक न झपकाते थे।

---

१. भिन्न-भिन्न समय की नमाज़ एवं प्रार्थना आदि।
२. क़ुरान का एक सूरा। इसका बड़ा महत्व बताया गया है।
३. प्रत्येक हिजरी मास की तेरहवीं, चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं तारीख़।
४. सूफ़ियों की संगीत तथा नृत्य की सभायें।
५. २० रकात नमाज़ नफ़ल जिनको रमजान के महीनों की रातों में पढा जाता है।

बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्ति रात का तिहाई भाग तथा तीन-चौथाई भाग नमाजें पढ़ने में व्यतीत करते थे। कुछ धर्मनिष्ठ लोग सोने के समय की नमाज़ का वज़ू करके उसी वज़ू से प्रातःकाल की नमाज़ पढ़ते थे[1]। मुझे इस बात की जानकारी है कि शेख़ की दया से शेख़ के कुछ मुरीद कश्फ़ तथा करामतें दिखाने लगे थे। शेख़ के आशीर्वाद तथा शेख़ की प्रार्थनाओं से जिन्हें भगवान् तुरन्त स्वीकार कर लेता था, इस राज्य के अधिकतर मुसलमान धर्मनिष्ठता, तसव्वुफ़ एवं संसार के त्यागने से रुचि रखने लगे थे, और शेख़ का चेला बनने की इच्छा करने लगे थे।

(३४६) सुल्तान अलाउद्दीन तथा उसके सम्बन्धी शेख़ पर विश्वास करने लगे थे। सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियों के हृदय उत्तम बातों को सोचने तथा उत्कृष्ट कार्य करने में लग गये थे। अलाई राज्य काल के अन्तिम वर्षों में कभी मदिरा, रमणियों, दुराचार, व्यभिचार, नीच कर्म, लिवातत (पुरुष मैथुन) तथा बच्चा बाज़ी (गुदामैथुन) का नाम अधिकतर लोगों की ज़बान पर न आता था। लोग बड़े-बड़े पाप और गुनाह कुफ़् के समान समझते थे। मुसलमान लज्जावश एक दूसरे से नफ़ाख़ोरी तथा चोर बाज़ारी न करते थे। बाज़ारियों ने भय के कारण झूठ बोलना, छल, कपट, मक्र, कम तोलना तथा इस प्रकार की अन्य बातें पूर्णतया त्याग दी थीं।

अधिकतर शिक्षा प्रेमी गण्य मान्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति, जो शेख़ के मुरीद (शिष्य) हो गये थे, तसव्वुफ़ तथा सुलूक (तसव्वुफ़) की पुस्तकों का अध्ययन किया करते थे। किताब क़ूवतुलकुलूब, अहियाउलउलूम, उसका अनुवाद, अवारिफ़, कश्फ़ुलमहजूब, शरहेतआरूफ़। रिसाल-ए-क़ुशैरी, मिरसादुलइबाद, मकतूबाते ऐनुलकुज्ज़ात, लवाएह, लवामे क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी तथा अमीर हसन की फ़वाइदुल फ़वाद[2] (इस कारण कि उसमे शेख़ के कथनों का उल्लेख था) की पुस्तक विक्रेताओं के यहाँ बड़ी माँग थी। लोग अधिकतर पुस्तक विक्रेताओं से सुलूक तथा तसव्वुफ़ की पुस्तकों के विषय में पूछ ताछ किया करते थे। किसी व्यक्ति के सिर पर ऐसी पगड़ी दृष्टिगोचर न होती थी जिसमें मिसवाक तथा कंघी[3] न खुँसी हुई हो। सूफ़ी मत के मानने वाले ख़रीदारों के कारण लोटे तथा चमड़े के तश्तों का मूल्य बहुत बढ़ गया था। इस अन्तिम युग में शेख़ निज़ामुद्दीन भगवान् की दृष्टि में शेख़ जुनैद[4] तथा शेख़ बायज़ीद[5] के समान थे। वे भगवान् के इतने बड़े भक्त थे कि उसका अनुमान करना मनुष्य के लिये सम्भव नहीं। उनके पश्चात् लोगों को सुमार्ग पर चलाने तथा शिक्षा प्रदान करने का कार्य समाप्त हो गया।

छन्द

इस कला में किसी बड़ी प्रतिष्ठा का विचार न कर
कारण कि निज़ामी के उपरान्त यह कार्य समाप्त हो गया।

(३४७) मुहर्रम की पाँचवीं तारीख़ को जिस दिन शेख़ुलइस्लाम शेख़ फ़रीदुद्दीन का

१. इसका भी अर्थ यही हुआ कि वे रात भर जागते रहते थे कारण कि सोने से वज़ू टूट जाता है।
२. उपर्युक्त तसव्वुफ़ की पुस्तकों में अधिकतर पुस्तकें अब भी पाई जाती है और तसव्वुफ़ के विषय में जानकारी प्राप्त करने में सहायक हैं।
३. धर्मनिष्ठ मुसलमानों के लिये कंघी तथा मिसवाक रखने का बड़ा महत्व बताया गया है।
४. शेख़ जुनैद बग़दाद निवासी बड़े विख्यात सूफ़ी हुए हैं। इनकी मृत्यु ९११ ई० में हुई।
५. बायज़ीद बिस्तामी (मृत्यु ८७५ ई०) भी बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी हुए हैं। वे सूफ़ियों के विश्वदेवतावादी सिद्धान्त के संस्थापक समझे जाते हैं।

उर्स[1] होता है, शेख़ के घर में राजधानी तथा भिन्न-भिन्न प्रदेशों से इतने लोग एकत्रित होकर समा (सूफ़ियों का संगीत तथा नृत्य) करते थे कि इस प्रकार का समा इसके उपरान्त फिर कभी न हो सका। शेख़ के समय की बातें उस काल की अद्भुत वस्तुओं में समझी जा सकती हैं।

समस्त अलाई राज्य काल में शेख़ फ़रीदुद्दीन के नाती शेख़ अलाउद्दीन, शेख़ फ़रीदुद्दीन के सज्जादे (गद्दी) पर अजोधन में विराजमान रहे। शेख़ फ़रीदुद्दीन के नाती शेख़ अलाउद्दीन भगवान् की कृपा से बड़े धर्मनिष्ठ तथा भगवान् के भक्त थे। रात दिन उस बुज़ुर्ग तथा बुज़ुर्ग जादे की ख़ुदा की इबादत के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न था। वे एक क्षण भी नमाज़ तथा ज़िक्र (भगवान् की याद) के अतिरिक्त किसी अन्य बात में अपना समय व्यतीत न करते थे। भगवान् की भक्ति के कारण उस भगवान् के भक्त के हृदय में यह बात हमेशा जमी रहती थी कि वह सर्वदा भगवान् का ध्यान करता रहे। जैसा कि तफ़सीरों (क़ुरान का अनुवाद) में लिखा है कि कुछ फ़रिश्ते केवल भगवान् की इबादत के लिये पैदा किये गये हैं, और सृष्टि की रचना के प्रारम्भ से सर्वदा भगवान् की इबादत के अतिरिक्त किसी अन्य बात पर ध्यान नहीं देते, उसी प्रकार शेख़ अलाउद्दीन भी अपने आपको उसी समूह का एक व्यक्ति समझते थे। मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि जो लोग छः छः महीने और साल साल भर शेख़ फ़रीदुद्दीन के रौजे की मुजाविरत (रक्षा) करते थे, कहा करते थे, कि हमने शेख़ अलाउद्दीन को नमाज, क़ुरान, हदीस तथा तसव्वुफ़ की पुस्तकों के पढ़ने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य करते नहीं देखा। बुद्धिमान लोगों को यह बात सूर्य से अधिक स्पष्ट है कि जब तक किसी का हृदय पूर्णतया भगवान् की ओर आकर्षित नहीं होजाता उस समय तक वह सभी बातों को त्याग कर भगवान् के ध्यान में लीन नहीं होता। यदि शेख़ अलाउद्दीन को भगवान् की भक्ति तथा ख़ुदा की इबादत से इतनी रुचि न होती तो वे शेख़ फ़रीदुद्दीन के, जोकि संसार के क़ुतुब तथा आधार थे, सज्जादे (गद्दी) पर कभी विराजमान न रह सकते थे, उस जैसे शाह के स्थान पर कदापि न बैठ सकते थे।

(३४८) इसी प्रकार समस्त अलाई राज्य काल में शेख़ रुकनुद्दीन, जोकि शेख़ के पुत्र तथा पौत्र थे, शेख़ सद्रुद्दीन तथा शेख़ बहाउद्दीन के सज्जादे पर मुल्तान में विराजमान थे। उनकी प्रतिष्ठा, सम्मान, बुजर्गी एवं प्रशंसा में इससे अधिक और क्या कहा जा सकता है, कि उनके पिता सद्रुद्दीन[2] और उनके दादा शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया[3] थे। समस्त अलाई राज्यकाल में शेख़ रुकनुद्दीन शेख़ी की गद्दी पर विराजमान रहे और अपने चेलों को शिक्षा देते रहे। अपने पिता तथा दादा के सज्जादे (गद्दी) को उज्ज्वल बनाते रहे। समस्त सिन्ध नदी के निवासी, मुल्तान से उच्च तथा उससे नीचे तक एवं सरीना से शेख़ रुकनुद्दीन की शुभ चौखट के भक्त तथा चेले थे। शहर देहली तथा हिन्दुस्तान के अनेक आलिम उनके चेले हो गये थे। शेख़ रुकनुद्दीन के कश्फ तथा करामत में किसी को कोई सन्देह न था। उनके वंश की प्रशंसा करना सम्भव नहीं। शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया को सूफ़ियों तथा भगवान् के भक्तों के मध्य में श्वेत बाज़ कहा जाता था, अर्थात् जिस किसी का भी उनसे सम्पर्क होजाता था वह ख़ुदा तक पहुँच जाता था। शेखुलइस्लाम सद्रुद्दीन में अनेक

१. दरवेशों की मृत्यु के दिन प्रत्येक वर्ष जो समारोह होता है वह उर्स कहलाता है।

२. शेख़ सद्रुद्दीन का जन्म १२२० ई० में हुआ। अपने पिता बहाउद्दीन की गद्दी पर १२६७ ई० में आसीन हुये। उनकी मृत्यु १२८५-८६ ई० में हुई।

३. शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया सुहरावर्दी सिलसिले के प्रसिद्ध सूफ़ी थे। यह सिलसिला हिन्दुस्तान में उन्हीं के कारण प्रसिद्ध हुआ। उनकी मृत्यु १२६७ ई० में हुई।

गुण विद्यमान थे, वे बहुत बड़े दानी थे। यद्यपि उन्हें अपने पिता की ओर से अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई थी किन्तु अपने दान पुण्य के कारण उन्हें सर्वदा उधार लेने की आवश्यकता पड़ती रहती थी।

अलाई राज्य काल के सैयदों में से, जिनके कारण संसार स्थापित है, बहुत बड़े-बड़े सैयद विद्यमान थे। सभी लोग उनके वंश को उत्कृष्ट समझते थे और उनके चरित्र से प्रभावित थे। उन सैयदों के आशीर्वाद के कारण इस देश में अनेक उत्तम बातें तथा धर्म सम्बन्धी बात प्रकट हुआ करती थीं। इन बड़े बड़े सैयदों में से, जिनकी शुभ उपस्थिति के कारण इस देश को मान प्राप्त है, शेखुल इस्लाम सैयद क़ुतुब के पुत्र सैयदुस्सादात सैयद ताजुद्दीन थे। सैयद ताजुद्दीन के पिता सयद क़ुतुबुद्दीन तथा उनके दादा सैयद अइज़्ज़ुद्दीन बदायूँ के क़ाजियों में से थे। वर्षों तक अवध की क़ज़ा का कार्य उनके सिपुर्द रहा। सुल्तान अलाउद्दीन ने उन्हें अवध से हटाकर बदायूँ का क़ाज़ी बना दिया था। सैयद ताजुद्दीन, (भगवान् उन पर दया तथा कृपा करे) बहुत बड़े सैयद थे।

(३४९) बहुत से धर्मनिष्ठ तथा भगवान् के भक्त स्वप्न में उनके रूप में मुहम्मद साहब के दर्शन कर चुके थे। उनका मुहम्मद साहब के रूप से मिलना इस बात का प्रमाण है कि उनका वंश बड़ा शुद्ध था। सैयद क़ुतुबुद्दीन के, जो उस प्रतिष्ठित सैयद के पुत्र तथा पौत्र थे, गुण तथा चरित्र का निरीक्षण उस काल के सभी लोगों ने किया था। उपर्युक्त सैयदों मे से प्रत्येक अपनी प्रतिष्ठा, विद्वत्ता तथा दान पुण्य में अद्वितीय था। सैयद ताजुद्दीन का भतीजा सैयद रुकनुद्दीन कड़े का काज़ी था। भगवान् ने सैयद रुकनुद्दीन को बड़ी उच्चकोटि के गुण प्रदान किये थे। वे कश्फ़ (दैवी प्रेरणा) तथा करामत (चमत्कार) भी दिखाते थे। समा (सूफ़ियों के संगीत तथा नृत्य) भी करते थे। इस दशा में उनकी बड़ी विचित्र हालत हो जाती थी। वे दान पुण्य तथा संसार को त्यागने के विषय में बड़े प्रसिद्ध थे।

इस तारीखे फ़ीरोजशाही का संकलन कर्त्ता सैयद ताजुद्दीन तथा सैयद रुकनुद्दीन से (भगवान् उन पर दया करे), मिल चुका है तथा उनके चरण छू चुका है। मैंने उनके जैसे प्रतिष्ठित सैयद, जिन्हें भगवान् ने इतने गुण तथा विशेषतायें प्रदान की हों, बहुत्त कम देखे हैं। सैयद होना बड़ा ही प्रशंसनीय हैं। खुदा के रसूल का पुत्र होना बहुत बड़ा सम्मान, बुज़ुर्गी तथा बड़प्पन है। यदि मैं यह चाहूं कि उन सैयदों तथा समस्त सैयदों के विषय में, जो कि मुहम्मद साहब की आँखों का प्रकाश तथा अली[1] के हृदय के टुकड़े हैं, कुछ लिखूँ तो मेरे लिये यह सम्भव नहीं और मुझे स्वीकार है कि मै इसमे असमर्थ हूँ।

अलाई राज्यकाल में कैथल के सैयदों के वंश में, जो कि अपने वंश के बड़प्पन के लिये बड़े प्रसिद्ध हैं, सैयद मुग़ीसुद्दीन तथा उनके बड़े भाई सैयद मुजीबुद्दीन काली पगड़ी वाले थे जिनके अस्तित्व से संसार सुशोभित था। उन दो भाइयों के ज्ञान, धर्मनिष्ठता, भगवान् की भक्ति तथा गुणों का उल्लेख सम्भव नहीं।

(३५०) कैथल के सैयदों का बड़प्पन बड़ा प्रसिद्ध है और यह मशहूर है कि उनका वंश बहुत ही उत्कृष्ट है। इस संकलन कर्त्ता का पिता सैयद जलालुद्दीन कैथली की एक पुत्री का नाती था। सैयद जलालुद्दीन कैथल के सैयदों में बड़े प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य थे। इस तुच्छ का पिता बड़ा ही कुलीन था। इस तुच्छ की दादी कश्फ़ तथा करामात दिखाती थी। उनकी करामात सम्बन्धी अनेक बातें बड़ी प्रसिद्ध हैं।

अलाई राज्य काल के आरम्भ में नुहता के सैयद भी जीवित थे। इन दोनों भाइयों द्वारा अनेक कश्फ़ (दैवी प्रेरणा) और करामातें (चमत्कार) प्रकट हुआ करती थीं। शहर के

---

१. मुहम्मद साहब के पश्चात् चौथे खलीफ़ा तथा मुहम्मद साहब के दामाद।

सभी आलिम तथा विद्वान् नुहता के सैयदों पर गर्व किया करते थे और उनके चरणों पर अपनी आँखें मला करते थे। उन लोक तथा परलोक के शाहज़ादों की प्रशंसा जितनी कि मुझ जैसा तुच्छ लिख रहा है उस से कहीं अधिक थी। बहुत से सैयदों के पुत्रों का, जो कि शिक्षा ग्रहण करके गुरू बन गये, पालन पोषण तथा उनकी सहायता उन्हीं लोगों द्वारा हुई थी। अलाई राज्यकाल के आरम्भ में गरदेज़ के सैयदों में से, सैयद छज्जू तथा सैयद अजली के पूर्वज बड़े प्रसिद्ध थे। उनका बड़ा आदर सम्मान किया जाता था। पूरे अलाई राज्यकाल में सैयद मजीदुद्दीन चुनारी, सैयद अलाउद्दीन ज्यूरी, सैयद अलाउद्दीन पानीपती सैयद हसन तथा सैयद मुबारक, जिनमें से प्रत्येक अपने समय का बहुत बड़ा आलिम था, लोगों को शिक्षा प्रदान किया करते थे। सैयद अलाउद्दीन ज्यूरी इस कारण कि वे बहुत बड़े सैयद थे, मशायख के सज्जादे पर विराजमान थे। मुरीदों से अपनी बैअत कराते थे (चेला बनाते थे)। अलाई राज्यकाल में सादाते जंजर में, मलिक मुईनुद्दीन, मलिक ताजुद्दीन जाफर, मलिक जलालुद्दीन, मलिक जमाल तथा सैयद अली जीवित थे और उनके भाग्य का सितारा चमक रहा था।

(३५१) इस संकलन कर्त्ता ने धर्म और राज्य के उन गण्य मान्य व्यक्तियों के दर्शन किये हैं। उन गण्य मान्य व्यक्तियों के चरित्र, बड़प्पन, कीर्ति, दान, पुण्य तथा नेतृत्व का मैं निरीक्षण कर चुका हूँ। यदि मै उन प्रतिष्ठित सैयदों की नैतिकता पूर्ण बातों की प्रशंसा करना चाहूँ तो मुझे इस विषय पर अनेक ग्रन्थ लिखने पड़ जायेंगे। अलाई राज्यकाल मे अनेक उच्च वंश के सैयद बदायूँ में वर्त्तमान थे। उनके आशीर्वाद से केवल बदायूँ वालों को ही नहीं वरन् समस्त हिन्दुस्तान वालों को विशेष लाभ पहुँच रहा था। उन सैयदों के उच्च वंश के प्रमाण के विषय में प्रसिद्ध वंश-वेत्ता सहमत थे। अलाई राज्य काल मे बयाने के सैयद भी बड़े उच्च वंश से सम्बन्धित थे। उनकी संतान अब भी बयाना में वर्त्तमान है। उन सैयदों के आशीर्वाद से बयाने वालों को अब भी लाभ पहुँचता रहता है।

अलाई राज्यकाल में इन सैयदों में से तीन व्यक्ति राज्य के क़ज़ा-विभाग (न्याय विभाग) के उच्च पदाधिकारी नियुक्त हुये। अलाई राज्यकाल के प्रारम्भ में दाऊद मलिक का पिता क़ाज़ी सद्रुद्दीन आरिफ़, जो कि सद्रे जहाँ मिनहाज जुर्जानी की एक पुत्री का नाती था, वर्षों तक नियाबते (उप) क़ज़ा के पद पर विराजमान रहा। इसके पश्चात् वह सद्रे जहाँ[1] नियुक्त होगया। सद्रे जहाँनी के पद को उसके कारण बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। वह विद्वता में विशेष प्रसिद्ध न था किन्तु उसकी सूझ बूझ बड़ी ही उत्कृष्ट थी। वह शहर के निवासियों के स्वभाव से इतना परिचित था कि किसी के लिये यह सम्भव न था कि वह धूर्त्तता तथा छल द्वारा उसे किसी प्रकार धोखा देसके। दीवाने क़ज़ा को उसकी सद्रे जहाँनी से बड़ा मान प्राप्त हो गया था। उसके उपरान्त काज़ी जलालुद्दीन वल्वलजी नायब क़ाजी नियुक्त हुआ। मौलाना ज़ियाउद्दीन बयाना, जोकि लश्कर के क़ाज़ी थे, सद्रे जहाँ नियुक्त हुये। वे बहुत बड़े विद्वान् थे।

(३५२) यद्यपि क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन बयाना विद्वता में बड़े प्रतिष्ठित थे किन्तु उनमें सूझ बूझ तथा ऐश्वर्य एवं वैभव की बड़ी कमी थी। इस कारण दीवाने क़ज़ा में वह शोभा न रही। उनके साधारण व्यक्तित्व के कारण सद्रे जहाँनी की प्रतिष्ठा कम हो गई। सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने राज्यकाल के अन्तिम वर्षों में, जबकि उसके स्वभाव में दृढ़ता न रह गई थी, देहली के राज्य की क़ज़ा का पद, जो कि बहुत ही उत्कृष्ट पद है, और जो गण्य मान्य व्यक्तियों तथा उनकी सन्तान के अतिरिक्त जो कि अपनी विद्वता, उच्च वंश तथा धर्मनिष्ठता के लिए प्रसिद्ध हों, किसी को न मिलना चाहिये, वह मलिकुतज्जार हमीदुद्दीन मुल्तानी को

१. धार्मिक कार्यों तथा न्याय विभाग का सर्वोच्च पदाधिकारी।

जो कि उसके घर का नौकर, परदादार और राज्य भवन का कलीददार (कुंजी रखने वाला) था, प्रदान कर दिया था। वह मलिकुतज्जार इस योग्य नहीं कि उसके गुणों का उल्लेख इतिहास में किया जाय। सुल्तान अलाउद्दीन ने उस मुल्तानी बच्चे को राज्य की कज़ा का पद प्रदान करते समय उसके वंश तथा कुल पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने केवल इस बात पर ध्यान दिया कि उसने तथा उसके पिता ने उसकी (सुल्तान की) बड़ी सेवा की थी। न उसने इस बात पर ध्यान दिया और न कोई उससे यह निवेदन कर सकता था कि क़ज़ा के पद के लिये जिस किसी को भी नियुक्त किया जाय उसके लिए तक़वा[1] अनिवार्य है। तक्वा का अर्थ यह है कि संसार से घृणा की जाय। किसी बादशाह को अपने पापों तथा अन्य बुरी बातों से उस समय तक मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती जब तक कि वह कजा का पद, जो कि बड़ा उत्कृष्ट पद है, अपने राज्य के सब से अधिक मुत्तक़ी[2] आलिम को प्रदान न करे। जो बादशाह राजधानी के तथा राज्य के प्रदेशों की क़जा का पद प्रदान करते समय तक़्वा अनिवार्य नही समझता, और यह पद लालचियों, साँसारिक व्यक्तियों तथा अधर्मियों को प्रदान कर देता है, तो वह दीन पनाही (धर्म की रक्षा) को भ्रष्ट कर देता है। क्योंकि सुल्तान अलाउद्दीन ने अपनी अन्तिम अवस्था में सद्रे जहाँनी का पद प्रदान करते समय प्राचीन सेवाओं पर ध्यान रक्खा, अतः उसके उपरान्त यही प्रथा होगई और तक़्वे पर सभी ने ध्यान देना बन्द कर दिया।

(३५३) समस्त अलाई राज्य काल में देहली में इतने बड़े बड़े आलिम थे जिनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था। उतने बड़े बड़े आलिम उस समय बुख़ारा, समरक़न्द, बग़दाद, मिस्र, ख्वारज़्म, दमिश्क़, तबरेज इस्फ़हान, रै, रूम यहां तक कि समस्त संसार में न थे। मनक़ूलात,[3] माक़ूलात,[4] तफ़सीर, फ़िकह्[5] उसूलेफ़िकह, उसूलेदीन[6], नहो[7], शब्द, शब्दकोष का ज्ञान, मानी,[8] बदी,[9] बयान,[10] कलाम[11], मन्तिक़[12], ग़रज़ कि वे प्रत्येक ज्ञान के बाल की खाल निकालते थे। प्रत्येक वर्ष उन विद्वानों के शिष्य बहुत बड़े-बड़े आलिम हो जाया करते थे। उन्हें स्वयं फ़तवों[13] के उत्तर देने में दक्षता प्राप्त हो जाती थी। इन विद्वानों में से अनेक विद्वानों की गजाली[14] तथा राज़ी[15] से तुलना की जा सकती थी।

---

१. पवित्रता तथा भगवान् का भय।
२. तक्वे वाला पवित्र जीवन व्यतीत करने वाला तथा भगवान का भय रखने वाला।
३. कथित। वे विद्यायें जिनका सम्बन्ध तर्क से नहीं होता।
४. वे विद्यायें जिनका सम्बन्ध तर्क से होता है।
५. इस्लामी धर्म के सिद्धान्तों का ज्ञान।
६, इस्लाम के सिद्धांत।
७. व्याकरण।
८. रचना की सुन्दरता का ज्ञान।
९. रचना की विशेषताओं तथा सुन्दरताओं का ज्ञान।
१०. रचना की विशेषता सम्बन्धी ज्ञान।
११. आध्यात्मिक विद्या।
१२. तर्क शास्त्र।
१३. धर्म सम्बन्धी प्रश्न
१४. हुज्जतुल इस्लाम अबू हामिद मुहम्मद जैनुद्दीन अतूसी इमाम ग़ज़ाली का जन्म १०५८ ई० में हुआ था। उन्हों ने इस्लाम के धार्मिक सिद्धान्तों एवं सूफ़ी मत के विषय में अनेक ग्रन्थों की रचना की। कहा जाता है कि उन्हीं ने ९९ ग्रन्थों की रचना की। उनकी मृत्यु ११११ ई० में हुई।
१५. इमाम फ़ख़रुद्दीन मुहम्मद राज़ी का जन्म ११५० ई० में हुआ था। वे इस्लाम के शाफ़ई मत के अनुयायी थे। उनकी मृत्यु १२१० ई० में हुई।

अर्थात—क़ाज़ी फ़खरुद्दीन नाक़िला, क़ाजी शर्फुद्दीन सरबाही, मौलाना नसीरुद्दीन ग़नी, मौलाना ताजुद्दीन मुक़द्दम, मौलाना ज़हीरुद्दीन लंग, क़ाजी मुग़ीसुद्दीन बयाना, मौलाना रुक्नुद्दीन सुन्नामी, मौलाना ताजुद्दीन कुलाही, मौलाना ज़हीरुद्दीन भक्करी, क़ाज़ी मुही उद्दीन काशानी, मौलाना कमालुद्दीन कोली, मौलाना वजीहुद्दीन पायली, मौलाना मिन्हाजुद्दीन क़ायनी, मौलाना निज़ामुद्दीन कुलाही, मौलाना नसीरुद्दीन कड़ा, मौलाना नसीरुद्दीन साबूली, मौलाना अलाउद्दीन ताजिर, मौलाना करीमुद्दीन जौहरी, मौलाना हुज्जत मुल्तानी क़दीम, मौलाना हमीदुद्दीन मुखलिस, मौलाना बुरहानुद्दीन भक्करी, मौलाना इफ़्तिखारुद्दीन बरनी, मौलाना हुसामुद्दीन सुर्ख, मौलाना वहीदुद्दीन मलहू, मौलाना अलाउद्दीन कर्क, मौलाना हुसामुद्दीन इब्न शादी, मौलाना हमीदुद्दीन बनयानी, मौलाना शिहाबुद्दीन मुल्तानी, मौलाना फ़खरुद्दीन हाँसवी मौलाना फ़खरुद्दीन सक़ाक़ल, मौलाना सलाहुद्दीन सतरकी, क़ाजी ज़ैनुद्दीन नाकिला, मौलाना वजीहुद्दीन राजी, मौलाना अलाउद्दीन सद्रुश्शरीअत, मौलाना मीरान मारीकला, मौलाना नजीबुद्दीन सावी, मौलाना शम्सुद्दीन तम, मौलाना सद्रुद्दीन गंधक, मौलाना अलाउद्दीन लोहोरवी, मौलाना शम्सुद्दीन यहया, क़ाजी शम्सुद्दीन गाज़रुनी, मौलाना सद्रुद्दीन तावी, मौलाना मुईनुद्दीन लूनी, मौलाना इफ़्तिखारुद्दीन राजी, मौलाना मुइज्ज़ुद्दीन अन्दीहनी, मौलाना नज्मुद्दीन इनतेशार

(३५४) इन ४६ विद्वानों के अतिरिक्त, जिनके नामों तथा पदवियों का मैंने उल्लेख किया है, बहुत से ऐसे हैं जिनका मै शिष्य रह चुका हूँ और जिनमें से कुछ की मैंने सेवा की है। इनमें से बहुत से शिक्षा प्रदान किया करते थे तथा उपदेश दिया करते थे। मौलाई शर्फुद्दीन बूशेखी के शिष्यों की एक बहुत बड़ी संख्या तथा अनेक विद्वान्, जिनके नाम मैंने नहीं लिखे हैं, अलाई राज्यकाल में जीवित थे। वे सर्वदा शिक्षा प्रदान किया करते थे। अलाई राज्य काल के अन्त में शेख बहाउद्दीन ज़करिया के नाती मौलाना इल्मुद्दीन, जो कि बहुत बड़े विद्वान् थे, देहली पहुँचे। यदि मैं इस इतिहास में सभी विद्वानों तथा गुरुओं का, जो कि शिक्षा प्रदान किया करते थे, उल्लेख करना चाहूं तो यह इतिहास बहुत बढ़ जायगा, अतः मैं उनका उल्लेख नहीं करता। बड़ा खेद है कि सुल्तान अलाउद्दीन इन विद्वानों का मूल्य तथा उनकी विद्वत्ता का मूल्य एवं महत्व पूर्णतया न समझ सका। उनके प्रति अपने सैकड़ों कर्त्तव्यों में से किसी एक कर्त्तव्य का भी पालन न कर सका। उसके राज्य काल के मनुष्यों ने यह न समझा कि उन विद्वानों के पैर की धूल आँखों में सुरमे के स्थान पर लगानी चाहिये। इस इतिहास के संकलन कर्त्ता को भी उनके सम्मान तथा प्रतिष्ठा का पूर्ण ज्ञान न था। आज जबकि एक क़रन से कुछ अधिक व्यतीत हो चुका है और वे अद्वितीय व्यक्ति स्वर्गवासी हो चुके है और भगवान् के निकट उन्हें बड़ा सम्मान प्राप्त हो चुका है। उनके समान अथवा उनसे हज़ार दर्जा कम मुझे कोई अन्य दृष्टिगोचर नहीं हो सका है। इनमें से जिन व्यक्तियों का कुछ मूल्य एवं महत्व मै समझ सका हूँ, उनमें से प्रत्येक पर यदि मै एक ग्रन्थ लिखूँ तो कम होगा। उस काल मे अनेक ऐसे विद्वान् जीवित थे और शिक्षा प्रदान किया करते थे जिनमें से प्रत्येक की तुलना अबूयूसुफ़[1] क़ाज़ी तथा मुहम्मद शैबानी से हो सकती है।

(३५५) यदि कोई ऐसा मुफ़ती[2] जो अपने आप को बहुत बड़ा विद्वान् समझता था, खुरासान मावराउननहर, ख्वारज़्म अथवा किसी अन्य नगर से देहली पहुँच जाता तो वह उन गण्य मान्य व्यक्तियों की विद्वत्ता देख कर उनसे शिक्षा ग्रहण करने लगता और उनका शिष्य बन जाता था। उन विद्वानों के जीवन में यदि किसी ज्ञान का कोई ग्रन्थ बुखारा, समरक़न्द, ख्वारज़्म

१. बग़दाद के प्रसिद्ध क़ाज़ी (जन्म ७३१, मृत्यु ७९८) वे अबू हनीफ़ा के शिष्य थे।
२. फ़तवा देने वाला अथवा धर्म सम्बन्धी आदेशों की व्याख्या करने वाला।

तथा इराक़ से शहर (देहली) में पहुँच जाता और शहर (देहली) के विद्वान् उसकी प्रशंसा करते, तभी लोग उन्हें विश्वास के योग्य समझते थे अन्यथा नहीं। तारीखे अलाई में उनके वर्णन का उद्देश्य यह है कि वह युग तथा काल जिसमें इतने बड़े-बड़े विद्वान् जीवित थे और शिक्षा प्रदान किया करते थे, वह युग अवश्य ही बड़ी प्रशंसा के योग्य होगा। वह युग समस्त युगों से तथा शहर (देहली) अन्य शहरों से बहुत बढ़ चढ़ कर था।

अलाई राज्य काल के क़ुरान पढ़ने वाले—

अलाई राज्य काल में क़ुरान को क़िरअत (उचित उच्चारण) से पढ़ने वाले अनेक विद्वान् जीवित थे जैसे—मौलाना जमालुद्दीन शातिबी, मौलाना अलाउद्दीन मुक़री, हसन-बसरी का भानजा ख्वाजा ज़की। यह लोग अलाई राज्यकाल में क़िरअत विद्या की शिक्षा दिया करते थे। शहर के अनेक हाफ़िज़ उनके सामने क़ुरान पढ़ कर अपनी क़िरअत की त्रुटियाँ दूर करते थे। ख़ुरासान तथा इराक़ में भी उनके बराबर कोई न था।

अलाई राज्य काल के मुज़क्किर[1]

अलाई राज्य काल में ऐसे मुज़क्किर जीवित थे जिनका मुकाबला संसार भर में कोई न कर सकता था और न कोई अभी तक कर सका है। शहर देहली में उन अद्वितीय वाइज़ों (उपदेशकों) के कारण बहुत बड़ी रौनक़ थी। सप्ताह में प्रत्येक दिन वे तज़कीर किया करते थे। अलाई राज्यकाल के मुज़क्किरों में से मौलाना हमीदुद्दीन हुसाम दरवेश बड़े प्रसिद्ध थे। जिन लोगों ने बहुत बड़े-बड़े मुज़क्किरों की तज़कीरें सुनी थीं, वे भली भाँति जानते थे कि मौलाना इमाद के समान रुचिकर तज़कीर करने वाला न आँखों ने देखा और न कानों ने सुना है।

(३५६) वे अपनी तज़कीर में नई नई बातें, अनेक ज्ञान तथा दर्शन सम्बन्धी विचित्र चीज़ें बड़े अच्छे ढंग तथा स्वर मे पेश किया करते थे। अलाई राज्य काल में २० वर्ष तक मौलाना इमाद तज़कीर करते रहे और वाज़ (उपदेश) के मिम्बर (मंच) को सुशोभित करते रहे। उनकी तज़कीर में विद्वान्, कलाकार, बुद्धिमान, गण्य मान्य व्यक्ति तथा कवि उपस्थित रहा करते थे।

उन अद्वितीय मुज़क्किरों के तबकिये (रोने तथा आँसू बहाने) तथा तज़कीर के समय मौलाना हमीद, मौलाना लतीफ़ मुक़री तथा उनके पुत्र क़ुरान पढ़ा करते थे। उनके क़ुरान पढ़ने से चिड़ियाँ आकाश से उतर आती थी। जब उनकी तज़कीर पूर्ण रूप से आरम्भ हो जाती तो प्रत्येक दिशा से लोग प्रशंसात्मक नारे लगाते थे। लोग इतना रोते और प्रभावित हो जाते कि कई कई सप्ताह तक लोगों के हृदय में किसी बात का ध्यान न रहता था। लोगों की और अधिक सुनने की इच्छा समाप्त न होती।

प्रतिष्ठित वाइजों में से दूसरे मौलाना ज़ियाउद्दीन सुन्नामी थे जोकि तफ़सीर और फ़िकह में विशेष जानकारी रखते थे। वे समस्त अलाई राज्य काल में तज़कीर करते रहे और तफ़सीर ब्यान करते रहे। वे क़ुरान की प्रत्येक आयत के विषय में अनेक विद्वानों की राय पेश किया करते थे। दो तीन हज़ार मनुष्य वरन् इससे भी अधिक उनकी तज़कीर में उपस्थित रहा करते थे किन्तु वह अन्यायी पुरुष, शेखुल इस्लाम निज़ामुद्दीन से, जो कि समस्त संसार के गुरु तथा समय के क़ुतुब (आधार) एवं ग़ौस[2] थे, ईर्ष्या रखने लगा। सर्व साधारण को उसकी

---

१. तज़कीर करने वाले। तज़कीर एक प्रकार का धर्मोपदेश होता है जिसमें क़ुरान तथा हदीस से उदाहरण द्वारा इस्लाम की विशेषता समझाई जाती है और भगवान् के भय से डराया जाता है।

२. फ़रियाद सुनने वाले। प्रसिद्ध सूफ़ियों को ग़ौस भी कहते हैं।

इस ईर्ष्या से उसके प्रति घृणा उत्पन्न हो गई और इस दुर्भाग्य के फलस्वरूप उसका संसार से नाम व निशान भी मिट गया।

अलाई राज्यकाल के प्रथम दस वर्षों में एक और प्रतिष्ठित मुज़क्किर मौलाना शिहाबुद्दीन ख़लीली नामक थे। वे तज़कीर के समय लोगों को भगवान् के भय से भयभीत कर दिया करते थे। कवितायें पढ़ते थे और क़ुरान की तफ़सीर बयान करते थे। अनेक कहानियों, उपदेश उलमाये आख़िरत[1] की कथा एवं अन्य बातें बयान करते थे। वे सर्वदा सच्ची बात कहते और उनकी तज़कीर में बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित होती थी। सुनने वाले उनकी तज़कीर सुनकर बहुत रोते थे।

(३५७) अलाई राज्य काल के मुज़किरों में मौलाना करीमुद्दीन बड़े प्रसिद्ध थे। उन्हें तज़कीर में सबसे पृथक् श्रेणी प्राप्त थी। मौलाना करीमुद्दीन, देहली के समस्त गद्य तथा पद्य के लेखकों में सबसे बढ़ चढ़कर थे। वे तज़कीर तथा भगवान् एवं मुहम्मद साहब की प्रशंसा करते समय बड़ी उच्चकोटि की कवितायें किया करते थे। उनके लिखे हुये गद्य तथा पद्य बहुत बड़ी संख्या में लोगों के पास वर्त्तमान हैं। उनके लेख, उनकी विद्वत्ता के बहुत बड़े प्रमाण हैं। वे तजकीर में अधिकतर अलंकारिक भाषा का प्रयोग करते थे। इस कारण से कि वे अच्छे स्वर में तथा रुचिकर भाषा में तज़कीर न करते थे और अलंकारिक भाषा का प्रयोग करते थे, उनकी तज़कीर में अधिक लोग एकत्रित न होते थे।

मौलाना जलाल हुसाम दरवेश भी अलाई राज्यकाल में बड़े प्रतिष्ठित वाइज़ (उपदेशक) समझे जाते थे। वे तज़कीर में गद्य तथा पद्य दोनों का प्रयोग करते थे। लोगों को अपनी तज़कीर द्वारा ख़ुदा के भय से डराने का प्रयत्न किया करते थे। वे बड़ी मज़े मज़े की बातें और चुटकुले बयान किया करते थे और कवितायें पढ़ा करते थे। शेख़ रुकनुद्दीन ने मौलाना जलाल को मुरीद करने (शिष्य बनाने) की भी आज्ञा प्रदान करदी थी। वे शिष्य भी बनाया करते थे और बैअत भी लिया करते थे तथा शेख़ी (शेख़ों के कार्य) भी करते थे।

अलाई राज्यकाल में एक अन्य मुज़किर, मौलाना बद्रुद्दीन पनो खोदी नामक थे। वे अवध से आते थे और कुछ महीनों तक देहली में तज़कीर करते थे। वे बड़े धर्मनिष्ठ थे। वे सब सच-सच बता देते और बातें बनाने का प्रयत्न न करते थे। उनकी तज़कीर में बहुत बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते थे और उनके वाज़ (उपदेश) से लोग बहुत प्रभावित होते थे। उनकी तज़कीर के समय लोग रोते रहते थे। प्रत्येक हृदय पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ता था।

सुल्तान अलाउद्दीन के नदीम[2]

सुल्तान अलाउद्दीन की महफ़िलों में १०–१५ वर्ष तक बड़े बड़े प्रतिष्ठित नदीम रहे हैं। यद्यपि सुल्तान अलाउद्दीन का स्वभाव बड़ा कठोर था किन्तु नदीमों की बातों तथा चुटकुलों से वह रुष्ट न होता था। उसके नदीम बड़े ही योग्य थे और वे प्रत्येक चुटकुला तथा प्रत्येक बात बड़े अच्छे ढंग से बयान किया करते थे। उसके नदीमों में से एक सिपहसालार ताजुद्दीन इराक़ी अमीर दाद लश्कर था।

(३५८) वह बड़ा विद्वान् तथा बुद्धिमान था। शहर में कोई अन्य बादशाहों तथा मशायख़ के विषय में जानकारी एवं अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान का ध्यान रखने दुराचार अथवा व्यभिचार से अलग रहने तथा पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिये उसके समान प्रसिद्ध न था। सुल्तान अलाउद्दीन की महफ़िलों का दूसरा प्रतिष्ठित नदीम शम्सीदास बलबने बुज़ुर्ग

---

१. धर्मनिष्ठ आलिम अथवा वे आलिम जो सर्वदा भगवान् का भय किया करते हैं।
२. बादशाहों के मुसाहिब।

का नाती खुदावन्द ज़ादा चाश्नीगीर[1] था। लोग उसकी तथा उसके पूर्वजों की प्रतिष्ठा से बड़े प्रभावित थे। सुल्तानी महफ़िलों में उसका मुक़ाबला कोई भी न कर सकता था। सुल्तान अलाउद्दीन के नदीमों तथा मित्रों में मलिक रुकनुद्दीन दबीर भी था। उसकी वक्तृत्व शक्ति बड़ी प्रबल थी। जो कोई भी उसकी मीठी मीठी बातें तथा चुटकुले सुन लेता या उसकी महफ़िलों में सम्मिलित हो जाता तो फिर वह अपने जीवन में किसी अन्य की महफ़िल में न सम्मिलित होता और न किसी की बात सुनता। वह महफ़िलें करने में हिन्दुस्तानी मलिकज़ादों में बड़ा प्रसिद्ध था। मलिक अइज़्ज़ुद्दीन यग़ाँखाँ, मलिक नसीरुद्दीन, बूरखाँ, सुल्तान अलाउद्दीन के ख़ास नदीम तथा मित्र थे। शहर के सभी लोग इस बात से सहमत थे कि उनके समान अद्वितीय वक्ता तथा सूझ बूझ रखने वाले संसार की आँखों ने नही देखे हैं। सुल्तान अलाउद्दीन का एक प्राचीन दास तथा किताब ख्वाँ[2] अलवी नामक था। शहर देहली के गण्य मान्य तथा बुद्धिमान लोग इस बात से सहमत है कि किसी राज्यकाल में कोई भी व्यक्ति इस प्रकार किसी बादशाह के सामने किताब ख्वानी नहीं कर सका है। वह इतने मधुर स्वर तथा ढंग से कविता पढ़ता था कि जो कोई भी सुनता उसकी आवाज़ तथा उसके पढ़ने के ढंग पर मोहित हो जाता था। कदाचित सैयद किताब ख्वाँ के समान संसार भर में कोई भी किताब न पढ़ सकता था। अलाई राज्यकाल में उसके अतिरिक्त भी बड़े बड़े किताब ख्वाँ हुये है।

अलाई राज्य-काल के कवि

(३५९) अलाई राज्यकाल में इतने बड़े-बड़े कवि हुये है जिनकी बराबरी न तो उनके उपरान्त और न उनसे पूर्व कोई कर सकता था। इनमे पिछले तथा बाद के कवियों का सम्राट् खुसरो था। उसकी तुलना रचना में नई नई बातों के आविष्कार, ग्रन्थों की अधिकता तथा बारीकी पैदा करने में किसी से भी नहीं की जा सकती। गद्य तथा पद्य के विद्वान् एक या दो कलाओं में दक्ष होते है किन्तु अमीर खुसरो समस्त कलाओं में दक्ष था। कविता की भिन्न-भिन्न कलाओं में इतना सुदक्ष पिछले समय में कोई भी नहीं हो सका है और न भविष्य में क़यामत तक कोई हो सकेगा। अमीर खुसरो ने गद्य तथा पद्य में एक पूरे पुस्तकालय की रचना करदी है और बड़ी अच्छी कविता की हैं। ख्वाजा सनाई ने मानो अमीर खुसरो के विषय में कहा है—

छन्द

भगवान् की शपथ नीले आकाश के नीचे, उसके समान न तो कोई है, न था और न हो सकेगा।

उसकी योग्यता, कला में दक्षता तथा बड़प्पन की प्रशंसा सम्भव नहीं। वह एक बहुत बड़ा सूफ़ी भी था। वह अपने जीवन में अधिक समय तक रोज़ा, नमाज़ करता तथा क़ुरान पढ़ा करता था। वह भिन्न-भिन्न प्रकार की इबादतें अनिवार्य रूप से किया करता था। हमेशा रोज़ा रखता था। शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया का ख़ास मुरीद (शिष्य) था। मैंने ऐसा कोई अन्य मुरीद नहीं देखा जिसे शेख़ पर इतना विश्वास हो। उसे शेख़ से बड़ा प्रेम था। वह समा में सम्मिलित होता और वज्द[3] तथा हाल में ग्रस्त रहता। संगीत तथा संगीत की रचना में बड़ा दक्ष था। अनेक कलाओं में, जिनमें मधुर तथा उत्तम स्वभाव की आवश्यकता होती है, भगवान् ने उसे दक्ष बनाया था। वह एक अद्वितीय व्यक्ति था और अपने समय का एक विचित्र तथा अद्भुत पुरुष था।

---

१. सुल्तान की रसोई का प्रबन्धक।

२. सुल्तान के दरबार में पुस्तकें पढ़ने वाले किताब ख्वाँ कहलाते थे।

३. समा के अवसर पर लोगों के मस्त हो जाने को वज्द में आना तथा हाल में आना कहा जाता है।

अलाई राज्यकाल का दूसरा प्रतिष्ठित कवि अमीर हसन सिजज़ी था। उसने अनेक ग्रन्थ गद्य तथा पद्य में लिखे हैं।

(३६०) वह बड़ी उत्कृष्ट रचना करता था। इस कारण से कि उसकी ग़ज़लों में बड़ा प्रवाह था, उसे हिन्दुस्तान का सादी[1] कहा जाता था। अमीर हसन में अनेक उत्तम गुण तथा नैतिकतापूर्ण बातें पाई जाती थीं। उसका चरित्र बड़ा ऊँचा था और वह सुल्तानों तथा देहली के आलिमों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के विषय में जानकारी रखने, बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता, धर्मनिष्ठता तथा सूफ़ियों की भाँति जीवन व्यतीत करने में बड़ा प्रसिद्ध था। उसे संसार से कोई प्रेम न था और समस्त सांसारिक झगड़ों से अलग सुख सम्पन्नता पूर्ण जीवन व्यतीत करता था।

मै वर्षों तक अमीर खुसरो तथा अमीर हसन के साथ जीवन व्यतीत कर चुका हूँ। न उन्हें मेरे बिना और न मुझे उनके बिना चैन आता था। मेरे प्रेम के कारण दोनों ही विद्वान् मेरे बहुत निकट पहुँच चुके थे। हम लोग एक दूसरे के घर बराबर आया जाया करते थे।

अमीर हसन को शेख निज़ामुद्दीन औलिया पर बड़ा विश्वास था। अपने इस मुरीदी के समय में शेख की संत-गोष्ठियों तथा सत्संग में उसने जो कुछ भी शेख से सुना था, वह सब का सब कई ग्रन्थों में जमा किया है। उसका नाम उसने फ़वाईदुलफ़वाद[2] रक्खा है। आजकल सभी सूफ़ी फ़वाईदुलफ़वाद में बड़ा विश्वास रखते हैं। अमीर हसन ने कुछ दीवान (कविताओं के संग्रह) भी लिखे हैं। उसने पद्य में अनेक ग्रन्थ तथा मसनवियाँ[3] लिखी हैं। उसके समान न तो कोई मधुर बात ही कह सकता था और न चुटकुले कह सकता था और न मुख सम्पन्नता का जीवन ही व्यतीत कर सकता था। मुझे जो सुख शान्ति उसके साथ मिलती थी वह उसके अतिरिक्त कहीं और न प्राप्त हो सकी।

सद्रुद्दीन आली, फ़खरुद्दीन क़वास, हमीदुद्दीन राजा, मौलाना आरिफ़, उबैद हकीम शिहाब अंसारी तथा सद्र बिस्ती अलाई राज्यकाल के बड़े-बड़े कवि थे। उन्हें दीवाने अर्ज़ कविता करने का वेतन मिलता था। इनमें से प्रत्येक की कविता करने की एक अलग शैली थी। इन लोगों ने कई-कई दीवान लिखे हैं। उनके गद्य तथा पद्य से उनकी कविता एवं उनकी विद्वत्ता का प्रमाण मिलता है।

अलाई राज्यकाल के इतिहासकार--

(३६१) अलाई राज्यकाल के इतिहासकारों में एक अमीर अर्सलान कुलाही हुआ है जिसे प्राचीन सुल्तानों का इतिहास पूर्ण रूप से याद था। सुल्तान अलाउद्दीन इतिहास के विषय में जो भी प्रश्न करता था, उसका उत्तर वह अपनी स्मृति से दे देता था और उसे इतिहास की पुस्तकें देखने की कोई आवश्यकता न पड़ती थी। वह इतिहास के ज्ञान में बड़ा ही दक्ष था और पूरे शहर में इस विद्या का गुरु समझा जाता था।

अलाई राज्यकाल के प्रसिद्ध इतिहासकारों में ताजुद्दीन इराक़ी का पुत्र कबीरुद्दीन था। वह अपनी विद्वत्ता, कला तथा लेख एवं बड़प्पन के लिए समस्त अलाई राज्यकाल में प्रसिद्ध था। वह अपने पिता के स्थान पर अमीरदाद नियुक्त हुआ था। अलाई राज्य में उसे बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त थी। अरबी तथा फ़ारसी गद्य लिखने में वह बड़ा दक्ष था। उसने फ़तहनामों (विजय का उल्लेख) के अनेक ग्रन्थ लिखे हैं और पद्य लिखने में बड़ी योग्यता दिखाई है।

---

१. प्रसिद्ध फ़ारसी कवि तथा उपदेशक (जन्म ११७५ ई०, मृत्यु १२९२ ई०)

२ यह पुस्तक नवल किशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित भी हो चुकी है।

३. एक प्रकार की कविता जिसमें किसी कहानी अथवा अन्य उपदेशों का उल्लेख होता है।

वह पिछले तथा सभी वर्तमान लेखकों से बढ़ गया है। अलाई राज्यकाल के इतिहास के सम्बन्ध में उसने अनेक विजय पत्र लिखे हैं। उसमें सुल्तान की बहुत बढ़ा चढ़ा कर प्रशंसा की है। उसने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि इतिहासकारों के लिए यह परमावश्यक है, कि वे प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाइयों और बुराइयों दोनों ही का उल्लेख करें। क्योंकि उसने अलाई इतिहास, सुल्तान अलाउद्दीन के राज्यकाल में लिखा था और प्रत्येक ग्रन्थ उसके सम्मुख पेश होता था, अतः वह सुल्तान की प्रशंसा के अतिरिक्त कुछ और लिख भी नही सकता था। उसने इस इतिहास के पश्चात् एक और इतिहास लिखा जिसमें उस निरंकुश बादशाह की बढ़ा-चढ़ा कर प्रशंसा का प्रयत्न नही किया।

देहली में अलाई राज्यकाल में तथा उससे पूर्व एवं उसके उपरान्त अनेक लेखक संकलन कर्त्ता, कवि तथा विद्वान हुये है। इस तारीखे फ़ीरोज शाही के संकलन कर्त्ता ने सभी बातें बड़े संक्षेप में लिखी हैं अतः सभी का उल्लेख सम्भव न था। प्रत्येक समूह के सुदक्ष, अद्वितोय तथा विद्वान् लोगों का उल्लेख इस इतिहास में किया गया है। मेरे लिए यह सम्भव नही कि सभी लेखकों, विद्वानों और कवियों का जो कि प्रसिद्ध हुये हैं उल्लेख कर सकूं; इस कारण मैंने सभी का उल्लेख करने का प्रयत्न नहीं किया।

अलाई राज्यकाल के तबीब[1]—

(३६२) अलाई राज्यकाल में ऐसे ऐसे तबीब हुये है जिनमें से प्रत्येक तिब (वैद्यकशास्त्र) के ज्ञान तथा रोगों की चिकित्सा के कारण बुक़रात एवं जालीनूस से बढ चढ़ कर था। ऐसे प्रतिष्ठित तथा योग्य तबीब किसी अन्य राज्यकाल में न देखे गये थे। तबीबों के गुरु, मौलाना बद्रुद्दीन दमिश्की समस्त अलाई राज्यकाल में बड़े प्रसिद्ध रहे। सर्वदा नगर के तबीब तिब की किताबें उनसे पढा करते थे। भगवान् ने उन्हें तिब का इतना बड़ा ज्ञान प्रदान किया था कि वे रोगी की नाड़ी पकड़ते ही समझ जाते थे कि रोगी के रोग का क्या कारण है, उसका रोग किस प्रकार दूर हो सकता है। रोगी उस रोग से मुक्त हो सकेगा या उसकी मृत्यु हो जायगी। यदि कोई उनकी परीक्षा के लिये किसी शीशी में मनुष्य तथा पशुओं का मूत्र मिला कर उनके सामने लाता तो वह अपने तिब के ज्ञान द्वारा देखते ही मुसकरा कर कह देते कि इतने पशुओं का मूत्र इसमें मिला लिया गया है। नाड़ी पहचानने तथा मूत्र देख कर मौलाना हमीद मुतरिज के अतिरिक्त मौलाना दमिश्की की तुलना इस शहर में किसी से न की जा सकती थी। भगवान् ने उन्हें बड़ा उत्तम वक्ता भी बनाया था। वे बूअली[2] का क़ानून तथा क़ानूनचा और तिब की अन्य पुस्तकें इस प्रकार सविस्तार तथा समझा कर अपने शिष्यों के सामने पेश करते थे कि प्रत्येक शिष्य उनके बयान करने के ढंग तथा उनकी तक़रीर से प्रभावित होकर धरती चुम्बन करने लगता था। तिब मे अतियोत्तम ज्ञान रखते हुए भी वह सूफ़ी थे और कश्फ़ (दैवी प्रेरणा) तथा करामत (चमत्कार) दिखाया करते थे।

(३६३) अलाई राज्यकाल का दूसरा प्रसिद्ध तबीब, मौलाना हुसाम मारीकली का पुत्र मौलाना सद्रुद्दीन तबीब था। वह इस ज्ञान में बड़ा ही सुदक्ष था। उसके पिता तथा पुत्र भी तिब में बड़े दक्ष थे। मौलाना सद्रुद्दीन साहिबे नफ़स तथा साहिबे क़दम था (अन्तरात्मा का ज्ञान रखता था)। रोगी को देखते ही रोग तथा उसका कारण समझ जाता था और उसी के

---

१. वैद्य जो हकीम भी कहलाते हैं।

२. अबू अली सीना वैद्यक शास्त्र तथा दर्शन का बहुत बड़ा विद्वान् था। उसका जन्म बुख़ारा में ९८३ ई० और मृत्यु हमदान में १०३७ ई० में हुई। उसने वैद्यकशास्त्र तथा अन्य विषयों पर लगभग १०० ग्रन्थों की रचना की। क़ानून तथा क़ानूनचा सीना के बड़े प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। मध्य कालीन तिब का इन्हीं ग्रन्थों पर आधार है।

अनुसार चिकित्सा करता था। उसकी दक्षता के कारण उसकी चिकित्सा बड़ी सफल थी।

अलाई राज्यकाल में यमनी तबीब, इल्मुद्दीन, मौलाना अइज़्ज़ुद्दीन बदायूना तथा बद्रुद्दीन दमिश्क़ी के चेले तिब में बड़ी दक्षता रखते थे। नागौरी, ब्राह्मण तथा जायती भी शहर के प्रसिद्ध तबीबों में गिने जाते थे। महचन्द्र तबीब के समान कोई मुबारक क़दम (शुभ चरणों वाला) जाजा जर्राह् के समान रोग समझने वाला तथा इल्मुद्दीन के समान सुरमे वाला हिन्दुस्तान में कोई भी न था और न हो सकेगा। वे पहली ही दृष्टि में रोग को पहचान लेते थे और उसी के अनुसार चिकित्सा करते थे।

अलाई राज्यकाल के ज्योतिषी

अलाई राज्यकाल के ज्योतिषी भी ज्योतिष सम्बन्धी बातें बताने तथा रसद बन्दी (राशि चक्र बनाना) में दक्ष थे। वे बहुत बड़ी संख्या में थे। शहर देहली के अनेक प्रतिष्ठित तथा गण्य मान्य व्यक्तियों एवं उनकी सन्तानों को ज्योतिष से बड़ी रुचि थी। ज्योतिष विद्या से सभी को प्रेम था। कोई भी मुहल्ला ज्योतिषियों से रिक्त न था। बादशाह, मलिक, अमीर, प्रतिष्ठित तथा गण्य मान्य व्यक्ति, ख्वाजा तथा ख्वाजा-ज़ादे, ज्योतिषियों को बहुत इनाम तथा धन सम्पत्ति प्रदान किया करते थे। ज्योतिषी चार-चार सौ और पाँच-पाँच सौ तक़वीम (पत्रा) तथा दो-दो सौ तीन-तीन सौ जन्म-कुन्डलियाँ मलिकों, अमीरों, मन्त्रियों एवं प्रतिष्ठित तथा गण्य मान्य व्यक्तियों की सेवा में ले जाते थे और उन्हें इनाम प्रदान किया जाता था, जिससे वे बड़े सुख शान्ति से जीवन व्यतीत करते थे। शहर के गण्य मान्य व्यक्तियों की यह प्रथा थी कि वे ज्योतिषियों के परामर्श के बिना किसी काम में हाथ न डालते थे। कोई शुभ तथा उत्तम कार्य एवं विवाह आदि, बिना ज्योतिषियों से परामर्श किये हुये देहली में न हो सकता था। बनियानयान, फ़तहयान, सलहियान, मौलाना शर्फ़ुद्दीन मुतरिज़, फ़रोरुक्न अजायब बड़े योग्य ज्योतिषी थे। सुल्तान अलाउद्दीन ने उन्हें इनाम गाँव तथा धन सम्पत्ति प्रदान करदी थी।

(३६४) सभी बनियानयान इस विद्या में बड़े दक्ष थे। उन्होंने सुल्तान अलाउद्दीन तथा उसकी स्त्रियों द्वारा इतनी धन सम्पत्ति प्राप्त करली थी कि वे सब बहुत बड़े धनी हो गये थ। शहर में अनेक मुसलमान तथा हिन्दू ज्योतिषी थे। केवल प्रतिष्ठित और मशहूर लोगों का ही उल्लेख इस इतिहास में किया जा सकता है।

अलाई राज्यकाल में ३ प्रतिष्ठित रम्माल[1] तथा अनेक प्रसिद्ध ख्वानिन्दगान[2] थे। इनमें से एक मौलाना सद्रुद्दीन लूती दूसरे ग़ज़ली रम्माल कोल तीसरे मुईनुलमुल्क जुबैरी थे। वे दिल का हाल बताने, भविष्य की बातें मालूम करने तथा खोई हुई चीज़ों का पता लगाने में जादू कर देते थे किन्तु सुल्तान अलाउद्दीन के आतंक के भय के कारण किसी को इस बात का साहस न होता था कि वह रमल तथा कीमियां[3] के ज्ञान के विषय में कुछ कह सकता। यदि सुल्तान अलाउद्दीन यह सुन लेता कि किसी को कीमिया का ज्ञान है तो वह उसे जीवन पर्यन्त बन्दी-गृह में डाल देता। उसका विचार था कि कीमिया द्वारा धन सम्पत्ति की बहुतायत हो जाती है। देश में उपद्रव धन सम्पत्ति के कारण ही होता है।

अलाई राज्यकाल के गायक

अलाई राज्यकाल के प्रथम दस वर्षों में मुक़रियों[4] में से सब से प्रसिद्ध मौलाना

---

१. भविष्य वेत्ता तथा भविष्य की बातें बताने वाले।

२. इनका भी सम्बन्ध भविष्य की बातें बताने से होता होगा।

३. वह ज्ञान जिसमें सोना बनाने का उल्लेख होता है।

४ अच्छे स्वर में कविता पढ़ने वाले।

मसऊद मुक़री के पुत्र मौलाना लतीफ़ तथा मौलाना हमीदुद्दीन थे। अन्तिम दस वर्षों में मौलाना लतीफ़ के पुत्र, अल्तफ़ तथा मुहम्मद हुये हैं। उपर्युक्त चारों मुक़रियों के मधुर स्वर से प्राण शरीर के बाहर निकल आते थे। किसी मनचले में उनकी आवाज़ को सुनने की शक्ति न थी। जिस महफ़िल में भी उपर्युक्त मुक़री गाना गाते थे, उस महफ़िल की शोभा सौ गुना बढ़ जाती थी। उनके उपरान्त इस प्रकार के मधुर स्वर वाले, रूपवान तथा महफ़िलों की शोभा बढ़ाने वाले, गवैये और चुटकले वाज़ समय की आंखों ने न देखे।

अलाई राज्यकाल में अनेक विचित्र ग़ज़लें गाने वाले भी थे। मुझे विश्वास है कि महमूद बिन सक्क़ा ईसूनशिया, मुहम्मद मुक़री और ईसा ख़ुदादी मिज़मारी[1] के गलों में भगवान् ने दाऊद[2] का स्वर पैदा कर दिया था। जिन लोगों ने उन ग़ज़ल-गायकों की ग़ज़लें सुनली थीं, उन्हें भली भाँति ज्ञात है कि इस प्रकार के ग़ज़ल गाने वाले न तो इससे पूर्व हो सके हैं और न हो सकेंगे।

अलाई राज्य के अन्य कलाकार—

(३६५) ख़त्तात[3], कातिब मुहक़्क़िक़[4] नवीस, शतरंजबाज़ क़व्वाल, गायक, चंग,[5] रबाब[6], कमान्चा[7], मिस्कल[8] तथा नौबत[9] बजाने वाले जितने योग्य अलाई राज्यकाल में थे, उतने योग्य किसी अन्य समय में न थे। प्रत्येक कला के कलाकार भी अलाई राज्यकाल में भरे पड़े थे अर्थात धनुष बनाने वाले, वांण बनाने वाले, टोपी सीने वाले, मोज़ा बनाने वाले, तसबीह बनाने वाले, चाक़ू बनाने वाले भी बड़े प्रसिद्ध थे। किसी समय में इतने बड़े कलाकार तथा योग्य व्यक्ति शहर देहली में न थे। ऐसे लोग तथा उनकी कला प्रशंसा के योग्य हैं, जिनका उल्लेख इतिहास में होता है। उनके उपरान्त कोई भी उनके समान न हो सका।

अलाउद्दीन तथा कलाकार—

इस संकलन कर्त्ता तथा सुल्तान अलाउद्दीन के समकालीनों को सबसे आश्चर्यजनक बात यह ज्ञात होती थी कि यद्यपि इतने विद्वान्, कलाकार, तथा गण्य-मान्य व्यक्ति अलाई राज्य-काल में एकत्रित हो गये थे और उसकी राजधानी उन अद्वितीय लोगों से भरी पड़ी थी, किन्तु उसने कभी भी उनके एकत्रित करने का न तो प्रयत्न किया था और न कभी उसने उन अद्वितीय तथा प्रतिष्ठित लोगों के उचित सम्मान की ओर कोई ध्यान दिया। एक बार सुल्तान ने स्वयं अपनी महफ़िल में गर्व करते हुये कहा था कि मेरे राज्य में इतने अद्वितीय कलाकार एकत्रित हो गये हैं कि इनमें से यदि कोई भी किसी अन्य राज्यकाल में होता तो भगवान् ही जानता है कि उसका कितना आदर सम्मान होता। जिस प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन ने उनकी योग्यता तथा विद्वत्ता की ओर ध्यान नहीं दिया उसी प्रकार हम तथा हमारे जसे अन्य लोग भी उनका महत्व तथा मूल्य न समझ सके और न उनका उचित आदर सम्मान कर सके।

---

१. बांसुरी बजाने वाले।
२. दाऊद एक पैग़म्बर हुए हैं जिनके लिये प्रसिद्ध है कि उनका स्वर बड़ा अच्छा था।
३. सुलेख लिखने वाले।
४. प्रसिद्ध लिखने वाले।
५. डफ़ के आकार का एक छोटा बाजा।
६. सारंगी जैसा एक बाजा।
७. धनुष के समान एक तार का बाजा
८. एक प्रकार की वीणा।
९. शहनाई।

(३६६) हम लोग यही समझते रहे कि इसी प्रकार सर्वदा ऐसे ही कलाकार होते रहेंगे। आज जबकि समस्त संसार अयोग्य, पतित, जाहिल और कमीने लोगों से भरा हुआ है और उनमें से कोई भी शेष नही रहा है तथा उनके समान कोई अन्य उत्पन्न नहीं हो रहा है तो हमारी समझ में इस कथन के अनुसार उनका मूल्य तथा महत्व आता है, कि "किसी बहुमूल्य वस्तु का महत्व उसके छिन जाने के पश्चात् ही होता है।" हमें इस बात मे बड़ा दुःख होता है कि हमने किस कारण उनके पैरों की धूल अपनी आंखों मे नहीं लगाई।

उपर्युक्त वृत्तान्त का उद्देश्य यह है कि यह कहना कठिन है कि अलाउद्दीन का हृदय किस प्रकार का था और वह किस प्रकार निर्भीक तथा लापरवाह था कि हज़ार दो हज़ार कोस से यात्री शेख़ निज़ामुद्दीन के दर्शनार्थ आया करते थे और शहर देहली के बूढ़े जवान, छोटे-बड़े, आलिम, जाहिल, बुद्धिमान तथा मूर्ख भिन्न-भिन्न युक्तियों से इस बात का प्रयत्न किया करते थे कि शेख़ निज़ामुद्दीन उनके ऊपर कृपा दृष्टि रखने लगें किन्तु सुल्तान अलाउद्दीन के हृदय में कभी यह न आया कि वह स्वयं शेख़ के पास जाय या शेख़ को अपने पास बुलाये तथा उनसे भेंट करे। कौन इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता कि यदि अमीर ख़ुसरो जैसा कोई विद्वान् महमूद तथा संजर के राज्यकाल में होता तो वे उसे अवश्य ही विलायतें तथा अक़्ता (राज्य के भिन्न-भिन्न भाग) प्रदान करते। उसे अपने दरबार में बड़ा आदर सम्मान प्रदान करते, किन्तु सुल्तान अलाउद्दीन उन जैसे अद्वितीय कवियों तथा विद्वानों को केवल एक हज़ार तनका वेतन देता था। उन्हें अपने दरबार में विशेष रूप से सम्मानित न करता था और उनके आदर सम्मान का ध्यान न रखता था। वह बड़ा विचित्र मनुष्य था और इतने आतंक तथा अभिमान के होते हुये भी भगवान् ने, चाहे इसे उसका परीक्षा लेना, चाहे उसका टाल देना कहा जाय, अलाउद्दीन के राज्य में अनेक विद्वान् तथा गण्यमान्य व्यक्ति पैदा कर दिये थे। उसके राज्यकाल में अनेक अद्वितीय विद्वान् तथा कलाकर पैदा हो गये थे।

(३६७) उसकी सभी इच्छाएँ पूर्ण रूप से पूरी होती रहती थीं। उसे बड़ा सम्मानित राजसिंहासन प्रदान हुआ था। सुल्तान अलाउद्दीन इतना बड़ा भाग्यशाली तथा ख़ुश क़िस्मत था कि वह तो स्वयं अपने महल के भीतर बैठा रहता था और उसका प्रिय तुच्छ तथा बाजारों में घूमने वाला दास बड़े-बड़े प्रदेशों तथा इक़लीमों पर विजय प्राप्त कर लेता था।

अलाई राज्यकाल का शेष हाल तथा उसका पतन

जब दुनिया की धन सम्पत्ति ने सुल्तान अलाउद्दीन का विरोध प्रारम्भ कर दिया, और भाग्य ने उसका साथ छोड़ दिया तथा समय ने उससे विश्वासघात करना आरम्भ कर दिया, एवं दुष्ट आकाश उसके पतन की ओर कटिबद्ध हो गया तो सुल्तान अलाउद्दीन ने कुछ ऐसे कार्य करने प्रारम्भ कर दिये जिनके द्वारा उसके राज्य तथा वंश का विनाश हो गया। सर्व प्रथम उसके हृदय में सन्देह तथा क्रोध उत्पन्न हो गया। उसने अपने राज्य के हितैषी पदाधिकारियों को पृथक् कर दिया। बुद्धिमान तथा योग्य पदाधिकारियों के स्थान पर ग़ुलाम बच्चों, तुच्छ व्यक्तियों, अयोग्य ख़्वाजासराओं को पदाधिकारी नियुक्त कर दिया। उसने इस ओर ध्यान भी न दिया कि ख़्वाजासरा तथा कमीने लोग राज्य करने की योग्यता नहीं रखते। उसने अपने योग्य पदाधिकारियों को अपने पास से हटा दिया और शाही तख़्त से विज़ारत के कार्य, जिनका बादशाही से कोई सम्बन्ध नहीं, करने लगा। इसके फलस्वरूप उसके वैभव तथा उसके राज्य के नियमों में विघ्न पड़ने लगा।

दूसरे यह कि उसने अपने पुत्रों को बिना समझे बूझे स्वतन्त्र अधिकार प्रदान कर दिये, यद्यपि

वे इसके योग्य न थे। ख़िज्र ख़ाँ को बादशाही चत्र प्रदान किया। उसे पृथक् दरबार करने की आज्ञा प्रदान करदी। उसको अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

(३६८) लोगों से स्वीकृति पत्र लिखवा लिए, और सभी मलिकों से उस पर हस्ताक्षर करवा लिये। बुद्धिमानों तथा योग्य लोगों को उसके ऊपर नियुक्त न किया। वह भोग विलास तथा ऐश व आराम में पड़ गया। कुछ मसख़रे तथा दुराचारी उसके पास जमा रहते थे। उसने (अलाउद्दीन ने), उसके (ख़िज्र. ख़ाँ) तथा अन्य पुत्रों के विवाह पर विशेष ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया। उसकी पत्नी ने लोगों की दावतों में अधिक समय ख़र्च करना तथा समारोह करना शुरू कर दिया। इसके फलस्वरूप उसके राज्य में चारों ओर विघ्न पड़ने लगा।

तीसरे यह कि सुल्तान मलिक नायब पर आसक्त था। उसे सेना का अध्यक्ष बना दिया था। विज़ारत भी उसे प्रदान करदी। अपने सभी विश्वासपात्रों तथा सहायकों से उसको अधिक सम्मानित करने लगा। उसके उस प्रिये माबून (गुदा भोग्य) के हृदय में सम्पूर्ण अधिकार सम्पन्न होने की लालसा होने लगी। उसमें तथा ख़िज्र. ख़ाँ के मामा एवं ससुरे अलप ख़ाँ में शत्रुता उत्पन्न हो गई। यह शत्रुता अलाई राज्यकाल के अन्त का विशेष कारण बन गई और दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी।

चौथे यह कि जिस समय राज्य के नियमों में विघ्न पड़ गया था, उसी समय उसके पुत्र भोग विलास में ग्रस्त थे। उसकी पत्नियाँ दावतें तथा समारोह किया करती थीं और मलिक नायब तथा अलप ख़ाँ एक दूसरे के विनाश का प्रयत्न कर रहे थे। उसी समय सुल्तान अलाउद्दीन जलंधर नामक रोग में, जो कि बड़ा ही घातक रोग है, ग्रस्त हो गया। उसका रोग दिन प्रति दिन बढ़ने लगा। उसके पुत्र भोग विलास में ग्रस्त थे और उसकी पत्नियाँ दावतें तथा समारोह करने में लगी हुई थीं। सुल्तान अलाउद्दीन की कठोरता तथा क्रूरता उस रोग की अवस्था में, जबकि जीवन की आशा न रही थी, दस गुनी बढ़ गई। उसने मलिक नायब को देवगीर तथा अलप ख़ाँ को गुजरात से शहर (देहली) में बुलवाया। दुष्ट मलिक नायब ने यह देखा कि सुल्तान अलाउद्दीन अपनी पत्नी तथा ख़िज्र. ख़ाँ से खिन्न हैं, उसने षड्यन्त्र रचना आरम्भ कर दिया। अलप ख़ाँ को बिना किसी अपराध के सुल्तान अलाउद्दीन की आज्ञा से मरवा डाला। ख़िज्र. ख़ाँ को क़ैद करवा कर ग्वालियर भेज दिया। ख़िज्र. ख़ाँ की माता को कूशके लाल (लाल राजभवन) में कष्ट पहुँचाने लगा। अलप ख़ाँ की हत्या तथा ख़िज्र ख़ाँ के बन्दी बनाये जाने के उपरान्त ही सुल्तान अलाउद्दीन का वंश क्षीण होना प्रारम्भ हो गया। गुजरात में बहुत बड़ा विद्रोह तथा उपद्रव हो गया।

(३६९) मलिक कमालुद्दीन गुर्ग, जो कि उन विद्रोहियों के दमन के लिये नियुक्त हुआ था, उनके द्वारा मारा गया। अलाई राज्य छिन्न-भिन्न होना प्रारम्भ हो गया। इसी बीच में, जबकि उठते हुये उपद्रव बढ़ ही रहे थे, सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई। कुछ लोगों का विश्वास है कि मलिक नायब ने, जबकि उसका रोग बहुत बढ़ गया था, उसकी हत्या करदी। राज्य का समस्त प्रबन्ध तथा अधिकार कुछ तुच्छ व्यक्तियों के हाथ में पहुँच गया। राज्य में कोई बुज़र्चमिहर जैसा विद्वान् न रह गया। कुछ तुच्छ लोग जिस प्रकार उनकी इच्छा होती प्रबन्ध करते थे। शव्वाल मास की ६ तारीख़ की रात में सुल्तान अलाउद्दीन का मृतक शरीर कूशके सीरी (सीरी के राजभवन) से बाहर लाकर जुमा मस्जिद के सामने, उसके मक़बरे में दफ़्न कर दिया गया।

"छन्द"

जब मरने का समय आ जाता है और मृत्यु का मार्ग खुल जाता है
तो फिर जमशेद, परवेज़ तथा ख़ुसरो किसी की भी नहीं चलती।

इस अवसर पर जबकि एक ऐसे बादशाह की मृत्यु तथा चार गज़ जमीन के सिपुर्द हो जाने का उल्लेख हो रहा है, जिसने वर्षों तक अपने बराबर किसी को नहीं समझा, और जो बड़े आतंक से कैख़ुसरो की भाँति अपने विश्वास पात्रों की सहायता से राज्य करता रहा, तो यह उचित ज्ञात होता है कि कैख़ुसरो से जो सातों इक़्लीमों[1] का बादशाह था, सम्बन्धित एक कहानी लिखदी जाय। कहा जाता है कि उसकी यह इच्छा हुई कि वह बादशाही को त्याग कर तथा दुनिया और दुनियादारी से मुंह मोड़ कर आतशख़ाने[2] में चला जाय (क्यों कि वह अग्नि का उपासक था) और वहीं संसार वालों से अलग भगवान् की उपासना किया करे। कैख़ुसरो के विश्वास पात्रों में से एक ने उससे प्रश्न किया कि, "भगवान् ने समस्त संसार का राज्य तुझे प्रदान कर दिया है, तो जान बूझकर इतना बड़ा राज्य त्याग कर तू एकान्त-वास क्यों ग्रहण करता है। इतना सुशासित सातों इक़्लीमों का राज्य छोड़ देने का कारण मेरी समझ में नहीं आता। बादशाह क्यों इतने बड़े राज्य से घृणा करने लगा है!"

(३७०) कैख़ुसरो ने उस विश्वास पात्र को उत्तर दिया कि, "ऐ पुत्र मैं वृद्ध हो गया हूँ। मैंने समय के अनेक अनुभव तथा आकाश की दुष्टता देख ली है। तू अभी जवान है और तुझे कोई अनुभव नही है। तूने न तो देखा और न सुना है कि इस संसार ने पृथ्वी के बादशाहों के साथ किस प्रकार व्यवहार किया, किस प्रकार प्रारम्भ में उसका मित्र बना और उसकी दासता स्वीकार की, किन्तु अन्त में सभी का शत्रु बन गया और सभी से विरोध तथा वैमनस्यता करने लगा; किस प्रकार प्रत्येक का रक्त बहाया और किस प्रकार अपमानित करके जमीन के नीचे पहुँचा दिया।

छन्द

शीरी के हृदय की मदिरा रक्त है जो कि ख़ुसरो को प्रदान की जा रही है।
जो मटका किसान के पास है वह परवेज़ के जल तथा मिट्टी का बना है।
अनेक बड़े बड़े अहंकारी बादशाहों को आकाश ने क्षीण कर दिया।
उस भूखी आँख को इस के उपरान्त भी शान्ति प्राप्त नहीं होती।
बादशाहों के हृदय का रक्त अपने मुख पर मलती है।
यह काली भृकुटी वाली बुढ़िया और यह काले यौवन वाला चाँद।

कैख़ुसरो ने संसार की शत्रुता तथा वैमनस्यता का वर्णन अपने विश्वासपात्र से करते हुये कहा कि, "ऐ पुत्र, तू केवल क्षणिक सुख सम्पन्नता तथा सफलता की ओर दृष्टिपात करते हुए मुझे परामर्श देता है कि मै यह दुष्ट संसार त्याग कर एकान्तवास ग्रहण न करूँ। मैं केवल अन्तिम परिणाम की ओर देखता हूँ। मुझे यह विश्वास है कि यह दुष्ट तथा विश्वासघात करने वाला संसार मेरी ओर से मुख मोड़ कर किसी अन्य के निकट उसी प्रकार चला जायगा, जिस प्रकार मेरे पूर्वजों के पास क्यूमुर्स[3] के समय से होता हुआ चला आ रहा है। आरम्भ में वह बड़ी दासता दिखाता है और दास तथा दासियों के समान सेवा करता है, किन्तु अन्त में विश्वासघात करके शत्रुता करने लगता है और इस प्रकार व्यवहार करता है, जिस प्रकार कोई शत्रु अथवा विरोधी भी नही कर सकता।"

(३७१) "मेरे साथ भी वह विश्वासघात करेगा और मुझे भी बहुत बुरी दशा में छोड़ देगा और मेरे हाथ से निकल जायगा। इससे पूर्व कि मैं संसार को विश्वासघात करते

---

१. मध्यकालीन भूगोलवेत्ताओं का विचार था कि संसार ७ इक़्लीमों अथवा जलवायु के प्रदेशों में विभाजित है।

२. अग्नि पूजा करने वालों का पूजा-गृह।

३, क्यूमर्स को समस्त बादशाहों का पूर्वज बताया जाता है।

हुए देखूं, मैं उसे त्याग कर एकान्तवास ग्रहण कर रहा हूँ और एक कोने में निवास करना प्रारम्भ कर देना चाहता हूँ। ऐ पुत्र, तू मेरे क्षणिक राज्य का हितैषी है। मुझे दुनिया त्यागने से मत रोक। यह कहीं अच्छा है कि मैं इस व्यभिचारी दुष्ट, छली, और हज़ारों पति रखने वाली दुनिया को त्याग दूं और वह मुझे पतित करके न त्याग सके। मुझे वह अधिक याद न करे और मेरे शत्रुओं के पास चली जाय। ऐ पुत्र, मैं भी यह जानता हूँ और तू भी यह जानता है कि सिंह मनुष्य की हत्या कर देता है। उसे भी यह ज्ञात होता है कि वह संसार को न त्यागेगा तो भी उसकी मृत्यु अवश्य हो जायगी। यदि मैं उसे त्यागने के पूर्व ही मर जाऊँ और वह मुझे स्वयं त्याग दे, मेरे साथ विश्वासघात करे तो मुझे कितना दुःख होगा और मरने के पश्चात् भी मेरा दुःख शेष रह जायगा। यदि इस समय जबकि मुझे पूर्ण अधिकार है और मै स्वस्थ भी हूँ और फिर उसे त्यागता हूँ तो मुझे मरने के समय कोई दुःख न होगा और मै अपनी मृत्यु के उपरान्त किसी प्रकार का दुःख अपने साथ न ले जाऊँगा। मेरा बादशाही त्याग देना इतिहासों मे लिखा जायगा और जो कोई भी उसे पढ़ेगा वह मेरी बुद्धि तथा भविष्य की बातें सोचने के लिए मेरी प्रशंसा करेगा। मेरा नाम क़यामत तक शेष रहेगा"। कैख़ुसरो ने अपने विश्वासपात्र को उपर्युक्त उत्तर देने के उपरान्त अपने राज्य के सभी गण्य मान्य व्यक्तियों, विश्वास पात्रों तथा वृद्धों को अपने सम्मुख बुलाया। प्रत्येक से हँसी ख़ुशी विदा हुआ और आतशख़ाने में निवास करने लगा। निश्चिन्त होकर भगवान् की उपासना करने लगा। इसके उपरान्त अपनी मृत्यु के समय तक न तो एकान्त वास त्यागा और न किसी से बातचीत की और न किसी से मिला जुला। जो विद्वान् भी उसके एकान्तवास की कहानी पढ़ता है, वह उसकी बड़ी प्रशंसा करता है कारण कि वास्तविक एकान्तवास वही है।

(३७२) कहा जाता है कि जैसा राज्य कैख़ुसरो को प्राप्त हुआ वैसा राज्य किसी को भी न प्राप्त हो सका और जिस प्रकार उसने राज्य को त्याग दिया उस प्रकार कोई राज्य को न त्याग सका।

सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु के उपरान्त दुष्ट मलिक नायब द्वारा राज्य का जो हाल हुआ उसका उल्लेख। सुल्तान अलाउद्दीन के लघु पुत्र मलिक शिहाबुद्दीन का अलाई राज सिंहासन पर बिठाया जाना।

सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु के दूसरे दिन मलिक नायब ने मलिकों, अमीरों, प्रतिष्ठित तथा गण्य मान्य व्यक्तियों को राजभवन में एकत्रित किया। मलिक शिहाबुद्दीन के विषय में तथा ख़िज़्र ख़ाँ को वली अहदी से वंचित करने के विषय में जो पत्र उसने सुल्तान अलाउद्दीन से लिखवा लिया था, वह राज्य के गण्य मान्य व्यक्तियों को दिखलाया। मलिकों तथा अमीरों को सहमत करके मलिक शिहाबुद्दीन को जिसकी अवस्था ५-६ वर्ष की थी, कठपुतली के रूप में राजसिंहासन पर बिठाया। स्वयं राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध करने लगा। यद्यपि उसका कोई सहायक मित्र अथवा विश्वास पात्र न था, वह इतना असावधान था कि अलाई मलिकों, अमीरों तथा दासों को अपना निष्कपट सहायक दास एवं आज्ञाकारी समझता था। उसे अनुभव, ज्ञान तथा बुद्धि न होने के कारण यह न ज्ञात था कि सुल्तानों की मृत्यु के उपरान्त समय के उलट फेर से लोगों को कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं। उसने प्राचीन राज्यों के उलट फेर का हाल भी इतिहास में न पढ़ा था और न उसका कोई ऐसा निष्कपट गुरु एवं परामर्श दाता था जो उसे राजनीति के विषय में परामर्श देते हुये सावधान रख सकता। राज्य

के अधिकार में आ जाने के उपरान्त शीघ्र ही वह अन्धा और बहरा हो गया और उसने किसी ओर भी ध्यान देना बन्द कर दिया।

(३७३) कुछ कमीनों तथा तुच्छ लोगों की बातों में, जो कि आरम्भ ही से उसकी ओर चक्कर लगाने लगे थे, पड़ गया। प्रथम दिन ही से भोग विलास प्रारम्भ कर दिया। उसने कई हज़ार अलाई सहायकों और हितैषियों की ओर, जो कि उसके राज्य में सम्मिलित थे, ध्यान भी न दिया। उसने अपना समय पाप कर्म, तथा अपने हृदय की दुर्भावनाओं को पूरा करने में खर्च करना प्रारम्भ कर दिया।

राज्य पर अधिकार प्राप्त कर लेने के उपरान्त उसने दुष्ट मलिक सम्बल को, खिज़्र खाँ की आँखें फोड़ देने के लिये ग्वालियर की ओर नियुक्त किया। वह ऐसा दुष्ट था कि उसने यह कार्य स्वीकार कर लिया। उसे बारबकीये हज़रत का पद प्रदान किया। पहले ही दिन खिज़्र खां के भाई शादी खाँ को सीरी के राज भवन में अन्धा कर दिया। अपने नाई को आदेश दिया कि उस कोमल शरीर वाले राजकुमार की आँखें खरबूज़े की फाँक की तरह उस्तरे से काट डाली जायँ। पहले ही दिन से अपनी दुष्टता तथा वैमनस्यता के कारण अपने अन्नदाता के वंश को क्षीण करना प्रारम्भ कर दिया। खिज़्र खाँ की माता को, जो कि मलिक-ए-जहाँ कही जाती थीं, नाना प्रकार के कष्ट देने लगा। उसकी धन सम्पत्ति, आभूषण, सोना, जवाहरात आदि छीन लिये। खिज़्र खाँ के सहायकों का, जो कि बहुत बड़ी संख्या में थे, विनाश करना प्रारम्भ कर दिया। मुबारक खाँ अर्थात् सुल्तान क़ुतुबुद्दीन को, जो कि अवस्था मे खिज़्र खाँ के लगभग था, एक कोठरी में क़ैद करा दिया। उसकी इच्छा थी कि क़ुतुबुद्दीन की आँखों में भी सलाई फिरवा दे (अन्धा बना दे)। उस असावधान व्यक्ति के हृदय में यह बात न आई और न किसी ने उसे समझाया कि (अलाउद्दीन) की स्त्री के विनाश तथा पुत्रों की हत्या से सभी अलाई सहायक तथा विश्वास पात्र उसके प्राणों के शत्रु हो जायेंगे और किसी को भी उस पर विश्वास न रहेगा। उस दुष्ट ने सभी विभागों के उच्च पदाधिकारियों को बुलाकर यह आदेश दिया कि वे नियम जो कि सुल्तान अलाउद्दीन ने बड़े परिश्रम से बनाये थे, लागू रक्खे जायँ।

(३७४) उसने सुल्तानों की इस प्रथा पर कोई ध्यान न दिया कि वे किस प्रकार अपने राज्य के प्रारम्भ में बन्दियों को मुक्त करते हैं, क़ैदियों की सजायें कम करते हैं, दरबार के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को धन-सम्पत्ति देकर अपनी ओर मिलाते हैं, लोगों के पदों में परिवर्तन करते हैं। अपनी राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध को दृढ़ बनाने के लिये उसने उपर्युक्त सिद्धान्त पर कोई ध्यान न दिया। उसे यह ज्ञात न था कि बादशाह की मृत्यु के उपरान्त उसके बनाये हुये नियम छिन्न-भिन्न हो जाते हैं और दूसरे ही ढंग से राज्य-व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य होने लगते हैं। उस दुष्ट अपहरण कर्त्ता ने प्रारम्भ ही से दीवाने विज़ारत, दीवाने अर्ज़ तथा दीवाने इन्शा को आदेश दे दिया कि अलाई नियम उसी प्रकार चालू रक्खे जायँ। इस प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन के बनाये हुये नियमों के अनुसार दीवान के पदाधिकारी राज्य के छोटे बड़े सभी कार्यों के विषय में आदेश प्राप्त करने के लिये उस महबूब कूनपारा (फटी हुई गुदा रखने वाला माशूक़) के पास आने लगे। उसी प्रकार उससे आदेश देने की प्रार्थना करने लगे तथा उस नामर्द से राज्य व्यवस्था सम्बन्धी आदेश प्राप्त करने लगे। उस दुष्ट ने कभी इस ओर ध्यान न दिया कि सर्व साधारण पर राज्य करना बड़ा कठिन है। जब तक अत्यधिक सहायक, विश्वास पात्र तथा मित्र एकत्रित नहीं हो जाते उस समय तक राज्य करना सम्भव नहीं।

जिस समय तक वह बादशाह रहा, बालक मलिक शिहाबुद्दीन को राजसिंहासन पर हज़ार सुतून वाले महल के कोठे पर कठपुतली की तरह बिठलाया जाता था। अमीर, गण्य मान्य व्यक्ति, पदाधिकारी तथा हाजिबों को आदेश दे दिया गया कि वे उपस्थित होकर ज़मीन बोस करें और कुछ देर तक खड़े रहें। जब दरबार समाप्त हो जाता और लोग वापस चले जाते तो उसे उसकी माता के पास भेज दिया जाता। मलिक नायब स्वयं हज़ार सुतून वाले महल में पहुँच कर उस स्थान पर विश्राम करता जो कि उसके भोग विलास के लिये निश्चित कर दिया गया था। दीवान के अधिकारियों को अपने सम्मुख बुलवाता और अलाई नियमों के अनुसार उन्हें आदेश देता।

(३७५) जब दीवान के अधिकारी लौट जाते तो वह कुछ तुच्छ ख्वाजा सराओं के साथ खेल तमाशे मे लग जाता। उस समय केवल तीन चार दुष्ट परामर्श दाता, जिन्हें वह अपना विश्वास पात्र समझता था, उसके पास रह जाते थे और सभी अलाई पुत्रों के विनाश के उपाय सोचा करते थे। जितने दिन वह जीवित रहा वह इसी कुत्सित विचार में ग्रस्त रहा कि किस प्रकार अलाई पुत्र, स्त्रियों, मलिकों तथा दासों का जिनमें से सभी अलाई राज्य के अधिकारी थे, विनाश करदे। उन प्राचीन भक्तों तथा सवारों के स्थान पर अपने दुष्ट सहायक नियुक्त कर दे। वह दुष्ट सर्वदा यही सोचा करता था कि किस प्रकार राज्य को दृढ़ बनाले। वह दुष्ट यह न जानता था कि माशूक़ी, हाव-भाव, माबूनी (गुदा भोग्य) तथा विश्वासघात अति निकृष्ट कार्य हैं। उसे यह भी न मालूम था कि शासन प्रबन्ध चलाने के लिये यह परमावश्यक है कि लोगों में बड़े ऊँचे गुण, बहादुरी, वीरता, दान तथा शक्ति होना परमावश्यक है। थोड़े से समय के लिये अधिकार सम्पन्न हो जाने से वह असावधान तथा बेहोश हो गया था। उसे राज्य प्राप्त हो गया था किन्तु उस पर मौत अपने दाँत तेज़ कर रही थी। बुद्धिमान तथा अनुभवी लोग यही समझते थे कि उसका दुष्ट शीश भाले की नोक पर शीघ्र चढ़ाया जाने वाला है और उसका तथा उसके सहायकों का रक्त शीघ्र बहा दिया जायगा।

दुष्ट मलिक नायब की सुल्तान अलाउद्दीन के दास मलिकों द्वारा हत्या

जिस समय मलिक नायब अलाई वंश के क्षीण करने के उपाय सोच रहा था और इस बात का प्रयत्न कर रहा था कि जब प्रतिष्ठित अलाई मलिक भिन्न-भिन्न स्थानों से एकत्रित हो जायें तो एक दिन उन्हें दरबार में पकड़वा कर मरवा डाला जाय।

(३७६) उसी समय भगवान् ने कुछ अलाई पायक दासों के हृदय में, जो कि हज़ार सुतून की रक्षा करते थे, यह डाल दिया कि दुष्ट मलिक नायब की हत्या करदी जाय। अमीराने सद्दा तथा अमीराने पंजाह[1] जो कि अलाई दास थे, प्रत्येक रात्रि में हज़ार सुतून में देखा करते थे कि मलिक नायब लोगों के वापस हो जाने तथा द्वारों के बन्द हो जाने के उपरान्त प्रातःकाल तक जागता रहता है और अपने विश्वास पात्रों के साथ अलाई वंश के क्षीण कर देने के विषय में षड्यन्त्र रचता रहता है। इन पायकों ने यह निश्चय कर लिया कि हम लोग इस दुष्ट ख्वाजा सरा की हत्या करदें, जिससे हम लोग राज्य भक्त प्रसिद्ध हो जायँ। एक रात को, जबकि लोग दरबार से वापस हो गये थे और द्वार बन्द हो चुके थे, वे पायक नंगी तलवारें लेकर मलिक नायब के सोने के कमरे में घुस गये और उस दुष्ट का शीश उसके गन्दे शरीर से पृथक् कर दिया। उन परामर्शदाताओं की भी जो उसके साथ षड्यन्त्र रचते रहते थे हत्या करदी। सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु के ३५ दिन उपरान्त

१. १०० तथा ५० सैनिकों के अफ़सर।

मलिक नायब का सिर उसके शरीर से पृथक् कर दिया गया और इस प्रकार खिज्र खाँ तथा शादी खाँ की आँखों का बदला उस अभागे दुष्ट से ले लिया गया।

जब मलिक नायब की हत्या की रात्रि समाप्त हुई और सूर्य उदय हुआ तो मलिक, अमीर, गण्य-मान्य व्यक्ति तथा पदाधिकारी दरबार के द्वार पर पहुँचे। उस माबून (गुदा भोग्य) नामर्द का मृतक शरीर देख कर भगवान् के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और एक दूसरे को नये जीवन के लिए बधाई देने लगे। उन्हीं पायकों ने जिन्होंने कि मलिक नायब की हत्या की थी, सुल्तान क़ुतुबुद्दीन को जो कि उस समय मुबारक खाँ के नाम से प्रसिद्ध था और जिसे मलिक नायब ने एक कोठरी में बन्द कर दिया था और चाहता था कि उसे भी अन्धा कर दे, कोठरी से निकाल कर मलिक नायब के स्थान पर सुल्तान शिहाबुद्दीन का नायब नियुक्त कर दिया। मलिक नायब के हत्यारे पायक बड़े अभिमानी हो गये।

(३७७) वे समझने लगे कि हम लोग यदि चाहें तो एक को राज्य से वंचित करके उसकी हत्या के उपरान्त दूसरे को राजसिहासन पर बिठा सकते हैं। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन, शिहाबुद्दीन का नायब हो कर कुछ महीनों तक राज्य-व्यवस्था तथा दरबार का कार्य करता रहा। वह १७-१८ वर्ष का हो चुका था। वह कुछ मलिकों तथा अमीरों को अपना सहायक बनाकर राजसिंहासन पर विराजमान हो गया। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने राजसिहासन पर विराजमान होने के दो मास उपरान्त सुल्तान अलाउद्दीन के लघु पुत्र मलिक शिहाबुद्दीन को जो कि राजसिहासन पर विराजमान था ग्वालियर भिजवा दिया। उसकी आँखों में सलाई फिरवा दी (अन्धा करवा दिया)।

जब सुल्तान क़ुतुबुद्दीन राजसिंहासन पर विराजमान हो गया तो मलिक नायब के हत्यारे पायकों का अभिमान बहुत बढ़ गया और वे खुल्लम खुल्ला दरबार में कहा करते थे कि मलिक नायब की हत्या हम लोगों ने की है और सुल्तान क़ुतुबुद्दीन को हम लोगों ने ही राज सिंहासन पर बिठाया है। वे लोग इस आतंक तथा अभिमान के कारण यह चाहते थे कि अमीरों और मलिकों के साथ बैठें और मलिकों तथा अमीरों से अधिक उत्तम प्रकार की खिलअत तथा तलवार आदि प्राप्त करें। वे चाहते थे कि मलिक तथा अमीर उनको सलाम किया करें। वे इकट्ठा होकर दरबार में घुस आते थे और सबसे पहले सुल्तान के सलाम को पहुँच जाते थे। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने अपने प्रथम दरबार के समय ही यह परमावश्यक समझा और इस बात का आदेश दे दिया कि सभी पायकों को एक दूसरे से पृथक् करके क़स्बों में भेज दिया जाय और उनके सिर कटवा डाले जायं। उनके उपद्रव से दरबार को मुक्त कर दिया जाय। बुद्धिमान लोग पायकों की हत्या होते देखकर यह छन्द पढ़ते थे।

छन्द

ए मरे हुये, तूने किसकी हत्या की, जो स्वयं तेरी हत्या हो रही है।
जो तेरी हत्या कर रहा है उसकी हत्या देखो कब होती है।

(३७८) जिस समय अलाई सन्तान की हत्या हो रही थी, उन्हें अन्धा किया जा रहा था और सुल्तान अलाउद्दीन के वंश पर कष्टों की वर्षा हो रही थी और उसके राज्य का पतन हो रहा था, तो एक पुरुष ने शेख़ बशीर दीवाना से जो कि कश्फ़ तथा करामत दिखाया करते थे प्रश्न किया कि, "शेख़! यह क्या हो रहा है कि अलाई वंश का एक दूसरे के द्वारा इस प्रकार पतन हो रहा है और वह क्षीण होता जा रहा है।" शेख़ बशीर ने उत्तर दिया कि "सुल्तान अलाउद्दीन का राज्य निराधार था। कुछ वर्षों तक लोगों ने यह देखा कि उसकी सभी योजनाएँ उसकी इच्छानुसार पूरी होती रहती हैं किन्तु वास्तव में भगवान् उसे दण्ड

देने में जानबूझ कर देर कर रहा था। इससे दूसरे लोग भी पथ-भ्रष्ट हो गये थे। सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने स्वामी, चाचा तथा ससुर की हत्या की। उसका राज्य तथा सिंहासन अपने अधिकार में कर लिया। जिस प्रकार उसने उसके राज्य का अपहरण किया था, उसी प्रकार अब उसका राज्य भी छिन्न-भिन्न हो रहा है। जिस प्रकार उसने दूसरों की स्त्रियों और बालकों को कष्ट दिया उसी प्रकार दूसरे भी उसकी स्त्री और बालकों को कष्ट दे रहे हैं। जो व्यवहार उसने दूसरों के साथ किया वही व्यवहार दूसरे भी उसके वंश के साथ कर रहे हैं। इससे संसार वालों को यह शिक्षा मिलती है कि जो दूसरों को कष्ट पहुँचाता है वह वास्तव में अपने आपको कष्ट पहुँचाता है। जो किसी का विनाश करता है वह वास्तव में स्वयं अपना विनाश करता है। संसार के सामने यह स्पष्ट है कि अलाई वंश का अन्त किस प्रकार हुआ और यह भगवान् ही जानता है कि सुल्तान अलाउद्दीन को क़यामत में किस प्रकार दण्ड भोगने पड़ेंगे। जिस प्रकार उसने निर्दोष लोगों की हत्या कराई है उसके लिये किस प्रकार उसकी बराबर हत्या की जायगी और किस प्रकार उसे कष्ट पहुँचाये जायेंगे। राज्य भगवान् का है और वास्तविक शासक भगवान् ही है। उसके राज्य में किसी अन्य का हाथ नहीं। दूसरों का राज्य खिलौना है। न वह किसी के पास सर्वदा रहा है और न रहेगा।

छन्द

ऐश्वर्य का स्वामी केवल ईश्वर ही है और राज्य उसी का है।
दूसरों के पास जो तू उसे देख रहा है, वह उसी का प्रदान किया हुआ है।
इक़लीमों की विजय की कुंजी उसके ख़ज़ाने में है।
कोई अपनी भुजाओं की शक्ति से कुछ विजय नहीं कर सकता।

अस्सुलतानुश्शहीद
.कुतुबुद्दुनिया वद्दीन मुबारक शाह

(३७९) सद्रे जहाँ क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन जो क़ाज़ी खाँ भी कहलाता था, जफ़र खाँ मलिक दीनार, शेर खाँ मलिक मुहम्मद मौला, खुसरो खाँ काफ़िरे न्येमत (दुष्ट), उमदतुल मुल्क मलिक बहाउद्दीन दबीर, मलिक ऐनुल मुल्क मुल्तानी वज़ीर देवगीर, मलिक ताजुल मुल्क वहीदुद्दीन क़ुरेशी, ग़ाज़ी मलिक शहनक बारगाह, मलिक फ़ज़लुल्लाह मुल्तानी नायब वज़ीर, मलिक फ़ख़रुद्दीन आख़ुर बक जूना बरीदे मुल्क, मलिक शाहीन वफ़ा मुल्क, मलिक मुग़ीसुद्दीन काफ़ूरी नायब वज़ीर, मलिक ताजुद्दीन हाजिब क़ैसरे ख़ास, मलिक बहराम अंबा (ऐबा) पुत्र मलिक ग़ाज़ी नायब वकीलदर, नसीरुल मुल्क ख्वाजा हाजी, मलिक इख़्तियारुद्दीन तलीआ (तुल्बगा) अमीर कोह, मलिक इख़्तियारुद्दीन यल अफ़ग़ान, मलिक इख़्तियारुद्दीन तमर मलिक तिगीन्, मलिक इख़्तियारुद्दीन मुक़्ता अवध, मलिक नसीरुद्दीन, मलिक क़ीरबेग जिसको चौदह पद प्राप्त थे, मलिक हुसामुद्दीन बेदार नायब भ्रायन, मलिक नसीरुद्दीन कथूली, मलिक ताजुद्दीन जाफ़र, मलिक फ़ख़रुद्दीन अबू रिज़ा, मलिक हुसेन मलिक क़ीर बेग का मंझला पुत्र, मलिक मुख़लिस शराबदार, मलिक हुसेन क़ीर बेग का ज्येष्ठ पुत्र, मलिक काफ़ूर मोहरदार, मलिक बद्रुद्दीन अबू बक्र क़ीरबेग का पुत्र, मलिक संबल अमीर शिकार, मलिक मसीह सरजानदार, मलिक शम्सुद्दीन मीरक, मलिक ताजुद्दीन अहमद, मलिक ताजुद्दीन तुर्क, नायब गुजरात मलिक निज़ामुद्दीन हाँसीवाल, मलिक मुहम्मद शहलूर, मलिक हसामुद्दीन ग़ोरी, मलिक नसीरुद्दीन ख्वाजा अमीरकोह, मलिक शर्फ़ुद्दीन मसऊद, मलिक मुहम्मद पीर सिलाहदार, मलिक शूस्मक पुत्र मलिक कमालुद्दीन गुर्ग।

(३८०) मलिक काफ़ूर हरम सराई, मलिक संबल ख्वाजा सरा, मलिक निज़ामुद्दीन शुक्री हाँस्वी जिसकी शुक्री मस्जिद अभी तक हाँसी में वर्त्तमान है जो मस्जिद शुक्री कहलाती है और जहाँ पाँचों समय की नमाज़ होती है और उसकी पवित्र आत्मा के लिए फ़ातेहा पढ़ा जाता है तथा उसका पुण्य उस चरित्रवान् व्यक्ति की कीर्ति में लिखा जाता है।

——::०::——

(३८१) अल्लाह के नाम से जो कि रहमान और रहीम है।
समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो कि विश्व का पालक है।
दरूद उसके रसूल मुहम्मद तथा उसकी समस्त संतान पर।

मुसलमानों का हितैषी जियाबरनी इस प्रकार निवेदन करता है कि ७७७[1] हिजरी में सुल्तान अलाउद्दीन का पुत्र क़ुतुबुद्दीन अलाई राज सिंहासन पर विराजमान हुआ। मलिक दीनार शहन-ए-पील अलाई को ज़फ़रखाँ की पदवी प्रदान की। अपने मामा मुहम्मद मौलाना को शेरखाँ की पदवी प्रदान की। मौलाना बहाउद्दीन ख़त्तात (सुलेख लिखने वाले) के पुत्र मौलाना ज़ियाउद्दीन को जिसने उसे सुलेख की शिक्षा प्रदान की थी, सद्रे जहानी का पद प्रदान किया। उसे सोने के बरछे प्रदान किये तथा उसकी पदवी क़ाज़ी खाँ निश्चित की। मलिक क़िराबेग को उन्नति प्रदान की और उसे कुछ उच्च पद प्रदान किये। अपने दासों को उच्च पद तथा बड़े-बड़े अक़्ता प्रदान किये। वह हसन नामक एक बरवार बच्चे पर, जिसका पालन पोषण मलिक शादी नायब खास हाजिब अलाई ने किया था, आसक्त हो गया। अपने राज्याभिषेक के प्रथम वर्ष में ही उसे विशेष उन्नति प्रदान की और उसे बड़ा अधिकार सम्पन्न बना दिया। उसकी पदवी खुसरो खाँ निश्चित की। युवावस्था के नशे तथा असावधानी से मलिक नायब का लावलश्कर एवं मलिक नायब की अक़्ता उस बरवार बच्चे को प्रदान करदी। इन्द्रिय लोलुपता से विवश होकर उस बरवार बच्चे को विजारत का पद प्रदान कर दिया। वह युवावस्था के नशे तथा इन्द्रिय लोलुपता के कारण उस हसन बरवार बच्चे पर इस प्रकार आसक्त हो गया था कि एक क्षण भी उसके बिना जीवन व्यतीत न कर सकता था।

(३८२) सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के राज सिंहासन पर विराजमान हो जाने से सुल्तान अलाउद्दीन के रोग ग्रस्त होने से लेकर दुष्ट मलिक नायब की हत्या तक अलाई राज्य में जो खराबियाँ उत्पन्न हो गई थी वे कम होने लगी और लोग सन्तुष्ट होने लगे। लोगों को अपने प्राणों का भय कम होने लगा। अलाई मलिक हत्या तथा दण्ड के भय से मुक्त हो गये। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन जिस समय से बादशाह हुआ, उसी समय से भोग विलास में ग्रस्त हो गया, किन्तु सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के चरित्र में अनेक गुण भी थे। क्योंकि वह क़त्ल होने तथा अन्धा कर दिए जाने एवं नाना प्रकार के कष्टों से बच गया था और अत्यधिक निराश हो जाने के उपरान्त, भगवान् की कृपा से सिंहासनारूढ़ हो गया था, अतः उसने राजसिंहासन पर आसीन होते ही यह आदेश दे दिया कि समस्त अलाई क़ैदियों तथा उन लोगों को जिन्हें देश निकाला मिल चुका था, और जो १७-१८ हजार की संख्या में थे, उन्हें शहर (देहली) तथा उसके आसपास के स्थानों से मुक्त कर दिया जाय। संदेश वाहकों के हाथ क़ैदियों तथा उन लोगों को जिन्हें देश निकाला मिल चुका था मुक्त कर देने के लिए भिन्न-भिन्न प्रदेशों में फरमान भेजे गये। वे लोग जो निराश हो चुके थे मुक्त हो गये। राजसिंहासन प्राप्त करने की खुशी में सैनिकों को ६ माह का वेतन पुरस्कार में दे दिया और मलिकों तथा अमीरों के वेतन बढ़ाने के लिए आदेश दे दिया। लोगों को बहुत इनाम इकराम दिया गया। बहुत समय के पश्चात् लोगों की जेबों में तनके तथा जीतल पहुँचे। यह आदेश दिया गया कि सहायता चाहने वालों के प्रार्थना पत्र लेकर राज-सिंहासन के सम्मुख पेश किये जायें। इस प्रकार के प्रार्थनापत्र बहुत समय से बन्द थे। अधिकांश प्रार्थनापत्र जो उसके सम्मुख पेश होते वह उसे स्वीकार कर लेता था। उसके ४ वर्ष और ४ मास की बादशाहत के समय में आलिमों के वज़ीफ़े बढ़ा दिये गये। सैनिकों के वेतन भी बढ़ा दिये गये। अलाई राज्य काल में

---

१. ७७६ हिज़री (१३७४-७५ ई०) होना चाहिये।

बहुत से गाँव तथा जमीनें जो कि ख़ालसे में सम्मिलित कर ली गई थीं, वे उसके राज्यकाल में लोगों को वापस करदी गईं।

(३८३) उसने लोगों को नये वज़ीफ़े देने तथा धन सम्पत्ति से सहायता देनी प्रारम्भ करदी। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन स्वाभाविक रूप से बड़ा ही नेक व्यक्ति था। उसने लोगों से अधिक ख़िराज लेना तथा धन सम्पत्ति प्राप्त करना बन्द कर दिया। दीवाने विज़ारत द्वारा जिस प्रकार लोगों को कष्ट पहुंचाया जाता था तथा दण्ड दिया जाता एवं बन्दीगृह में डाल दिया जाता था वह सब कुछ बन्द हो गया। लोगों के भोग विलास में ग्रस्त हो जाने तथा किसी प्रकार की रोक टोक न होने से समस्त अलाई नियम ढीले पड़ गये और उनका पालन होना बन्द हो गया। इस परिवर्तन द्वारा राज्य के लोगों को बड़ा आराम हो गया। लोग सुल्तान अलाउद्दीन की कठोरता, सख़्ती एवं दण्ड से मुक्त हो गये। सोना, चाँदी तथा धन, सम्पत्ति प्रत्येक मुहल्ले, गली, घर तथा घर के बाहर दिखाई पड़ने लगी। लोगों को भय और इस बात से मुक्ति प्राप्त हो गई कि "यह करो और वह न करो, यह बात कहो और वह बात न कहो, यह पहनो और वह न पहनो, यह खाओ और यह न खाओ इस प्रकार बेचो और उस प्रकार न बेचो, इस प्रकार जीवन व्यतीत करो और उस प्रकार जीवन व्यतीत न करो।" सर्व साधारण भोग-विलास, ऐश व इशरत, मदिरापान तथा व्यभिचार में पड़ गये। जिस प्रकार सुल्तान गयासुद्दीन बलबन की मृत्यु के उपरान्त, जो कि बड़ा ही बुद्धिमान, अनुभवी तथा तजुर्बेकार बादशाह था और जिसने कठोर अनुशासन स्थापित कर रक्खा था और जिसके राज्य के विशेष तथा साधारण व्यक्तियों को इस बात का साहस न होता था कि उसकी आज्ञा की सुई की नोक के बराबर अवहेलना कर सकें और किसी अनुचित मार्ग पर चल सकें, किन्तु जब सुल्तान मुइज्ज़ुद्दीन जो कि नवयुवक भोगी, विलासी तथा अच्छे स्वभाव का व्यक्ति था, ग़यासी राज सिंहासन पर विराजमान हुआ तो भोग विलास तथा असावधानी के फलस्वरूप सुल्तान बलबन के सभी अधिनियमों में विघ्न पड़ गया। बादशाह तथा प्रजा, भोग विलास एवं ऐश व इशरत में पड़ गये। उसी प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के सिंहासनारूढ़ हो जाने के फलस्वरूप समस्त ख़िराज सम्बन्धी नियम तथा अनाज के भाव को सस्ता करने के नियम क्षीण हो गये।

(३८४) वे नियम जिनके कारण लोग अपने कार्यों में लगे रहते थे और गुप्तचरों तथा जासूसों के भय से साँस भी न ले सकते थे और कोई अनुचित कार्य न कर सकते थे, ढीले पड़ गये। गुप्तचरों द्वारा सुल्तान को सब कुछ ज्ञात हो जाता था। कोई किसी की सिफ़ारिश न कर सकता था। ख़ज़ाने के अतिरिक्त किसी स्थान पर धन सम्पत्ति न रह सकती थी। लोग जीविकोपार्जन में इस प्रकार लगे हुये थे कि कोई षड्यन्त्र तथा विद्रोह का न तो नाम ही ले सकता था और न इन चीज़ों का विचार ही कर सकता था। कोई भी दीवाने विज़ारत तथा दीवाने अर्ज़ के आदेशों का सुई की नोक बराबर भी उल्लंघन न कर सकता था। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के सिंहासनारूढ़ हो जाने के उपरान्त उपर्युक्त सभी अधिनियमों का अन्त हो गया। लोग भोग विलास में लग गये। दूसरे ही प्रकार के नियमों का पालन होने लगा। बादशाही आदेशों के भय का लोगों के हृदय से अन्त हो गया। अधिकतर लोगों ने तोबा तोड़ डाली। पवित्रता तथा नेकी के जीवन का अन्त हो गया। ख़ास व आम में नमाज़ें पढ़ना तथा इबादत करना कम हो गया। लोगों ने फ़र्ज़ नमाज़ें भी पढ़ना बन्द करदीं। मस्जिदों में जमाअत की नमाज़ों का अन्त हो गया, क्योंकि बादशाह खुल्लम खुल्ला रात दिन व्यभिचार तथा दुराचार में लगा रहता था, अतः प्रजा के हृदय में भी व्यभिचार तथा दुराचार के भाव उत्पन्न हो गये। रमणियाँ जो कि दृष्टिगोचर न होती थीं फिर से पैदा हो गईं। रूपवान गायक गली

कूचों में दिखाई पड़ने लगे। इमरद ग़ुलाम, रूपवान ख्वाजासरा तथा सुन्दर कनीज़ों (दासियों) का मूल्य ५, ५ सौ और हज़ार हज़ार तथा दो दो हज़ार तनके हो गया। यद्यपि सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने अलाई आदेशों में केवल मदिरापान की मनाही का आदेश उसी प्रकार चालू रक्खा, किन्तु उसकी आज्ञाओं तथा उसके आदेशों का भय न होने के कारण प्रत्येक घर मदिरा की दूकान बन गया था। लोग छिपाकर और सैकड़ों बहानों से देहातों से मदिरा लाते थे। जीविकोपार्जन की सामग्रियों तथा अनाज का भाव बहुत बढ़ गया। अलाई भावों की ओर कोई ध्यान न देता था। बेचने वाले जिस प्रकार चाहते और जिस मूल्य पर चाहते अपनी चीजें बेचते थे। सराये अद्ल के नियमों का अन्त हो गया।

(३८५) मुल्तानी अपनी इच्छानुसार कार्य करने लगे। घर घर में ढोल बजने लगे। सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु से बाज़ारी बड़े प्रसन्न हुये। अपनी इच्छानुसार सभी चीज़े बेचने लगे। खुल्लम खुल्ला मक्कारी तथा धोखेबाज़ी करते थे और लोगों को जिस प्रकर चाहते कष्ट पहुँचाते थे। सुल्तान अलाउद्दीन की बुराई करते थे और सुल्तान क़ुतुबुद्दीन को दुआ देते थे। मजदूरी चौगुना बढ़ गई। जो लोग १०–१२ तनके पर नौकर थे उनका वेतन ७०–८० और १०० तनके तक पहुँच गया।

घूस धोखेबाज़ी तथा अपहरण के द्वार खुल गये। मुतसर्रिफ़ों, आमिलों तथा अपहरण कर्त्ताओं के भाग्य खुल गये। खिराज कम हो जाने से हिन्दू धन धान्य सम्पन्न तथा मालदार हो गये। उन्हें अपने हाथ पैर की भी सुध बुध न रही। हिन्दू जोकि अत्यन्त अपमानित[1] थे तथा रोटियों को मुहताज थे और जिनके पास पहनने को वस्त्र तक न थे और जिन्हें मार तथा डण्डे के भय से सिर खुजाने का भी अवकाश न था, इन्होंने बारीक वस्त्र धारण करना तथा घोड़ों पर सवार होना प्रारम्भ कर दिया। धनुष बाण का प्रयोग करने लगे। समस्त क़ुतुबी राज्यकाल में एक भी अलाई नियम तथा क़ायदा अपने स्थान पर न रहा। सभी कार्य बिगड़ गये। दूसरे ही कार्य होने लगे। गुप्तचरों को कोई कार्य ही न रहा। दीवाने रियासत के आदेशों का पालन बन्द हो गया। लोगों की दरिद्र अवस्था का अन्त हो गया। प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको सम्मानित तथा प्रतिष्ठित समझने लगा।

इस इतिहास के संकलन कर्त्ता ने क़ुतुबी राज्यकाल में गण्य मान्य व्यक्तियों द्वारा सुना है कि सुल्तान बलबन बड़ा ही अनुभवी, धर्मनिष्ठ न्यायी बादशाह था। उसका समस्त अहंकार तथा निरंकुश व्यवहार आज्ञाओं का उल्लंघन करने वालों तथा दुष्टों के लिये था। आज्ञाकारियों का वह माता पिता के समान ध्यान रखता था। वह इस बात का प्रयत्न किया करता था कि उसके भय के कारण लोग उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें, जिससे सर्वसाधारण को कोई कष्ट न हो और सभी लोग सुरक्षित रहें।

(३८६) वह किसी की धन सम्पत्ति तथा माल व दौलत की ओर निगाह उठा कर भी न देखता था। शरा के विरुद्ध जान बूझ कर कोई आज्ञा न देता था। किसी को सर्वदा बन्दीगृह में न डालता और न हमेशा के लिए शहर से निकाल देता था। वह अत्यधिक इबादत करता था। उसके राज्यकाल में कोई भी आलिम तथा शेख इस प्रकार इबादत न करता था, किन्तु सुल्तान अलाउद्दीन ने विचित्र प्रकार के नियम बनाये। उसके हृदय में यह बात समा गई थी कि उपद्रव की जड़ धन सम्पत्ति है। कठोरता, दण्ड तथा जिस प्रकार भी सम्भव होता, लोगों की धन सम्पत्ति प्राप्त करके अपने राजकोष में सम्मिलित कर लेता था। व्यभिचार तथा दुराचार लोगों के कंठ में विष से अधिक कड़ुवे बना दिये थे। भाव सस्ता

१. पुस्तक में खोशा बचून मीचीदन्द हैं, जिसका अर्थ यह है कि वे अपनी गुदा से अनाज की बाली चुनते थे।

करने के लिये बंजारों तथा बाजारियों का रक्तपात किया करता था। क़ैदियों के हृदय से मुक्त हो जाने की आशा समाप्त करदी थी। हिन्दुओं को चूहे के बिल में भगा दिया था। रायों के राज्य जीत लिये थे। मुगलों का विनाश कर दिया था। विद्रोह की आशंका पर खून की नदी बहा देता था। मिल्क, धन सम्पत्ति तथा वक्फ किसी के पास रहने न दिया। इबादतों की ओर ध्यान न देता था। फ़र्ज नमाजें भी कम पढ़ता था। प्रत्येक कठोरता तथा सख्ती करते समय केवल राज्य के हित पर ध्यान देता था। उसकी सख्ती, कठोरता तथा अत्याचार का उल्लेख हो चुका है। उसने कुछ अत्यधिक कठोर नियम अपनी ओर से बनाये थे, जिनसे लोग सर्वदा भयभीत रहते थे। उनमें से एक यह था कि यदि कोई किसी की स्त्री पर अधिकार जमा लेता था, तो पुरुष को खस्सी कर दिया जाता था और स्त्री की हत्या करदी जाती थी। मदिरापान करने वालों तथा मदिरा बेचने वालों को दण्ड देने के लिये कुँए खुदवाये थे, जिनमें वे बन्दी बनाये जाते थे। जिससे वह रुष्ट हो जाता था उसका कोई ठिकाना न रहता था। क़ैद करने अथवा शहर से निकाल देने पर भी वह संतुष्ट न होता था। जो सवार अर्ज के समय उपस्थित न होता उससे दो तीन वर्ष का वेतन ले लिया जाता था। उसके सामने न कोई किसी के विषय में कुछ कह सकता था और न किसी की सिफारिश कर सकता था। लोग उसकी कठोरता से धर्म सम्बन्धी तथा सांसारिक सभी कार्य उचित रूप से करने लगे थे। उसकी कठोरता, सख्ती तथा दण्ड के भय से मुसलमान अपने धर्म का पालन करने लगे थे। हिन्दू अत्यधिक आज्ञाकारी बन गये थे। लोग सभी कार्य ठीक ढंग से तथा उचित रूप से करने लगे थे।

(३८७) सुल्तान कुतुबुद्दीन की दानशीलता, साधारण व्यवहार तथा अलाई अधिनियमों के त्याग देने से मुसलमान व्यभिचार तथा दुराचार में ग्रस्त हो गये। हिन्दू विरोधी तथा विद्रोही बन गये। उसके भोग विलास में ग्रस्त रहने के कारण सभी लोग भोग विलास में ग्रस्त रहने लगे। प्रत्येक स्थान, घर द्वार तथा समस्त जगहों पर शराबी, रागिणियाँ, भोगी तथा विलासी दृष्टिगोचर होने लगे। अलाई अधिनियमों का अन्त हो गया। दुराचार ने उत्कृष्ट आचरण पर अधिकार जमा लिया। मुसलमानों तथा हिन्दुओं ने आज्ञा पालन के क्षेत्र से अपने पैर बाहर निकाल लिये। सुल्तान कुतुबुद्दीन को अपने राज्यकाल के चार वर्षों तथा चार महीनों में मदिरापान, गाना सुनने, भोग विलास, ऐश व इशरत तथा दान के अतिरिक्त कोई कार्य ही न रह गया था। कोई नहीं कह सकता कि यदि उसके राज्यकाल में मुगल सेना आक्रमण कर देती, या कोई उसके राज्य पर अधिकार जमाने का प्रयत्न प्रारम्भ कर देता या किसी ओर से कोई बहुत बड़ा विद्रोह तथा उपद्रव उठ खड़ा होता तो उसकी असावधानी, भोग विलास तथा लापरवाही से देहली के राज्य की क्या दशा हो जाती, किन्तु उसके राज्यकाल में न तो कोई अकाल पड़ा, न मुगलों के आक्रमण का भय हुआ, न आकाश से कोई ऐसी आपत्ति आई, जिसे दूर करने में लोग असमर्थ होते, न किसी ओर से कोई विद्रोह तथा उपद्रव हुआ, और न किसी को कोई कष्ट था और न क्लेश, किन्तु उसका विनाश उसकी असावधानी तथा भोग विलास के कारण हो गया। अनुभवी लोग जिन्होंने बलबनी राज्य की दृढ़ता तथा सुल्तान मुइज्जुद्दीन की असावधानी, अलाई राज्य का अनुशासन तथा सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के नियमो का पालन न करना देखा था, वे इस बात से सहमत थे, कि बादशाह में अनुशासन स्थापित करने की योग्यता, कठोरता, अपनी आज्ञाओं का पालन कराने की शक्ति तथा अहंकार एवं आतंक का होना आवश्यक है।

(३८८) इससे सभी लोग राज्य तथा धर्म सम्बन्धी कार्य उचित रूप से करने लगते हैं और उलिल अमरी को शोभा प्राप्त हो जाती है। यदि बादशाह भोगी, विलासी तथा साधारण

स्वभाव का होता है, तो उसके राज्य में खास व आम सभी को आराम, भोग विलास तथा अन्य कार्य करने की स्वतंत्रता होती है, किन्तु इससे न बादशाह स्वयं और न उसका राज्य सुरक्षित रह सकता है, अपितु लोगों के धर्म तथा सांसारिक कार्यों में विघ्न पड़ जाता है।

गुजरात का शासन प्रबन्ध

सुल्तान कुतुबुद्दीन ने अपने राज्याभिषेक के प्रथम वर्ष में उन विद्रोहियों के दमन के लिये एक बहुत बड़ी सेना भेजी, जिन्होंने अलप खाँ की ओर से मलिक कमालुद्दीन गर्ग की हत्या करदी थी और गुजरात में बहुत बड़ा विद्रोह कर दिया था। सुल्तान ने ऐनुल मुल्क मुल्तानी को सेना नायक बनाकर गुजरात की ओर नियुक्त किया। ऐनुल मुल्क मुल्तानी, जो कि बहुत बड़ा अनुभवी और बड़ा ही उत्तम परामर्शदाता एवं कार्य कुशल था, गुजरात की ओर रवाना हुआ। देहली के बड़े-बड़े अमीर भी इस लश्कर के साथ भेजे गये। गुजरात के विद्रोही, तथा उनकी सेना पराजित हुई। अलप खाँ के सहायक विद्रोही क्षीण कर दिये गये। ऐनुल मुल्क के अनुभव तथा कार्य कुशलता एवं देहली की सेना के परिश्रम से नहरवाला तथा समस्त गुजरात पुनः सुव्यवस्थित हो गये। यहाँ की सेना का भी उचित रूप से प्रबन्ध कर दिया गया। कुछ विद्रोही जो षड्यन्त्रकारियों तथा विद्रोहियों के नेता थे, क्षीण कर दिये गये और उन्हें दूर-दूर के स्थानों पर भेज दिया गया।

(३८९) सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने मलिक दीनार, जिसकी उपाधि ज़फ़र खाँ थी, की पुत्री से विवाह कर लिया। उसे गुजरात का वाली नियुक्त कर दिया। ज़फ़र खाँ प्राचीन अलाई दास था। वह बड़ा ही अनुभवी, बुद्धिमान तथा समय का शीतोष्ण चखे हुये था। वह अमीरों, गण्य मान्य व्यक्तियों तथा पुरानी सेना को लेकर गुजरात पहुँचा। उसने ३-४ मास में गुजरात को इतना सुव्यवस्थित कर दिया कि वहाँ के निवासी अलप खाँ का शासन प्रबन्ध तथा उसका राज्य भूल गये। सभी राय तथा मुक़द्दम उसके सहायक बन गये। उसने अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त की। उसके पास योग्य तथा चुना हुआ लश्कर एकत्रित हो गया।

यद्यपि सुल्तान कुतुबुद्दीन ने अलाई अधिनियमों तथा क़ायदों में से किसी को भी लागू न रहने दिया किन्तु अलाई सहायकों के विद्यमान होने तथा उनके अधिकार में बड़ी अक्ताओं के होने के कारण, उसके राज्याभिषेक के प्रथम वर्ष ही में उसका राज्य सुव्यवस्थित हो गया। किसी ओर से कोई उपद्रव तथा विद्रोह न हुआ। कोई अशान्ति तथा गड़बड़ी न हुई। राज्य के प्रदेशों के निवासी उसकी बादशाहत से सन्तुष्ट थे।

दक्षिण विजय

७१८ हि० (१३१८—१९ ई०) में मलिक नायब की हत्या के उपरान्त देवगीर की इक़लीम हाथ से निकल चुकी थी और हरपालदेव तथा रामदेव के अधिकार में पहुँच गई थी। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने अपने मलिकों तथा अमीरों को लेकर देवगीर पर चढ़ाई कर दी। उसने अपनी जवानी तथा असावधानी के फल स्वरूप कोई भी अनुभवी एवं कार्य कुशल सरदार अपनी अनुपस्थिति में नियुक्त न किया। उसने एक गुलाम बच्चे को जो अलाई राज्यकाल में वारीलदा के नाम से प्रसिद्ध था, और जिसका नाम शाहीन था, विशेष उन्नति प्रदान की। उसकी पदवी वफ़ाये[1] मुल्क निश्चित की। असावधानी तथा लापरवाही के कारण देहली और देहली का ख़ज़ाना उसके सिपुर्द कर दिया। उसे अपनी अनुपस्थिति में अपना नायब नियुक्त किया। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के हृदय में युवावस्था तथा मस्ती के कारण किसी भी ऐसी दुर्घटना का विचार न उत्पन्न हुआ जो कि बादशाहों की अनुपस्थितियों में उत्पन्न हो जाते हैं। वह देहली

१. राज्य-भक्त।

से कूच करता हुआ रवाना हुआ और देवगीर की सीमा पर पहुँच गया। हरपालदेव तथा उसके सहायक हिन्दू, जिन्होंने देवगीर पर अधिकार जमा लिया था, सुल्तान का मुक़ाबला न कर सके। सभी मुक़द्दम भाग गये और छिन्न-भिन्न हो गये।

(३९०) सुल्तान को युद्ध तथा रक्तपात की आवश्यकता न पड़ी। सुल्तान देवगीर पहुँचा और वहीं रुक गया। कुछ अमीर देवगीर से हरपालदेव का, जिसने विद्रोह तथा उपद्रव कर दिया था, पीछा करने के लिये नियुक्त हुये। उन्होंने उसे गिरफ़्तार करके सुल्तान के सम्मुख पेश कर दिया। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने आदेश दे दिया कि उसकी खाल खींच कर देवगीर के द्वार पर लटका दी जाय।

इसी समय वर्षा भी प्रारम्भ हो गई। सुल्तान को अपनी सेना के साथ देवगीर में रुकना पड़ा। समस्त मरहठा राज्य पुनः सुव्यस्थित कर लिया गया। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने देवगीर का मंत्रित्व पद एक अलाई दास मलिक यकलखी को जो वर्षों से बरीदे ममालिक था, प्रदान किया। मरहठों की अक़्ता में अपनी ओर से मुक्ते मुतसर्रिफ़ तथा आमिल नियुक्त किये।

जब शुभ सितारा चमका तो सुल्तान ने देहली की वापसी का निश्चय कर लिया। खुसरोखां को चत्र प्रदान किया। उसे मलिक नायब की अपेक्षा कहीं अधिक प्रतिष्ठा प्रदान की। जिस प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन मलिक नायब पर मोहित तथा आसक्त हो गया था उसी प्रकार सुल्तान क़ुतुबुद्दीन भी खुसरोखाँ पर उस से कहीं अधिक आसक्त होगया। उस हराम-खोर तथा दुराचारी माबून (गुदाभोग्य) बरवार बच्चे को अलाई मलिकों, अमीरों तथा बहुत बड़ी सेना के साथ माबर में नियुक्त किया। जिस प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन ने मलिक नायब को पूर्णतया अधिकार सम्पन्न तथा स्वतन्त्र बना कर एक बहुत बड़ी सेना का अध्यक्ष नियुक्त करके दूर की इक़्लीमों में दिग्विजय के लिये भेजा था, उसी प्रकार सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने भी खुसरोखाँ ज़ेरखुस्प[1] को दिग्विजय के लिये बहुत बड़ी सेना देकर माबर की ओर भेजा। यह खुसरोखाँ बड़ा ही मक्कार, गद्दार, दुष्ट तथा पतित बरवार बच्चा था। वह अपने दुराचार, व्यभिचार तथा पाप के कारण सुल्तान क़ुतुबुद्दीन का प्रेमी बन गया था।

(३९१) उसने सुल्तान कुतुबुद्दीन के दिल में शैतानी की बातें पैदा करदी थीं। सुल्तान ने इस बात पर भी ध्यान न दिया कि सुल्तान अलाउद्दीन के मलिक नायब पर आसक्त होने तथा उससे खुल्लमखुल्ला व्यभिचार करने और उसको उन्नति प्रदान करने, विज़ारत देने, सेना का अध्यक्ष बनाने, दूर की इकलीमों में भेजने तथा स्वतंत्र बना देने एवं अपना नायब नियुक्त कर देने से कितने कष्ट उठाने पड़े और उस माबून मफ़ऊल (गुदा भोग्य) तथा व्यभिचारी ने उसके घरबार तथा उसके पुत्रों की क्या दुर्गति बनाई, और उसकी नमक हरामी, दुष्टता तथा छल द्वारा राज्य का किस प्रकार विनाश हुआ, उसी प्रकार खुसरो खाँ को उन्नति प्रदान करने, विज़ारत देने, खानी तथा प्रतिष्ठा का स्वामी बनाने, सेना का अध्यक्ष नियुक्त करने और पूर्णतया अधिकार सम्पन्न बनाकर बादशाही वैभव से दूर के स्थानों पर भेजने के कारण कौन कौन से कष्ट न भोगने पड़ेंगे, और उसके द्वारा कौन-कौन सी आपत्तियाँ न उठ खड़ी होंगी। संक्षिप्त मे सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने उस छली तथा मक्कार को बहुत बड़ी सेना देकर माबर की ओर रवाना किया। उस कमीने तथा दुष्ट बरवार बच्चे ने सुल्तान से मैथुन तथा चुम्बन कराने के समय अनेक बार इस बात का प्रयत्न किया था कि उसका तलवार द्वारा अन्त करदे और उसे क़त्ल करदे। वह कमीना तथा वलदुज़्ज़िना (व्यभिचार से उत्पन्न सन्तति) सुल्तान को

१. नीचे सोने वाला अर्थात् गुदा भोग्य।

क़त्ल करने का षड्यन्त्र रचा करता था। दिखाने को तो वह दुराचारी निर्लज्ज, स्त्रियों के समान आत्म समर्पण करता था किन्तु पीठ पीछे उनके विनाश तथा अन्त की योजनायें बनाया करता था। देवगीर से माबर की ओर रवाना होते ही उसने रातों में सभायें करनी प्रारम्भ करदीं। वह अपने हिन्दू सहायकों, कुछ विद्रोहियों और मलिक नायब के मित्रों के साथ जो कि उसके विश्वास पात्र बन गये थे, षड्यन्त्र रचता रहता था। इसी प्रकार योजनायें बनाता हुआ वह माबर पहुँचा।

असदुद्दीन का षड्यन्त्र तथा अलाई वंश का विनाश

(३९२) सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने ख़ुसरो खाँ को विदा करने के उपरान्त भोग विलास तथा मदिरापान करते हुये देहली की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान अलाउद्दीन के चाचा युगरश खाँ का पुत्र मलिक असदुद्दीन बड़ा ही वीर, साहसी तथा पराक्रमी था। उसने यह देख कर कि सुल्तान क़ुतुबुद्दीन भोग विलास में ग्रस्त है, उसे बादशाही कार्यों तथा राज्य व्यवस्था की कोई चिन्ता ही नही और कुछ अनुभव शून्य, अचैतन्य नव युवक उसकी राज्य व्यवस्था में सहायक तथा उसके परामर्शदाता हो गये हैं और सब के सब असावधान तथा बदमस्त हैं तो उसने देवगीर के कुछ विद्रोहियों को अपनी ओर मिला लिया और उनसे मिलकर यह षड्यन्त्र रचा कि जिस समय सुल्तान क़ुतुबुद्दीन अपनी स्त्रियों के साथ मदिरापान करता हुआ भोग विलास में ग्रस्त घाटी सागौन से गुज़रे तो उस समय उसके सिलाहदारों, जानदारों तथा पायकों की अनुपस्थिति में कुछ सवार नंगी तलवारें लिये हुये उसकी स्त्रियों के बीच मे घुस जायँ और सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या कर दें। मलिक असदुद्दीन जो सुल्तान अलाउद्दीन का भाई और राज्य का उत्तराधिकारी है, वह उसी स्थान पर क्षत्र धारण कर ले। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या के उपरान्त किसी को भी उसकी (असदुद्दीन की) बादशाही से घृणा भी न होगी। सब लोग उसके सहायक बन जायेंगे। उन लोगों ने उपर्युक्त षड्यन्त्र से सहमत होकर उसे पक्का कर लिया। वे लोग देख चुके थे कि सुल्तान क़ुतुबुद्दीन कूच के समय किस प्रकार मदिरा के नशे में चूर, बदमस्त अपनी स्त्रियों तथा अन्य लोगों से हँसी मज़ाक़ करता हुआ प्रस्थान करता है। उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि उसे इस प्रकार बदमस्त और असावधान देखकर वे दस बीस सवारों के साथ उसकी स्त्रियों के बीच में घुस जायेंगे और उसकी हत्या कर देंगे।

(३९३) क्योंकि सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की मौत अभी न आई थी और उसे कुछ समय भोग विलास करना शेष रह गया था, अतः जिस रात्रि में सुल्तान सागौन घाटी से गुज़रने वाला था और वे षड्यन्त्रकारी सुल्तान की हत्या करने वाले थे, उनमें से एक षड्यन्त्रकारी ने सुल्तान के पास पहुंच कर षड्यन्त्र तथा विद्रोह का भेद सुल्तान को स्पष्ट कर दिया। सुल्तान सागौन घाटी के पड़ाव पर रुक गया। उसने मलिक असदुद्दीन, उसके भाइयों तथा उसके सहायक षड्यन्त्रकारियों को रातों रात गिरफ़्तार करा लिया और पूछ ताछ के उपरान्त राज्य-शिविर के सामने सभी की हत्या करादी। अपने पिता की कठोरता का अनुसरण करते हुए देहली में आदेश भेजा कि युगरश खाँ के छोटे-छोटे २९ पुत्रों को जिन्हें इस षड्यन्त्र का कोई पता भी न था और जो अपनी अल्प अवस्था के कारण घर से निकल भी न सकते थे, गिरफ़्तार करवा लिया जाय और भेड़ों के समान सब की हत्या करदी जाय। जो कुछ धन सम्पत्ति सुल्तान अलाउद्दीन के चाचा ने एकत्रित की थी उसे ख़ज़ाने में दाखिल कर दिया जाय। उसकी स्त्रियों तथा पुत्रियों को गली गली की ठोकरें खाने के योग्य बना दिया गया।

क्योंकि भगवान् ने सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की मृत्यु उसके भाग्य में उस षड्यन्त्र द्वारा

न लिखी थी अतः वह उस विद्रोह के उपरान्त भी सावधान न हुआ और अपने आप को सँभाल न सका और न अपना भोग विलास त्याग सका। उसने केवल अपने राज्य की रक्षा के लिए इस सावधानी का प्रदर्शन किया कि झायन पहुंच कर अपने सर सिलाहदार शादीकत्ता को यह आदेश देकर ग्वालियर भेजा कि सुल्तान अलाउद्दीन के पुत्र खिज़्र खाँ, शादीखाँ, तथा मलिक शिहाबुद्दीन जो कि अन्धे कर दिये गये थे और केवल रोटी कपड़ा पाते थे, क़त्ल कर दिये जायँ और उनकी माताओं तथा स्त्रियों को देहली लाया जाय। शादीकत्ता ने ग्वालियर पहुँच कर उन निर्दोषों की हत्या करदी और उनकी माताओं तथा स्त्रियों को देहली पहुँचा दिया। इस प्रकार उसने इतना बड़ा अपराध तथा अत्याचार किया।

सुल्तान द्वारा शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया का विरोध एवं उसकी असावधानी

(३९४) मलिक सुल्तान क़ुतुबुद्दीन द्वारा दूसरा अत्याचार यह किया गया कि उसने शेख़ निजामुद्दीन से जो कि संसार के आधार थे इस कारण कि खिज़्र खाँ शेख का चेला था और खिज्र खां की उसने हत्या की थी, शत्रुता प्रारम्भ करदी। शेख को बुरा कहना शुरू कर दिया और शेख को क्षति पहुँचाने का प्रयत्न करने लगा। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन का कुछ बुरा चाहने वाले जो कि अपने आप को उसका हितैषी प्रकट करते थे, उसे शेख़ को कष्ट पहुँचाने के लिये उकसाने लगे।

सुल्तान क़ुतुबुद्दीन देवगीर से देहली पहुँचा। देवगीर तथा गुजरात पर विजय प्राप्त हो चुकी थी। षड्यन्त्र का एक ही दिन में अन्त हो चुका था। सुल्तान ने यह देखा कि अलाई मलिक तथा अमीर जो कि उसके पिता के दास तथा आज्ञाकारी थे, उसी प्रकार उसके भी आज्ञाकारी बन चुके है। उसके दास तथा विश्वासपात्र लाव लश्कर, बड़ा ऐश्वर्य, वैभव तथा अक़ता प्राप्त कर चुके थे। यह सब देखकर उसको जवानी, राज्य, माल, हाथी, घोड़े भोग विलास, मदिरा पान के साथ-साथ विजय, सफलता तथा प्राचीन और नये अमीरों की अधीनता तथा आज्ञाकारिता का नशा भी चढ़ गया। उसने कठोरता, अत्याचार तथा निरंकुशता प्रारम्भ कर दी। उसके चरित्र के गुणों का अन्त हो गया। उसने अत्याचार दुराचार, आतंक निरंकुशता तथा असावधानी प्रारम्भ करदी। निर्दोषों की हत्या शुरू करदी। अपने विश्वासपात्रों तथा निकटवर्तियों को गालियाँ देना प्रारम्भ कर दिया। उसका भोग विलास सौ गुना बढ़ गया। राज्य के पतन, षड्यन्त्र एवं दुर्घटना का भय उसके हृदय से निकल गया।

(३९५) अनुभव शून्यता के कारण उसके परामर्श दाता तथा विश्वासपात्र क्षणिक अधिकार पर अभिमान करने लगे थे। वे उसे राज्य व्यवस्था सम्बन्धी कोई उचित परामर्श न देते थे। लोगों को उसके राज्य का पतन सूर्य से भी अधिक चमकता हुआ दिखाई देने लगा। अनुभवी तथा बुद्धिमान लोग सब कुछ सुनते थे, किन्तु उसकी कठोरता तथा गाली गलौज के भय से उसके सामने कुछ न कह सकते थे। वे लोग अपनी मूर्खता तथा ज्ञान शून्यता के कारण उसकी महफ़िलों में किसी युक्ति से भी कोई शिक्षा सम्बन्धी बात किसी कहानी तथा दृष्टान्त द्वारा भी उसके सम्मुख न कह सकते थे और न प्राचीन बादशाहों के विनाश की चर्चा कर सकते थे। क़ुतुबी राज्य काल में सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के हृदय में भी बदमस्त रहने के फलस्वरूप यह बात न आई और न उसका कोई हितैषी उसके सामने यह निवेदन कर सका, कि वह प्राचीन सुल्तानों का कुछ हाल इतिहासों से सुन लिया करे, कारण कि सुल्तानों का हाल सुनने से राज्य व्यवस्था में सहायता मिलती है और उनकी असावधानी का अन्त हो जाता है। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने अपनी इच्छानुसार तथा मनमाना कार्य करने के सामने इस बात पर ध्यान न दिया कि उसे अनुभवी अलाई मलिकों से परामर्श करना

चाहिये जिससे वे उसके राज्य तथा देश के लाभ एवं हानि के विषय में जो कुछ भी जानते हों उसे स्पष्ट या संकेत द्वारा समझा सकें; विशेष कर सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की देवगीर की वापसी के उपरान्त किसी भी मनुष्य को इस बात का साहस न होता था कि वह उसके राज्य तथा देश के हित की बात उसे समझा सके।

सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने उस निरंकुशता तथा अहंकार के कारण, जो कि उसमें उत्पन्न हो गये थे, सर्व-प्रथम गुजरात के वाली ज़फ़रखाँ की बिना किसी दोष के खुल्लमखुल्ला हत्या करा दी और अपने राज्य की दीवारों को अपने हाथों से नष्ट कर दिया। कुछ समय उपरान्त उसने मलिक शाहीन की, जिसकी उपाधि वफ़ामुल्क थी और जो उसका ससुर था और जिसे उसने अपनी अनुपस्थिति में अपना नायब नियुक्त किया था, हत्या कर दी।

(३९६) उसने बड़ी निरंकुशता प्रारम्भ कर दी। उसने ऐसे कार्य करने प्रारम्भ कर दिये जो किसी शासक को शोभा नहीं देते। उसकी आँखों की लज्जा समाप्त हो गई। वह स्त्रियों के वस्त्र तथा आभूषण धारण करके मजमे में आता था। नमाज़, रोज़ा, पूर्णतया त्याग दिया था। हज़ार सुतून के कोठे से मलिक ऐनुलमुल्क मुल्तानी को जो कि उसके समय के अमीरों तथा मलिकों में बड़ा प्रतिष्ठित था और मलिक क़िराबेग को जो १४ पदों पर नियुक्त था, स्त्रियों तथा व्यभिचारी विदूषकों से इतनी बुरी-बुरी गालियाँ इस प्रकार दिलवाता था कि हज़ार सुतून के सभी उपस्थित जन उन्हें सुनते थे। वह इतना निर्लज्ज हो गया था कि उसने तोबा नामक एक गुजराती मसखरे को अपने दरबार में बड़ा सम्मान प्रदान कर दिया था। वह कमअसल भाँड़, मलिकों को माँ बेटियों की गालियाँ देता था। कभी वह शिश्न खोले दरबार में घुस आता। मलिकों के वस्त्र पर मल-मूत्र कर देता था। कभी बिल्कुल नंगा होकर सभा में घुस जाता और बुरी-बुरी गालियाँ देता था।

क्योंकि उसका (क़ुतुबुद्दीन का) पतन निकट आ गया था और मूर्ख तथा बुद्धिमान सभी यह साफ़-साफ़ समझने लगे थे कि उसका विनाश शीघ्र ही होने वाला है, अतः उसने शेख़ निज़ामुद्दीन को खुल्लमखुल्ला बुरा भला कहना तथा शत्रुता दिखाना प्रारम्भ कर दिया। दरबार के मलिकों को मना कर दिया कि कोई शेख़ के दर्शनार्थ ग़यासपूर न जाय। बदमस्ती में अनेक बार उसने यह कहा था कि जो कोई भी निज़ामुद्दीन का सिर लायेगा उसे १ हज़ार सोने के तनके इनाम में दिये जायेंगे। एक दिन शेख़ ज़ियाउद्दीन रूमी की ख़ानक़ाह में, उस के तीजे के दिन सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की शेख़ निज़ामुद्दीन से भेंट हो गई। उसने शेख़ का कोई आदर सम्मान न किया। शेख़ के सलाम का उत्तर भी न दिया और उनकी ओर ध्यान भी न दिया। शेख़ को क्षति पहुँचाने के लिये शेख़ के विरोधी शेख़ ज़ादा जाम को अपने दरबार का विश्वासपात्र बना लिया। शेख़ुल-इस्लाम रुकनुद्दीन को मुल्तान से शहर (देहली) बुलवाया। ज़फ़रख़ाँ नायब गुजरात की हत्या के उपरान्त दुष्ट ख़ुसरोख़ाँ की माता के भाई[1] हुसामुद्दीन मुरतद (मुसलमान जो इस्लाम त्याग दे) को गुजरात का नायब नियुक्त कर दिया। उसे अमीरों, गण्यमान्य व्यक्तियों तथा पदाधिकारियों के साथ नहरवाले की ओर भेजा। जफ़रख़ाँ का समस्त लाव-लश्कर उसके अधीन कर दिया। ख़ुसरोख़ाँ ग़ुलाम बच्चे का यह भाई बड़ा ही अभागा, दुष्ट तथा मुरतद एवं निर्लज्ज बरवार बच्चा था। वह भी सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के साथ कभी-कभी लेटता था।

(३९७) वलदुज्जिना (व्यभिचार से उत्पन्न सन्तति) मुरतद ने गुजरात पहुंच कर अपने सम्बन्धियों तथा रिश्तेदारों को एकत्रित कर लिया। गुजरात के सभी बरवारों ने एकत्रित

---

१. अन्य स्थानों पर उसे ख़ुसरो ख़ाँ लिखा है।

होकर विद्रोह कर दिया और उपद्रव मचा दिया। उस समय गुजरात के अमीर बड़े शक्तिशाली थे और उनके पास बहुत बड़ा लाव लश्कर था। उन्होंने उसे बन्दी बनाकर सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के पास भेज दिया। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने उसके भाई पर आसक्त होने के कारण उसे तमांचा मार कर छोड़ दिया और उसे अपना विश्वास-पात्र बना लिया। गुजरात के अमीरों ने जब उसके मुक्त हो जाने और विश्वास-पात्र नियुक्त हो जाने का हाल सुना तो वे बड़े भयभीत हो गये और सुल्तान क़ुतुबुद्दीन से घृणा करने लगे।

ख़ुसरो ख़ाँ के भाई को गुजरात के मंत्रित्व से वंचित करने के उपरान्त सुल्तान ने गुजरात का पूर्ण अधिकार तथा राज्य मलिक वहीदुद्दीन क़ुरैशी को प्रदान कर दिया जो कि बड़ा ही कुलीन तथा योग्य व्यक्ति था। उसकी उपाधि सद्रुल-मुल्क निश्चित की और उसे गुजरात भेज दिया। मलिक वहीदुद्दीन क़ुरैशी बड़ा ही योग्य वजीर तथा अति उत्कृष्ट मलिक था। भगवान् ने उसमें अनेक गुण उत्पन्न कर दिये थे। गुजरात पहुँचने पर थोड़े समय के भीतर ही उसने उस प्रदेश को, जिसे ख़ुसरो ख़ाँ के भाई ने छिन्न-भिन्न कर दिया था, सुव्यवस्थित कर दिया। जिस समय सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने मलिक वहीदुद्दीन क़ुरैशी को गुजरात भेजा और ख़ुसरो ख़ाँ का भाई उसके पास रह गया था, उसी समय देवगीर के वज़ीर मलिक यकलखी ने विद्रोह कर दिया। जिस समय उसके विद्रोह का समाचार सुल्तान क़ुतुबुद्दीन को प्राप्त हुआ, उसने एक सेना देहली से रवाना की। उस सेना ने यकलखी तथा उसके सहायक विद्रोहियों को गिरफ़्तार कर लिया। वे सब शहर में लाये गये। सुल्तान ने उसको (यकलखी को) कठोर दण्ड दिया। उसके नाक कान कटवा लिये और उसे विशेष रूप से अपमानित किया।

(३९८) यकलखी के समस्त सहायक विद्रोहियों को कठोर दण्ड दिये। देवगीर की विज़ारत का पद मलिक ऐनुल-मुल्क को, इशरफ़ ख़्वाजा अलादबीर के पुत्र मलिक ताजुल मुल्क को और नियाबते विज़ारत का पद मुख़्लीरुद्दीन अबूरेजा को प्रदान किया। उन्हें देवगीर रवाना किया। सभी बुद्धिमान लोग यह देखकर कि सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने बदमस्त होते हुये भी पदों को किस अच्छे ढंग से बाँटा है, आश्चर्य करते थे। क्योंकि वे लोग अनुभवी तथा योग्य थे, अतः उन्होंने देवगीर पहुँच कर उसे सुव्यवस्थित कर दिया। सेना तथा ख़िराज का अच्छा प्रबन्ध किया।

देवगीर के सुव्यवस्थित हो जाने के उपरान्त सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने मलिक वहीदुद्दीन क़ुरैशी को गुजरात से शहर (देहली) में बुलवाया। ताजुलमुल्की की पदवी, देहली की नियाबते विज़ारत का पद और दीवाने विज़ारत के समस्त अधिकार मलिक वहीदुद्दीन क़ुरैशी को प्रदान किये और इस बात को सिद्ध कर दिया कि जो जिस पद के योग्य था उसे वही पद मिल गया। इस पद के प्रदान करने पर भी शहर के बुद्धिमान लोग आश्चर्य करते थे। उन्हें इस बात से आश्चर्य होता था कि सुल्तान किस प्रकार भोग विलास में ग्रस्त, बदमस्त तथा असावधान रहते हुये भी ऐसे उत्तम कार्य कर रहा है।

ख़ुसरो ख़ाँ का माबर पहुँचना, उसी स्थान पर निवास करने तथा विद्रोह करने और सेना को रोक लेने का षड्यन्त्र तथा किस प्रकार अलाई मलिकों ने उसे पुनः शहर (देहली) पहुँचाया और सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने किस प्रकार राज्य भक्त मलिकों को ख़ुसरो ख़ाँ को प्रसन्न करने के लिये कष्ट पहुँचाये तथा दण्ड दिये।

जब ख़ुसरो ख़ाँ देवगीर से माबर की ओर रवाना हुआ तो माबर के राय शहर छोड़ कर उसी प्रकार अपनी धन सम्पत्ति लेकर भाग गये जिस प्रकार वे मलिक नायब का सामना

म कर सके थे, और अपने सैकड़ों हाथी वहीं बँधे छोड़ गये। वे सब हाथी ख़ुसरो ख़ाँ को प्राप्त हो गये। जब वह माबर पहुँचा तो वर्षा प्रारम्भ हो गई थी और उसे वहीं रुकना पड़ा। माबर में ख़्वाजा तक़ी नामक एक धनी सौदागर रहता था। वह सुन्नी मुसलमान था।

(३९९) उसके पास पवित्र साधनों से एकत्रित किया हुआ धन था। उसने इस बात पर विश्वास करके कि इस्लामी सेना पहुँच गई है, माबर न छोड़ा। ख़ुसरो ख़ाँ के हृदय में विश्वासघात तथा दुराचार के अतिरिक्त कुछ अन्य न था। उसने उस मुसलमान सौदागर को गिरफ़्तार करा लिया और बड़ी कठोरता से उसकी धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया। उसकी हत्या करा दी। उसकी धन सम्पत्ति को ख़ज़ाने की धन सम्पत्ति के नाम से प्रसिद्ध कर दिया। जितने समय तक ख़ुसरो ख़ाँ माबर में रहा उसे अपने विश्वासपात्रों से इस बात का षड्यन्त्र करने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न रहा कि किस प्रकार अलाई मलिकों को गिरफ़्तार करवा कर उनकी हत्या करा दी जाय। किस प्रकार माबर में अपना स्थान बना लिया जाय। सेना में किन लोगों को अपना सहायक बनाये और किन लोगों की हत्या करा दे। अलाई मलिकों में से चंदेरी का मुक़्ता मलिक तमर, मलिक अफ़ग़ान तथा कड़े का मुक़्ता मलिक तुलबग़ायग़दा भी उसके सहायक नियुक्त हुये थे। उनके पास अत्यधिक लाव-लश्कर था। ख़ुसरो ख़ाँ उनसे भयभीत रहता था। अलाई मलिकों को ख़ुसरो ख़ाँ के षड्यन्त्र तथा उसकी दुर्भावनाओं का पता चल गया। उन्होंने उसके स्वभाव में बड़ा परिवर्तन पाया। वे समझ गये कि शीघ्र ही आपत्ति की अग्नि भड़कने वाली है। मलिक तमर तथा मलिक तलबग़ायग़दा ने जो कि बड़े प्रतिष्ठित अमीर तथा राज्य-भक्त थे ख़ुसरो ख़ाँ के पास संदेश भेजा, "कि हमने सुना है कि तू रात दिन विद्रोह करने के लिये षड्यन्त्र रचता रहता है। तेरी इच्छा है कि तू शहर (देहली) को वापस न हो। हम लोग तुझे यहाँ किसी प्रकार रहने न देंगे। इससे पूर्व कि हमारा और तेरा विरोध खुल जाय और हम तुझे बन्दी बना लें, तू वापस होने का संकल्प कर ले।" वह संदेशा उस दुष्ट के पास पहुँचाया गया और इस प्रकार उसे भिन्न-भिन्न युक्तियों तथा बहुत कुछ डराकर वापस लौटाया गया। जिस प्रकार सम्भव हो सका वे लोग ख़ुसरो ख़ाँ तथा सेना को बिना किसी क्षति के देहली ले आये। उनका विचार था कि जब सुल्तान क़ुतुबुद्दीन उनकी राज्य-भक्ति का वृतान्त सुनेगा तो उनको अत्यधिक सम्मानित करेगा और ख़ुसरो ख़ाँ तथा उसके विद्रोही साथियों को कठोर दण्ड देगा।

(४००) सुल्तान क़ुतुबुद्दीन उस पर इतना आसक्त था और कामाग्नि ने उसे इतना बदमस्त बना दिया था कि उसने आदेश दिया कि ख़ुसरो ख़ाँ को देवगीर से पालकी पर सवार करके ७–८ दिन में देहली पहुँचाया जाय। प्रत्येक पड़ाव पर कहारों की बहुत बड़ी संख्या नियुक्त कर दी, जिससे ख़ुसरो ख़ाँ को लाने में देर न हो। उस दुष्ट विद्रोही ने मैथुन की अवस्था में, जो कि एक विचित्र अवस्था होती है, अपने विरोधी मलिकों की सुल्तान क़ुतुबुद्दीन से शिकायत करते हुये कहा कि इन लोगों ने मुझ पर षड्यन्त्र का आरोप लगाया है और मेरे विरुद्ध जाल बनाया है। उन राज्य-भक्तों के विरुद्ध सुल्तान से जो कुछ कह सकता था बढ़ा चढ़ाकर कहा। सुल्तान उस पर इतना आसक्त और उसका इतना प्रेमी था कि उसने उसके छल तथा झूठ पर, जो दुष्ट ने उन राज्य भक्तों के विषय में रचा, विश्वास कर लिया। उन राज्य-भक्तों के सेना लेकर पहुंचने के पूर्व उसने सुल्तान को उनका शत्रु बना दिया। १०० हाथी और ख़्वाजा तक़ी की धन सम्पत्ति जो ख़ुसरो ख़ाँ लाया था उसे सुल्तान ने प्रेम-वश दुनिया भर की धन सम्पत्ति से अधिक महत्वपूर्ण समझ लिया।

उस बरवार बच्चे के पहुँच जाने के उपरान्त समस्त लश्कर भी देहली पहुँच गया। मलिक तमर तथा मलिक तुलबग़ा ने सुल्तान क़ुतुबुद्दीन से ख़ुसरो ख़ाँ के वहीं स्थान ग्रहण

करने के विचार तथा षड्यन्त्र के विषय में बहुत कुछ निवेदन किया और अपनी बात के प्रमाण के लिये साक्षी भी प्रस्तुत किये, किन्तु सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की मौत निकट थी, अतः उसके सोचने समझने की शक्ति का भी अन्त हो गया था। उसने उस दुष्ट के विषय में उन राज्य-भक्तों की किसी भी बात का विश्वास न किया। बदमस्ती में उन्हें अनेक दण्ड दिये और गवाही देने वालों को भी भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्ट पहुँचाये।

(४०१) अभिमान-वश मलिक तमर का पद घटा दिया और आदेश दिया कि उसे दरबार में न आने दिया जाय। चंदेरी की अक़्ता उससे ले ली जाय और वह बरवार बच्चे को प्रदान करदी जाय। उसने मलिक तुलबग़ायग़दा के मुँह पर जो कि ख़ुसरो ख़ां के विद्रोह का हाल खोल खोल कर बयान कर रहा था, चांटे मारे और उसका पद, अक़्ता तथा लाव-लश्कर ज़ब्त कर लिया। उसको क़ैद कर दिया। जिन लोगों ने उसकी राज्य-भक्ति तथा ख़ुसरो ख़ाँ की दुष्टता के विषय मे गवाही दी थी, उन्हें कठोर दण्ड दिये। उन्हें क़ैद करके दूर-दूर के स्थानों पर भेज दिया। दरबार के कर्मचारियों में से ख़ास व आम सभी को ज्ञात हो गया, कि जो कोई भी सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के सामने ख़ुसरो ख़ाँ के विषय में अपनी राज्य-भक्ति के कारण कुछ कहेगा तो उसे उसी प्रकार दण्ड भोगना होगा जिस प्रकार मलिक तुलबग़ा, मलिक तमर तथा अन्य राज्य-भक्तों को भोगना पड़ रहा है। दरबारियों तथा शहर के निवासियों ने समझ लिया कि सुल्तान क़ुतुबुद्दीन का अन्तिम समय आ गया है। दरबार के प्रतिष्ठित तथा गण्य मान्य व्यक्तियों ने विवश होकर ख़ुसरो ख़ाँ की शरण में जाना प्रारम्भ कर दिया। ख़ुसरो ख़ाँ की अधिकार सम्पन्नता तथा सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की असावधानी इतनी बढ़ गई कि हितैषियों तथा परामर्शदाताओं की ज़बानें पूर्णतया बन्द हो गईं और सुल्तान का ख़ुसरो ख़ाँ से प्रेम दिन प्रतिदिन बढ़ने लगा। लोग ख़ुसरोख़ाँ के सुल्तान के विरुद्ध षड्यन्त्र देखते थे और उसके क्रोध, अन्याय तथा दण्ड के भय से कुछ न कह सकते थे।

ख़ुसरो ख़ाँ का षड्यन्त्र तथा सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या

(४०२) ख़ुसरो ख़ाँ ने अपने विरोधियों के पतन के उपरान्त निश्चिन्त होकर षड्यंत्र रचना प्रारम्भ कर दिया। उसने दुष्ट बहाउद्दीन दबीर को जिसका सुल्तान क़ुतुबुद्दीन एक स्त्री के कारण शत्रु बन गया था और जिसकी सुल्तान हत्या करना चाहता था, अपनी ओर मिला लिया। ख़ुसरो ख़ाँ ने विद्रोह के पूर्व सुल्तान की सेवा में निवेदन किया कि, "मैं अन्नदाता की कृपा से इतना बड़ा हुआ हूँ और दूर दूर के स्थानों को विजय करने के लिए नियुक्त हो चुका हूँ, किन्तु समस्त मलिकों तथा अमीरों के पास उनके सम्बन्धी और निकटवर्ती होते हैं किन्तु मेरे पास कोई नहीं। यदि मुझे आज्ञा हो तो मैं अपने मामा को बहलवाल तथा गुजरात भेज दूं, जिससे वह मेरे कुछ सम्बन्धियों को बादशाह की दानशीलता की आशा दिला कर ले आये। सुल्तान बदमस्त तथा असावधान था अतः उसने उस दुष्ट की प्रार्थना स्वीकार करली और उसे इस बात की आज्ञा दे दी। इस बहाने से उसने गुजरात से बरवारों को बुलवा लिया और उन्हें अपना रिश्तेदार बता कर बड़ी उन्नति प्रदान की। उन्हें धन सम्पत्ति घोड़े तथा ख़िलअ़त आदि प्रदान किये। उनकी शक्ति तथा वैभव बहुत बढ़ा दिया। जिस समय वह दुष्ट विद्रोह की योजनायें पूरी कर चुका था, उस समय वह अपने सहायकों, अन्य विद्रोहियों अर्थात क़ुराक़ीमार के पुत्र यूसुफ़सूफ़ी एवं अन्य लोगों को मलिक नायब के महल में अपने सम्मुख बुलवाता था, सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के विनाश के षड्यन्त्र रचता था। प्रत्येक विद्रोही अपनी दुष्टता के अनुसार सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या के विषय में परामर्श देता था। जिस समय वे सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे थे सुल्तान

शिकार खेलने के लिए सरसावे की ओर गया। बरवार सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की शिकार ही के समय घेर कर हत्या कर देना चाहते थे। क़ुराकीमार के पुत्र यूसुफ़सूफ़ी तथा अन्य विद्रोहियों ने बरवारों को मना किया और कहा कि यदि तुम लोग सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की शिकार गाह में हत्या कर दोगे तो समस्त सेना एकत्रित हो जायगी और हम लोग भी जंगल में शिकार हो जायेंगे।

(४०३) सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या के उपरान्त जब इस्लामी सेना एकत्रित होकर हम से युद्ध करने लगेगी तो हम कहाँ जायेंगे अतः यही उचित है कि हम लोग सुल्तान के महल ही में उसकी हत्या करें; उसे हजार सुतून के महल पर ही मारें; महल में शरण ले लें; मलिकों को उनके घरों से बुलवा कर अपना आज्ञाकारी बनायें; यदि वे हमारा साथ न दें तो उनकी भी हत्या कर दें।

सुल्तान सरसावे से शिकार खेल कर शीघ्र ही शहर में पहुँच गया। भोग-विलास तथा ऐश व इशरत में ग्रस्त हो गया। ख़ुसरोख़ाँ ने सुल्तान से उस अवस्था में, जो उसके और सुल्तान के बीच में होती थी, (मैथुन की अवस्था में) निवेदन किया कि मैं प्रत्येक रात्रि में सुबह होते हुये वापस होता हूँ। उस समय महल के द्वार बन्द हो जाते हैं। मेरे सम्बन्धी जिन्होंने मेरी सेवा के लिये अपनी मातृ भूमि त्याग दी है, वे मेरे पास नहीं आ सकते और न मुझ से भेंट कर सकते हैं। यदि छोटे द्वार की कुँजी मेरे किसी आदमी को प्रदान करदी जाय तो रात्रि में मैं अपने सम्बन्धियों को बुला सकूँगा, वे मुझे देख सकेंगे और मैं उनको देख सकूँगा। सुल्तान कामाग्नि में बदमस्त तथा असावधान था। उसने आदेश दे दिया कि छोटे द्वार की कुँजियाँ ख़ुसरोख़ाँ के आदमियों को प्रदान कर दी जायँ। वह अपनी असावधानी के कारण ख़ुसरो ख़ाँ के छोटे द्वार की कुँजियाँ लेने का उद्देश्य न समझ सका। प्रत्येक रात्रि में एक घड़ी या दो घड़ी उपरान्त बरवार महल के छोटे द्वार से प्रविष्ट होने लगे और ३-३ सौ गुजराती बरवार मलिक नायब के महल में एकत्रित होने लगे। महल के दरबान बरवारों को अस्त्र-शस्त्र लगाये आते जाते देखते थे और उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार की शंकायें होती थीं। बुद्धिमान लोग समझ गये थे कि बरवारियों के महल में आने जाने के फल स्वरूप अवश्य ही कोई आपत्ति आने वाली है। महल में तलवारें चमका करती थीं और दरबान एक दूसरे से कहा करते थे कि आज कल में ख़ुसरो ख़ाँ अवश्य ही कोई उत्पात करेगा।

(४०४) सुल्तान क़ुतुबुद्दीन का स्वभाव इतना बिगड़ गया था कि कोई भी उसके हित की बात उसके सम्मुख न कह सकता था। महल के सभी लोग सब कुछ समझ गये थे और एक दूसरे से इसके विषय में बातें करते और दूर से तमाशा देखते थे। अनुभवी लोग सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की बदमस्ती तथा असावधानी देख कर कहते थे कि जिस प्रकार सुल्तान जलालुद्दीन की धन सम्पत्ति का लोभ उसे अन्धा बनाकर कड़े ले गया और उसकी हत्या करा दी, इसी प्रकार भोगविलास तथा कामाग्नि ने सुल्तान को बदमस्त, असावधान और अन्धा बहरा बना दिया है। वह ख़ुसरो ख़ाँ के हाथों अपनी हत्या स्वयं करा रहा है। गण्यमान्य तथा प्रतिष्ठित मलिकों की सुल्तान क़ुतुबुद्दीन से यह कहने की शक्ति न थी कि 'ख़ुसरो ख़ाँ का षड्यन्त्र चरम सीमा तक पहुँच गया है। यदि सम्भव हो तो अपने प्राणों की रक्षा कर लें। बरवारों में से जोकि महल में आते हैं किसी एक को गिरफ़्तार करके पूछताछ करलें। वे तुझसे ख़ुसरो ख़ाँ के षड्यन्त्र का हाल बता देंगे कि वह किस सीमा तक पहुंच चुका है।' समस्त गण्यमान्य व्यक्ति महल में ख़ुसरो ख़ाँ के षड्यन्त्र का हाल सुनते थे और बरवारियों को अपनी आँखों से देखते थे; भीतर ही भीतर घुलते जाते थे और अपना गुस्सा पीते जाते थे। वे सुल्तान

क़ुतुबुद्दीन के अप्रसन्न हो जाने के भय से कुछ न कह सकते थे और अपने प्राणों के भय से दूर ही से सब कुछ देखा करते थे।

क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन के पास, जो कि क़ाज़ी ख़ाँ के नाम से प्रसिद्ध था, महल के द्वारों की कुँजियाँ रहती थीं। उसने सुल्तान क़ुतुबुद्दीन को सुलेख की शिक्षा दी थी। वह बड़ा ही प्रतिष्ठित व्यक्ति था। जिस रात्रि में सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या हुई उस रात्रि में नमाज़ के उपरान्त उसने अपने प्राणों से हाथ धोकर सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की सेवा में पूर्णतया खोलकर निवेदन कर दिया कि, "प्रत्येक रात्रि में ख़ुसरो ख़ाँ के महल में बरवार एकत्रित होते हैं और तैयारियाँ करते रहते हैं।"

(४०५) "मैंने बहुत से लोगों से सुना है कि ख़ुसरो ख़ाँ षड्यन्त्र रच रहा है। सभी मलिकों को ख़ुसरो ख़ाँ के षड्यन्त्र के विषय मे पूर्णतया जानकारी है, किन्तु बादशाह के भय से वे कुछ निवेदन नहीं कर सकते। मुझे बादशाह की दया पर पूर्ण विश्वास है। जो कुछ मैंने देखा और सुना है उसे बयान कर रहा हूँ। अन्नदाता को भलीभाँति ज्ञात है कि यदि सुल्तान अलाउद्दीन के समय में कोई अपने घर में अधिक पानी भी पी लेता था तो बादशाह को सूचना मिल जाती थी किन्तु बादशाह के महल में इतना बड़ा षड्यन्त्र हो रहा है और एक समूह रात भर षड्यन्त्र रचता रहता है किन्तु अन्नदाता को इसका ज्ञान ही नहीं है। यदि अन्नदाता इस कार्य के विषय में, जिसका सम्बन्ध अन्नदाता के प्राणों से है, पूछ ताछ करलें तो अन्नदाता के राज्य को कोई हानि न होगी और ख़ुसरो ख़ाँ के प्रेम में कुछ कमी न हो जायगी। यदि पूछ ताछ के उपरान्त कुछ सिद्ध न हो तो अन्नदाता ख़ुसरो ख़ाँ पर हजार गुना अधिक विश्वास करने लगें। यदि पूछ ताछ के उपरान्त कुछ पता चल जायगा तो ऐसी अवस्था में बादशाह के प्राण सुरक्षित रहेंगे।"

क्योंकि सुल्तान क़ुतुबुद्दीन तथा क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन का अन्तिम समय आ गया था और सुल्तान अलाउद्दीन के वंश का विनाश प्रत्येक दीवार तथा द्वार से दृष्टिगोचर हो रहा था, अतः सुल्तान क़ुतुबुद्दीन, क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन पर बहुत गरम हुआ और उससे बड़ी सख़्त बातें की। उस राज्य-भक्त मित्र की बातों पर विश्वास न किया। उसी समय ख़ुसरो ख़ाँ भी सुल्तान के पास पहुँच गया। सुल्तान ने अत्यधिक असावधानी, लापरवाही तथा बदमस्ती का प्रदर्शन करते हुये दुष्ट ख़ुसरो ख़ाँ से कहा कि, "इस समय क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन मेरे सम्मुख तेरे विषय में इस प्रकार निवेदन कर रहा था।"

(४०६) ज़ेरखुस्प (नीचे सोने वाले) तथा नामर्द ने रोना प्रारम्भ कर दिया और आँसू बहाते हुये सुल्तान से कहा कि, "क्योंकि अन्नदाता मुझ पर इतनी कृपा दृष्टि रखते हैं और मुझे अन्य प्रतिष्ठित लोगों से अधिक सम्मानित कर दिया है, अतः समस्त प्रतिष्ठित लोग एवं अन्नदाता के सम्बन्धी मेरी जान के पीछे पड़ गये हैं और मेरी हत्या करा देना चाहते हैं।" उस रूपवान का रोदन तथा चपलता देखकर सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की कामाग्नि और बढ़ गई और उसे चिपटाकर उसने उसके होठों का चुम्बन करते हुये, उसे नीचे करके जो कुछ करना चाहता था किया। इस मैथुन की अवस्था में जबकि मनुष्य प्रत्येक वस्तु तथा अपने प्राण का भी मूल्य नही समझता उसने उससे कहा कि, "यदि समस्त संसार छिन्न भिन्न हो जाय और मेरे सभी निकटवर्ती एक मत होकर तुझे बुरा कहना आरम्भ कर दें, तो भी मैं तुझ पर इतना आसक्त हूँ कि इनमें से प्रत्येक को तेरे एक एक बाल पर न्योछावर कर दूंगा। तू सन्तुष्ट रह कि मैं तेरे विषय में किसी की कोई बात न सुनूंगा।"

जब एक चौथाई रात बीत गई और एक पहर रात का घंटा बज गया तो मलिक तथा अमीर वापस हो गये और जब सुल्तान की मृत्यु का समय निकट आ गया तो क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन

जो कि द्वार का पदाधिकारी था, हज़ार सुतून के कोठे से नीचे उतरा। अपने कर्तव्य के अनुसार हज़ार सुतून में बैठकर द्वारों, दरबानों तथा रक्षकों के विषय में पूछ ताछ करने लगा। सुल्तान के पास गुदा भोग्य ख़ुसरो ख़ाँ के अतिरिक्त कोई न रह गया। ख़ुसरो ख़ाँ का मामा रन्धौल कुछ बरवारियों के साथ छिपा था। वह परदों के पीछे छिपता हुआ हज़ार सुतून में पहुँचा और क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन के पास गया। क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन को एक पान का बीड़ा दिया। उसी समय जहारिया बरवार ने, जो कि सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या के लिये नियुक्त था, क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन के निकट पहुंचकर परदे के पीछे से क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन की ओर एक तीर फेंका और उस असावधान, अभिमानी मुसलमान को उसी स्थान पर सुला दिया।

(४०७) क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन की हत्या से हजार सुतून में कोलाहल होने लगा। जाहरिया क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन की हत्या के उपरान्त अपने कुछ बरवार साथियों को लेकर हज़ार सुतून के कोठे की ओर लपका। हज़ार सुतून बरवारों से भर गया। हज़ार सुतून में चारों ओर शोर गुल होने लगा। उस कोलाहल की आवाज़ हज़ार सुतून के कोठे पर सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के कान में भी पहुँच गई। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने ख़ुसरो ख़ाँ से पूछा कि, 'नीचे यह शोरगुल कैसा हो रहा है !" वह दुष्ट सुल्तान के पास से उठकर हज़ार सुतून के कोठे की दीवार तक गया और इधर उधर देखकर पुनः सुल्तान के पास आकर निवेदन किया कि 'खासे के घोड़े छूट गये हैं। वे हज़ार सुतून के आँगन में दौड़ रहे हैं।" लोग घेर कर उन घोड़ों को पकड़ रहे हैं। सुल्तान तथा ख़ुसरो ख़ाँ यह वार्ता कर ही रहे थे कि जाहरिया अन्य बरवारों को लेकर हज़ार सुतून के कोठे पर पहुंच गया। शाही द्वार के दरबानों की, जिनके नाम इब्राहीम तथा इस्हाक़ थे, तीर मारकर हत्या करदी। हज़ार सुतून के कोठे के कोलाहल से सुल्तान समझ गया कि कोई षड्यन्त्र हो गया है। सुल्तान उसी समय जूतियाँ पहन कर अन्तःपुर की ओर भागा। मफ़ऊल (गुदा भोग्य) ख़ुसरो ख़ाँ ने देखा कि यदि सुल्तान अन्तःपुर की ओर भाग जायगा तो फिर काम बड़ा कठिन हो जायगा। अति निर्लज्जता और ग़ुलाम बच्चगी का प्रयोग करते हुये सुल्तान के पीछे दौड़ा और सुल्तान के पास पहुंच कर उसके केश पीछे से अपने हाथों में लपेट कर खींचे। सुल्तान ने उसे पटक दिया और उसके सीने पर सवार हो गया। उस ज़ेरखुस्प (नीचे लेटने वाले) व्यभिचारी ने सुल्तान के केश न छोड़े। सुल्तान ख़ुसरो ख़ाँ को ज़मीन पर पटके हुये उसके सीने पर सवार था। ख़ुसरो ख़ाँ नीचे पड़ा हुआ सुल्तान के केश खींच रहा था। इसी अवस्था में जाहरिया बरवार उनके पास पहुंच गया। ख़ुसरो ख़ाँ सुल्तान के नीचे पड़ा-पड़ा चिल्लाया, और जाहरिया से कहा कि मुझे छुड़ा।

(४०८) उसने सुल्तान के सीने पर एक तीर मारा और उसके केश पकड़ कर ख़ुसरो ख़ाँ के सीने पर से खींच कर भूमि पर फेंक दिया। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन का शीश काट डाला। अनेक व्यक्ति हज़ार सुतून के भीतर, कोठे पर, तथा छत पर, बरवारियों के हाथ मारे गये। हज़ार सुतून का कोठा बरवारियों से भर गया। दरबान भाग कर कोने में छिप गये। बरवारों ने चारों ओर डीवट जला दिये। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन का मृतक शरीर हज़ार सुतून के कोठे से हज़ार सुतून के आँगन में फेंक दिया। वहाँ लोगों ने उसे देखा और पहिचान कर सभी इधर उधर कोनों में हो गये और अपने प्राणों से निराश हो गये।

जिस समय उन्होंने सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या की, उसी समय ख़ुसरो ख़ाँ का मामा रन्धौल, उसका भाई हुसामुद्दीन मुरतद जाहरिया बरवार तथा अन्य बरवार सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के अन्तःपुर में घुस गये। फ़रीद ख़ाँ तथा उमर ख़ाँ की माता की, जो सुल्तान अलाउद्दीन

की पत्नी थी, उसी समय हत्या करदी। उन्होंने बहुत बड़े-बड़े अग्नि-पूजकों एवं नास्तिकों से भी बढ़कर उत्पात किये। उस समय आकाश से यही आवाज़ आ रही थी, कि जो जैसा करता है, वैसा ही फल पाता है। सुल्तान जलालुद्दीन शहीद की आत्मा हज़ार सुतून के कोठे से और अलाई स्त्रियाँ अन्दर से देख रही थीं और भगवान् अपने न्याय की नदी से न्याय का प्याला लोगों को पिला रहा था और बुद्धिमानों के कानों में यह उपदेश पहुँच रहा था।

छन्द

बुराई मत कर कारण कि इसका बुरा फल होगा।
कूँआ मत खोद नही तो स्वयं गिर पड़ेगा।।

(४०९) तत्पश्चात् बरवारों ने जो जो भी हत्या के योग्य थे उनकी हत्या करदी। किसी रक्षक ने साँस भी न ली। अलाई राज भवन में बाहर से भीतर तक बरवारों का अधिकार स्थापित हो गया। अत्यधिक मशाल और डीवट जला दिये गये। दरबार सजा दिया गया। उसी आधी रात में मलिक ऐनुद्दीन मुल्तानी, मलिक वहीदुद्दीन क़ुरैशी, मलिक फ़खरुद्दीन जूना अर्थात् सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ शाह, मलिक बहाउद्दीन दबीर, मलिक क़िराबेग के पुत्रों को जिनमें से सभी प्रतिष्ठित तथा गण्य मान्य मलिक थे एवं अन्य प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलवाया गया। उन्हें महल के द्वार पर लाया गया और वहाँ से वे हज़ार सुतून के कोठे पर पहुँचा दिये गये। उन्होंने चमकते हुए दिन की भाँति देख लिया कि क्या हो गया। महल अन्दर से बाहर तक बरवारों तथा हिन्दुओं से भरा हुआ था। खुसरो खाँ ने विजय प्राप्त करके पूर्ण अधिकार जमा लिया था। समस्त व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई थी। दूसरे ही रंग ढंग प्रारम्भ हो गये थे। अलाई राज्य की जड़ें ढीली पड़ गईं। समय के विश्वासघात द्वारा अलाई वंश छिन्न भिन्न हो रहा था। दुष्टों, दुराचारियों तथा माबूनों (गुदा भोग्यों) को सम्मान प्रदान करने एवं मलिक नायब और खुसरो खाँ को उन्नति देने से सुल्तान अलाउद्दीन तथा सुल्तान क़ुतुबुद्दीन का जिस प्रकार विनाश हुआ, वह शिक्षा ग्रहण करने वालों के नेत्रों के सामने स्पष्ट हो गया।

दुष्ट ख़ुसरो ख़ाँ का सिंहासनारोहण

बरवारों का प्रभुत्व, बरवारों द्वारा महल में मूर्तिपूजा, ख़ुसरो ख़ाँ तथा ख़ुसरो-खानियों का अलाई एवं क़ुतुबी वंश पर अधिकार, सुल्तान अलाउद्दीन तथा उसके पुत्रों का संसार से नामोनिशान क्षीण होना।

ख़ुसरो ख़ाँ तथा बरवार षड्यन्त्र के कार्य से निश्चिन्त होकर मलिकों तथा अमीरों को हज़ार सुतून के कोठे पर ले गये और उन्हें अपने सामने बैठाया। सुबह हुई और सूर्य उदय हुआ। माबून (गुदा भोग्य) ख़ुसरो ख़ाँ ने अपनी पदवी सुल्तान नासिरुद्दीन निश्चित की।

(४१०) वह गुलाम बच्चा तथा व्यभिचार से उत्पन्न बरवार बच्चा, बरवारों तथा हिन्दुओं की सहायता से अलाई तथा क़ुतुबी राजसिंहासन पर विराजमान हो गया। दुष्ट और पतित समय ने लोमड़ी तथा गीदड़ के बच्चे को शेर बबर के स्थान पर बिठा दिया। सुअर के बच्चों तथा कुत्तों का गुण रखने वाले व्यक्ति को सेना की पंक्तियों का विनाश कर देने वाले हाथियों के सिंहासन और वीर योद्धाओं के तख़्त पर बिठा दिया। उसी समय उस दुष्ट दुराचारी तथा माबून एवं माबून के पुत्र ने आज्ञा दी कि सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के कुछ दासों की जो कि उसके विश्वासपात्र तथा प्रतिष्ठित अमीर थे, गिरफ़्तार करके हत्या करदी जाय। कुछ की तो दिन मे उनके घरों में और कुछ को महल में बुलवा कर एक कोने में हत्या करदी गई। उनका घर बार, मुसलमान स्त्रियाँ, दास तथा दासियाँ और धन सम्पत्ति बरवारों तथा हिन्दुओं को प्रदान करदी गई। क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन का घर और समस्त धन सम्पत्ति उसकी स्त्रियों और बालकों के अतिरिक्त जो कि रात्रि ही में भाग गये थे, रंधौल ख़ुसरो ख़ाँ के मामा को प्रदान करदी गई।

उसी समय दरबार में उस मफ़ऊल ने अपने मुरतिद भाई को ख़ानेख़ानाँ, अपने मामा रंधौल को रायरायाँ, क़ुराक़ीमार के पुत्र को शाइस्ता ख़ाँ, यूसुफ़सूफ़ी को सूफ़ी ख़ाँ और बहाउद्दीन दबीर को जो कि उसका सहायक था आज़मुलमुल्क की पदवी प्रदान की गई। अलाइयों तथा क़ुतुबियों को धोखा देने के लिए ऐनुलमुल्क मुलतानी को, जिसका उससे कोई सम्बन्ध न था आलिम ख़ाँ की पदवी प्रदान की गई। दीवाने विज़ारत ताजुलमुल्क व वहीदुद्दीन क़ुरैशी तथा अन्य पद कुछ अन्य मलिकों को और मलिक क़िराबेग का पद उसके पुत्रों के पास रहने दिया। अपने सिंहासनारोहण के पाँच ही दिन के भीतर उस तुच्छ तथा पतित ने महल में मूर्ति पूजा आरम्भ करदी। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के हत्यारे जाहरिया को सोने तथा जवाहरात से सजाया। कमीने बरवार मुल्तानी ज़नाने महल में खुल कर खेले। सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की पत्नि पर मफ़ऊल (गुदाभोग्य) ख़ुसरो ख़ाँ ने अधिकार जमा लिया।

(४११) बरवार अधिकार सम्पन्न हो गये। उनको अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हो गई अलाई तथा क़ुतुबी काल के प्रतिष्ठित अमीरों की स्त्रियों एवं मुसलमान दासियों पर उन लोगों ने अधिकार जमा लिया। पश्चाताप की अग्नि तथा अत्याचार की लपट आकाश तक पहुँचने लगी। बरवार तथा हिन्दुओं ने अपने अधिकार के नशे में क़ुरान का कुर्सी के स्थान पर प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया। मस्जिद के ताक़ों में मूर्तियाँ रखदी गई और मूर्ति पूजा होने लगी। उस मर्दों के नीचे लेटने वाले का राज्याभिषेक होने से तथा बरवारों और हिन्दुओं के अधिकार सम्पन्न

हो जाने से कुफ्र तथा काफ़िरी के नियमों को उन्नति प्राप्त होने लगी। खुसरो खाँ माबून ने इस उद्देश्य से कि बरवारों तथा हिन्दुओं को विशेष अधिकार प्राप्त हो जायँ और अत्यधिक हिन्दू उसके सहायक बन जायँ ख़ज़ाना लुटाना तथा धन सम्पत्ति बाँटना प्रारम्भ कर दिया। चार मास के भीतर विशेष कर उन ढाई महीनों में जबकि सुल्तान मुहम्मद ने उसका विरोध प्रारम्भ न किया था उस अधर्मी ग़ुलाम बच्चे को सुल्तान नासिरुद्दीन के नाम से पुकारा जाता था। मिम्बरों (मस्जिदों के मंच) पर उसके नाम का खुत्बा पढ़ा जाता था। टकसाल से उस दुष्ट के नाम का सिक्का चलता था। खुसरो खाँ तथा उसके सहायकों को उस समय अलाइयो तथा क़ुतुबियों के विनाश के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न था। वे ग़ाज़ी मलिक अर्थात् सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लक़ शाह के अतिरिक्त जो कि दीपालपुर की अक़्ता का स्वामी था, किसी मलिक तथा अमीर की परवाह न करते थे और किसी से भी न डरते थे। वे लोग सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लक़ को किसी उपाय से शहर (देहली) में लाने तथा अपने जाल में फँसाने के लिये मुहम्मद तुग़लक़ शाह को जो उन दिनों में मलिक फ़ख़रुद्दीन जूना कहलाता था, लोभ में डालने का प्रयत्न किया करते थे। उस समय वह आख़ुरबकी के पद पर विराजमान था। उसे इनाम तथा खिलअत प्रदान की जाती थी। सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ शाह, जो कि सुल्तान क़ुतबुद्दीन का बड़ा विश्वास पात्र था, अपने स्वामी की हत्या से खून के घूंट पिया करता था।

(४१२) हिन्दुओं से मेल जोल तथा बरवारों के अधिकार सम्पन्न हो जाने से, जो कि उस समय उसके आश्रयदाता थे, वह बड़ा खिन्न रहता था। क्योंकि खुसरो खाँ तथा उसके सहायक लोगों को धन सम्पत्ति का लोभ देकर अपनी ओर मिलाते थे, अतः वह कुछ न बोल सकता था। ग़ाज़ी मलिक अर्थात् सुल्तान गयासुद्दीन तुग़लक़ शाह को दीपालपुर में बरवारों तथा हिन्दुओं की उत्पत्ति एवं उसके आश्रयदाताओं अर्थात् सुल्तान अलाउद्दीन एवं सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के विनाश के समाचार मिलते रहते थे। वह इससे अत्यधिक दुःखी और क्रोधित होता रहता था। सुल्तान अलाउद्दीन के पुत्रों तथा उसके घरबार के विनाश पर शोक प्रकट किया करता था, कारण कि वे लोग उसके आश्रयदाता थे। रात दिन वह अपने अन्नदाता की हत्या का बरवारों तथा हिन्दुओं से बदला लेने के विषय में सोचा करता था, किन्तु वह इस भय से कि कहीं हिन्दू उसके पुत्र सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ शाह को कोई हानि न पहुंचा दें, वह दीपालपुर से निकलने तथा बरवारों पर चढ़ाई करने का प्रयत्न न कर सकता था।

उस समय हिन्दुओं तथा बरवारों के शक्तिशाली एवं अधिकार सम्पन्न हो जाने से कुफ्र तथा काफ़िरी के नियमों को उन्नति प्राप्त होती जा रही थी, और हिन्दू समस्त इस्लामी राज्य में उत्पात मचा रहे थे। वे खुशियाँ मनाते और इस बात पर प्रसन्न होते थे कि देहली में पुनः हिन्दुओं का राज्य स्थापित हो गया; इस्लामी राज्य का अन्त हो गया। खुसरो खाँ की तीन चार महीने की बादशाही तथा खुसरो-खानियों के उत्पात एवं बरवारों तथा हिन्दुओं के अधिकार सम्पन्न हो जाने से शहर देहली तथा आसपास के मुसलमान तीन श्रेणियों में विभाजित हो गये थे। प्रथम वे जो कि दुनिया की लालच तथा अपने ईमान और विश्वास की कमज़ोरी से हृदय से खुसरो खाँ तथा खुसरो-खानियों के मित्र हो गये थे। वे हिन्दुओं तथा बरवारों के राज्य से सन्तुष्ट हो गये थे और उस माबून (गुदा भोग्य) बरवार बच्चे के राज्य तथा भाग्य के उन्नति की प्रार्थना किया करते थे। वे उससे धन सम्पत्ति प्राप्त करते थे। इस प्रकार के लालची लोग जो कि संसार ही को सब कुछ समझते हैं, बहुत बड़ी संख्या में पाये जाते थे।

(४१३) दूसरी श्रेणी के वे लोग थे जिन्हें उस दुष्ट द्वारा वेतन तथा इनाम मिलता था। ये लोग भी बहुत बड़ी संख्या में थे। कुछ लोगों को व्यापार में अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त होती थी, किन्तु ये लोग हृदय से उस दुष्ट के सहायक न बने थे। यह लोग कुफ़ की अधिकता तथा इस्लाम की क्षति से दुःखी रहते थे। ये लोग ख़ुसरो ख़ाँ तथा ख़ुसरो ख़ानियों की उन्नति से प्रसन्न न थे। तीसरी श्रेणी में वे लोग थे जिन्हें अपनी धर्मनिष्ठता तथा इस्लाम में विश्वास होने के कारण ख़ुसरो ख़ाँ की बादशाही, हिन्दुओं तथा बरवारों की उन्नति एवं कुफ़् की तरक़्क़ी से हृदय में बड़ा दुःख होता था। वे लोग मुसलमानों की मान हानि हो जाने से ठीक से पानी भी न पीते थे। उन्हें ठीक से रात में नींद भी न आती थी। वे रात दिन उन अधर्मियों के विनाश के विषय में योजनायें बनाया करते थे। भगवान् से उनके विनाश की प्रार्थना किया करते थे और अपने धर्म को क्षति पहुँचाने वाले लोगों की उन्नति से खिन्न रहते थे।

मलिक फ़ख़रुद्दीन जूना अर्थात् सुल्तान मुहम्मदशाह बिन तुग़लक़ शाह का भागकर अपने पिता ग़ाज़ी मलिक अर्थात् सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लक़ शाह के पास द्योपालपुर पहुँचना। ग़ाज़ी मलिक का द्योपालपुर से ख़ुसरो ख़ाँ तथा ख़ुसरो-ख़ानियों से बदला लेने के लिये देहली पर चढ़ाई करना, ख़ुसरो ख़ाँ का अपने भाई मुरतिद तथा सूफ़ी ख़ाँ को, ग़ाज़ी मलिक के मुक़ाबले के लिए भेजना, ग़ाज़ी मलिक का ख़ुसरो ख़ाँ पर विजय प्राप्त करना।

ढाई महीने तक ख़ुसरो ख़ाँ के बादशाह रहने और अलाई तथा क़ुतुबी वंश के छिन्न-भिन्न हो जाने और क़ुतुबी तथा अलाई प्रतिष्ठित अमीरों एवं गण्य मान्य मलिकों के विनाश के उपरान्त मलिक फ़ख़रुद्दीन जूना अर्थात् सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ शाह ने साहस से काम लिया।

(४१४) उसकी वीरता तथा राज्य भक्ति ने उसे इस बात पर विवश किया कि वह अपने स्वामियों तथा आश्रय दाताओं की हत्या का बदला ले। सायंकाल की नमाज़ से पूर्व की नमाज़ के उपरान्त भगवान् पर भरोसा करके अपने कुछ दासों को साथ लेकर सवार हुआ और ख़ुसरो ख़ाँ के पास से भाग निकला। उसने ख़ुसरो-ख़ानियों की अत्यधिक संख्या पर कोई ध्यान नही दिया। क्योंकि वीर तथा पंक्तियों को छिन्न-भिन्न कर देने वाले रणक्षेत्र में सवार तथा प्यादों की प्रतीक्षा नहीं करते, अतः वह इतनी बड़ी संख्या के बीच से द्योपालपुर के मार्ग पर चल खड़ा हुआ। शाम की नमाज़ के समय उसी दिन ख़ुसरो ख़ाँ को भी सूचना मिल गई। उस वीर तथा ख़ुरासान एवं हिन्दुस्तान के योद्धा के पुत्र के चले जाने से ख़ुसरो ख़ाँ तथा ख़ुसरो-ख़ानियों का दिल टूट गया। उसके अपने पिता के पास चले जाने से समस्त दुष्ट चेतना-रहित हो गये और उनके समस्त कार्य छिन्न-भिन्न होने लगे। ख़ुसरो ख़ाँ को बादशाही तथा ख़ुसरो-ख़ानियों को भोग विलास कड़वा मालूम होने लगा। अपने सहायक षड्यन्त्रकारी सवारों को मुहम्मद क़ुराक़ीमार के साथ जो कि अर्ज़े ममालिक नियुक्त हो चुका था, सुल्तान मुहम्मद का पीछा करने के लिये भेजा। सुल्तान मुहम्मद जो कि ईरान तथा तूरान के वीरों से भी कहीं अधिक वीर था रातों रात सरसुती पहुँच गया। जो सवार उसका पीछा करने के लिये नियुक्त हुए थे, वे उस तक न पहुँच सके, और निराश होकर वापस हो गये। ग़ाज़ी मलिक अर्थात् सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लक़ शाह ने मुहम्मद सरतबा को सुल्तान मुहम्मद के

सरसुती पहुँचने के पूर्व दो सौ सवारों के साथ द्योपालपुर से सरसुती भेज दिया था। सरसुती का क़िला उन सवारों ने सुव्यवस्थित कर दिया था। सुल्तान मुहम्मद सरसुती से सवार होकर अपने पिता के पास बिना किसी कष्ट के द्योपालपुर पहुँच गया।

(४१५) ग़ाज़ी मलिक ने पुत्र के पहुँचने पर भगवान् के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। बहुत कुछ दान पुण्य किया। खुशी के ढोल बजाये गये। ग़ाज़ी मलिक अपने आश्रय-दाताओं का बदला बरवारों तथा हिन्दुओं से लेने में अपने आपको स्वतन्त्र समझने लगा। आक्रमण तथा बरवारों का विनाश करने का प्रयत्न करने लगा। दुष्ट खुसरो खां ने, जो बरवारों की शक्ति के बल पर सुल्तान नासिरुद्दीन बन गया था, अपने भाई मुरतिद तथा यूसुफ़सूफ़ी को जिनमें से एक को खानेखानाँ तथा दूसरे को सूफ़ी ख़ाँ की पदवी प्रदान करदी थी, हाथी धन सम्पत्ति तथा सेना देकर ग़ाजी मलिक से युद्ध करने के लिए देहली से द्योपालपुर की ओर भेजा। अपने भाई को चत्र प्रदान किया। वे दोनों सेनानायक उस चिड़िया के बच्चे के समान जिसने अभी अभी अण्डे से निकल कर उड़ना प्रारम्भ कर दिया हो, देहली के बाहर निकले। अपनी मूर्खता, बचपन तथा पागलपन से उस जैसे अजगर का मुकाबला करने के लिए जिसे ग़ाज़ी मलिक कहा जाता था और जो इतना वीर था कि उसकी तलवार से खुरासान तथा मुगलिस्तान के लोग भय से काँपते थे, अपने हाथियों, ख़ज़ाने तथा सेना पर अभिमान करते हुए द्योपालपुर की ओर रवाना हुये।

उन दिनों में जबकि सूफी ख़ाँ मुलहिद हो गया था, गाज़ी मलिक का मुक़ाबला करने के लिए प्रस्थान करते समय उन लोगों के घरों पर जा जा कर रोना और प्रार्थना करना प्रारम्भ कर दिया जो कि संसार को त्याग कर एकान्तवास ग्रहण कर चुके थे। वह कुफ़ के झगड़े की विजय के लिए उनसे खुदा से दुआ करने की प्रार्थना करता था। वे भगवान् के भक्त तथा धर्म-निष्ठ लोग सूफी ख़ाँ तथा खुसरो खानियों के सामने एवं उनकी अनुपस्थिति में संक्षिप्त रूप में भगवान् से यह प्रार्थना करते थे कि, 'ऐ खुदा! बरवारों और गाज़ी मलिक की सेना में उसे विजय प्रदान कर जो कि मुहम्मद के धर्म की सहायता करता हो।' इस प्रकार उनकी प्रार्थनायें गाज़ी मलिक के विषय में जिसने इस्लाम की सहायता के लिए युद्ध की तैयारी की थी, स्वीकार हो गई।

(४१६) इस प्रकार दोनों अनुभव-शून्य सेना नायक जिन्हें न तो कोई अनुभव था और न समय के छल की सूचना और जो न सत्य के मार्ग पर थे, सरसुती पहुँचे। अपनी अनुभव शून्यता तथा अयोग्यता के कारण सरसुती को ग़ाज़ी मलिक के सवारों के हाथों से मुक्त न करा सके। अपनी अयोग्यता तथा कायरता एवं अनुभव शून्यता के कारण शत्रु की सेना को पीछे छोड़ कर आगे बढ़ गये। जिस प्रकार छोटे छोटे बालक अपने मामाओं के घर मेहमान जाते हैं, उसी प्रकार वे लोग अन्धा धुन्ध अभिमान से भरे हुऐ उस योद्धा तथा रुस्तम का मुक़ाबला करने के लिए जिसने बीसियों बार मुग़लों को छिन्न-भिन्न कर दिया था, बढ़ते चले गये; व अयोग्य बालकों जिन्होंने कि अपने बाबा व मामा, माता तथा पिता की गोद से पैर बाहर भी न निकाले थे, उसका मुक़ाबला करने के लिए बढ़ने लगे। इससे पूर्व कि ये अयोग्य तथा अनुभव शून्य लोग देहली से द्योपालपुर की ओर सेना लेकर रवाना होते, ग़ाज़ी मलिक ने मलिक बहराम ऐबा को जो कि बड़ा राज्य-भक्त था अपने पास उच्च से बुलवा लिया। वह अपने सवार तथा प्यादों को लेकर द्योपालपुर पहुँच कर ग़ाज़ी मलिक से मिल चुका था।

जब ग़ाज़ी मलिक ने यह सुना कि खुसरो ख़ाँ का मुरतिद भाई तथा सूफ़ी ख़ाँ अभिमान से भरे हुये बढ़ते चले आ रहे हैं और सरसुती पार करली हैं, तो वह भी मुसलमानों तथा

इस्लाम की रक्षा एवं कुफ़ तथा काफ़िरी के विनाश के लिए अपने प्राचीन राज्य-भक्त मित्रों तथा अन्य विश्वास पात्रों के साथ एक सुव्यवस्थित सेना लेकर द्यूपालपुर के बाहर निकला। इलीली क़स्बे के आगे निकलकर, नदी को पीछे करके शत्रुओं का मुकाबला करने के लिये डट गया। दूसरे दिन दोनों सेनाओं में युद्ध हो गया। यह प्रमाणित हो गया कि सत्य की विजय होती है। आकाश की ओर से विजय तथा सफलता ने ग़ाज़ी मलिक की पताकाओं को अपने शरण में ले लिया। पहले ही धावे में ग़ाज़ी मलिक ने दुष्टों की सेना को पराजित कर दिया, और हरामख़ोरी के समूह छिन्न-भिन्न हो गये।

(४१७) इसके उपरान्त ख़ुसरो ख़ाँ के मुरतिद भाई का चत्र, दूरबाश, हाथी, घोड़े, धन सम्पत्ति आदि ग़ाज़ी मलिक के अधिकार में आ गये। कुछ अमीर तथा दुष्टों की सेना के प्रतिष्ठित सवार युद्ध करते हुए मारे गए। कुछ घायल हुए और अधिकतर लोग बन्दी बना लिये गये। उन दोनों बालकों ने, जो कि ख़ान तथा सेना नायक बन गये थे और ख़ुश ख़ुश सिंहों तथा चीतों का मुकाबला करने के लिये निकल खड़े हुए थे, बहुत से लोगों की हत्या करा दी। उनका चत्र, हाथी, ख़ज़ाना और घोड़े छिन गए। वे दुम दबाकर इस प्रकार भागे कि उनकी धूल भी दिखाई न दी। एक रात के पश्चात् अपना काला मुँह लेकर सिरों पर धूल डाले हुये ख़ुसरो ख़ाँ के पास पहुँच गये। उनकी पराजय तथा ग़ाज़ी मलिक की विजय से ख़ुसरो ख़ाँ तथा ख़ुसरोखानियों के शरीर में प्राण न रहे। बरवारों का दिल टूट गया। उन दुष्टों के मुख पीले तथा होंठ शुष्क हो गये। समस्त बरवार तथा हिन्दू, जो कि ख़ुसरो ख़ाँ के सहायक हो गये थे, अपने आप को ग़ाज़ी मलिक की तलवार तथा गदा से मुक्त न समझते थे। ग़ाज़ी मलिक उपर्युक्त विजय के उपरान्त एक सप्ताह तक उसी विजय के मैदान में रुका रहा। लूट के माल का प्रबन्ध करने तथा अपनी सेना को सुव्यवस्थित करने के उपरान्त वे अपने आश्रय दाताओं की हत्या का बदला लेने तथा बरवारों के विनाश के लिए, जिन्होंने मुसलमानों पर अधिकार प्राप्त कर लिया था, देहली की ओर रवाना हुये।

ख़ुसरो ख़ाँ परेशान होकर अपने अभागे अमीरों तथा अपने बरवार एवं हिन्दू सहायकों को लेकर जो कि उसके सहायक तथा मित्र हो गये थे, सीरी के बाहर निकला। उस मैदान में जहाँ कि अलाई हौज़ है, बाग़ी को अपने सामने तथा देहली की चहार देवारी को अपने पीछे रखते हुए मुकाबले के लिए लहरावट के सामने उतर पड़ा। ग़ाज़ी मलिक के भय से चहारीना में सेना का पड़ाव डाला।

(४१८) समस्त सुल्तानी ख़ज़ाना किलोखड़ी तथा देहली के बाहर निकाल लाया और सेना के शिविर में पहुंचा दिया। अभागों तथा हारे हुए जुआरियों की भाँति ख़ज़ाने में झाड़ू दिला दी। हिसाब किताब के समस्त काग़ज़ जलवा दिए। क्योंकि उसे विश्वास था कि उसका राज्य, जीवन तथा भाग्य सभी उसके विरोधी हैं, अतः उसने ख़ज़ाने की समस्त धन सम्पत्ति ढाई ढाई साल का वेतन तथा इनाम देकर सेना में लुटा दी। इस क्रोध में कि इस्लाम के बादशाह को धन सम्पत्ति प्राप्त हो जायगी, एक कौड़ी भी ख़ज़ाने में न रहने दी।

इस प्रकार वह व्यर्थ कार्य करते हुए अन्धा तथा बहरा एवं असावधान होकर प्रत्येक दिन सवार होकर सैनिकों के पास से गुज़रने लगा। वह सेना के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को अपने सम्मुख बुलवा कर उनका आदर सम्मान करता था। उन्हें अपने पास बैठालता था किन्तु अपने पापों पर दृष्टिपात न करता था। सेना के विशेष तथा साधारण व्यक्ति ग़ाज़ी मलिक के आक्रमण से यह समझ चुके थे कि ख़ुसरो ख़ाँ तथा ख़ुसरो-ख़ानियों का विनाश निकट है। उनका यह विचार था कि शीघ्र ही ख़ुसरो ख़ाँ का कटा हुआ शीश भाले की नोक पर चढ़ाया जाने वाला है, और वह दुष्ट विनाश की नदी में डूबने वाला है और हाथ पैर मार रहा है।

धर्मनिष्ठ सैनिक जो ग़ाजी मलिक के विरुद्ध तलवार न चलाना चाहते थे उस अपहरण कर्त्ता मावून (गुदा भोग्य) से धन सम्पत्ति ले लेते थे और उस पर सैकड़ों लानतें भेजकर अपने-अपने घरों को चले जाते थे। उन्हें इस बात पर विश्वास था कि झूठ को सच पर विजय प्राप्त नहीं हो सकती तथा झूठ सच का मुक़ाबला नहीं कर सकता। हरामखोर, राज्यभक्त पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता। कुफ़ तथा काफ़िरी इस्लाम एवं इस्लाम के नियमों पर अधिकार नहीं जमा सकते। दुष्ट ख़ुसरो खाँ मफऊल (गुदा भोग्य) राज्य भक्त तथा अनुभवी ग़ाज़ी मलिक पर कदापि विजय प्राप्त नहीं कर सकता।

(४१९) ख़ुसरो खाँ तथा ख़ुसरो-खानी अपनी सेना की पराजय के उपरान्त एक मास तक बैतुलमाल की धन सम्पत्ति लुटाते रहे। डूबने वालों की भाँति तिनकों का सहारा पकड़ते रहे। कमीनी बातें, पतित हरकतें तथा निर्लज्जता दिखाते रहे। उनका विचार था कि जिस प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन को अपने राज्याभिषेक के प्रथम वर्ष मे धन सम्पत्ति लुटाने से सफलता प्राप्त हो गई, उसी प्रकार हमको भी प्राप्त हो जायेगी। ग़ाज़ी मलिक अपने विश्वास पात्रों तथा उन राज्य भक्तों की सेना लेकर, जो कि उसके सहायक थे, मन्ज़िलों को पार करता हुआ शहर के निकट पहुँच गया। इन्दपथ (इन्द्र प्रस्त) के निकट पड़ाव डाला। जिस दिन दोनों सेनाओं में युद्ध होने वाला था उससे पूर्व रात्रि में ऐनुल मुल्क मुल्तानी ख़ुसरो खाँ का साथ छोड़कर उज्जैन तथा धार की ओर चल दिया। उसके चले जाने से ख़ुसरो खाँ तथा ख़ुसरों-ख़ानियों का दिल रणक्षेत्र में पूर्णतया टूट गया।

ग़ाज़ी मलिक का ख़ुसरो खाँ से युद्ध, ख़ुसरो खाँ की पराजय तथा ग़ाज़ी मलिक की विजय, ग़ाज़ी मलिक का राजसिंहासन पर विराजमान होना तथा राज्य के साधारण एवं विशेष व्यक्तियों का इससे सहमत होना

शुक्रवार के दिन, उस शुभ दिन के आशीर्वाद से, मुसलमानों पर विजय की वर्षा होती है और हिन्दुओं तथा काफ़िरों को नाना प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं। गाज़ी मलिक अपने भक्तों की सेना लेकर इन्दपथ (इन्द्र प्रस्त) के निकट से सवार हुआ और ख़ुसरो खाँ से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा। ख़ुसरो खाँ भी अपने समस्त भाइयों, हिन्दुओं तथा उन मुसलमानों को लेकर जो उससे मिल गये थे, सवार होकर निकला। हाथियों को सामने करके आगे बढ़ा। लहरावट के मैदान में दोनों सेनायें पंक्तियाँ जमा कर एक दूसरे के आमने-सामने जम गई।

(४२०) दोनों ओर के यज़कियो (अग्रिम दल) मे तुरन्त मुठभेड़ हो गई। ग़ाज़ी मलिक के यज़कियों को विजय प्राप्त होगई। मलिक तुलबग़ा नागौरी जो कि हृदय से ख़ुसरो खाँ का मित्र हो गया था तथा जिसने उसकी ओर से इस्लामी सेना के विरुद्ध तलवार उठाई थी, कुछ अन्य बरवारों के साथ पराजित हुआ। उसका सिर काट कर ग़ाजी मलिक के सम्मुख पेश किया गया। क़ुरा क़ीमार का पुत्र जिसकी पदवी शायस्ता खाँ हो गई थी और जो अर्ज़े ममालिक नियुक्त हो गया था, अपनी असफलता देखकर अपनी सेना लेकर ख़ुसरो खाँ की सेना से पृथक हो गया। रेगिस्तान के मार्ग को जाते हुये इन्दपथ (इन्द्र प्रस्त) के निकट पहुँचा तो उसने ग़ाज़ी मलिक के शिविर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और वहाँ से भी भाग निकला। ग़ाजी मलिक तथा ख़ुसरो खाँ की सेनायें दोपहर के पश्चात् की नमाज़ तक एक दूसरे के सामने डटी रहीं। शुक्रवार को दोपहर पश्चात् की नमाज़के उपरान्त का समय बड़ा ही उत्तम तथा उत्कृष्ट समझा जाता है। ग़ाज़ी मलिक ने अपने सम्बन्धियों, विश्वासपात्रों तथा भक्त अमीरों को लेकर जिनमें से प्रत्येक रुस्तम तथा वीरता में अद्वितीय था, ख़ुसरो खाँ की सेना के मध्य भाग पर आक्रमण कर दिया। ख़ुसरो खाँ स्त्रियों के समान वीरो के आक्रमण का मुक़ाबला न कर

सका और दुराचारी बालकों के समान पीठ दिखा गया। उसकी पंक्ति छिन्न-भिन्न हो गई और उसकी सेना भी पराजित हुई। वह अकेला सेना से पृथक् होकर तिलपट की ओर भागा। उसके सहायक बरवार भी छिन्न भिन्न हो गये और कोई भी उसके निकट न रहा। उसका चत्र दूरबाश तथा हाथी ग़ाज़ी मलिक के सामने लाये गये। ग़ाज़ी मलिक विजय तथा सफलता प्राप्त करके वापस हुआ। रात्रि आ गई। वह एक पहर रात्रि के उपरान्त इन्द पथ (इन्द्र प्रस्त) के निकट अपने शिविर में उतरा। पतित ख़ुसरो ख़ाँ जब तिलपट पहुंचा तो कोई भी बरवार तथा अन्य व्यक्ति उसके साथ न रह गया था। तिलपट से लौट कर मलिक शादी अलाई के, जो कि उसका इससे पूर्व आश्रय दाता था, उद्यान की चहार दीवारी में घुस कर छिप गया। रात भर वह उसी बाग़ में रहा। ख़ुसरो ख़ाँ तथा उसकी सेना की पराजय के उपरान्त बरवार एवं हिन्दू छिन्न-भिन्न हो गये। वे जहाँ कहीं भी मैदानों, बाज़ारों, गलियों तथा मुहल्लों मे मिल जाते थे मार डाले जाते थे और उनके घोड़े तथा अस्त्र शस्त्र ले लिये जाते थे।

(४२१) जो दो दो चार-चार करके शहर से भागे वे गुजरात के मार्ग मे मार डाले गये। उनके घोड़ों तथा अस्त्र-शस्त्र पर अधिकार जमा लिया जाता था। दूसरे दिन ख़ुसरो ख़ाँ को मलिक शाही के उद्यान की चहार दीवारी में पकड़ लिया गया और उसकी हत्या करदी गई।

जिस रात्रि में ग़ाज़ी मलिक इन्द पथ (इन्द्र प्रस्त) में रुका, उसी रात्रि मे बहुत से मलिक गण्य-मान्य व्यक्ति तथा शहर के पदाधिकारी उसकी सेवा में उपस्थित हुये। महलों तथा द्वारों की कुँजियाँ उसकी सेवा में पेश कीं। ग़ाज़ी मलिक विजय के दूसरे दिन समस्त मलिकों, अमीरों, प्रतिष्ठित तथा गण्य-मान्य व्यक्तियों को अपने साथ लेकर इन्द पथ (इन्द्र प्रस्त) से सवार हुआ, और अपनी सेना लेकर क़ूश्के सीरी में पहुँच गया। राज्य के उत्कृष्ट लोगों के साथ हज़ार सुतून में विराजमान हुआ। पहले ही दरबार में समस्त उत्कृष्ट लोग सुल्तान क़ुतुबुद्दीन तथा सुल्तान अलाउद्दीन के अन्य पुत्रों के, जो कि सबके आश्रयदाता थे, विनाश पर बहुत रोये। अपने आश्रयदाताओं के विनाश से वे बड़े दुःखी हुये। उसके उपरान्त सब ने इस बात पर भगवान् के प्रति कृतज्ञता प्रकट की कि उसने बरवारों तथा हिन्दुओं से उनके आश्रयदाताओं की हत्या का बदला ले लिया तथा इस्लाम एवं इस्लामी नियमों को पुनः सम्मान प्रदान किया।

इसके उपरान्त ग़ाज़ी मलिक ने उस सभा में उच्च स्वर में कहा कि 'मुझे सुल्तान अलाउद्दीन तथा सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ने अत्यधिक सम्मान प्रदान किया था। मैंने उनके भक्त होने के कारण अपने प्राणों से हाथ धोकर शत्रुओं तथा अपने आश्रयदाताओं का विनाश करने वालों से युद्ध किया और मेरी समझ में जो कुछ आया उसके अनुकूल उनसे बदला ले लिया। तुम अलाई तथा क़ुतुबी बड़े-बड़े मलिक जो इस सभा में उपस्थित हो, हमारे आश्रयदाताओं के वंश से यदि कोई भी शेष रह गया हो तो उसे तुरन्त लाओ जिससे उसे सिंहासनारूढ़ किया जा सके। मैं अपने आश्रयदाता के पुत्र की सेवा करूँगा।"

(४२२) "यदि शत्रुओं ने अलाई तथा क़ुतुबी वंश के सभी व्यक्तियों का विनाश कर दिया हो तो इस समय दोनों ही राज्य काल के गण्य मान्य व्यक्ति उपस्थित हैं; जिसे भी राज सिंहासन के योग्य तथा बादशाही के लायक़ देखें उसे चुनकर राजसिंहासन पर बिठा दें और मैं उसकी आज्ञाओं का पालन करूँगा। मैंने अपने आश्रयदाताओं के रक्त का बदला लेने के लिए तलवार उठाई है न कि राज्य के लोभ से। मैंने अपने प्राण, धन सम्पत्ति तथा बाल बच्चों के जीवन से राजसिंहासन पर आसीन होने के लिए हाथ नहीं धोया है। मैंने

जो कुछ किया है वह अपने आश्रयदाताओं का बदला लेने के लिये किया है। तुम लोग जिसे भी राजसिहासन के लिये चुनोगे मै भी उससे सहमत हूँ।" सभी गण्य-मान्य व्यक्तियों ने एक मत होकर यह बात कही कि, "सुल्तान अलाउद्दीन तथा सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के पुत्रों में से दुष्टों ने किसी को जीवित नहीं छोड़ा है जो कि बादशाही के योग्य हो तथा राजसिहासन पर विराजमान हो सके। इस समय सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या तथा ख़ुसरो ख़ाँ के उत्पात से बरवारों ने राज्य के चारों ओर उपद्रव मचा रक्खा है और विरोधी सिर उठा चुके है। राज्य व्यवस्था में विघ्न पड़ चुका है। तू जो कि ग़ाज़ी मलिक है, तेरे प्रति हमारे विशेष कर्तव्य हैं। कई वर्षों से तू मुग़लों का विद्रोह शान्त करने के लिए एक मज़बूत दीवार बन चुका है। तेरे कारण हिन्दुस्तान पर मुग़लों के आक्रमण का मार्ग बन्द हो गया है। इस समय तूने इतना बड़ा कार्य किया है कि तेरी राजभक्ति इतिहासों में लिखी जायेगी। तू ने इस्लाम को हिन्दुओं तथा बरवारों के अधिकार से निकाल दिया और हमारे आश्रयदाताओं एवं उनकी हत्या करने वालों का बदला ले लिया। इस प्रकार तूने इस प्रदेश के साधारण तथा विशेष व्यक्तियों पर अपना अधिकार सिद्ध कर दिया। भगवान् ने अलाई दासों तथा कर्मचारियों में यह सौभाग्य तुझे प्रदान किया और तुझे इस प्रकार सम्मानित किया। हम लोग वरन् इस राज्य के सभी मुसलमान तेरे कृतज्ञ हैं।'

(४२३) "हम लोगों को जो कि इस स्थान पर उपस्थित हैं, तेरे अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति बादशाही तथा उलिल अमरी के योग्य नहीं दिखाई देता। तेरे अतिरिक्त किसी को हम विद्या, बुद्धि, ईमान तथा अधिकार के अनुसार राजसिहासन के योग्य नहीं पाते। सभी उपस्थित गण उपर्युक्त बात से सहमत थे। अधिकार सम्पन्न लोग भी इसी बात से सहमत थे और उन्होंने ग़ाज़ी मलिक का हाथ पकड़ कर राजसिहासन पर बैठा दिया।

इस कारण कि ग़ाज़ी मलिक ने समस्त मुसलमानों की सहायता की थी, उसकी उपाधि सुल्तान ग़यासुद्दीन हो गई। उसी दिन सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लक़ शाह विशेष तथा साधारण व्यक्तियों की राय से राजसिंहासन पर विराजमान हुआ। मलिक, वज़ीर, अमीर, विश्वासपात्र तथा प्रतिष्ठित लोग अपने अपने स्थानों पर सेवा के लिए ग़यासी राजसिंहासन के सम्मुख खड़े हो गये और उपद्रव शान्त हो गया। इस्लाम में नई जान आ गई और इस्लामी नियम पुनः ताज़ा हो गये। कुफ़ की बातें भूमि के नीचे पहुँच गई और सभी के हृदय शान्त हो गये। समस्त प्रशंसा भगवान् के लिये है जो दोनों लोकों का पालनहार है। दरूद उसके रसूल मुहम्मद तथा उसकी समस्त सन्तान पर।

भाग ब

समकालीन तथा निकट समकालीन इतिहासकार

अमीर ख़ुसरो

(क) मिफ़ताहुल फ़ुतूह

(ख) ख़ज़ाइनुल फ़ुतूह

(ग) दिवल रानी तथा खिज्र. खाँ

(घ) नुह सिपेहर

(च) तुग़लक़ नामा

एमामी

(छ) फ़ुतूहुस्सलातीन

इब्ने बतूता

(ज) अजाइबुल असफ़ार

मिफ़ताहुल फ़ुतूह

[लेखक—अमीर खुसरो]

[अमीर खुसरो ने इसकी रचना २० जमादी उस्सानी ६६० हि० (२० जून १२९१ ई०) में समाप्त की। यह अमीर खुसरो के दीवान (ग़ज़लों तथा अन्य कविताओं का संग्रह) गुर्रतुल कमाल की एक मसनवी (वह कविता जिसमें किसी कहानी का उल्लेख हो) है। इसमें सुल्तान जलालुद्दीन ख़लजी की उन विजयों का उल्लेख है जो उसे अपने सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष में प्राप्त हुई। खुसरो ने इसमें मलिक छज्जू के विद्रोह के दमन तथा झायन की विजय का उल्लेख विशेष रूप से किया है।

[यह ओरियंटल कालिज मैगजीन लाहौर में १९३६-३७ ई० में प्रकाशित हुई थी। अब पुनः अलीगढ़ विश्वविद्यालय द्वारा (१९५४ ई०) में० प्रकाशित हुई है। अनुवाद अलीगढ़ संस्करण से किया गया है।]

मंगलवार, ३ जमादी उस्सानी ६८९ हि० (१३ जून, १२९० ई०) को (सुल्तान जलालुद्दीन) सिंहासनारूढ़ हुआ। (६, ७) सब उसके आज्ञाकारी बन गये किन्तु कड़े के शासक दुष्ट छज्जू ने हिन्दुस्तान के कुछ सैनिकों पर अभिमान करते हुए विद्रोह कर दिया। जब बादशाह को इस विद्रोह के समाचार मिले तो उसने सिंह के समान गर्जना करते हुये कहा कि, "संसार में ऐसा व्यक्ति भी है जिसे मुझसे युद्ध की इच्छा है। (८) अब मैं उसे युद्ध का मज़ा चखाऊँगा।" अरकलिक ख़ाँ (अरकली ख़ाँ) को सेना की तैयारी का आदेश दिया गया। उसे आज्ञा दी गई कि सेना को जितने वेतन की आवश्यकता हो वह राजकोष से निःसंकोच दिया जाय। जिसको ८ मास का वेतन दिया जाना हो उसे दस मास का वेतन दिया जाय। इस प्रकार सेना तैयार करके मंगलवार ६ रमज़ान (१२ सितम्बर) को बादशाह ने अपने झण्डे से पृथ्वी को सजाया। बाजे बजे (९, १०) बादशाह शाहज़ादे के पीछे पीछे इस प्रकार चला कि शाहज़ादा तो दो पड़ाव करता और बादशाह एक। शाहज़ादे ने यमुना तथा गंगा पार करके रहब नदी पर शिविर लगा दिए। (११) दूसरे तट पर शत्रु की सेना थी। नावों का प्रबन्ध किया जाने लगा। मलिक के आदेशानुसार दो एक नावें जो प्राप्त हो सकीं उन पर वीरों ने नदी पार की। (१२) शत्रु की सेना से थोड़े से युद्ध के उपरान्त विजय प्राप्त करके वे लौट आये और बादशाह (शाहज़ादे) को विजय की सूचना दी। इस युद्ध से शत्रु बहुत डर गये। एक रात में शत्रु पहाड़ियों की ओर भाग खड़े हुए और चौपाला की ओर चल दिये। उसी रात को शाही लश्कर के सरदार को इसकी सूचना मिल गई। वह दो दिन तक उनके डेरों को लूटता रहा। तत्पश्चात् शत्रु का पीछा किया। शत्रु को इससे और भी परेशानी हुई। (१३) भागना असंभव समझ कर शत्रु को भी युद्ध के लिए तैयार होना पड़ा। शाही सेना भी युद्ध के लिये डट गई। सेना के मध्य में अरकलिक ख़ाँ और दाहिनी ओर मुख्य हाजिब मुबारक बारबक सैफ़े जहाँगीर था। बाई ओर, मलिक महमूद सर जानदार था। उसके पास मलिक फ़ख़रुद्दौला और दाहिने बाज़ू पर अहमद चप भी थे। आगे-आगे बादशाह के दो भतीजे, मलिक क़ुतलुग़ तिगीन क़ुर बेग तथा अलाउद्दीन थे। बाईं ओर कूची का पुत्र भी था। कोल का शासक कीक, तथा मलिक नुसरत भी युद्ध के लिए तैयार थे। (१४) पैदल, सवारों के आगे आक्रमण करने को उपस्थित थे। दोनों सेनायें दो नदियों के समान गुथ गयीं। (शाही सेना) की ओर से बारबक आगे बढ़ा। चारों ओर

से वीर आक्रमण कर रहे थे। हिन्दुस्तानी तथा हिन्दू सैनिक हज़ारों की संख्या में कम होने लगे (१५) प्रातः काल से सायंकाल तक निरंतर युद्ध होता रहा। दोनों सेनायें अपने-अपने शिविर को चली गई। दूसरे दिन प्रातः अरकलिक ख़ाँ ने अपना झंडा ऊँचा किया और नदी की ओर बढ़ा। उसने संकल्प कर लिया था कि कोई भी सिर शेष न रहने देगा। (१६) प्रातः काल से दोपहर तक युद्ध होता रहा। सेना नायक विश्राम के लिए जाना चाहता था कि शत्रु की सेना से क़राचा के पुत्रों ने पहुँच कर धरती को चुम्बन किया और अपने अपराध की क्षमा याचना करते हुये कहा कि अब हम लोगों में युद्ध करने की शक्ति नहीं और न भागने का मार्ग ही वर्तमान है। सेना के सरदार अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार है और क्षमा याचना करते है। शाही सेना के सरदार ने उन्हें सम्मानित किया। उन लोगों के भाग जाने से शत्रु का दिल टूट गया। (१७) इसी बीच में कोल के शासक अमीर कीक ने आक्रमण कर दिया। वह शत्रु की सेना मे ऐसा समा गया कि लोग समझने लगे कि कीक शत्रुओं की सेना से मिल गया है। जब वह शत्रु की सेना का संहार करके लौटा तो शाही सेना के सरदार ने उसे सम्मानित किया। (१८) इस प्रकार सायंकाल तक युद्ध होता रहा। शाही सेना का सरदार दूसरे दिन युद्ध करने के लिए अपने शिविर को वापस हो गया। (१९) उसने आदेश दिया कि रात भर ढोल बजते रहें जिससे शत्रु को यह पता चल जाय कि दूसरे दिन भी युद्ध होने वाला है। शत्रुओं का सरदार अपने कुछ सहायकों को लेकर रातों रात भाग गया। सेना ने प्रातःकाल अधीनता स्वीकार करली। (२०) उन सब को क्षमा कर दिया गया।

सुल्तान (जलालुद्दीन) ने गङ्गा पार कर के पचलाना में शिविर लगाये। वहाँ से वह भोजपुर की ओर चल दिया। उसने गङ्गा और यमुना पर पुल बनवाये जिससे इन नदियों को पार करना सरल हो गया। जब बादशाह काबिर पहुँचा तो शत्रुओं की पराजित सेना उसके सम्मुख लाई गई, (२१) शाहज़ादा भी शहंशाह से मिला। उसने सुल्तान को विजय की बधाई दी। उसे मुल्तान की अक़्ता प्रदान हुई। दरिया से जूद पर्वत तक का राज्य उसे मिल गया। इसके उपरान्त उसने बन्दियों को बुलवाया। हिन्दुओं को हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिया। मुसलमान बन्दियों को क्षमा कर दिया। उनमें से कुछ बन्दियों को कोतवाल के पुत्र के सिपुर्द कर दिया। इस विजय के पश्चात् सुल्तान हिन्दुस्तान की ओर चल खड़ा हुआ ताकि लखनौती तक लोगों को भयभीत करदे। (२२) उसने मार्ग के सब डाकुओं का विनाश कर दिया। बड़े-बड़े वृक्ष कटवा डाले। उस तरसियह जंगल के कट जाने से अंबेठी में हलचल मच गई। रूपाल की हत्या करादी गई। वहाँ से सुल्तान बकस्हूं की ओर चल खड़ा हुआ। उसने मवासात के लोगों से भी धन प्राप्त किया। जिस राना ने भी कर न दिया था, उसे दण्ड दिया गया। इस प्रकार रायों तथा रानाओं से धन प्राप्त करके राजकोष में अत्यधिक माल एकत्रित हो गया। वहाँ से वह खतरक की ओर चल दिया जिससे मुग़लों से युद्ध हो सके। एक मास यात्रा करके सोमवार मुहर्रम मास के अन्त में सुल्तान शहर (देहली) पहुंच गया।

उसी वर्ष सफ़र मास में वह सीरी की ओर चल खड़ा हुआ। (२३) बृहस्पतिवार, १८ रबीउल अव्वल (२१ मार्च १२९१ ई०) को बादशाह ने दरबार किया। उसने अपने तीन पुत्रों में से दो पुत्रों को लाल चत्र प्रदान किये। उनको दूरबाश तथा पताकायें भी प्रदान कीं। उन्हें दो मोतियों की जड़ाऊ ख़िलअतें भी दीं। उनके विश्वास पात्रों को भी हज़ारों ख़िलअतें प्रदान कीं। (२४) छोटे शाहज़ादे रुकनुद्दीन को भी मोतियों तथा याक़ूत से जड़ी हुई ख़िलअत प्रदान की। मलिकों को भी धन सम्पत्ति प्रदान की गई। तत्पश्चात उस रणथम्बौर की

ओर रवाना होने का संकल्प किया। सीरी से कूच कर के लहरावत में पड़ाव डाला। वहाँ से चलकर चन्दावल में नदी के किनारे विश्राम किया। वहाँ से दो पड़ाव के उपरांत रिवाड़ी पहुंचा। वहाँ से चलकर नारनौल में पड़ाव हुआ। (२५) वहाँ से ब्यत्रहाँ में पड़ाव हुआ। वहाँ जल की बड़ी कमी थी। वहाँ से बादशाह सौ ऊंटों पर पानी लदवा कर यात्रा करने लगा।

दो सप्ताह यात्रा करके सुल्तान रणथम्बोर की पहाड़ियों के निकट पहुँच गया। तुर्कों ने देहातों का विनाश प्रारम्भ कर दिया। अग्रिम दल के सवार भेजे जाने लगे और हिन्दुओं की हत्या होने लगी। सुल्तान स्वयं झायन से चार फ़रसंग की दूरी पर रहा। कुछ सवार शत्रुओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये भेजे गये।। (२६) वे पहाड़ियों में शिकारियों की भाँति शत्रुओं की खोज करने लगे। इसी बीच में उन्हें ५०० हिन्दू सवार दृष्टिगोचर हुए। दोनों सेनाओं में युद्ध हो गया। हिन्दू "मार मार" का नारा लगाते थे। एक ही धावे में ७० हिन्दुओं की हत्या करदी गई। वे लोग पराजित होकर भाग गये। शाही सेना विजय प्राप्त करके अपने शिविर की ओर वापस हो गई और सुल्तान तक समस्त समाचार पहुँचा दिया गया। उस प्रारम्भिक विजय से सुल्तान का बल और बढ़ गया। दूसरे दिन एक हज़ार वीर सैनिक भेजे गये। योद्धाओं में मलिक खुर्रम वकीलदर, आरिज़े मुल्क, क़ुरबेगे आज़म, मलिक क़ुतलुक़ तिगीन, अमीर नारनोल, अहमद सर जानदार, मीर शिकार अहमद, अबाजी आखुर बक उल्लेखनीय थे। सेना से झायन दो फ़रसंग की दूरी पर था, किन्तु बीच में बड़ी कठिन पहाड़ियाँ थीं। शाही सेना एक ही धावे में पहाड़ियों में प्रविष्ट हो गई। उसके वहाँ पहुँच जाने से झायन में भी हलचल मच गई। राय को जब सूचना मिली तो उसके हाथ पैर फूल गये। उसने साहिनी को बुलवाया जो हिन्दू नहीं अपितु लोहे का पहाड़ था और उसके अधीन चालीस हज़ार सैनिक थे, जो मालवा तथा गुजरात तक धावे मार चुके थे। (२७-२८) उससे युद्ध करने के लिये कहा। उसने दस हज़ार सैनिक एकत्रित किये। वे लोग झायन से शीघ्रातिशीघ्र चल खड़े हुए। तुर्क धनुर्धारियों ने बाणों की वर्षा प्रारम्भ करदी। (२९) घमसान युद्ध होने लगा। साहिनी भाग गया। एक ही धावे में हजारों रावत मारे गये। तुर्कों की सेना का केवल एक ख़ासादार मारा गया। झायन में कोलाहल मच गया। रातों रात राय और उसके पीछे बहुत से हिन्दू झायन से रणथम्बोर की पहाड़ियों की ओर भाग गये। (३०) शाही सैनिक विजय प्राप्त करके रणभूमि से सुल्तान की सेवा में उपस्थित हो गये। बन्दी रावतों को पेश किया गया। जब लूट की धन सम्पत्ति पेश की गई तो सुल्तान बड़ा प्रसन्न हुआ। उन सैनिकों को बहुत धन प्रदान किया। सब को ख़िलअत देकर सम्मानित किया।

तीसरे दिन दोपहर में सुल्तान झायन पहुँचा और राय के महल में उतरा। महल की सजावट और कारीगरी देखकर वह चकित रह गया। वह महल हिन्दुओं का स्वर्ग ज्ञात होता था। (३१) चूने की दीवारें आइने के समान थीं। उसमें चन्दन की लकड़ियाँ लगी थीं। बादशाह कुछ समय तक उस महल में रहकर बड़ा प्रसन्न हुआ। वहाँ से निकल कर उसने उद्यानों तथा मन्दिरों की सैर की। मूर्तियों को देखकर वह आश्चर्य में पड़ गया। उस दिन तो वह मूर्तियों को देखकर वापस हो गया। दूसरे दिन उसने सोने की मूर्तियाँ पत्थर से तुड़वा डालीं। महल, क़िला तथा मन्दिर तुड़वा डाले गये। लकड़ी के खम्भों को जलवा दिया गया। (३२) झायन की नींव इस प्रकार खोद डाली गई कि सैनिक धन सम्पत्ति द्वारा माला माल हो गये। मन्दिरों से यह आवाज आने लगी कि शायद कोई अन्य महमूद जीवित हो गया। दो पीतल की मूर्तियाँ जिनमें से प्रत्येक एक एक हजार मन के लगभग थीं तुड़वा डाली गईं, और उनके टुकड़ों को लोगों को दे दिया गया कि वे (देहली) लौट कर उन्हें मस्जिद के द्वार पर

फेंक दें। तत्पश्चात् दो सेनायें दो सरदारों की अधीनता में भेजी गई। एक सेना का सरदार मलिक खुर्रम था और दूसरी सेना का सरदार महमूद सर जानदार था। (३३) झायन से भाग कर कुछ काफिर पहाड़ी के दामन में छिप गये थे। मलिक खुर्रम सूचना पाते ही वहाँ पहुंच गया और अत्यधिक लोगों को बन्दी बना लिया। असंख्य पशु भी प्राप्त हुए। मलिक दासों को लेकर सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ। सरजानदार ने चंबल तथा कुँवारी नदी पार करके मालवा की सीमा पर धावा मारा, और वहाँ बहुत लूट मार की। सुल्तान ने भी झायन से प्रस्थान किया और यह सेना चंबल पर सुल्तान से आकर मिली। वहाँ से मुबारक बार्बक दूसरी ओर भेजा गया। (३४) उसने बनारस नदी की ओर प्रस्थान किया। वहां लूट मार करके, धन सम्पत्ति सुल्तान की सेवा में ले गया। मलिक जानदार बक अहमद चप ने एक सेना लेकर वलोरा (एलोरा) की पहाड़ियों में धावा मारा। तत्पश्चात् सुल्तान धीरे धीरे चल पड़ा। सेना को भिन्न-भिन्न भागों में विभाजित करके उनको लौटने का आदेश दे दिया।

सोमवार ३ जमादी उस्सानी को सुल्तान गीरी से आगे बढ़ा। (३५-३६) फापुर (भापुर) कलाघर (किलोखड़ी) होता हुआ शहर (देहली) में प्रविष्ट हुआ। शहर सजाया गया। संगीत तथा मनोरंजन का आयोजन हुआ। (३७) मार्ग से महल तक धन लुटाया गया। सुल्तान महल में उतरा। समारोह आयोजित हुए।

(३८) अमीर खुसरो अपनी कविता के विषय में लिखते हैं कि, "इसमें सुल्तान की एक वर्ष की विजयों का उल्लेख है। यद्यपि कविता झूठ से अलंकृत हो जाती है, किन्तु सच का आनन्द पृथक् ही है। जो कुछ इस कविता में लिखा गया है वह सब मेरी आँखों के सामने हुआ है। मैंने इस में कुछ घटाया बढ़ाया नहीं। (३९) सुल्तान की विजयों के उल्लेख के कारण इसका नाम मिफताहुल फुतूह (विजयों की कुंजी) रक्खा। इसकी रचना २० जमादी उस्सानी ६९० हि० (२० जून १२९१ ई०) को समाप्त हुई। मैंने यह रचना तीन उद्देश्यों से की (१) मैं बादशाह की प्रशंसा करके उसके दान का हक अदा कर सकूं। (२) यह संसार एक दशा में नहीं रहता। कदाचित् यह रचना स्थायी हो सके। (३) जिस प्रकार बादशाह का नाम जीवित रहेगा, उसी प्रकार मेरा भी नाम जीवित रह सके। भगवान् करे इस सेवा के कारण मुझे बादशाह से सैकड़ों सोने के खज़ाने प्राप्त हो सकें। (४०)

ख़ज़ाइनुल .फ़ुतूह

[इसमें अमीर ख़ुसरो ने अलाउद्दीन खलजी की अनेक विजयों एवं उसके शासन-प्रबन्ध का उल्लेख किया है। ख़ुसरो ने इस पुस्तक में बड़ी अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है। यह पुस्तक अलीगढ़ मुल्तानिया हिस्टोरीकल सुसाइटी द्वारा १९२७ ई० में प्रकाशित हो चुकी है। इसका अंगरेजी अनुवाद प्रोफ़ेसर मुहम्मद हबीब ने किया है जो तारापूरवाला बम्बई द्वारा १९३१ ई० में प्रकाशित हो चुका है। इस अंगरेजी अनुवाद की अशुद्धियाँ हाफिज़ महमूद शीरानी ने ओरियनटल कालिज मैगज़ीन लाहौर १९३५-३६ ई० में प्रकाशित कीं।

हिन्दी अनुवाद १९२७ ई० की प्रकाशित पुस्तक से किया गया है किन्तु इस संस्करण में बड़ी अशुद्धियाँ हैं अतः हस्तलिखित प्रतियों का भी, जोकि अलीगढ़ विश्व विद्यालय तथा रामपुर में वर्तमान हैं, प्रयोग किया गया है।]

शनिवार १९ रबी उल आखिर ६९५ हिजरी (२५ फ़रवरी १२९६ ई०) को सुल्तान (अलाउद्दीन) ने देवगीर के उद्यान की ओर प्रस्थान किया। राय रामदेव जो उस उद्यान में एक उत्कृष्ट वृक्ष था इसके पूर्व कभी अभाग्य के वाण से घायल न हुआ था। अलाउद्दीन उस स्थान से हाथियों को बहुमूल्य जवाहरात से लादकर तथा सोने के थैलों को ऊँटों और घोड़ों पर लदवा कर वायु के सामने शीघ्राति शीघ्र २८ रजब ६९५ हिजरी (१ जून ११९६ ई०) को कड़ा मानिकपुर पहुँच गया। (८) राजसिंहासन पर विराजमान होने के प्रथम दिन से ७०९ हिजरी (१३०९-१० ई०) तक जिस ओर भी उसने आक्रमण किया उसे विजय प्राप्त हुई। (८, १०)

वह बुधवार १६ रमजान ६९५ हिजरी (१८ जुलाई १२९६ ई०) को राज-सिंहासन पर विराजमान हुआ। इसके उपलक्ष में उसने अत्यधिक सोना लुटाया। उसके जवाहरात लुटाने के कारण मानिकपुर की हरियाली जवाहरात से जड़ी हुई दिखाई पड़ती थी। (११) सोमवार २२ जिलहिज्जा ६९५ हिजरी (२१ अक्तूबर १२९६ ई०) को वह देहली के राजसिहासन पर आरूढ़ हुआ। (१२)

अलाउद्दीन का शासन प्रबन्ध--

उसने अपने राज्य में पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक प्रजा के कुछ कर क्षमा कर दिए। इसके अतिरिक्त उसने हिन्दू रायों से वह सब धन-सम्पत्ति, जो कि उन लोगों ने कण-कण करके विक्रमाजीत (विक्रमादित्य) के समय से एकत्रित की थी, अपनी तलवार के बल से इस प्रकार प्राप्त करली जिस प्रकार सूर्य पृथ्वी से जल प्राप्त कर लेता है। ख़जाने को इस प्रकार परिपूर्ण कर दिया कि न तो बुद्ध ग्रह उसे अपनी लेखनी से लिख सकता है और न शुक्रग्रह अपने तराज़ू से उसे तौल सकता है। कोई भी बादशाह दान में उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता। (१५-१६) उसने सर्वसाधारण की सुगमता के लिए दुकानदारों का कर, जो कि इससे पूर्व, अपनी सामग्री अधिक मूल्य पर बेचा करते थे, बहुत घटा दिया। एक रईस नियुक्त किया गया जो कि बकवादी दूकानदारों से न्याय के कोड़े से बात करता था। इसके फलस्वरूप गूँगे खरीदने वाले भी बोलने लगे थे। चतुर मुतफ़िहस[1] उनके बाँटों का निरीक्षण करते थे। सब बाँट लोहे के बनवाये गये और उन पर उनका वजन लिख दिया

---

१. निरीक्षक, बाज़ार की देख भाल करने वाले।

गया। यहाँ तक कि यदि कोई कम तोलता तो वही लोहा उनके गले में तौक़ बन जाता था। यदि इस पर भी वे न मानते थे तो तौक़ तलवार बन जाता और उनको कठोर दण्ड दिये जाते। जब दुकानदारों ने यह देखा तो उन्होंने कभी भी बाँटों में कोई हस्तक्षेप न किया और लोहे के बाँटों को अपने हृदय के चारों ओर लोहे का किला समझने लगे और बाँटों के शब्द उनके प्राणों के लिए जन्तर के समान थे। (१७)

वह बड़ा न्यायकारी बादशाह था। उसके दण्ड के भय से मस्त हाथी चीटियों के सामने घुटने टेक देते थे। उसने मदिरापान का अन्त कर दिया। वैश्याओं ने विवाह कर लिया। दुष्टता तथा व्यभिचार का समूल ही उच्छेदन हो गया। सिन्ध नदी के तट से दूसरी ओर समुद्र तक चोरी तथा डाकुओं का नाम भी शेष न रह गया। जो लोग लूट मार किया करते थे वे दीपक लेकर मार्गों की रक्षा करते थे। यदि मार्ग में किसी यात्री की रस्सी का टुकड़ा तक भी खो जाता, तो या तो रस्सी प्राप्त हो जाती और या उसका मूल्य अदा कर दिया जाता। चोर, उचक्के तथा कफ़न खसोट, जो कि आदि काल से अपना व्यवसाय किया करते थे, उनके हाथ पैर दण्ड की तलवार ने काट डाले हैं। यद्यपि किसी का शरीर सुरक्षित भी है, तो उनके हाथ पैर इस प्रकार बेकार हो चुके हैं, कि मानो वे आरम्भ से ही बिना हाथ पैर के पैदा हुये थे। जादूगरों को कठोर दण्ड दिये जाते। उन्हें जमीन में गर्दन तक गड़वा दिया जाता, और लोग उनपर पत्थर फेंकते थे। उसने इबाहत को क्षीण कर दिया। उनके विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये निरीक्षक नियुक्त किये गये। उनके विषय में पूछताछ के उपरान्त यह ज्ञात हुआ कि उन निर्लज्ज अभागों की मातायें अपने पुत्रों के साथ, और भांजियाँ मामाओं के साथ अपना मुंह काला कराती थीं। पिता, पुत्री के साथ विवाह कर लेता था। भाई तथा बहिनों के बीच में भी इसी प्रकार के सम्बन्ध हुआ करते थे। इन सब लोगों के सिरों पर दण्ड का आरा चला दिया गया। (१८-२१)

उसे प्रजा के सुख का इतना ध्यान था कि उसने अनाज को बहुत सस्ता करा दिया। इससे विशेष तथा साधारण व्यक्तियों व देहातियों तथा नगर के रहने वालों को बड़ा लाभ हुआ। जब सफ़ेद बादलों में जल शेष नहीं रह जाता और सर्व साधारण का विनाश प्रारम्भ हो जाता तब शाही गोदाम से अनाज देकर अनाज का भाव सस्ता रखा जाता। (२२)

उसने एक दारुलअदल बनवाया है जहाँ राज्य के भिन्न-भिन्न प्रदेशों से कपड़ा तथा अन्य वस्तुयें लाकर खोली जाती हैं और एक बार खुल जाने के उपरान्त फिर बन्द नहीं होतीं। यदि कोई अपने कपड़ों के गट्ठर किसी अन्य स्थान पर खोल देता है तो उसके शरीर के जोड़ ही तलवार द्वारा खोल दिये जाते हैं। यहाँ प्रत्येक प्रकार का कपड़ा किरपास, हरीर, शीत तथा ग्रीष्म ऋतु में पहनने के लिये बिहारी मे गुले बाक़ली, शीर, गलीम, जुज, खुज, देवगीरी, महादेव नगरी सभी बिकते हैं। दारुल अदल में नाना प्रकार के फल तथा अन्य वस्तुएँ जिनकी विशेष तथा साधारण व्यक्तियों को आवश्यकता होती है, बिकती हैं। (२३-२४)

सुल्तान द्वारा भवनों का निर्माण :—

उसने मस्जिदे जाम-ए-हज़रत[1] से भवनों का निर्माण प्रारम्भ किया। पिछले तीन

---

१. 'इतिहास की पुस्तकों में इस मस्जिद को मस्जिद आदीना-ए-देहली तथा मस्जिद जाम-ए-देहली लिखा है, किन्तु मस्जिदे कुव्वतुल इस्लाम इसका नाम कहीं नहीं मिला, मालूम नहीं कि यह नाम कब रक्खा गया। ऐसा ज्ञात होता है कि जब यह बुतख़ाना (मन्दिर) विजित हुआ उस समय उसका नाम कुव्वतुल इस्लाम रक्खा गया हो, अन्यथा ऐसी मस्जिदें अपने वास्तविक नाम से प्रसिद्ध नहीं होतीं अपितु जाम-ए-मस्जिद के नाम से प्रसिद्ध हो जाती हैं। (आसारुस्सनादीद, लेखक सर सैयद अहमद खाँ, नामी प्रेस, कानपुर १९०४ ई० पृ० २२)

मक़सूरा[1] में चौथा मक़सूरा जुड़वाया जो बड़े ऊँचे-ऊँचे स्तम्भों पर स्थापित था। क़ुरान की आयतें पत्थरों पर खुदवाई। एक ओर लेख इतने ऊँचे चढ़ गये थे कि मानों भगवान् का नाम आकाश की ओर जा रहा हो। दूसरी ओर लेख इस प्रकार नीचे तक आ गये थे कि मानो क़ुरान भूमि पर आ रहा हो, इसके उपरान्त शहर में अन्य मज़बूत मस्जिदें बनवाई गई। इसके पश्चात् पुरानी तथा टूटी हुई मस्जिदों की मरम्मत कराई गई। इसके बाद उसने जामे के उच्च मीनार के सामने जो कि संसार में अद्वितीय है दूसरा मीनारा बनवाना निश्चय किया। सर्व प्रथम उसने आज्ञा दी कि मस्जिद का सहन जितना सम्भव हो आगे बढ़ाया जाय। मीनार को मज़बूत बनवाने के लिये और उसे उतना ऊँचा बनवाने के लिये कि पुराना मीनार नये मीनार की मिहराब मालूम हो, उसने इस बात का आदेश दिया कि पुराने मीनार की अपेक्षा नये मीनार की परिधि दुगुनी बनाई जाय। लोग पत्थर ढूंढ़ने के लिये चारों ओर भेजे गये। कुछ लोगों ने पहाड़ियों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। कुछ लोग कुफ़ के भवनों को तोड़ने में फ़ौलाद से अधिक तेज़ थे। जहाँ कहीं मन्दिर इबादत के लिये झुक गये थे, उन मन्दिरों को सिजदे[2] में पहुँचा दिया गया। हिन्दुस्तान के पत्थर काटने वाले जो अपनी कला में फ़रहाद[3] से बढ़कर थे पत्थर काटने में लग गये। देहली के भवन निर्माण कलावेत्ता जो अपनी कला में नोमान मुञ्ज़र को कुछ न समझते थे पत्थर से पत्थर जोड़ने में लग गये। मस्जिद के द्वार तथा दीवारें इससे पूर्व मिट्टी से तयम्मुम[4] करते थे। अब इतने ऊँचे हो गये हैं कि वे बादलों के जल से वज़ू करने लगे हैं[5]। यह कार्य ७११ हिजरी (१३११-१२ ई०) में सम्पन्न हुआ। मीनारे की बुनियाद भूमि से ऊपर आ चुकी है अब आकाश की ओर जाने वाली है। (२५-२८)

देहली का क़िला—

देहली के क़िले की अवस्था जो कि काबे का नायब है पूरी हो चुकी थी। यह किसी समय इतना ऊँचा था कि यदि कोई उसकी अटारियों की ओर देखने का प्रयत्न करता तो उसके सिर की पगड़ी गिर जाती थी। जब अलाई राज्यकाल में भवनों का निर्माण प्रारम्भ हुआ तो सुल्तान ने आदेश दिया कि ख़ज़ाने से सोने की ईंटें दुर्ग के निर्माण के लिये प्रयोग में लाई जायें। योग्य भवन निर्माण करने वालों ने नया क़िला शीघ्रातिशीघ्र बना दिया। नये भवनों को रक्त दिया जाना आवश्यक होता है। इस कारण हज़ारों मुग़लों के सिर बकरों के सिर की तरह काट डाले गये। (२९)

देहली में भवनों के निर्माण के उपरान्त सुल्तान ने आदेश दिया कि उसके राज्य के जिस किसी भाग का कोई क़िला वर्षा ऋतु की हवाओं द्वारा ख़राब हो गया हो या जो कोई ऊँघने या सोने वाला[6] हो अथवा जिसकी दराज़ों ने दाँत खोल दिये हों, उनकी मरम्मत की जाय। (३०) जो मस्जिदें भी ख़राब हो गई हों या टूट गई हों उनके विषय में भी आदेश हुआ कि उन्हें पुनः निर्मित कराया जाय।

---

१. मस्जिद का वह भाग जहाँ इमाम खड़ा होता है। इस वाक्य में समस्त नमाज़ियों के खड़े होने का स्थान समझा जा सकता है।

२. ख़ुसरो के कहने का तात्पर्य यह है कि मन्दिरों को तुड़वा कर तथा पुराने टूटे हुए मन्दिरों को गिरवा कर पत्थर प्राप्त किये गये।

३. कहा जाता है कि फ़रहाद ने पहाड़ काटकर नहर निकाली थी।

४. नमाज के लिये वज़ू करने को जब पानी प्राप्त नहीं होता तो मुसलमान धरती अथवा मिट्टी पर हाथ मारकर नमाज पढ़ लेते हैं यह क्रिया तयम्मुम कहलाती है।

५. ख़ुसरो का तात्पर्य यह है कि पहले वे बड़े नीचे थे और अब अत्यन्त ऊँचे हो गये हैं।

६. टूटने वाला हो।

हौज़े सुल्तानी--

शम्सी नामक हौज़ सूर्य के समान क़यामत तक चमकता रहेगा, (३१) किन्तु इस वर्ष उसकी सतह टूट गई थी और वह अब पूर्णतया सूख गया था। बादशाह ने उसे साफ़ कराने का आदेश दिया किन्तु उसके साफ हो जाने से भी अधिक लाभ न हुआ। पानी की कमी हो जाने के कारण देहली के निवासियों को विशेष कष्ट होने लगा था, कारण कि देहली इतना बड़ा शहर है कि नील तथा फ़रात नदी का पानी भी इसके लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। (३२) सुल्तान के आदेशानुसार हौज के चबूतरे के चारों ओर दो-दो तीन-तीन सोते खोदे गये और थोड़े ही दिन में पानी चबूतरे तक पहुँच गया। खुसरो ने हौज़ तथा गुम्बद के विषय में निम्नांकित छन्द लिखे हैं।

पानी के बीच में गुम्बद समुद्र की सतह पर बुलबुले के समान है। (३३-३४)

मुग़लों से युद्ध

विजयी सेना की दुष्ट कदर पर विजय जो जारन मंजूर में प्राप्त हुई

जब तातार तूफान की भाँति सेना लेकर जूदी पर्वत से ब्यास, झेलम तथा सतलज नदी को पार करते हुए एवं खुक्खरों के प्रदेश का विनाश करते हुए शहर (देहली) के निकट पहुँच गये तब उलुग़खान को दाहिने बाज़ू की सेना तथा उत्कृष्ट अमीरों के साथ धर्म-युद्ध के लिए भेजा गया। वह शीघ्रातिशीघ्र बढ़ता हुआ जारन मञ्जूर के रणक्षेत्र में पहुँच गया। (३६) २२ रबीउल आख़िर ६९७ (२७ जनवरी १२९८ ई०) को मुसलमानों तथा काफ़िरों की सेना में युद्ध हुआ। खांन ने झण्डा ले जाने वालों को आदेश दिया कि वे झण्डों को अपनी पीठ पर बाँध कर सतलज को पार कर लें। जिस समय तक विजयी सेना नदी के निकट न पहुँची थी, मुग़ल सेना बहुत बढ़ बढ़ कर बातें करती थी किन्तु इस्लामी सेना के पहुँच जाने पर वे भाग खड़े हुए और लगभग बीस हजार मुग़ल भूमि पर सुला दिये गये। क़दर की सेना के एक बहुत बड़े भाग का विनाश कर दिया गया। मुगलों की पराजय के उपरान्त इस्लामी सेना आनन्द मनाती हुई वापस आई। (३६-३९)

मुग़लों पर दूसरी विजय—

जब अलीबेग, तरताक़, तथा तरग़ी तुर्किस्तान से तलवारें चलाते हुए सिन्ध नदी तक पहुँच गये और वीर की भाँति झेलम नदी को पार कर चुके तो तरग़ी, जो कि दो एक बार इस्लामी सेना के सामने से भाग चुका था, इस्लामी सेना का मुक़ाबला न कर सका। अलीबेग तथा तरताक़ को इस्लामी तलवारों का कोई अनुभव न था। उनके साथ ५० हज़ार सुसज्जित सवारों की सेना थी। वे यह सेना लेकर गंगा नदी के तट तक पहुँच गये और हिन्दुस्तान के क़स्बों को विध्वंस कर दिया। जब सुल्तान को यह सूचना मिली, तो उसने मलिक मानक आख़ुरबेग मैसरा को ३० हज़ार सवार देकर भेजा। वृहस्पतिवार १२ जमादी उस्सानी ७०५ हिजरी (३० दिसम्बर १३०५ ई०) को इस्लामी सेना मुग़ल सेना के निकट पहुँच गई। उसने इस्लामी सेना पर एक साधारण आक्रमण किया किन्तु इस्लामी सेना पर कोई प्रभाव न हुआ। इस्लामी सेना ने अत्यधिक मुग़लों की हत्या कर दी। अलीबेग तथा तरताक़ ने जब इस्लामी तलवारें अपने सिर पर देखी तो वे इस्लामी झण्डे की छाया में आगये। दोनों को गिरफ़्तार कर लिया गया और अन्य मुगलों के साथ पेश किया गया। कुछ मुग़लों की हत्या करा दी गई और कुछ को क़ैद कर दिया गया। दोनों सरदारों को मुक्त कर दिया गया। कुछ समय उपरान्त एक की तो मृत्यु हो गई किन्तु दूसरा जीवित रहा। (४०-४३)।

मुग़लों पर एक और विजय—

जब काफ़िरों की सेना हिन्दुस्तान के बाग़ में पतझड़ के समान प्रविष्ट हुई तो सिन्ध प्रदेश के निवासियों को छिन्न भिन्न कर दिया। वे कुहराम तथा सामाने में किसी प्रकार की धूल उड़ाने की शक्ति न पाकर नागौर की ओर रवाना हुये और वहाँ के निवासियों पर अधिकार जमा लिया। उस समय पवन के समान तेज़ दूतों ने यह समाचार सुल्तान को पहुँचाये। उसने आदेश दिया कि सेना मुगलों से युद्ध करने के लिये इस प्रकार गुप्त रूप से प्रस्थान करे कि मुग़ल खुरासान की ओर भाग न सकें। इज़्ज़ुद्दौलातुद्दीन काफ़ूर सुल्तानी सेना नायक बनाया गया। अली[1] नदी के किनारे मुसलमानों तथा मुगलों में युद्ध हुआ। कपक बन्दी बना लिया गया और उसकी सेना पराजित हुई।

मुगलों की एक अन्य सेना इक़बाल मुदबर तथा मुदाबीर ताईबू के अधीन की सेना के पाछे आरही थी। इस्लामी सेना का मुक़द्दमे का भाग उनके निकट पहुंच कर उन पर टूट पड़ा। मुग़ल सेना पराजित होकर भाग गई। इस्लामी सेना ने मुग़लों का पीछा करके उनको बड़ी क्षति पहुँचाई। अत्यधिक मुग़ल बन्दी बना लिये गये। इस्लामी सेना विजय के उपरान्त दुष्ट कपक तथा इक़बाल को लेकर देहली पहुँची। मुग़लों को हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिया गया और उन्हें कठोर दण्ड दिये गये। (४४–४६)

गुजरात, राजपूताना, मालवा तथा देवगीर पर आक्रमण

बुद्धवार २० जमादी उल अव्वल ६९८ हिजरी (२३ फ़रवरी १२९९ ई०) को सुल्तान ने अरिजेवाला को यह फ़रमान भेजा कि इस्लामी सेना गुजरात के तट पर सोमनाथ के मन्दिर के खण्डन के लिये प्रस्थान करे। उलुग़ख़ाँ को सेना का सरदार बनाया गया। जब शाही सेना उस प्रदेश के नगर में पहुँची तो उस पर अत्यधिक रक्त-पात के उपरान्त विजय प्राप्त करली। तत्पश्चात् ख़ानेआज़म ने अपनी सेना लेकर समुद्र की ओर प्रस्थान किया और सोमनाथ को, जो हिन्दुओं की पूजा का केन्द्र है, घेर लिया। इस्लामी सेना ने मूर्तियों का खण्डन कर दिया और सब से बड़ी मूर्ति को सुल्तान के दरबार में भेज दिया। नहरवाला खम्भायत तथा समुद्र तट के अन्य नगरों पर भी विजय प्राप्त करली गई। (५०–५३)

रणथम्बोर की विजय

जब भगवान् के छाये का आसमानी चित्र रणथम्बौर पहाड़ी पर पहुँचा तब अत्यधिक ऊँचा क़िला, जिसकी अट्टालिकायें नक्षत्रों से बातें करती थीं, इस्लामी सेना द्वारा घेर लिया गया। हिन्दुओं ने किले की दसों अट्टारियों पर आग लगा दी, किन्तु अभी तक मुसलमानों के पास इस अग्नि को बुझाने के लिये कोई सामग्री एकत्रित न हुई थी। थैलों में मिट्टी भर भर कर पाशेब तैयार किया गया। कुछ अभागे नव मुसलमान जो कि इससे पूर्व मुगल थे, हिन्दुओं से मिलगये थे। रजब से ज़ीक़ाद (मार्च से जूलाई) तक विजयी सेना क़िले को घेरे रही। क़िले मे बाणों की वर्षा के कारण पक्षी भी न उड़ सकते थे। इस कारण शाही बाज भी वहाँ तक न पहुँच सकते थे। क़िले के भीतर से अरादों द्वारा शाबान के अन्त तक पत्थर फेंके जाते रहे किन्तु क़िले में अन्न की कमी हो गई। क़िले में अकाल पड़ गया। एक दाना चावल दो दाना सोना देकर भी प्राप्त न हो सकता था। नव रोज़ के पश्चात् सूर्य रणथम्बोर की पहाड़ियों पर तेज़ी से चमकने लगा। राय को संसार में रक्षा का कोई भी स्थान न दिखाई पड़ता था। उसने क़िले में आग जलवा कर अपनी स्त्रियों को आग में जलवा दिया।

---

१. फ़रिश्ता ने इस नदी का नाम नीलाब लिखा है। बर्नी ने खख्खर नामक स्थान लिखा है।

तत्पश्चात् अपने दो एक साथियों के साथ पाशेब तक पहुँचा किन्तु उसे भगा दिया गया। इस प्रकार मंगलवार ३ ज़ीक़ाद ७०० हिजरी (१० जुलाई १३०१ ई०) को क़िले पर विजय प्राप्त हो गई।

झायन जोकि इससे पूर्व बहुत आबाद था और काफ़िरों का निवास स्थान था, मुसलमानों का नया नगर बन गया। सर्व प्रथम बाहिर देव के मन्दिर का विनाश कर दिया गया। इसके उपरान्त कुफ़ के घरों का विनाश कर दिया गया। बहुत से मज़बूत मन्दिर जिन्हें क़यामत का बिगुल भी न हिला सकता था, इस्लाम के पवन के चलने से भूमि पर सोगये। (५४--५६)

माँडू तथा मालवे की विजय

विजयी सेना के भाला चलाने वालों के भय से अन्य शक्तिशाली ज़मींदारों ने भी विरोध करना बन्द कर दिया और सुल्तान के दरबार की भूमि पर माथा रगड़ने तथा धूल को सुरमे के स्थान पर आँखों[1] में लगाने के लिए उपस्थित हो गये किन्तु दक्षिण की ओर मालवा का राय महलिक देव तथा कोका प्रधान जिनके पास ३०-४० हज़ार सवार थे, उसी प्रकार अभिमान में डूबे रहे तथा अभिमान का सुरमा अपनी आँखों में लगाये रहे। सुल्तान ने चुनी हुई सेना उनसे युद्ध करने के लिये भेजी जिसने हिन्दू सैनिकों की बुरी तरह हत्या की। कोका भी तीर द्वारा घायल होकर मर गया और उसका सिर सुल्तान के दरबार में भेज दिया गया। जब मालवा पर विजय प्राप्त हो गई तो सुल्तान ने मालवा प्रदेश ऐनुल मुल्क को प्रदान कर दिया और उसे आदेश दिया कि वह माण्डू पर भी विजय प्राप्त करे। महलिक देव अपने क़िले में घुस गया था। ऐनुल मुल्क ने सुल्तान के आदेशानुसार मालवा के शेष विरोधियों का भी अन्त कर दिया। इसके उपरान्त उसने महलिक देव के क़िले पर आक्रमण करके क़िले पर अधिकार जमा लिया। महलिक देव मारा गया। यह विजय बृहस्पतिवार ५ जमादीउल अव्वल ७०५ हिजरी (२३ नवम्बर १३०५ ई०) को प्राप्त हुई। मलिक ऐनुलमुल्क ने विजय का हाल लिख कर अपने हाजिब द्वारा सुल्तान के पास भेज दिया। सुल्तान ने माण्डू भी उसे प्रदान कर दिया। (५६-६४)

चित्तौड़ की विजय—

सोमवार ८ जमादी उस्सानी ७०२ हिजरी (२८ जनवरी १३०३ ई०) को सुल्तान ने चित्तौड़ की विजय का दृढ़ संकल्प कर लिया। देहली से झण्डे के चाँद चल पड़े। शाही काला चत्र बादलों तक पहुँच रहा था। सुल्तान सेना लेकर चित्तौड़ पर पहुँच गया। सेना के दोनों बाजुओं के लिये यह आदेश हुआ कि वे क़िले के दोनों ओर अपने शिविर लगादें। शाही सेना दो मास तक आक्रमण करती रही किन्तु विजय प्राप्त न हो सकी। चत्रवारी नामक पहाड़ी पर सुल्तान अपना श्वेत चत्र सूर्य के समान लगाता और सेना का प्रबन्ध करता था। वह पूर्वी पहलवानों को पश्चिमी पहलवानों से लड़ाता रहा। सोमवार ११ मुहर्रम ७०३ हिजरी (२५ अगस्त १३०३ ई०) को सुल्तान उस क़िले में जहाँ चिड़ियाँ भी प्रविष्ट न हो सकती थीं, दाख़िल हो गया। उसका दास अमीर ख़ुसरो भी उसके साथ था। राय सुल्तान की सेवा में क्षमा याचना के लिये उपस्थित हो गया। उसने राय को कोई हानि न पहुँचाई किन्तु उसके क्रोध द्वारा ३० हज़ार हिन्दुओं की हत्या हो गई। जब शाही क्रोध ने समस्त मुक़द्दमों का विनाश कर दिया और उस भूमि से दुरंगी का अन्त कर दिया तो उसने कृषि करने वाली प्रजा को, जिनमें कोई भी काँटा नहीं होता प्रसन्न कर दिया। चित्तौड़ का नाम ख़िज़्राबाद रक्खा

१. अमीर ख़ुसरो ने इस विजय के उल्लेख में जितने वाक्य लिखे हैं उनमें आँख सुरमे तथा इससे सम्बन्धित शब्दों का प्रयोग किया है कारण कि इनका अर्थ आँख है।

गया। खिज़्र खाँ के सिर पर लाल चत्र रक्खा गया। उसने ऐसे वस्त्र धारण किये जिनमें जवाहरात जड़े हुये थे। दो झण्डे जो, काले तथा हरे रंग के थे, लगाये गये। उसका दरबार दो रंग के दूरबाशों से सजाया गया। इस प्रकार वह खिज़्र खाँ को सम्मानित करने के उपरान्त सीरी की ओर रवाना हो गया। २० मुहर्रम के पश्चात् शाही झण्डों को देहली की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया गया। (६४-६६)

देवगीर पर विजय

राय रामदेव एक जंगली घोड़े के समान था जो एक बार वश में किया जा चुका था और दया पूर्वक उसका राज्य उसी को प्रदान कर दिया गया था किन्तु वह एक मोटे ताजे घोड़े की भाँति लगाम को भूल गया था। सुल्तान ने मलिक नायब बारबक को उसे वश में करने को भेजा। उसके साथ तीस हज़ार सवार थे। वे लोग बिना किसी कठिनाई के ३०० फरसंग की यात्रा पूर्ण करके उन लोगों पर टूट पड़े। शनिवार १९ रमज़ान ७०६ हिजरी (२४ मार्च १३०७ ई०) को इस्लामी सवारों ने राय की सेना पर आक्रमण किया। राय की सेना भाग गई। राय का पुत्र भी भाग निकला। शेष सेना को तलवार के घाट उतार दिया गया। लगभग आधी सेना राय के पुत्र के साथ भाग गई। मुसलमान सवारों को विजय प्राप्त हुई मलिक शहकश (काफ़ूर) ने आदेश दिया कि जो लूट का माल सुल्तान के लिये उचित हो वह रोक लिया जाय और शेष धन सैनिकों को बाँट दिया जाय। सुल्तान ने यह आदेश दे दिया था कि राय तथा उसके परिवार की रक्षा का विशेष प्रबन्ध किया जाय। इस कारण उन्हें गिरफ़्तार करने के अतिरिक्त और किसी बात का प्रयत्न न किया गया। सुल्तान समझता था कि उसके दण्ड की तलवार के भय से उनके प्राण निकल चुके हैं, अतः उसने उन्हें पुनः जीवित किया। उसने रामदेव को अपनी रक्षा तथा क्षमा के क़िले में स्थान प्रदान किया। छः मास तक भाग्यशाली राय शाही आश्रय की छाया में रहा। इसके उपरान्त सुल्तान ने उसे नीला छत्र प्रदान करके वापस कर दिया। (७०-७३)

सिवाना की विजय

शाही पताकायें बुद्धवार १३ मुहर्रम ७०८ हिजरी (३ जुलाई १३०८ ई०) को युद्ध के लिये देहली से चल पड़ी। शिकार के विचार से चलकर सुल्तान ने सिवाना पर जो कि लगभग १०० फ़रसंग दूर है, आक्रमण करके क़िले को घेर लिया। यह क़िला एक पहाड़ी पर बना था। वह सीतल देव के अधिकार में था। सुल्तान ने आदेश दिया कि दाईं ओर की सेना क़िले के दक्षिणी भाग तथा बाईं ओर की सेना क़िले के उत्तरी भाग पर आक्रमण करे। पश्चिमी ओर की मंजनीक़ों का प्रबन्ध मलिक कमालुद्दीन गुर्ग के सिपुर्द हुआ। मग़रबियों द्वारा पहाड़ी मे अनेक छेद कर दिये गये। अन्त में पाशेब पहाड़ी की चोटी तक पहुंच गया। तत्पश्चात् सुल्तान के आदेशानुसार सेना के वीर पाशेब से क़िले के पशुओं पर टूट पड़े किन्तु क़िले वाले क़िले से न भागे, यद्यपि उनके सिर टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये। जो लोग भागे उनका पीछा किया गया और उन्हें पकड़ लिया गया। कुछ हिन्दुओं ने जालौर की ओर भाग जाने का प्रयत्न किया किन्तु वे भी गिरफ़्तार हो गये। मंगलवार २३ रबीउल अव्वल (१० सि० १३०८ ई०) को प्रातःकाल सीतलदेव का मृतक शरीर शाही चौखट के सिंहों के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया गया। लोग गुर्ग की योग्यता तथा उसकी धनुषविद्या को देखकर स्तब्ध रह गये। इसके उपरान्त सुल्तान देहली की ओर रवाना हो गया। (७४-७८)

आरंगल पर आक्रमण

अब मै तिलंग की विजय का उल्लेख करूँगा। दक्षिण के बहुत से स्थानों पर विजय

प्राप्त करने के उपरान्त पूर्व तथा पश्चिम के सुल्तान ने आरंगल पर चढ़ाई करने के लिए सेना भेजना निश्चय किया। २५ जमादी उल अव्वल ७०९ हिजरी (३१ अक्तूबर १३०९ ई०) को अपने समय के नौशेरवाँ ने अपने बुज़र्च मिहर को सायाबाने लाल प्रदान करके आदेश दिया कि वह आकाश के सितारों से भी अधिक सेना दक्षिण विजय के लिये ले जाय। (७६) सेना ने मावर की ओर प्रस्थान प्रारम्भ कर दिया। नौ दिन की यात्रा के उपरान्त राज्य के शुभ सितारे मसूदपुर पहुंचे। सोमवार ६ जमादीउस्सानी (११ नवम्बर १३०९ ई०) को दो दिन के विश्राम के उपरान्त सेना पुनः चल खड़ी हुई। (८०) मार्ग बड़ा ऊबड़ खाबड़ था। जंगलों को पार करती हुई छः दिन की यात्रा के उपरान्त सेना ने जून चम्बल कुआरी बीना तथा भोजी नामक पाँच नदियाँ पार की और सुल्तानपुर जो कि इरिजपुर के नाम से प्रसिद्ध है पहुँच गई। यहाँ सेना ने चार दिन विश्राम किया। रविवार १९ जमादी उस्सानी (२४ नवम्बर १३०१ ई०) को भाग्यवान मलिक घोड़े पर सवार हुआ और राज्य के सितारे चल पड़े। घोड़ों ने मार्ग के सभी पत्थर अपने खुर से तोड़ दिये थे। पायकों द्वारा पहाड़ी में दर्रे पड़ गये। (८१)

१३ दिन के उपरान्त प्रथम रजब (५दिसम्बर १३०९ ई०) को सेना खाण्डा पहुंच गई। १४ दिन तक सेना का अर्ज़ (निरीक्षण) हुआ। इसके उपरान्त सेना पुनः चल पड़ी। नदियों नालों को पार करती हुई वह प्रत्येक दिन एक नये स्थान में प्रविष्ट होती थी। सुल्तान के भाग्य के आशीर्वाद से नर्बदा नदी भी पार कर ली गई। नर्बदा पार करने के ८ दिन उपरान्त सेना नीलकण्ठ नामक स्थान पर पहुँच गई।

नीलकण्ठ देवगीर की सीमा पर है जो कि रायरायाँ रामदेव के अधीन है। (८२, ८३) सुल्तान के आदेशानुसार सेना को यह आज्ञा दे दी गई कि इस प्रदेश को कोई क्षति न पहुँचे। सेना देवगीर में दो दिन तक आगे के मार्ग की जानकारी प्राप्त करने के लिये रुकी रही। बुधवार २६ रजब (३० दिसम्बर १३०९ ई०) को सेना ने पुनः प्रस्थान किया। १६ दिन में तिलंग के उन मार्गों की यात्रा समाप्त की। चारों ओर पहाड़ियाँ थीं। मार्ग सितार के तार से भी बारीक था। नदियों के घाट बड़े ही ढालू थे। (८४, ८६) इस प्रकार यात्रा करके सेना बसीरागढ़ के दोआब में पहुँच गई। यह यशर तथा बूजी नामक दो नदियों के बीच में है। कहा जाता है कि वहाँ हीरे की एक खान भी थी, किन्तु सैनिकों ने खान के खोदने का प्रयत्न न किया। इसके उपरान्त मलिक कुछ सैनिकों को लेकर तिलंग राज्य के सरबर नामक क़िले पर पहुंच गया और क़िला घेर लिया। भीतर से हिन्दुओं ने 'मारो मारो' चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया। (८७) शाही सेना के धनुर्धारियों ने बहुत से लोगों के शरीर छेद डाले। हिन्दुओं ने अपने आपको पराजित देख कर सपरिवार अग्नि में भस्म होकर आत्म हत्या करली। मुसलमान किले पर चढ़ कर हिन्दुओं पर टूट पड़े और जो आग से बच गये थे उनकी हत्या करदी। (८८) शेष क़िले के मुक़द्दमों ने भी इसी प्रकार आत्म विनाश का निश्चय कर लिया। इस अवसर पर नायब अर्ज़े ममालिक सिराजुद्दीन ने विजय का दीपक जलाना उचित समझा, किले के मुकद्दम का भाई अनानीर खेतों में छिप गया था। अर्ज़े ममालिक ने आदेश दिया कि उसे गिरफ़्तार कर लिया जाय। उसे प्रोत्साहन देकर इस योग्य बना दिया गया कि वह क्षमा याचना कर सके और युद्ध की अग्नि शान्त हो सके। कुछ लोग राय लुद्दर देव के पास भाग गये। राय के पास बहुत बड़ी संख्या में हाथी तथा सनिक थे, किन्तु वह भी बड़ा भयभीत हो गया था, यद्यपि वह अपने भय को बराबर छिपाता रहा।

शनिवार १० शाबान (१३ जनवरी १३१० ई०) को सेना ने तिलंग की ओर प्रस्थान किया। (८६) और १४ शाबान (१७ जनवरी १३१० ई०) को सैनिक कुनारबाल ग्राम में पहुंच गये। मलिक नायब बारबक ने १ हजार सवारों को यह आदेश देकर भेजा कि वह कुछ लोगों

को पकड़ लायें, जिनसे उस राज्य के विषय में पूछताछ की जा सके। जब यह सेना आरंगल के बागों में पहुँची तो दो अफसर ४० सवारों को लेकर अनक मण्डा पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, जहाँ से वे आरंगल के सभी बाग तथा स्थान देख सकते थे। पहाड़ी से ध्यान पूर्वक देखने पर चार हिन्दू सवार दृष्टिगोचर हुए। (६०) मुसलमान अपने धनुष लेकर उनकी ओर दौड़े और उनमें से एक को नीचे गिराकर सरदार के पास भेज दिया। जब सेना आरंगल पहुँची तो मलिक नायब कुछ लोगों को लेकर आरंगल के क़िले के विषय मे पूछताछ करने के लिये निकला। उस किले के समान कोई अन्य क़िला पृथ्वी पर न था। इसकी दीवारें कच्ची मिट्टी की थी किन्तु वे बड़ी दृढ़ थी। इस में लोहे का भाला तक न घुस सकता था। यदि मग़रिबी पत्थर फेंके जाते तो वे पुनः वापस आ जाते थे।

इसके मिट्टी के मीनार तथा अटारियाँ भी बड़ी मजबूत थीं। उस दिन मलिक सेना के शिविर के लिये स्थान चुनकर वापस हो गया। दूसरे दिन सेना अनाम कुण्डा पहुँच गई। मलिक ने पुनः शिविर क स्थान का निरीक्षण किया और शिविर लगने प्रारम्भ हो गये। १५ शाबान, (१८ जनवरी १३०९ ई०) की रात्रि में ख़्वाजा नसीरुलमुल्क सिराजुद्दौला ने सेना का प्रबन्ध किया। सेना के दस्ते क़िले को घेरने के लिये भेजे गये। (६१. ६२) जब शुभ सायाबान आरंगल के द्वार से एक मील की दूरी पर लग गया तो क़िले के चारों ओर शिविर भी लगा दिये गये। रात्रि में हिन्दू बड़ी शान्ति से क़िले के भीतर सोये कारण कि शाही सेना पहरा दे रही थी। प्रत्येक तुमन को क़िले के चारो ओर १२ बारह गज़ भूमि प्रदान की गई। क़िले के चारों ओर शिविरों द्वारा १२५४६ गज़ भूमि घिर गई। शिविरों द्वारा कुफ़्र की भूमि कपड़े का बाजार बन गई। प्रत्येक सैनिक को अपने शिविर के पीछे एक हिसारे चोबीं (कठगढ़) बनाने के लिये कहा गया। सैनिकों ने फलदार वृक्ष भी गिरा दिये। (६३) अन्त में सेना ने अपनी रक्षा के लिये एक लकड़ी का कठेहरा बनवा लिया। रात्रि में उस प्रदेश के मुक़द्दम मानिकदेव ने १ हज़ार हिन्दू सवारों को लेकर आक्रमण कर दिया किन्तु शाही सेना उनसे किसी प्रकार भयभीत न हो सकती थी। वह तो अजगर के समान उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। रावतों के सिर कट-कट कर अजगर के अण्डों के समान भूमि पर लुढ़कने लगे। अन्त में बहुत से हिन्दू या तो मार डाले गये या भाग गये। कुछ हिन्दू पकड़े गये। (६४-६५)

बन्दियों ने बताया कि धहदुम क़स्बे में जो कि तिलंग से छः फ़रसंग पर है, ३ ऐसे हाथी छिपे हुए हैं जो कि अपने लोहे के दाँतों से पर्वत की पीठ भी चीर फाड़ सकते हैं। तुरन्त शाही सेना के सेनापति ने ३ हज़ार वीर सवारों को आदेश दिया कि वे उस पर आक्रमण करें। क़िराबेग मैसरा उनका नेता था। जब वे उस स्थान के निकट पहुँचे तब उन्हें ज्ञात हुआ कि हाथी आगे भेज दिये गये हैं अतः उन्हें आगे की ओर प्रस्थान करना पड़ा। सुल्तान के भाग्य के आशीर्वाद से तीनों हाथी उसके सरदारों को प्राप्त हो गये। जब वे शाही सेना के शिविर में पहुँचे, तो मलिक ने उनकी प्राप्ति को बहुत बड़ी सफलता समझ कर शाही अस्त-बल में पहुँचा दिया। (६६)

क्योंकि सेनापति नायब अमीर हाजिब भी था और उसे चौगान (पोलो) खेलने से बड़ी रुचि थी, अतः उसने अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे प्रतिदिन लुद्दर देव के मुक़द्दमों के सिरों से चौगान खेला करें। जहाँ कही भी उन्हें कोई रावत मिल जाय, वे उसके सिर को गेंद समझ कर ले आयें। सवारों ने इस प्रकार बहुत से गेंद प्राप्त किये, और चौगान के प्रेमी मलिक के सामने पेश कर दिये। तत्पश्चात् मलिक ने आदेश दिया कि मग़रबियों के लिये पत्थर के गेंद ढूँढ़े जायँ। मंजनीक़ों ने काफ़िरों के क़िले को बड़ी क्षति पहुँचाई। जब साबात

तथा गर्गब तैयार हो गये तो क़िले की खाई के होंठ भी बन्द कर दिये गये। बड़े-बड़े पत्थरों द्वारा क़िले की लगभग १०० हाथ दीवार भी तोड़ डाली गई। क्योंकि पाशेब बनाने में कई दिन लग जाते, अतः वज़ीर को लोगों ने परामर्श दिया कि तुरन्त धावा बोल देना चाहिये। (६७-६६)

मंगलवार ११ रमज़ान (१२ फ़रवरी १३१० ई०) की रात्रि में चन्द्रमा द्वारा चारों ओर काफ़ी प्रकाश फैला हुआ था। वज़ीर ने आदेश दिया कि प्रत्येक ख़ेल (दस्ते) में ऊँची-ऊँची सीढ़ियाँ तैयार की जायं। जैसे ही नक़्क़ारा बजे प्रत्येक सैनिक किले पर सीढ़ियाँ लगा कर चढ़ जाय। जब सूर्य की सुनहरी आभा ढाल ऊपर चढ़ गई तो मलिक नायब ने अपने सैनिकों को क़िले पर आक्रमण करने का आदेश दे दिया। ढोल तथा बिगुल के हाहाकार के मध्य में वीर, सिंहों की भाँति कमन्दों द्वारा क़िले में कूदने लगे। बाणों की वर्षा से हिन्दुओं के सीने घायल हो गये। कटारों द्वारा क़िले में मार्ग बनाने का प्रयास होने लगा। लगभग आधा क़िला आकाश में धूल के समान उड़ गया। शेष आधा क़िला भूमि में रक्षा के लिए गिर पड़ा। कुछ सैनिक सीढ़ियों द्वारा और कुछ सैनिक कीलें गाड़-गाड़ कर क़िले में घुस गये। (६७-१०२)

रविवार १३ रमज़ान (१४ फरवरी १३१० ई०) को क़िले पर विजय प्राप्त हो गई। बुद्धवार तक शाही सेना मिट्टी के क़िले में प्रविष्ट हो गई। (१०३-१०४) इसके उपरान्त भीतरी क़िला घेर लिया गया। यह पत्थर का बना हुआ था। पत्थर इस कुशलता से जमाये गये थे कि उनके बीच में कोई सुई भी न जा सकती थी। उसकी दीवार इतनी चिकनी थी कि उस पर से मक्खी भी फिसल जाती थी। कोई मग़रबी पत्थर क़िले को किसी प्रकार की हानि न पहुँचा सकता था। जब सेना किले की खाई तक पहुँची तो उसने देखा कि क़िले की खाई में पानी भरा हुआ है। राय लुद्दर देव क़िले के भीतर सर्प के समान अपनी धन-सम्पत्ति तथा राज कोष पर बैठा हुआ था किन्तु वह अत्यधिक भयभीत हो गया था। उसने अपनी समस्त धन-सम्पत्ति शाही सेना को पेश करने के लिये एकत्रित की। इसके उपरान्त उसने अपनी एक सोने की मूर्ति बनवाई और अपनी अधीनता प्रकट करने के लिए उसे पेश करते हुये उसकी गर्दन में एक सोने की ज़ंजीर डाली और अपने दूतों द्वारा शाही सेना के सेनापति के पास भेज दी। उसने यह सूचना भेजी कि मेरे पास इतना सोना है जिससे हिन्दुस्तान के सभी पर्वत ढके जा सकते हैं। यह सब सोना मैं सुल्तान की सेवा में भेंट कर दूंगा। यदि सुल्तान इस अभागे हिन्दू को कुछ सोने के सिक्के वापस कर देगा तो वह समझेगा कि समस्त रायों की अपेक्षा उसका अधिक सम्मान किया गया। यदि बहुमूल्य जवाहरात पत्थरों तथा मोतियों की आवश्यकता हो तो वे भी मेरे पास बहुत बड़ी संख्या में हैं। यह सब सुल्तान के पदाधिकारियों के मार्ग में बिछा दिये जायँगे। मेरे पास २० हज़ार पहाड़ी तथा समुद्री घोड़े हैं। इनके अतिरिक्त १०० हाथी भी हैं जिन्हें मैं सुल्तान की सेवा में पेश कर दूंगा। (१०५-१०६)

संक्षिप्त मे लुद्दर देव ने तराजू के एक पलड़े मे अपनी समस्त धन-सम्पत्ति, हाथी तथा घोड़े रख दिये और दूसरे पलड़े में अपना जीवन। जब राय के दूत सायाबाने लाल (चत्र) के सामने पहुँचे तो उन्होंने राय का सन्देश मलिक को सुनाया। मलिक ने यह निश्चय किया कि राय की धन-सम्पत्ति तथा कर लेकर उसे क्षमा कर देना चाहिए। दूसरे दिन दूत हाथी घोड़े तथा धन-सम्पत्ति लेकर मलिक की सेवा में उपस्थित हुये और उन्हें उसके तथा अन्य पदाधि-कारियों के सम्मुख पेश किया। अरज़े ममालिक ने जवाहिरात का निरीक्षण करके उन्हें

उनके मूल्य के अनुसार भिन्न-भिन्न भागों में सूची तैयार करने के लिये विभाजित कर दिया। खिराज़ तथा जजिया निश्चित करने के उपरान्त अरजें हसीब ने अमीरों तथा कातिबे मुहासिब को आदेश दिया कि जो लोग सेना में उपस्थित या अनुपस्थित हों उनके विषय में जानकारी प्राप्त की जाय। (११०-१२०) १६ शव्वाल (१९ मार्च १३१० ई०) को सेहकश राजधानी की ओर रवाना हुआ। ज़िलहिज्जा मास (मई) में घने जंगलों का यात्रा करके ११ मुहर्रम ७१० हिजरी (१० जून १३१० ई०) को शाही पदाधिकारी देहली पहुंच गये। मंगलवार २४ मुहर्रम (२३ जून १३१० ई०) को चौतर-ए-नासिरी पर काला चत्र लगाया गया। जो मलिक युद्ध करने के लिये भेजे गये थे, वे सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुये और उन्होंने हाथी घोड़े तथा धन-सम्पत्ति सुल्तान की सेवा में समर्पित की। (१२०-१२२)

माबर की विजय

युग के ख़लीफ़ा की तलवार ने, जो कि वास्तव में इस्लाम की दीपक है, हिन्दुस्तान का समस्त अंधेरा दूर कर दिया। केवल माबर शेष रह गया। माबर का समुद्र देहली से इतनी दूर है कि वहाँ तक सेना एक साल की यात्रा के उपरान्त पहुँच सकती है। पिछले सुल्तानों के पाँव उस स्थान तक नहीं पहुँच सके थे। मलिक नायब बारबक़ इज्जुद्दौला इस्लाम के सम्मान के लिये शुभ चत्र तथा विजयी सेना के साथ युद्ध करने के लिये उस ओर भेजा गया। (१२४) मंगलवार २४ जमादीउल आखिर ७१० हिजरी (१८ नवम्बर १३१० ई०) को एक शुभ नक्षत्र में लाल सायाबान युद्ध के लिये निकला। (१२६) सुल्तान का शुभ चत्र भी यमुना तट की ओर चल पड़ा और तनकल में शिविर लग गये। दीवाने अर्जे ममालिक के कर्मचारियों ने सेना का संग्रहीकरण किया। पूरे चौदह दिन तक मलिकुश्शर्क़ की पताकायें वहाँ रहीं। ९ रजब (२ दिसम्बर १३१० ई०) को प्रातःकाल सेना युद्ध के लिये चल पड़ी। २१ दिन यात्रा करके सेना कतीहुन पहुँची। वहाँ से ७ दिन में गुरगाँव पहुँची। १७ दिन के बीच में घाटों को पार कर लिया गया। (१२७-१२८) तीन नदियाँ पार की गई। सेना ने इनके पार करने में बड़ी शिक्षा ग्रहण की। दो नदियाँ एक दूसरे के बराबर ही बड़ी थी, किन्तु नर्बदा के समान कोई भी न थी। इन नदियों तथा पर्वतों को पार कर लेने के उपरान्त तिलंग के राय के भेजे हुये २३ हाथी प्राप्त हुये। विजयी सेना को बीस दिन उन पहाड़ों (हाथियों) को उस स्थान से भेजने में लगे। वहीं सेना का अर्ज़ (निरीक्षण) हुआ। अर्ज़ के उपरान्त सेना ने शाही आज्ञानुसार माबर की ओर प्रस्थान किया। सातवें दिन शुक्रवार के पश्चात् सेना ने घरगाँव से तेज़ी से प्रस्थान किया। तावी नदी पर पहुंचने के उपरान्त उन्हें एक नदी समुद्र से भी बड़ी मिली। सेना ने उसे शीघ्रातिशीघ्र पार कर लिया। इसके उपरान्त सेना ने जंगलों को काटना प्रारम्भ कर दिया। सेना की धूल से इस प्रदेश की अन्य नदियाँ कीचड़ से भर गई। (१३०-१३२)

बृहस्पतिवार १३ रमजान (३ फ़रवरी १३११ ई०) को शाही सेना देवगीर पहुँच गई। राय रायाँ रामदेव ने शाही सेना को युद्ध की सामग्री प्रदान की और बीर तथा धीर समुद्र पर आक्रमण करने का परामर्श दिया। उसने यह आदेश दे दिया कि सेना की आवश्यकता का समस्त वस्तुयें बाजार में पहुंचा दी जायें। सब लोगों ने उचित मूल्य पर अपनी आवश्यकता की समस्त वस्तुयें क्रय करलीं। राय रायाँ ने दलवी नामक एक हिन्दू को, जिसका राज्य बीर तथा धोर समुद्र की सीमा पर स्थित था, यह सूचना भेजदी कि शाही सेना कुछ ही दिन में उसके प्रदेश में पहुंच जायगी। मंगलवार १७ रमज़ान (७ फ़रवरी १३११ ई०) को शाही

ोना चल पड़ी। देवगीर मे परसदेव दलवी[1] के राज्य तक पहुंचने में शाही सेना को तीन बड़ी ादियाँ पार करनी पड़ी और सेना ने पाँच पड़ाव किये। इनमें एक सीनी नामक समुद्र के ामान चौड़ी थी। गोदावरी तथा विहिनूर भी बड़ी नदियाँ थीं। ५ दिन के उपरान्त शाही ोना परसदेव दलवी की अग्रता में बन्दरी नामक स्थान तक पहुँच गई। दलवी को वीर घोर ाण्डिया से सहायता मिलने की आशा थी, किन्तु उसने इस्लामी सेना को मार्ग दर्शाना निश्चय र लिया। मलिकुशशर्क़ ने चारों ओर दूत भेज कर उस प्रदेश के विषय में जानकारी प्राप्त ी। अन्त में यह पता चला कि माबर के दोनों राय आरम्भ में एक दूसरे के बड़े मित्र तथा ाहायक थे किन्तु छोटे भाई सुन्दर पाण्डिया ने अपने पिता के रक्त से अपने हाथ रंग लिये थे। ास पर राय वीर पाण्डिया जो कि बड़ा भाई था कई हज़ार हिन्दुओं को एकत्रित करके पने छोटे भाई को जीवित ही जला डालने के लिये रवाना हुआ। इसी बीच मे घोर समुद्र के ाय बिलाल देव ने नगरों को खाली पाकर उन पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया किन्तु स्लामी सेना के पहुँचने की सूचना पाकर बिलाल देव अपने राज्य में वापस चला गया। १३३-१३८)

मलिक सूचनायें एकत्रित करके रविवार २३ रमज़ान (१३ फ़रवरी १३११ ई०) ो मलिकों से परामर्श के उपरान्त एक तुमन लेकर शीघ्रातिशीघ्र आगे बढ़ा। उसके साथ से धनुर्धारी थे जो कि एक पोस्ते के दाने के हज़ारों खण्ड कर सकते थे तथा तलवारें चलाने ाले पहाड़ी के दो टुकड़े कर सकते थे। (१३६) १२ दिन तक लगातार मनुष्य तथा पशु हाड़ी ऊबड़-खाबड़ मार्गों पर चलते रहे। सैनिकों ने समस्त कठिनाइयों पर विजय प्राप्त रली। बृहस्पतिवार ५ शव्वाल (२५ फ़रवरी १३११ ई०) को शाही सेना ने धीर समुद्र ार लिया। वहाँ का क़िला इतना शानदार था कि उसे देख कर लोग आकाश को तुच्छ ामझने लगते थे। क़िले के निवासियों के हाथ पैर शाही सेना के भय से थर-थर काँपने लगे ौर शत्रु के बाणों के भय से उनके शरीर में मछली के काँटों के समान काँटे पैदा हो ये। राय बिलाल देव डूबते हुये मनुष्य की भाँति पीला पड़ गया। वीर धीर मुद्र शाही सेना का मुक़ाबला करने के लिए परामर्श करने लगा। लोगों ने सोचा क तुर्क सेना आग के दरिया के समान हमारे ग्राम के छप्पर के मकानों के निकट पहुँच गई । वह हमारे क़िले के पत्थरों को चून बना डालेगी। यद्यपि हमारा क़िला घोर समुद्र के ाम से प्रसिद्ध है तथा जल सर्वदा हमारे निकट रहता है तब भी यदि तुर्कों की तलवारों ी ज़बानें अपना कार्य प्रारम्भ कर देगी तो हमें उसको बुझाना असम्भव हो जायगा किन्तु फर भी आदर-पूर्वक प्राण त्याग देना उचित होगा। राय ने खिन्न होकर कहा कि हमारे ग्नि पूजक पूर्वज कह गये हैं कि हिन्दू तुर्कों का कदापि मुक़ाबला नहीं कर सकते और न ानी अग्नि का सामना कर सकता है अतः मैं विरोध के विचार त्याग कर उनकी अधीनता ीकार कर लूँगा। इस पर सभी ने युद्ध न करना निश्चय कर लिया और बीर के द्वार खोल ना तय कर लिया। प्रातः काल शाही सेना के सिहों तथा चीतों के दस्ते क़िले के भिन्न-भिन्न थानों पर पहुँच गये और मलिक स्वयं क़िले के द्वार पर पहुंच गया। रक्त पीने वाली पंक्तियों शोर होने लगा और चारों ओर ढोल बजने लगे। क़िले वालों के सामने दो बातें रखी ई—या तो वे मुसलमान हो जायँ या जिम्मी बनना स्वीकार करें। यदि वे दोनों में से कोई तें स्वीकार न करेंगे तो क़िले के खण्ड-खण्ड कर दिये जायंगे। (१३६-१४४)

---

[1] दलव का अर्थ डोल है। अमीर ख़ुसरो ने परसदेव के नाम के साथ दलवी होने के कारण जितने भी शब्दों का प्रयोग किया है उनमे जल, कुंआ, नदी, अथवा समुद्र का विशेष स्थान है।

बिलाल देव ने देखा कि अजान देने वालों की अज़ानें उसके मन्दिरों में प्रविष्ट होने वाली हैं तो उसने शुक्रवार की रात्रि में अपने एक विश्वास पात्र गेसूमल को इस्लामी सेना के विषय में सूचना प्राप्त करने के लिए भेजा। जब गेसूमल इस्लामी शिविर के निकट पहुंचा तो वह उसी प्रकार भौचक्का हो गया जिस प्रकार शैतान क़ुरान सुनकर हो जाता है। जब गेसूमल ने रात्रि के केशों में से मनुष्य के सिर के बाल के समान अत्यधिक इस्लामी सेना देखी तो उसके शरीर के रोंये कंघी के दाँतों के समान खड़े हो गये। वह घुँघराले बालों के समान गिरता पड़ता क़िले की ओर भागा। राय ने यह देख कर बालक देव नायक को नाना प्रकार के छल सिखा कर शाही शिविर की ओर भेजा (१४५)। उसने शाही शिविर के सम्मुख पहुंच कर बिलालदेव के प्राणों की रक्षा की प्रार्थना की। मलिक नायब वज़ीर ने उसकी प्रार्थना सुनकर कहा कि "ख़लीफ़ा ने बिलाल देव तथा अन्य रायों के विषय में यह आदेश दिया है कि वे या तो कलमा पढ़ लें और या जिम्मी बनना स्वीकार करें। यदि वे दोनों बातें रद्द करदें तो फिर उनकी गर्दनों को उनके सिर के भार से मुक्त कर दिया जाय। इस पर दूत ने प्रार्थना की कि उसके साथ कुछ मनुष्य नियत कर दिए जायँ जिससे वह राय को उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए तैयार कर सके। (१४६-४७)

मलिक ने उसका निवेदन स्वीकार कर लिया। उसने कुछ हिन्दू परमार हाजिबों को आदेश दिया कि वे राय के दो तीन दूतों के साथ प्रस्थान करें। वे शीघ्र क़िले में पहुंच गये और राय पर अपनी वाणी द्वारा आक्रमण करने लगे। उसने वीरता से बातचीत करने का प्रयत्न किया किन्तु वह कुछ समय तक कुछ भी न बोल सका। कुछ समय पश्चात् उसने कहा कि, 'मैं अपनी समस्त सम्पत्ति शाही दरबार में पेश करने के लिये तैयार हूँ। मै खिराज अदा किया करूँगा। प्रातःकाल मैं अपनी समस्त धन सम्पत्ति इस्लामी सेना में भेज दूंगा। मैं स्वयं अपने लिये हिन्दू धर्म तथा अपने जनेऊ के अतिरिक्त कुछ न रक्खूंगा। यदि वार्षिक ख़िराज निश्चित कर दिया जाय तो मैं उसे अदा करता रहूंगा।" राय ने अपने उपहार शाही सेना के धनुर्धारियों के पास भेज दिये। जब मलिक, राय की राजभक्ति के विषय में सन्तुष्ट हो गया तो उसने अपना क्रोध कम कर दिया। शुक्रवार ६ शव्वाल (२६ फ़रवरी १३११ ई०) को राय के दूत बालक देव नायक, माईन देव, जीतमल तथा कुछ अन्य, उपहार लेकर शाही चत्र के सामने धरती चुम्बन करने को पहुँचे। उन्होंने कहा कि, "राय ने जोकि सच्चाई में धनुष की डोरी से भी अधिक सीधा है, आप लोगों को इस बात का विश्वास दिलाया है कि वह अपनी रक्षा के लिये हिन्दी धनुष से भी अधिक झुक गया है। वह अधीनता स्वीकार करता है और शाही आदेशों के पालन का वचन देता है। वह अपने क़िले की धनुष बाण से रक्षा न करेगा।" (१४८-१५०)

रविवार के दिन सूर्य-उपासक बिलाल देव ने शाही चत्र के सामने धरती चुम्बन किया। इसके उपरान्त वह अपने क़िले में अपने जवाहरात तथा गड़ा हुआ बहुमूल्य सामान लेने चला गया। रात भर वह अपने खज़ानों को जिसे उसने सूर्य के समान रात्रि के उदर में गाड़ दिया था, खोदता रहा। दूसरे दिन वह अपने चमकते हुये जवाहरात लाया और शाही खज़ाने के अधिकारियों को अर्पण कर दिया। इस नगर में जहाँ कि चारों क़स्बे शहर देहली से चार महीने की यात्रा की दूरी पर स्थित हैं, सेना १२ दिन तक रुकी रही। यहाँ तक कि शेष सेना भी इसी स्थान पर आगई। इसके उपरान्त घोर समुद्र के हाथी राजधानी में भेजे गये। (१५३-१५४)

बुधवार १८ शव्वाल (१० मार्च १३११ ई०) को शाही सेना ने माबर की ओर प्रस्थान किया। पाँच दिन की कठिन यात्रा के उपरान्त शाही सेना माबर की सीमा पर

पहुँची। घोर समुद्र तथा माबर के बीच में एक ऐसा पर्वत मिला जोकि अपना सिर बादलों से रगड़ता था। सेना के मार्ग के लिये तिलमली तथा ताबरू नामक दो दर्रे साफ़ कर लिये गये किन्तु शीघ्र ही पहाड़ों को चूरकर देनेवाली सेना ने अपने बाणों द्वारा प्रत्येक दिशा में सैकड़ों दर्रे बना लिये और वे शीघ्रातिशीघ्र पहाड़ी को पार करने लगे। रात्रि में वे एक नदी तट पर उतरे। शाही सेना ने मर्दी नामक नगर तथा क़िले पर अधिकार जमा लिया। उस क़िले के लिये भीषण रक्त पात हुआ किन्तु शाही सेना ने अपने पसीने में नहाकर वहाँ की भूमि विद्रोहियों के रक्त से धो डाली। (१५५-१५६)

बृहस्पतिवार ५ ज़ीकाद (२६ मार्च १३११ ई०) को इस्लामी सेना जो बालू के कण से भी अधिक थी, कानोरी नदी से बीर धूल की ओर रवाना हुई। जब शाही सेना बीर धूल के निकट पहुंची तो बीर (कुँए) में शाही ढोलों की आवाज गूँजने लगी। हिन्दू अपने बीर (कुँए) को ढके रहते थे। यहाँ तक कि कोई उसकी ओर दृष्टि-पात न कर सकता था। बीर बलाहरदेव अत्यन्त बेचैन हुआ और उसका क़िला काँपने लगा। वह भाग जाना चाहता था किन्तु जब ब्राह्मणों ने राय रायाँ को पत्ती से भी अधिक निर्बल पाया तो उन्होंने उससे रंगीन भाषा में निवेदन किया कि रावतों को पान प्रदान किये जायँ, जिससे वे अपने प्राण न्यौछावर करने के लिये तैयार हो जायँ। राय के संकेत पर हिन्दू सवारों तथा पायकों को पान प्रदान किये गये। उन्होंने पान अपने मुँह में लिए और उनके मुँह अपनी मृत्यु के शोक में रक्त से भर गये। उनके साथ बीर ने भी पान खाये तथा रक्त पिया। जब पवित्र योद्धा शहर के निकट पहुंचे और उनकी तलवारों की किरणें बीरधूल पर पड़ने लगी तो बीर पर यह स्पष्ट हो गया कि उसके पतन का समय निकट आ गया है। वह शहर से कुछ धन सम्पत्ति तथा मनुष्य एवं घोड़े लेकर कन्दूर नगर की ओर चल दिया, किन्तु वह वहाँ से भी हाथियों तथा चीतों के जंगल की ओर भाग गया। वहाँ के कुछ मुसलमान शरा के विरुद्ध हिन्दुओं के सहायक बन गये थे। वे मुसलमानों की अधीनता स्वीकार करने पर तैयार हो गये। यद्यपि उनमें से प्रत्येक बड़े से बड़े विद्रोही तथा काफ़िर से भी बुरा था किन्तु मलिक ने उन्हें उनकी ज़ंजीरों से मुक्त करके सम्मान प्रदान किया। शाही क्षमा भी उनको प्रदान हो गई। उनके द्वारा सूर्य के उपासकों तथा काफ़िरों के विषय में पूर्णतया जानकारी प्राप्त हो गई। उन मुसलमानों के साथ शाही सेना ने कायर बीर तथा अन्य कायरों का पीछा करने का निश्चय कर लिया। (१५६-१६२)

बीरधूल से सेना बीर की खोज में ऐसे मार्ग से रवाना हुई, जहाँ इतना पानी भरा हुआ था कि जल तथा कुँए को भी पहचानना कठिन था किन्तु इस्लामी सेना उस मार्ग को भी पार करती हुई एक गाँव मे पहुँची, जहाँ हिन्दू सेना, पानी पर बुलबुले के समान टिकी हुई थी। आधी रात में यह पता चला कि राय कन्दूर की ओर भाग गया है। विजयी सेना ने उसका पीछा किया और शीघ्र ही उस जगह पहुंच गई। सिरों को विच्छेदन करने वाले तुर्कों को खोये हुए व्यक्ति का कहीं पता न चला, यद्यपि उन्होंने बहुत बडी संख्या में सिर काट डाले। मुसलमानों ने १२० हाथी पकड़ लिये। उन हाथियों की पीठ पर अपार धन-सम्पत्ति थी। वह सब धन-सम्पत्ति शाही खज़ाने के अधिकारियों को दे दी गई। बहुत से हाथी जैसा शरीर रखने वाले रावत जो कि हाथी दाँत के समान रण क्षेत्र से कभी न हटे थे, रेंग-रेंग कर अपने घरों में घुस गये, किन्तु उनका पता लगा लिया गया और उन्हें हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिया गया। कन्दूर से मुसलमानों ने राय का पीछा किया किन्तु वह एक ऐसे जंगल में घुस गया जहाँ सुई भी प्रविष्ट न हो सकती थी। मुसलमान कन्दूर को इस आशय से वापस हो गये कि वे वहाँ की पहाड़ियों में और हाथी ढूँढ सकें। प्रात: काल पता लगा कि बर्मतपुर नगर में एक सुनहरा मन्दिर है जहाँ राय के समस्त हाथी

जमा हैं। सेना तूफ़ान के समान चल खड़ी हुई और आधी रात में वहाँ पहुँच गई। २५० हाथी जो बादल के समान गरजते थे, सुबह होते होते पकड़ लिये गये। मन्दिर बड़ा शानदार था और उसकी सुनहरी बुनियादें भूमि के अन्दर तक पहुँच रही थीं। उसकी छतों तथा दीवारों में लाल एवं जवाहिरात जड़े हुए थे। इस मन्दिर की बुनियादें बड़ी होशियारी से खोद डाली गई और मन्दिर को विध्वंस कर दिया गया। पत्थर की मूर्तियाँ जो महादेव लिंग कहलाती थीं और प्राचीन समय से वहाँ वर्तमान थीं, तहस-नहस कर दी गई। देव-नारायण तथा अन्य मूर्तियों का भी विनाश कर दिया गया। वहाँ की समस्त धन-सम्पत्ति तथा सोना जवाहरात तुर्क सेना ने प्राप्त कर लिए। (१६३-१७२)

रविवार १३ ज़ीक़ाद (३ अप्रैल १३११ ई०) को विजयी सेना के सैनिक शुभ सायाबान के सम्मुख पहुंचे और धरती चुम्बन किया। वीर धोर के मन्दिरों की चोटी आकाश तक पहुँचती थीं और उनकी नीव पाताल तक, किन्तु उन्हें भी खोद डाला गया। दो दिन उपरान्त शाही चत्र यहाँ से रवाना होकर बृहस्पतिवार १७ जीक़ाद (७ अप्रैल १३११ ई०) को किम नगर पहुंचा। ५ दिन उपरान्त वह मथुरा पहुँचा जो राय सुन्दर पाण्डिया का निवास-स्थान था। राय अपनी रानियों को लेकर भाग गया था और केवल दो तीन हाथी जगन्नाथ के मन्दिर में शेष रह गये थे। मलिक ने क्रोध में जगन्नाथ के मन्दिर में आग लगादी। (१७३-१७४)

मलिक ने हाथियों को उस स्थान पर भेज दिया जहां अन्य हाथी एकत्रित थे। जब आरिज़ ने उनकी गणना की तो हाथियों की पंक्ति तीन फ़र्सग लम्बी पाई गई। ५१२ हाथी जो कि सिकन्दर की दीवार के भी टुकड़े-टुकड़े कर सकते थे, पकड़ लिए गये। (१७४) हाथियों तथा घोड़ों की प्रशंसा। (१७५-१७८)

यदि जवाहिरात के बक्सों की प्रशंसा की जाय तो यह सम्भव नहीं। ५०० मन क़ीमती पत्थर जिनमें से प्रत्येक सूर्य के बराबर था, प्राप्त हुआ था। हीरे इतने सुन्दर थे कि उनके समान पहाड़ियों के कारखानों में कोई हीरा पुनः न बन सकता था।

(मोती तथा लाल आदि की प्रशंसा) (१७८)

रविवार की रात्रि में शाही सेना ने वापसी की तैयारियाँ प्रारम्भ करदीं। दूसरे दिन रविवार ४ ज़िलहिज्जा ७१० हिज्री (२४ अप्रैल १३११ ई०) को सेना का बहुत बड़ा भाग तथा हाथी एवं राजकोष देहली की ओर भेज दिये गये और शीघ्र ही ऊबड़-खाबड़ तथा कठिन मार्गों को तय करते हुए राजधानी पहुँच गये। (१७६-१८०) सोमवार ४ जमादी उस्सानी ७११ हिजरी (१८ अक्तूबर १३११ ई०) को सुल्तान ने सुनहरे महल में दरबार किया। मलिकों ने जो भिन्न-भिन्न पक्तियों में खड़े थे, धरती चुम्बन किया। सफ़ेद तथा भूरे घोड़ों की पंक्तियाँ बड़े समारोह से खड़ी थीं। मलिकों के धरती चुम्मन करने के उपरान्त भूमि छोटी-छोटी पहाड़ियों से भरी ज्ञात होती थी तथा टीकेदार रायों के धरती चुम्बन से वह केसर के रंगों की हो गई थी। बिस्मिल्लाह की आवाज़ ने फ़रिश्तों को इस बात की स्मृति दिलादी कि किस प्रकार उन्होंने आदम को सिजदा किया था। हदकल्लाह[1] की आवाज़ से शैतान भी आदम की सन्तान को सिजदा करने पर विवश हो जाता था। यदि हाथियों की पीठ पर वज़न न होता तो वे सुल्तान के वैभव के कारण भाग जाते। जब दरबार की दाहिनी और बाईं पंक्ति सज गई तो आकाश ने आयतल कुर्सी[2] तथा चारों

---

१. इब्ने बतूता ने लिखा है कि जब कोई मुसलमान दरबार में पेश किया जाता तो हाजिब बिस्मिल्लाह (अल्लाह के नाम से) और जब कोई हिन्दू पेश किया जाता तो हद कल्लाह (अल्लाह उसे उचित मार्ग पर चलाये) के नारे लगाते थे।

२. क़ुरान के तीसरे पारे (भाग) की कुछ आयतें (टुकड़े)।

फ़रिश्तों ने चारों क़ुल[1] पढ़े। मुल्तान के दास सहकश जिसने बड़ी सेवायें की थीं, अन्य उन मलिकों के साथ पेश किया गया, जिन्होंने इस युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई थी। उसने धरती चुम्बन किया। बिस्मिल्लाह की आवाज़ इतनी ऊँचाई तक पहुँच गई कि ऐसा ज्ञात होने लगा कि भगवान् की दया उसके द्वारा आकाश से उतरने वाली है। इसके उपरान्त लूट का माल निरीक्षण के लिए लाया गया। हाथी तथा जवाहिरात पेश हुए। सुल्तान ने भगवान् की ओर कृतज्ञता प्रकट की। (१८१-१८२)

——❀——
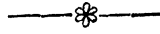
१. क़ुरान के अन्तिम पारे के चार सूरे जो कुल शब्द से प्रारम्भ होते हैं।

दिवलरानी तथा ख़िज़्र ख़ाँ

इस पुस्तक में अमीर ख़ुसरो ने गुजरात के राजा करण की पुत्री देवलदेवी तथा सुल्तान अलाउद्दीन के ज्येष्ठ पुत्र ख़िज़्र ख़ाँ के प्रेम की कथा लिखी है। क्योंकि हिन्दी शब्दों का फ़ारसी छन्दों में उचित प्रयोग न हो सकता था, अतः अमीर ख़ुसरो ने देवलदी के स्थान पर दिवल रानी लिखा है (४१-४४) अमीर ख़ुसरो लिखता है कि एक शुभ दिन को शाहज़ादा ख़िज़्र ख़ाँ ने मुझे बुलवाया और मुझे विशेष रूप से सम्मानित किया। ख़िज़्र ख़ाँ ने अपने प्रेम की वेदना का वर्णन किया। तत्पश्चात् एक दासी ने लिखी हुई कहानी मुझे लाकर दी। मैंने विशेष परिश्रम से यह कहानी लिखी।[1] (३८, ४६) इस प्रकार इस कहानी की रचना अमीर ख़ुसरो ने ज़ीक़ाद ७१५ हिजरी (जनवरी १३१६ ई०) में की। मुबारकशाह खलजी की हत्या के उपरान्त अमीर ख़ुसरो ने ३१९ छन्द और लिखे जिनमें ख़िज़्र ख़ाँ की हत्या का उल्लेख किया है।

देहली की विजय के उपरान्त जब सिन्ध और पहाड़ों तथा दरियाओं के प्रदेश सुल्तान के अधीन हो गये तो उसने निश्चय किया कि गुजरात का राय भी उसके अधीन हो जाय। उसने उलुग़ ख़ाँ को आदेश दिया कि वह उस प्रदेश पर आक्रमण करे। उलुग़ ख़ाने मुअज़्ज़म झायन की ओर रवाना हुआ। रणथम्बोर पर उसने बड़ी तेज़ी से रक्त-पात प्रारम्भ कर दिया। वहाँ का राय हमयाराय (हमीर देव) राय पिथौरा के वंश से था। १० हज़ार सवार देहली से २ सप्ताह में धावा मारकर वहाँ पहुँचे थे। वहाँ की चहार दीवारी ३ फ़रसंग के घेरे में थी और पत्थर की बनी हुई थी। (६४-६५) सुल्तान भी युद्ध के लिये वहीं पहुँच गया किन्तु उलुग़ ख़ाँ को क़िले पर आक्रमण करने का आदेश देकर स्वयं चित्तौड़ की ओर रवाना हो गया। दो मास के युद्ध के उपरान्त उसने चित्तौड़ पर अपना अधिकार जमा लिया। चित्तौड़ का नाम उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र ख़िज़्र ख़ाँ के नाम पर ख़िज़्राबाद रक्खा। उसे लाल चत्र प्रदान किया और चित्तौड़ उसे सौंप दिया। इसके उपरान्त सुल्तान ने दक्षिण के रायों के राज्य अपने अधिकार में करना निश्चय किया। मालवा में कोका वज़ीर बड़ा शक्तिशाली था। उसके पास ४० हज़ार सवार तथा अगणित प्यादे थे। देहली की १७ हज़ार सेना ने उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया। (६७) हिन्दू बहुत बड़ी संख्या में मारे गये किन्तु महलिक देव न मारा गया। सुल्तान ने ऐनुलमुल्क को मालवे की ओर भेजा। वह बड़ा अच्छा लेखक तथा तलवार चलाने वाला था। वह माँडू के क़िले को कुछ समय तक घेरे रहा और क़िले को विध्वंस कर दिया। उस क़िले का घेरा ४ फ़रसंग का था। क़िले पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त उसने इसकी सूचना सुल्तान को दी। सुल्तान ने वह प्रदेश उसकी अक़्ता निश्चित कर दिया। इसके उपरान्त सुल्तान स्वयं सामाने की ओर रवाना हुआ। वहाँ का राय सीतलदेव बड़ा ही शक्तिशाली था। उसका क़िला भी बड़ा दृढ़ था। शाही सेना पाँच छः वर्ष से उस क़िले को कोई हानि न पहुँचा सकी थी। सुल्तान के आक्रमण द्वारा सीतलदेव परास्त हुआ। इसके उपरान्त सुल्तान ने तिलंग पर विजय प्राप्त करने के लिये सेना भेजी (६८-६९)। वहाँ की विजय के उपरान्त माबर पर विजय प्राप्त करने के लिये सेना भेजी गई। देवगीर से चलकर सेना ने बलाल के राज्य पर अधिकार जमा लिया। बलाल ने युद्ध न किया और क़िला तथा

---

१. कवितानुसार ख़िज़्र ख़ाँ का नाम खज़िर ख़ाँ होता है किन्तु अनुवाद में ख़िज़्र ख़ाँ ही लिखा गया है। देवल रानी ख़िज़्र ख़ाँ अलीगढ़ से १९१७ ई० में प्रकाशित हो चुकी है। यह अनुवाद उसी पुस्तक से किया गया है।

हाथी घोड़े एवं बहुमूल्य सामान शाही सेना के सिपुर्द कर दिया। (७०-७१) निकट ही एक दूसरा राय वीर पाण्डिया भी था। जल तथा स्थल पर उसका राज्य था। उसके अधीन अनेक नगर थे, जिनमें सबसे मुख्य पटन था। वह पटन ही में निवास करता था। मरहठपुरी में एक प्रसिद्ध मन्दिर था। वह बड़ा शानदार तथा सोने का बना था। मूर्त्ति में लाल तथा याक़ूत जड़े हुये थे। प्रत्येक पत्थर इतना बहुमूल्य था कि एक एक पत्थर से पूरे नगर के लिये भोजन सामग्री एकत्रित की जा सकती थी। उसके पास एक हज़ार हाथी थे घोड़ों की गणना भी न की जा सकती थी। जब शाही सेना पटन पहुँची तो राय सब कुछ भूल गया और चींटी के समान जंगल में छिप गया। उसकी सेना तथा हाथी एवं प्रजा बड़ी परेशान हुई। (७२) राय के मुसलमान सिपाही शाही सेना के अधीन हो गये। सरदार ने उन्हें सम्मानित किया। इसके उपरान्त शाही सेना ने अपने लोहे के औज़ारों द्वारा सोने के मन्दिर का विनाश प्रारम्भ कर दिया। शाही सेना को अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई। माबर की विजय के उपरान्त सेना देहली को वापस हो गई। (७३)

सुल्तान ने उलुग़ खाने मुअज्जम को युद्ध करने के लिये समुद्र (गुजरात) की ओर भेजा। उस ओर का राय करण बड़ा ही शक्तिशाली था। (८०) जब खान ने उस पर आक्रमण किया तो वह भाग गया। राय की रानियाँ तथा हाथी एवं खज़ाना शाही सेना को प्राप्त हुआ। करण की रानी कमलादी बड़ी रूपवान थी। खान ने विजय के उपरान्त वापस होकर समस्त धन-सम्पत्ति तथा हाथी घोड़ों के साथ-साथ गुप्त रूप से कमलादी को भी पेश किया। सुल्तान ने उसे अपनी रानी बना लिया। कमलादी के दो पुत्रियाँ थीं। जब कमलादी शाही सेवा में पेश करने के लिये लाई गई तो वे दोनों पुत्रियाँ राय के साथ ही रह गईं। एक पुत्री की मृत्यु हो गई। दूसरी पुत्री की आयु ६ महीने की थी। उसका नाम देवलदी था। (८१-८२)

एक रात्रि में कमलादी ने सुल्तान को प्रसन्न देखकर कहा कि मेरे दो पुत्रियाँ थीं। एक की तो मृत्यु हो चुकी है किन्तु दूसरी जीवित है। उसके लिए मेरा हृदय बड़ा व्याकुल है। यदि बादशाह की कृपा हो जाय तो पुत्री से माता को मिलाया जा सकता है। बादशाह उन दिनों ख़िज्र. ख़ाँ के विवाह के विषय में सोचा करता था। रानी से सुनकर उसने यह निश्चय कर लिया कि ख़िज्र. ख़ाँ का विवाह देवलरानी से करा दिया जाय। उसने यह सूचना राय करण को भेजी। राय इस सूचना से बड़ा प्रसन्न हुआ। वह (देवलदी) को अत्यधिक धन-सम्पत्ति तथा हाथियों के साथ राजधानी को भेजने की तैयारियाँ कर ही रहा था किन्तु इस बीच में सुल्तान ने यह निश्चय किया कि वह राय करण के राज्य पर अधिकार जमाले। (८३-८४) उलुग़ खाने मुअज्जम ने सुल्तान के आदेशानुसार गुजरात पर आक्रमण किया। राय करण देवगीर की ओर भाग गया। जब राय रायाँ के पुत्र संखनदेव को यह ज्ञात हुआ कि करण गुजरात से तुर्कों की तलवार के भय से भाग कर इस ओर आ गया है और उसकी पुत्री भी उसके साथ है, (८५) तो उसे उससे विवाह करने की लालसा हुई। उसने अपने भाई भीलम को करण के पास भेजा। क्योंकि करण को सहायता की आवश्यकता थी अतः वह निषेध न कर सका। उसने (देवलदी) को देवगीर की ओर भेज दिया। देवगीर से एक फ़रसंग पहले बादशाही सेना से जो कि करण का पीछा कर रही थी, उन सवारों का युद्ध हो गया जो कि वीर पंचमी के अधीन थे। (८६) दोनों ओर से बाणों की वर्षा होने लगी। एक बाण (देवलदी) के घोड़े के लगा। वह गिर पड़ा। पंचमी इस सफलता पर बड़ा प्रसन्न हुआ। इसने (देवलदी) को बड़े आदर से उलुग़ ख़ाँ की सेवा में भेज दिया। शाही आदेशानुसार वह एक बहुत बड़ी सेना के साथ देहली भेज दी गई। (८७)

जब देवलरानी शाही महल में निवास करने लगी तो एक दिन एकान्त में सुल्तान ने खिज्र. ख़ाँ को बुलवाया और मलिकये जहाँ से कहा कि वह उसके तथा दिवल रानी के विवाह के सम्बन्ध में उससे कहे। (६२) खिज्र. खाँ यह समाचार सुनकर लज्जावश वहाँ से चला गया किन्तु वह दिवल रानी से अत्यन्त प्रेम करता था। उस समय खिज्र. ख़ाँ की अवस्था १० वर्ष की तथा दिवल रानी की अवस्था ८ वर्ष की थी। ख़िज्र. खाँ की शक्ल दिवल रानी के भाई से मिलती थी अतः वह खिज्र. ख़ाँ से अत्यन्त प्रेम करने लगी किन्तु खान को यह ज्ञात था कि उसका विवाह उससे होने वाला है। (६३) वे दोनों साथ-साथ खेला करते थे। (६४)

जब राय की पुत्री ९ वर्ष की हुई और ख़िज्र. खाँ भी युवावस्था को प्राप्त हुआ तो सुल्तान ने मलिकये जहाँ से खिज्र. ख़ाँ के विवाह के विषय में परामर्श किया। दोनों ने यह निश्चय किया कि खिज्र. ख़ाँ के मामा अलपखाँ की पुत्री से उसका विवाह किया जाय। अलप खाँ को जब यह सूचना मिली तो उसने इसे बड़े हर्ष से स्वीकार कर लिया। जब महल की स्त्रियों को यह सूचना मिली तो उन्होंने मलिकये जहाँ से प्रार्थना की कि अलप ख़ाँ की पुत्री भी उसी की पुत्री है किन्तु खान, करण की पुत्री से प्रेम करता है। अतः यह उचित होगा कि दोनों को पृथक् कर दिया जाय। मलिकये जहाँ ने यह राय बहुत पसन्द की। उसने दोनों के निवास स्थान पृथक् कर दिये। अब वे केवल दूर ही से आठवें दसवें दिन एक दूसरे के दर्शन कर सकते थे। (६५-६७)

(इसके उपरान्त अमीर खुसरो ने ख़िज्र. खाँ तथा दिवल रानी की भेंट की एक बड़ी ही मनोरंजक कहानी लिखी है)

जब खिज्र. खाँ तथा दिवल रानी के प्रेम की कथा बड़ी प्रसिद्ध हो गई तो मलिकये जहाँ ने दिवल रानी को कूशकेलाल में भिजवा दिया। ख़िज्र. ख़ाँ को जब यह सूचना मिली तो वह उस समय अपने गुरु की सेवा में बैठा कुछ पढ़ रहा था। वह तुरन्त पढना-लिखना छोड़ कर भागा और दिवल रानी के सुखासन के निकट पहुँच कर उससे भेंट की और दोनों ने एक दूसरे को विदा किया। (१४३-१४७)

बादशाह के आदेशानुसार खिज्र. खां के विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। शाही महल के चारों ओर ऊँचे कुब्बे बनाये गये। उन्हें बहुमूल्य रेशमी पर्दों से सजाया गया। समस्त गलियों तथा बाज़ारों को सजाया गया। दीवारों पर नाना प्रकार के चित्र बनाये गये। ख़ेमे तथा शामियाने लगाये गये। (१५३) प्रत्येक स्थान पर फ़र्श बिछाये गये। किसी स्थान पर भूमि न दिखाई देती थी। ढोल तथा बाजे बजने लगे। तलवारें चलाने वाले तलवार के कर्त्तव्य दिखाने लगे। कुछ तलवारें चलाने वाले ऐसे थे जो बाल के बीच से दो टुकड़े कर सकते थे। (१५४) नट अपने तमाशे दिखाते थे। कोई बाज़ीगर गेंद को आसमान की ओर उछालता था, कोई तलवार को पानी की तरह निगल जाता था कोई नाक से चाकू चढ़ा लेता था। लोग विभिन्न प्रकार के स्वाँग करते थे। कभी कोई परी बन जाता था तो कभी कोई देव। इसी प्रकार लोग नाना प्रकार के स्वाँग रचते थे। गायकों की मधुर तान पर लोगों के प्राण क्षीण हो जाते थे। चंग तथा दफ़ बजते थे। चंग का सुर ऊँचा तथा बर्बत का सुर नीचा होता था। (१५६) कद्दू के जो तम्बूर बनाये गये थे उन कद्दूओं ने लोगों को मस्त कर दिया था। नाना प्रकार के हिन्दुस्तानी बाजे बजते थे। कद्दू तो पीठ पर होता था किन्तु लोगों की नसें रक्त से खाली हो जाती थीं। एक दूसरा ताँबे का वाजा जो कि ताल कहलाता था, वह सुन्दरियों की अँगुलियों में रहता था। हिन्दी तुम्बक भी बजता था। (१५७) हिन्दुस्तानी सुन्दरियों ने अपने होठों से (स्वर से) पागलपन के द्वार खोल दिये थे। वे देवगीरी

तथा अन्य रेशमी वस्त्र धारण किये थीं। वे हाथों में ताल के लिये प्याला लिये थीं। वे मदिरा मे नहीं वरन् अपने संगीत से लोगों को मस्त कर देती थीं। संगीत के मधुर स्वर पर नर्त्तकियाँ नृत्य करती थीं (१५८) भिन्न भिन्न स्थानों से सोना लुटाया जाता था।

३ वर्ष तक विवाह का प्रबन्ध होता रहा। अत्यधिक धन-सम्पत्ति व्यय की गई। ज्योतिषियों ने विवाह के लिये एक शुभ साइत निश्चित की। बुद्धवार २३ रमजान ७११ हिजरी (२ फ़रवरी १३१२) विवाह के लिये निश्चित हुई। शाहज़ादा एक कुमैत घोड़े पर सवार हुआ। (१६१) बिस्मिल्लाह की आवाज चाँद तक पहुँची। सितारों ने अलहम्दोलिल्लाह के नारे लगाये। शनिश्चर ने हिन्दुओं के लिये हदकल्लाह कहा। समस्त अमीर सवारी के साथ-साथ पैदल थे। हाथियों पर सुनहरे हौदे कसे थे। तलवार तथा खंज्जर द्वारा बुरी निगाहों के द्वार बन्द हो गये थे। मार्ग में मोती सोना तथा जवाहरात लुटाये जाते थे। इस प्रकार यह जलूस अलप खाँ के घर पहुँचा। शाहज़ादा गद्दी पर विराजमान हुआ। अमीर अपनी-अपनी श्रेणी के अनुसार दाहिनी ओर बाईं ओर बैठे। सद्रेजहाँ ने खुत्बा पढ़ा। जबाहरात और मोती लुटाये गये। लोगों को बहुमूल्य वस्तुएँ प्रदान की गई। निकाह के उपरान्त जिस प्रकार लोग आये थे उसी प्रकार वापस हुये किन्तु शाहज़ादा अपनी प्रिया की याद में दुःखी था। (१६२-१६३) सोमवार पहली जिलहिज्जा ७११ हिजरी (२६ जून १३७० ई०) की रात्रि में एक पहर रात्रि व्यतीत हो जाने पर शाहज़ादा महल में गया, बहुमूल्य फ़र्श पर कुर्सी रखी गई। शाहज़ादा उस कुर्सी पर बादशाही वैभव से विराजमान हुआ। मोती लुटाये गये। इस प्रकार जब मोती की वर्षा हो रही थी तो बादल चन्द्रमा के सामने से हट गया। मश्शाता ने सामने से पर्दा हटाया। एक ऐसा चन्द्रमा दृष्टिगोचर हुआ, जिससे अनेक सुन्दरियों के हृदय टुकड़े-टुकड़े हो जाते। इस प्रकार जलवे की रस्म हुई (१६७-१६८) किन्तु ख़िज्र. खाँ बड़ा ही व्याकुल था।

विवाह के उपरान्त भी खिज्र. खाँ तथा देवल रानी का प्रेम कम न हुआ। दोनो एक दूसरे के विरह में व्याकुल रहने लगे। जब खिज्र. खाँ पूर्णतया निराश हो गया तो उसने अपने एक विश्वास-पात्र को अपनी माता की सेवा में भेजा। उसने बड़े करुणारम में मलिकये जहाँ से निवेदन किया कि भतीजी के लिये पुत्र की हत्या कराना उचित नहीं। (२१८) यदि इस समय भी इस विषय पर ध्यान न दिया गया तो फिर हाथ मलना पड़ेगा। पुरुष चार विवाह कर सकते हैं, विशेष कर बादशाहों के लिये बहुत बड़े परिवार तथा अनेक रानियों की आवश्यकता होती है। जब मलिकये जहाँ को यह दुःख भरा हाल ज्ञात हुआ तो वह बड़ी प्रभावित हुई। क़सरेलाल से देवल रानी को उपस्थित किया गया। (२१६ दोनों का विवाह बिना किसी समारोह के गुप्त रूप से कर दिया गया। २२०) शाहज़ादे के जीवन में इतनी बड़ी सफलता के उपरान्त बड़ा परिवर्तन हो गया। वह शेख निज़ामुद्दीन औलिया का मुरीद हो गया। (२२७) सर्वदा नमाज पढ़ने तथा भगवान् की याद में लीन रहने लगा। समस्त बुरी बातों से तोबा कर ली (त्यागदी)। (२२८-२२९)

खिज्र. खाँ के भाग्य का इतनी उन्नति प्राप्त कर लेने के उपरान्त पतन प्रारम्भ हो गया। (२३३) सुल्तान बीमार पड़ा। खिज्र. खाँ ने निश्चय किया कि यदि सुल्तान स्वस्थ हो जाय तो वह पैदल हतनापुर ज़ियारत को जायगा। जब सुल्तान कुछ स्वस्थ होने लगा तो शाहज़ादा अपनी मिन्नत पूरी करने के लिये हतनापुर पैदल रवाना हुआ किन्तु वह अपने पीर (गुरु) की सेवा में न तो हतनापुर जाने के पूर्व और न वहाँ से लौटने के उपरान्त ही उपस्थित हुआ। (२३६) मलिक नायब ने ख़िज्र. खाँ तथा अलप खाँ के विषय में सुल्तान से अनेक झूठी-सच्ची बातें कहीं और अलप खाँ की हत्या करादी। इसके उपरान्त वह खिज्र. खाँ के विनाश

के षड्यन्त्र रचने लगा। (२३७) उसने खिज्र खाँ के नाम एक आदेश भिजवाया जिसके द्वारा उससे चत्र ले लिया गया और उसे आदेश दिया गया कि वह अमरोहे में निवास करे और बिना आदेश के देहली न आये। (२३८-२३९) खिज्र खाँ को यह आदेश मेरठ से आगे बढ़ने पर प्राप्त हुआ। उसने हुसामुद्दीन को, जो यह आदेश लाया था, हाथी दूरबाश तथा चत्र जो कि बादशाही के चिह्न थे, दे दिये और स्वयं मेरठ से अमरोहे की ओर चल दिया। (२४२) वह अमरोहे पहुंच कर अत्यन्त दुःख तथा पीड़ा के साथ समय व्यतीत करने लगा। उसने सोचा कि मैंने कोई अपराध नहीं किया है, अतः मुझे सुल्तान के क्रोध से कोई भय न होना चाहिये। (२४३) यह सोचकर वह शीघ्रातिशीघ्र देहली पहुँच गया। सुल्तान उससे मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसकी ओर विशेष कृपा दृष्टि दिखाई। (२४४) सुल्तान के रोग-ग्रस्त हो जाने के उपरान्त, मलिक काफ़ूर अधिकार-सम्पन्न होता जा रहा था। उसने खिज्र खाँ के विषय में सुल्तान से यह आदेश दिलवा दिया कि उसे ग्वालियर में क़ैद कर लिया जाय। (२५०) इस प्रकार खिज्र खाँ को ग्वालियर के क़िले में क़ैद कर दिया गया। (२५२)

सुल्तान भी खिज्रखाँ के वियोग में अत्यन्त दुःखी रहने लगा। इसी दुःख में ७ शव्वाल ७१५ हिजरी (४ जनवरी १३१६ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई। (२५९) सुल्तान की मृत्यु के उपरान्त मलिक नायब ने सुल्तान के मृतक शरीर के दफ़न (समाधिस्थ) होने के पूर्व ही सुम्बुल को यह आदेश देकर भेजा कि वह खिज़् खाँ की आँखों में सलाई फेर दे। जब खिज़् खाँ को यह ज्ञात हुआ तो वह ख़ुशी-ख़ुशी भाग्य के सामने सिर झुकाने के लिए तैयार हो गया। वह समझ गया कि सुल्तान की मृत्यु हो चुकी है। (२६२) सुम्बुल के सहायकों ने उसके आदेशानुसार शाहज़ादे को पटक दिया और उसकी उन आँखों को कष्ट पहुँचाने लगे जिन्हें सुरमे से भी कष्ट पहुँचता था। इस प्रकार उसकी आँखों में सलाई फेर दी गई। (२६३) सुम्बुल इस कार्य के उपरान्त काफ़ूर के पास देहली पहुंच गया। काफ़ूर ने उसे विशेष रूप से सम्मानित किया और अत्यधिक धन सम्पत्ति प्रदान की। (२६४)

इस कारण कि उसने अपने आश्रय दाता पर अत्याचार किया था, आकाश ने उससे इसका बदला ले लिया और उसकी शीघ्र हत्या हो गई। खिज्र खाँ के एक हितैषी ने यह सूचना उसको पहुँचाई। शाहज़ादा इस सूचना से अधिक प्रसन्न न हुआ।

सुल्तान मुबारक शाह ने अपने राज्य का हित इसमें देखा कि अपने राज्य को विरोधियों से रिक्त करदे। उसने खिज्र खाँ के पास गुप्त रूप से यह सन्देशा भेजा कि यद्यपि वह सुल्तान के समय से बन्दीगृह में है किन्तु मेरा विचार है कि मैं उसे मुक्त करदूँ और किसी इक़लीम का राज्य प्रदान करदूँ, किन्तु मुझे ज्ञात हुआ है कि वह दिवल रानी के चरणों पर, जो एक दासी है, अपना सिर रखता है। यह उचित नहीं। तू उसे मेरे दरबार में भेज दे। (२७४) खिज्र खाँ यह सुनकर बड़ा क्रोधित हुआ। उसने उत्तर दिया कि बादशाह को राज्य प्राप्त हो चुका है किन्तु वह दिवल रानी को मेरे पास ही रहने दे। यद्यपि मेरा राज्य मेरी ख़ानी के समय ही से मुझसे पृथक् हो गया है, दिवलरानी ही मेरी धन सम्पत्ति है। यदि यह सम्पत्ति मुझ से छिन जायगी तो मैं पूर्णतया दरिद्र हो जाउँगा, उसे मेरी हत्या के उपरान्त ही प्राप्त किया जा सकता है। बादशाह यह सुनकर बड़ा रुष्ट हुआ और उसने इस उत्तर को उनकी हत्या का बहाना बनाकर सर सिलाहदार को बुलाकर यह आदेश दिया कि वह पुनः शीघ्रातिशीघ्र ग्वालियर पहुँचकर उन शेरों के शीश पृथक् करदें। (२७५) शादी खाँ ने एक रात और एक दिन में ग्वालियर पहुँच कर क़िले के कोतवाल को बादशाह का आदेश पहुँचा दिया। किसी को भी उन निःसहायों की हत्या करने का साहस न होता था। (२७६-२७७) एक तुच्छ हिन्दू

ने एक तलवार से खिज़्र ख़ाँ की हत्या करदी। (२७८-२७९) खिज़्र ख़ाँ की हत्या के उपरान्त उसके भाई शादी ख़ाँ शिहाबुद्दीन की भी हत्या करदी गई। इस हत्या काण्ड से स्त्रियों ने रोना चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया। (२८५) इसके उपरान्त लोगों को ग्वालियर के क़िले के विजय-मन्दिर नामक बुर्ज में दफ़न कर दिया गया। (२८७)

नुह सिपेह्र

[इस कविता की रचना अमीर खुसरों ने सुल्तान क़ुतुबुद्दीन मुबारक शाह के आदेशानुसार ७१८ हिजरी (१३१८-१९ ई०) में की। यह नौ सिपेहर (आकाश अर्थात अध्याय) में विभाजित है। यह इस्लामिक रिसर्च एसोसियेशन द्वारा १९५० ई० में प्रकाशित हो चुकी है। इसका संस्करण डाक्टर मुहम्मद वहीद मिर्जा (लखनऊ विश्व विद्यालय) ने तैयार किया है। हिन्दी अनुवाद उसी पुस्तक से किया गया है]

पहला सिपेहर

क़ुतुबे दुनिया वद्दीन खलीफ़ा मुबारक रविवार २४ मुहर्रम ७१६ हिजरी (१८ अप्रैल १३१६ ई०) को राज सिंहासन पर विराजमान हुआ (५१) प्रारम्भ ही मे उस की यह महत्वाकांक्षा थी कि वह संसार के भिन्न भिन्न भागों पर विजय प्राप्त करे। सुल्तान ने राजधानी से निकल कर पहला पड़ाव तिलपट में किया। वहाँ से वह देवगीर की ओर रवाना हुआ। (६१) सुल्तान देवगीर पहुंचा तो सभी राय भयभीत हो गये किन्तु राय रामदेव का नायब तथा वजीर राघव उसके विरोध पर कटिबद्ध हो गया (६४) उसने १० हजार हिन्दू सवारों की सेना एकत्रित की। सुल्तान ने अमीर शिकार क़ुतुलुग को उससे युद्ध करने के लिये भेजा। (६७) हिन्दुओं की सेना उसका सामना न कर सकी। कुछ मारे गये, कुछ बन्दी बना लिये गये और कुछ भाग गये। राव भी मारा गया। खान खुसरों विजय प्राप्त करके लूट की धन-सम्पत्ति लेकर सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ। खलीफ़ा ने उसका बड़ा आदर सम्मान किया। (७२)

दूसरा सिपेहर

बादशाहों के लिये धर्म की नीव दृढ़ करना तथा धर्मार्थ भवनों का निर्माण करना परमावश्यक है। (७६) सुल्तान ने राज सिंहासन पर विराजमान होते ही भवनों का निर्माण प्रारम्भ कर दिया। सर्व प्रथम उसने नया क़िला पूरा कराना प्रारम्भ किया जिसका निर्माण सुल्तान अलाउद्दीन के समय से प्रारम्भ हो गया था। (७७) इसके साथ साथ उसने देहली में जामे मस्जिद भी बनवानी प्रारम्भ की। (७८) इसके उपरान्त जसा कि पहले उल्लेख हो चुका है सुल्तान दिग्विजय के लिये निकल खड़ा हुआ। देवगीर की विजय के उपरान्त सुल्तान ने खुसरो को आरंगल (वारंगल) पर आक्रमण करने के लिये भेजा। (८०-८१) खुसरों खाँ अपनी सेना लेकर तिलंग के निकट पहुँच गया। तिलंग के राय के पास ४० हजार सवार तथा १०० से अधिक हाथी थे। उसका एक क़िला मिट्टी का और दूसरा पत्थर का था। (८७) हिन्दू युद्ध की तैयारी करने लगे। (८८) खुसरो खाँ की सेना ने आरंगल पहुँचकर शिविर लगा दिये, यज़की सवार (अग्रगामी सेना) आगे रवाना हुये। उधर से राय के यज़की भी युद्ध के लिये चल चुके थे। दोनों ओर के यज़कियों की मुठभेड़ हो गई। (९१) खुसरो खाँ यह सुनकर बिना ढोल तथा झण्डे के ३ हज़ार सेना लेकर युद्ध का दृश्य देखने के लिये चल खड़ा हुआ। (९२) रणक्षेत्र के निकट पहुँचकर उसने अपने सवारों को युद्ध करने का आदेश दे दिया। ३ हज़ार सवारों ने १० सैनिकों को पराजित कर दिया। (९३-९४) इस्लामी सेना को अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई। हिन्दू अपनी सेना लेकर क़िले में चले गये। खुसरो खाँ ने क़िले की ओर प्रस्थान करने का आदेश दे दिया। (९८) क़िले तक पहुंचने में मुसलमानों को पर्याप्त युद्ध करना पड़ा। क़िले पर अधिकार जमाने के लिये मुसलमानों ने पाशेब तैयार कराये। (९८-१११) क़िले पर विजय प्राप्त करने

की अन्य सामग्रियाँ भी एकत्रित की गईं। १५० गज लम्बा पाशेब तैयार हुआ। राय ने यह देख कर अपनी अधीनता स्वीकृति अर्पण करने का वचन देकर सन्धि की वार्ता प्रारम्भ कर दी। उसने अत्यधिक धन-सम्पत्ति तथा हाथी आदि प्रदान किये। राय ने अपने पुत्र को भी सुल्तान की सेवा में भेजा। (१११-१२७)

लुद्दर महादेव ने भी आरंगल से अधीनता स्वीकार करने के लिए एक पत्र भेजा। उसने १०० हाथी, हजार घोड़े और ६० लाख सोने के अच्छू प्रत्येक वर्ष सुल्तान की सेवा में भेजने का वचन दिया। खुसरो खाँ ने उसका राज्य उसे वापस कर दिया और ६० लाख सोने के अच्छू के स्थान पर ४८ लाख अच्छू निश्चित कर दिये। इस प्रकार विजय प्राप्त करके खुसरो खाँ जमादीउल आखिर मे रवाना हुआ और सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ और सेना भी देहली की ओर चल पड़ी और तिलपट पहुँच गई। वहाँ से खलीफ़ा राजधानी पहुँचा। (१२८-१४०) देहली पहुँच कर सुल्तान ने मस्जिद तथा क़िले के निर्माण के कार्य पूर्ण कराना प्रारम्भ कर दिये। मस्जिद के सहन में एक ऐसा मीनार बनवाया जो आइने के समान चमकदार था। (१४१, १४२)

इसके उपरान्त देहली की प्रशंसा करते हुए अमीर खुसरो ने इस प्रकार लिखा है। देहली के समान कोई नगर नहीं। खिता, खुरासान त्रिमिज़, तबरेज, बुखारा, ख्वारज्म कोई भी देहली का मुकाबला नहीं कर सकते। (१४३-१४७)

तीसरा सिपेहर

मैंने हिन्दुस्तान की प्रशंसा दो कारणों से की है। एक इस कारण से कि हिन्दुस्तान मेरी जन्म भूमि तथा हमारा देश है। देश प्रेम बहुत बड़ा धर्म है। दूसरे यहाँ क़ुतुबुद्दीन मुबारकशाह राजसिंहासन पर विराजमान है। (१५०) हिन्दुस्तान स्वर्ग के समान है। यहाँ की जलवायु खुरासान से कहीं अच्छी है। यहाँ सर्दी की अधिकता से किसी को कोई हानि नहीं पहुँच सकती। यदि खुरासान वाले यहाँ की ग्रीष्म-ऋतु की निन्दा करें तो इसका उत्तर मैं यह दूँगा कि गर्मी से मनुष्य को थोड़ा बहुत कष्ट ही पहुँचता है किन्तु ठंडक के कारण लोगों की मृत्यु हो जाती है। लोग एक कम्बल अथवा एक चादर पर जीवन निर्वाह कर लेते हैं। रात्रि के अन्त पर नदी के किनारे ब्राह्मण सुगमता पूर्वक डुबकी लगा सकते हैं। लोग किसी वृक्ष के नीचे अथवा छोटी सी कोठरी में निवास कर सकते है। यहाँ साल भर हरियाली तथा फूलों के कारण बहार रहती है। (१५८-१५६) यहाँ के अमरूद तथा अंगूर की उपमा नही दी जा सकती। आम, केला, इलायची, काफ़ूर, लौंग यहाँ अधिकता से पाये जाते हैं। हिन्दुस्तान में बहुत से ऐसे मेवे मिलते हैं जो किसी अन्य स्थान पर नहीं पाये जाते। पान के समान संसार में कोई अन्य वस्तु नहीं। (१६०-१६१)

फ़िक़ह के अतिरिक्त हिन्दुस्तान में सभी प्रकार के ज्ञान तथा दर्शन शास्त्र पाये जाते हैं। यहाँ का ब्राह्मण विद्वत्ता में अरस्तू के समान होता है। तर्क शास्त्र, ज्योतिष, गणित तथा पदार्थ विज्ञान मे हिन्दुस्तान के विद्वान् बहुत बढ़े हुये हैं। यहाँ बहुत बड़े बड़े विद्वान् ब्राह्मण पाये जाते हैं किन्तु अभी तक किसी ने उनसे पूर्णतया लाभ नही उठाया अत: उनके विषय में अधिक जानकारी नहीं हो सकी है। मैंने उन लोगों से कुछ शिक्षा ग्रहण की है, अत: मै उन लोगों का महत्व समझता हूँ। आत्म-विषयक सम्बन्धी-ज्ञान मे हिन्दू मार्गभ्रष्ट हो गये हैं किंतु मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य लोग भी उन्हीं के समान हैं। (१६२-१६३) यद्यपि वे लोग हमारे धर्म का पालन नहीं करते किन्तु उनके धर्म की बहुत सी बातें हमारे धर्म से मिलती जुलती है। वे भगवान् को एक मानते है और उस पर विश्वास रखते

हैं। उनका विश्वास है कि भगवान् शून्य से सभी वस्तुओं को जन्म दे सकता है। वह भगवान् को प्रत्येक कलाकार, मूर्ख तथा जीव जन्तु का आश्रयदाता मानते हैं। उनका विचार है कि भगवान् ही द्वारा समस्त अच्छे तथा बुरे कार्य सम्पन्न होते हैं। उसे प्रत्येक चीज़ के विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त है। ब्राह्मण तथा हिन्दू इस प्रकार नास्तिकों, ईसाइयों, अग्नि पूजा करने वालों तथा अनात्मवादियों आदि की अपेक्षा बहुत ऊँचे हैं। पत्थर, सूर्य, पशु तथा वृक्षों की वे पूजा अवश्य ही करते हैं किन्तु उनका विश्वास है कि यह सब वस्तुयें भगवान् की पैदा की हुई हैं। वे उन्हें केवल देवताओं का रूप मानते हैं। वे अपने आपको उन वस्तुओं का दास नहीं समझते। इस प्रकार की पूजा के विषय में उनका विश्वास है कि यह उन्हें अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त हुई हैं, (१६४-१६५) जिसे त्यागने में वे असमर्थ हैं।

मैं हिन्दुस्तान की विशेषता में इसके अतिरिक्त १० अन्य प्रमाण पेश करता हूँ। प्रथम यह कि इस देश के प्रत्येक स्थान पर अत्यधिक ज्ञान पाया जाता है। दूसरे स्थान के लोगों को हिन्दुस्तान के ज्ञान तथा कला का पता भी नहीं। द्वितीय यह कि हिन्दुस्तान वाले सभी भाषाये बड़ी कुशलता से बोल सकते हैं किन्तु संसार के अन्य भाषा वाले हिन्दुस्तान की भाषा नहीं बोल सकते। ख़िता के निवासी मुग़ल, तुर्क तथा अरब हिन्दी भाषा मे वार्ता नहीं कर सकते। हम लोग बड़ी कुशलता से इनकी भाषा बोल सकते हैं। इससे हमारी बुद्धि तथा अन्य देश वालों की ज्ञान-शून्यता का पता चलता है। तीसरा प्रमाण ऐसा है जिसे बुद्धि को स्वीकार करना ही पड़ेगा। वह इस प्रकार है कि प्रत्येक ओर से कलाकार विद्या तथा कला की खोज में हिन्दुस्तान आते रहते है किन्तु हिन्दुस्तान से कोई ब्राह्मण किसी स्थान पर विद्याध्ययन के लिये कभी नहीं गया। यह बात सभी को ज्ञात है कि अबू माशर जो कि ज्योतिष विद्या में बड़ा ही दक्ष था, भारतवर्ष में १० वर्ष तक रहा और प्राचीन नगर बनारस में ज्योतिप का अध्ययन करता रहा। (१६६-१६७) उसने जो कुछ भी लिखा है वह हिन्दुओं से सीख कर लिखा है। चौथा प्रमाण यह है कि हिन्दसे का ज्ञान संसारमें हिन्दुस्तानियों के अतिरिक्त किसी को न था। शून्य का ज्ञान सर्वप्रथम हिन्दुओं ही को प्राप्त हुआ। गणित का कोई भाग भी शून्य के ज्ञान के बिना पूर्णतया नहीं प्राप्त हो सकता। हिन्दसा शब्द हिन्द तथा आसा से मिलकर बना है। आसा ब्राह्मण ने इस ज्ञान का आविष्कार किया। यूनानियों ने भी यह ज्ञान इन्हीं से प्राप्त किया। समस्त दार्शनिक इस प्रकार इस ब्राह्मण के शिष्य हैं किन्तु वह किसी का चेला नहीं। पाँचवाँ प्रमाण यह है कि बुद्धिमत्ता की पुस्तक कलीला व दिमना की रचना प्राचीन भारत में हुई। इसी से संसार की अन्य भाषाओं फारसी, तुर्की, ताजीक तथा दरी में अनुवाद हुये। समस्त दार्शनिक इसी ग्रन्थ द्वारा शिक्षा प्राप्त करते हैं। छठा प्रमाण यह है कि शतरंज के खेल का आविष्कार जिससे मनुष्य अपने कष्टों को भूल जाता है, भारतवर्ष में ही हुआ। (१६८-१६९) शतरंज का खेल भी हिन्दुस्तान के निवासियों से बढ़कर कोई भी नहीं खेल सकता। सातवाँ प्रमाण यह है कि हिन्दसा, दिमना तथा शतरंज संसार वालों ने हिन्दुस्तान वालों ही से सीखा। आठवाँ प्रमाण यह है कि भारतवर्ष के संगीत की समानता संसार के किसी भाग में नहीं हो सकती। यहाँ का संगीत अग्नि के समान है जो हृदय तथा प्राण में अग्नि भड़का देता है। संसार के भिन्न-भिन्न भागों से लोगों ने आकर यहाँ संगीत की शिक्षा ग्रहण करने का प्रयत्न किया किन्तु वर्षों के प्रयास पर भी उन्हें यहाँ के किसी ताल स्वर का ज्ञान न हो सका। नवाँ प्रमाण यह है कि यहाँ का संगीत केवल मनुष्यों ही को नहीं वरन् पशुओं को भी उत्तजित कर देता है। मृग, संगीत से कृत्रिम निद्रा में ग्रस्त हो जाते हैं (१७०-१७१) और बिना धनुष-बाण के शिकार हो जाते हैं। यदि कोई यह कहे कि अरब में ऊंट भी संगीत के सहारे से यात्रा करते हैं तो इसका उत्तर में यह दूंगा कि ऊँटों

को अपने मार्ग का ज्ञान होता है किन्तु मृ को अपनी मृत्यु के समय तक किसी बात का ज्ञान नहीं होता। दसवाँ प्रमाण यह है कि कविता द्वारा इस प्रकार जादू करने वाला खुसरो हिन्दुस्तान का निवासी है। उसके समान कोई भी कवि नहीं और वह कुतुबुद्दीन मुबारक शाह की प्रशंसा करता रहता है।

भारत वर्ष की भाषा का बड़प्पन

मुझे भिन्न-भिन्न भाषाओं का ज्ञान है। मैं उन्हें समझ सकता हूँ और उनके द्वारा वार्त्ता कर सकता हूँ। अरबी भाषा का व्याकरण बड़ा ही उत्कृष्ट है, क़ुरान भी अरबी ही भाषा में है। इस प्रकार इसे विशेष महत्व प्राप्त है किन्तु यह बड़ी कठिन भाषा है। यद्यपि इसका व्याकरण बड़ा ही सुनियमित है किन्तु बहुत थोड़े ही लोग इसमें कुशलता पा सकते हैं। तुर्की भाषा में भी राजकीय कर्मचारियों के लिये एक उत्तम व्याकरण वर्तमान है। पदाधिकारी इस भाषा का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करते हैं किन्तु विद्याप्रेम के लिये कोई भी इस भाषा का ज्ञान प्राप्त नहीं करता। फ़ारसी भाषा बड़ी मीठी है किन्तु इसका कोई व्याकरण नही। (१७२-१७३) मैं स्वयं एक व्याकरण की रचना करना चाहता था किन्तु सभी लोग फ़ारसी समझते हैं, अतः व्याकरण की रचना से कोई लाभ नहीं। अरबी, फ़ारसी तथा तुर्की महत्व-पूर्ण भाषायें हैं। अरबी को धार्मिक महत्व प्राप्त है, फ़ारसी में शीराज़ की मिठास है, तुर्की भाषा के क़ानिकली, उईग़ूल ईर्ती गज़, क़िपचक तथा जमाक से प्रारम्भ हुई। इनके अतिरिक्त भी अन्य भाषायें हैं किन्तु उनको कोई महत्व प्राप्त नही। (१७४-१७७)

अन्य भाषाओं के समान हिन्दुस्तान में भी प्राचीन काल से हिन्दवी भाषा बोली जाती थी, किन्तु गौरियों तथा तुर्कों के आगमन के उपरान्त लोगों ने फ़ारसी भाषा का भी ज्ञान प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया। हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न भाषायें बोली जाती हैं। सिन्धी, लाहौरी, कश्मीरी, कुबरी, धीर समुद्री, तिलंगी, गूजरी (१७८-१७९) माबरी, गोरी, बंगाली तथा अवधी; भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भागों में बोली जाती है। देहली के आस-पास हिन्दुवी भाषा बोली जाती है जोकि प्राचीन काल से प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त एक अन्य भाषा है जिसका प्रयोग केवल ब्राह्मण करते हैं। इसका सर्व-साधारण को कोई ज्ञान नही। इसका नाम संस्कृत है। समस्त ब्राह्मणों को भी इसका पूर्ण ज्ञान नही है। अरबी के समान इस भाषा का भी कठिन व्याकरण है। चार पवित्र ग्रन्थ इसी भाषा मे लिखे गये हैं। वे चार बेद कहलाते हैं। इनमें देवताओं की कहानियाँ लिखी हुई हैं। लोग अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने के लिये साहित्यिक ग्रन्थ तथा अन्य पुस्तकें संस्कृत ही में लिखते हैं। यह अरबी से कम तथा फ़ारसी से बढ़कर है।

हिन्दुस्तान के पशु तथा पक्षी

इस देश में बहुत से ऐसे पक्षी हैं जो मनुष्यों के समान वार्त्ता कर सकते हैं। (१८०-१८१) तोता जो कुछ किसी से सुन लेता है वही बोलने लगता है। हिन्दुस्तानी मैना के समान ईरान तथा अरब में कोई चिड़िया नहीं। उसकी बोली तोते से भी बढकर होती है। कुछ पक्षी ऐसे हैं जिनकी बोलियों से भविष्य के विषय मे बहुत कुछ कहा जा सकता है। कौवे के विषय में अनेक ग्रन्थ लिखे जा चुके है। हिन्दुस्तान के मोर की भी प्रशंसा सम्भव नही। इसके अतिरिक्त यहाँ के अन्य पक्षियों मे भी अनेक विचित्र बातें पाई जाती हैं। (१८२-१८७)

यहाँ के घोड़े बड़े समारोह से चलते हैं। बन्दर दाम तथा दिरहम को भी पहचान लेते हैं। बकरे एक लकड़ी पर चारों पैर रखकर खडे हो जाते हैं (१८८ १८९), हाथी बड़ा समझ-दार जानवर है और वह मनुष्य के आदेशानुसार समस्त कार्य करता है और ज़मीन पर पड़ी हुई सुई तक उठा सकता है।

जादू

हिन्दुस्तान के निवासियों को जादू का भी विशेष ज्ञान है। (१६०-१६१) लोग जादू से मुर्दे को जीवित कर लेते हैं। साँप के काटे हुये मनुष्य को छः छः महीने के उपरान्त भी जिंदा कर लेते हैं। पूर्व की ओर बहने वाली नदियों पर बिजली के समान तेज़ी से उड़ सकते हैं। कामरू में बड़े बड़े जादूगर, मनुष्य को जानवर बना देते हैं। ब्राह्मणों को प्रत्येक प्रकार के जादू टोने का ज्ञान होता है। वे मरे हुये मनुष्य को बोलने के योग्य बना देते हैं। वे जीवित मनुष्य की आत्मा मृतक शरीर मे डालकर उसे नया जीवन प्रदान कर देते हैं। वे जिस प्रकार चाहें अपनी आयु को बढ़ा सकते हैं। योगी अपनी साँस को वश में कर लेते हैं और दो दो सौ और तीन तीन सौ वर्ष तक जीवित रहते हैं। उन्हें भविष्यवाणी करने में बड़ी कुशलता प्राप्त है। कुछ लोग अपनी आत्मा को दूसरों के शरीर मे प्रविष्ट कर देते हैं। काश्मीर के पर्वतीय प्रदेश में ऐसी अनेक गुफायें हैं जहाँ इस प्रकार के लोग निवास करते हैं। कुछ लोग भेड़िया, कुत्ता तथा बिल्ली बन जाते हैं। कुछ लोग अपने शरीर से रक्त निकाल कर उसे पुनः अपने शरीर में डाल देते हैं। (१६२-१६३) कुछ लोग चिड़ियों के समान वायु में उड़ जाते हैं। कुछ लोग पानी में नही डूब सकते।

देखने में यह सब जादू टोना तथा कहानी ज्ञात होते है; किन्तु इसमें से एक बात सभी को स्वीकार करनी होगी। वह इस प्रकार है कि हिन्दू अपनी भक्ति के कारण तलवार तथा अग्नि द्वारा मरने से बिलकुल नही डरते। हिन्दू स्त्री अपने पुरुष के लिये अपने आप को अग्नि मे जला देती है। पुरुष किसी मूर्त्ति अथवा अपने स्वामी के लिये अपने प्राण त्याग देता है। इन कार्यों की इस्लाम में स्वीकृति नही प्रदान की गई, किन्तु यह कार्य बड़े महत्वपूर्ण हैं। यदि शरा में इस बात की आज्ञा होती तो बहुत से लोग इस प्रकार बड़े गर्व से अपने प्राण त्याग देते।

हरपाल देव को दण्ड

जब राघव पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त खुसरो ख़ाँ लौटा तो यह सूचना मिली कि देवगीर का राना हरपाल देव पहाड़ों में छिप गया है (१६४-१६७) ख़ान ने तुरन्त उससे युद्ध करने के लिये सेना भेजी। उसने २-३ आक्रमण किये किन्तु हरपाल स्वयं घायल हुआ और बन्दी बना लिया गया। उसे सुल्तान के सम्मुख पेश किया गया। सुल्तान के आदेशानुसार उसकी हत्या करदी गई। (१६८-२०१) इसके उपरान्त सुल्तान हाथी तथा धन सम्पत्ति लेकर राजधानी की ओर रवाना होगया। (२०२-२११)

चौथा सिपेहर

बादशाह, मलिकों तथा लश्कर के लिये शिक्षा।

खुदा तथा रसूल के उपरान्त मनुष्य को उलिल-अभर की आज्ञा का पालन करना परमावश्यक होता है। ऐ बादशाह ! भगवान् ने तुझे कितना बड़ा सम्मान प्रदान किया है ! तुझे शरा के आदेशों का पालन करना चाहिये कारण कि यह बड़ा ही उत्कृष्ट कार्य है। राज्य को धर्म द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। जहाँदारी की पाँच शर्ते हैं (१) बादशाह की राय उचित होनी चाहिये और उसे प्रत्येक कार्य बड़े सोच विचार तथा दूसरों के परामर्श से करना चाहिये। (२) युद्ध तथा शान्ति का प्रयोग उचित स्थान पर होना चाहिये। (३) उसे किसी प्रकार असावधान न होना चाहिये। जो अपनी गुप्त बातों की भी रक्षा नही कर सकता वह दूसरों की गुप्त बातों की भी रक्षा नहीं कर सकता। (४) बादशाह को

सर्वदा न्याय से कार्य करना चाहिये। किसी छोटे बड़े पर उसके राज्य में कोई अत्याचार न होना चाहिये। (५) सर्वदा सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियों के दुःख-सुख का ध्यान रखना चाहिये।

(१) सोच विचार तथा परामर्श

बादशाह को योग्य तथा बुद्धिमान लोगों से परामर्श करते रहना चाहिये। (२२८-२२९) संसार का कार्य केवल एक व्यक्ति से नहीं चल सकता। महल में एक दीपक से उजाला नहीं हो सकता। यह उचित होगा कि बादशाह आदेश देते समय पूर्णरूप से सोच विचार करलें। कहा जाता है कि अफ़लातून सभी से परामर्श किया करता था यद्यपि वह स्वयं बड़ा ही विद्वान् था।

(२) युद्ध तथा शान्ति

भगवान् के छाये के लिये यह उचित है कि वह अपना स्थान न छोड़े। जो कार्य सेना से सम्पन्न न हो सकता हो उसे बादशाह को स्वयं न करना चाहिये (२३०-२३१) जब शत्रु रण-क्षेत्र में पहुंच जाय तो फिर युद्ध के अतिरिक्त किसी अन्य बात से सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। विलायत का प्रबन्ध सिपाही द्वारा हो सकता है। इकलीम पर अधिकार केवल बादशाह प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक कार्य यदि उचित अवसर पर किया जाय तो अच्छा है। (२३२-२३३)

(३) बुद्धिमत्ता तथा सावधानी

ऐ बादशाह! तुझे कभी असावधान न होना चाहिये। अपने शत्रुओं तथा मित्रों को पहचानते रहना चाहिये। जो तेरा हितैषी हो उसे किसी प्रकार की हानि न पहुँचा। बादशाह को सभी बातों की सूचना होनी चाहिये। (२३४-२३५) असावधानी से सुल्तान को बड़ी हानि होती है। सावधानी के अतिरिक्त बादशाह की रक्षा करने वाला कोई अन्य नहीं।

(४) प्रजा की रक्षा

सभी लोग बादशाह के मुहताज होते हैं। उसे दानी भी होना चाहिये। (२३६-२३७) वर्षा के न होने से सर्व साधारण का विनाश हो जाता है। सूर्य के प्रकाश के बिना संसार में अँधेरा रहता है। बादशाहों को केवल प्रजा की रक्षा में ही सम्मान प्राप्त हो सकता है। बादशाह को अपनी प्रजा के विषय में समय-समय पर जानकारी प्राप्त करते रहना चाहिये।

(५) न्याय

बादशाहों को न्याय के अतिरिक्त किसी और विषय पर ध्यान न देना चाहिये। (२४०-२४१) सुल्तान के पदाधिकारी राज्य के अच्छे-बुरे कार्य करते रहते हैं किन्तु यह उचित होगा कि लोग बादशाह के परामर्श से सभी कार्य करें। कयामत में प्रत्येक कार्य के विषय में पूछ-ताछ होगी। बादशाह को प्रत्येक स्थान पर ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये कि धनी तथा निर्धन लोग को सुख शान्ति प्राप्त होती रहे। यदि कोई बादशाह से न्याय चाहता हो तो हाजिब उसे रोकने न पायें। (२४२-२४३)

मलिकों को परामर्श

ऐ! मलिक तथा सरदार! बादशाह ने तुझे यह पद प्रदान किया है। तुझे बादशाह की हृदय से सेवा करनी चाहिये। तुझे किसी प्रकार का अभिमान न करना चाहिये। निःसहाय मनुष्यों की आह से डरते रहना चाहिये। (२५१-२५२) तुझे अपने अधीन कर्मचारियों के विषय में पूर्ण ज्ञान होना चाहिये। तुझे बादशाह से अधिक भगवान् से डरते रहना चाहिये।

तुझे बादशाह की सेवा केवल अपने लाभ ही के लिये नहीं करनी चाहिये वरन् एक दरवेश के समान करनी चाहिये। तुझे डोल के समान दूसरों की प्यास बुझाते रहना चाहिये। (२५२-२५४)

सैनिकों को परामर्श

सैनिकों को नाना प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं। उन्हें भगवान् के लिये अपनी वीरता का प्रदर्शन करते रहना चाहिये, केवल लूट मार तथा नाम के लिये नहीं। किसी बलहीन को कोई कष्ट न पहुंचाना चाहिये। यदि शहना दहक़ान (कृषक) को अत्याचार करके निकाल देता है तो उसका सरदार पैरों के नीचे कुचल देता है। यदि तू किसी के खलिहान का नाश कर देगा तो खलिहान भी तेरा शत्रु बन जायगा। जिस बाली को हिन्दू ने अपने हृदय से सींच कर तैयार किया, उसे तेरे घोड़े के पेट में न पहुँच जाना चाहिये। (२५६–२५७)

छठा सिपेहर

शाहज़ादा मुहम्मद का जन्म

बृहस्पतिवार २३ रबीउल अव्वल ७१८ हिजरी को सुल्तान के पुत्र शाहज़ादा मुहम्मद का जन्म हुआ। (३२४)।

शाहज़ादे के जन्म के उपलक्ष में समारोह का उल्लेख।

———

तुग़लक़ नामा

[लेखक—अमीर ख़ुसरो]

[अमीर खुसरो ने इस कविता की रचना ७२० हि० (१३२० ई०) के लगभग की। इसमें सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या, अलाई वंश के विनाश, ख़ुसरो ख़ाँ के राज्यकाल, तुग़लक़ के विद्रोह, अमीरों से पत्र-व्यवहार, देहली पर आक्रमण, दो युद्धों के उपरान्त विजय, ख़ुसरो ख़ाँ और उसके भाई के बन्दी बनाये जाने तथा उनकी हत्या का उल्लेख है। यह पुस्तक, मजलिस मख़तूतात फ़ारसिया हैदराबाद दकिन (दक्षिण) द्वारा १९३३ ई० में प्रकाशित हो चुकी है।]

ग़यासुद्दीन तुग़लक़ के दरबार में अनेक उच्चकोटि के कवि वर्त्तमान हैं। प्रत्येक ने शाहनामे लिखे हैं; मुझ को भी बादशाह ने आदेश दिया कि उस के नाम पर एक रचना तैयार करे। मेरे पास कोई ऐसा मोती न था जिसे मैं राजसिंहासन पर निछावर करता किन्तु जब उस शाह ग़ाज़ी का वृत्तांत लिखने का साहस किया तो उसके आशीर्वाद से रचना के मोतियों की आकाश से वर्षा होने लगी। इसके द्वारा मैंने यह मोतियों की लड़ी तैयार की। आशा है कि यह अन्नदाता को पसंद आ जाय कारण कि साधारण रचना भी बादशाह की पसंद से बहुमूल्य हो जाती (१३, १४)

मदिरा, प्रेम, युवावस्था, तथा राज्य ऐसी हवायें हैं जो यदि किसी के सिर में भर जाती है तो फिर वह असावधान हो जाता है किन्तु बादशाह को इश्क़ और मस्ती में असावधान हो जाना उचित नहीं, कारण कि उसका कर्त्तव्य केवल अपनी रक्षा अथवा अपना ही कल्याण नहीं, वह समस्त प्रजा की रक्षा का उत्तरदायी है। बादशाहों को अपने आदमियों के चुनाव में भी बड़ी सावधानी से कार्य करना चाहिये, विशेषकर इस कारण कि उनके सामने जो लोग आते हैं, उनमें से बहुत से मित्र के वेश में शत्रु होते हैं।

अन्त में यह बात सब पर स्पष्ट हो गई कि राज्य पर शीघ्र कोई दुर्घटना होने वाली है और सुल्तान क़ुतुबुद्दीन के जीवन की ख़ैर नहीं। हसन से बादशाह बुरी तरह प्रेम करने लगा। उसे बड़ा सम्मान प्रदान किया। उसके विषय में वह किसी कुत्सित विचार को अपने मस्तिष्क में ला भी न सकता था। वह सँपेरे के पाले हुये सर्प के समान बादशाह की जान के पीछे पड़ गया। कुछ लोगों ने संकेत ही संकेत में इसके विषय में निवेदन भी किया किन्तु मौत ने उसके कान बन्द कर दिये थे। वह मित्र तथा शत्रु में कोई भेद न समझता था। कामवासना ने उसे अपने वश में कर लिया था। (१७) हसन हिन्दू वंश से सम्बन्धित था। बादशाह ने उसे ख़ुसरो ख़ाँ बनाया। चत्र तथा पताका प्रदान किये। उसे अपना वज़ीर तथा नायब बनाया। दोनों एक प्राण और दो शरीर हो गये, किन्तु हसन का दिल साफ़ न था। वह दिखावटी आज्ञाकारिता के पीछे शत्रुता की तलवार तेज़ कर रहा था। गुप्तचरों ने अनेक बार उसे सूचना दी किन्तु बादशाह का भाग्य ठीक न था। (१८) इश्क़ तथा प्रेम पर किसी की बादशाही नहीं चलती। वह उसी प्रकार असावधान रहा। हसन ने विद्रोह के विचार से बहुत से ब्रादों जाति के हिन्दुओं को एकत्रित कर लिया। ब्रादों जाति हिन्दुओं में युद्ध करने का व्यवसाय करती हैं। ये लोग हिन्दू रायों के लिए अपने प्राणों पर खेल कर युद्ध करते हैं। हसन ने उन्हें धन सम्पत्ति प्रदान करके एकत्रित कर लिया। बादशाह से उसने समस्त द्वारों की कुञ्जियाँ प्राप्त कर ली और सब के सब बादशाह की हत्या पर कटिबद्ध हो गये। जिस संध्या को जमादी उस्सानी ७२० हि० (८ जुलाई १३२० ई०) का नया चाँद निकला और कुछ रात बीत चुकी तो मलिक लोग वापस चले गये। (१९)

उस रात्रि में खुसरो खाँ ने अपने साथियों को राजभवन में बुलवा लिया था किन्तु भीतर के भाग में जब वे कोठे की ओर जहाँ बादशाह तथा खुसरो खाँ थे, चले, तो मार्ग में क़ाजी मिला। उसे उन्होंने मार डाला। कुछ अन्य शाही आदमी भी इसी संघर्ष में मारे गये। बादशाह को भी पता चल गया कि उसके साथ विश्वासघात किया गया। खुसरो खाँ को जो उसके पास कोठे पर था उसने पटक दिया और उसकी छाती पर चढ बैठा किन्तु उसकी हत्या करने के लिए उसके पास कोई तीर अथवा तलवार न थी अतः वह खुसरो खाँ को छोड़ कर ज़ीने की ओर चला। खुसरो खाँ ने लपक कर उसके बाल पकड़ लिये। इतनी देर में उसके हिन्दू साथी भी आ गये। (२०) उनमे से एक व्यक्ति जहरिया ने एक ही वार में बादशाह का काम तमाम कर दिया और उसका सिर काट कर नीचे प्राँगण में फेंक दिया। तुर्कों में कोलाहल मच गया कि हिन्दुओं को विजय प्राप्त हो गई। सूफ़ी अपने कुछ बरादों साथियों को लेकर आगे बढ़ा ताकि यदि कोई क़ुतुबुद्दीन की ओर से ज़ोर करे तो उसकी हत्या करदी जाय। बरादों लोगों ने यह तै करना आरम्भ किया कि अब किसे सिंहासनारूढ़ किया जाय। खुसरो के हितैपियों ने इस अवसर पर किसी शाहज़ादे को सिंहासनारूढ़ करने में बड़ी आपत्ति प्रकट की और कहा कि, "जब तूने अपने स्वामी की हत्या करदी तो अब स्वयं बादशाह बन अन्यथा तुझे कोई जीवित न छोड़ेगा।" इस परामर्श मे खुसरो के मुसलमान सहायक भी सम्मिलित थे। अन्त में यही निश्चय हुआ और दूसरे दिन प्रातः खुसरो खाँ सिंहासनारूढ़ हुआ। (२१)

सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या के उपरान्त उसके पाँच भाई जीवित थे। एक फ़रीद खाँ था उसकी अवस्था १५ वर्ष की थी। वह क़ुरान का अध्ययन समाप्त कर चुका था और शस्त्र शिक्षा ग्रहण कर रहा था। दूसरा अबू बक्र खाँ था। (२३) उसकी आयु १४ वर्ष की थी। वह क़ुरान का अध्ययन कर रहा था। पद्य गद्य तथा सुलेख से उसे विशेष रुचि थी। उनसे छोटे अलीखाँ तथा बहादुर खाँ दोनों आठ आठ वर्ष के थे और पाँचवाँ भाई उस्मान केवल पाँच वर्ष का था। ऐसे कोमल सुकुमार अच्छे लक्षणों वाले शाहज़ादों के लिए उसने बध कर देने अथवा अन्धा करा देने का आदेश दे दिया। (२४) आदेश के साथ ही उसके असभ्य सैनिक शाही महलों में जहाँ हवा और फरिश्ते भी न जा सकते थे, घुस गये। अन्तःपुर में हा हाकार मच गया। परदे वाली स्त्रियाँ उद्विग्न होकर इधर उधर भागने लगीं। उनके पीछे-पीछे ये वहशी दौड़ते फिरते थे और शाहजादों का नाम ले ले कर पुकार रहे थे कि यदि वे बाहर आ जायँ तो उन पर कोई अत्याचार न किया जायगा और उन्हें सिंहासनारूढ़ किया जायगा। जब शाहज़ादों को यह विश्वास हो गया कि उनका बचना संभव नही तो उन्होंने आत्म समर्पण कर दिया। (२६) उनके पीछे-पीछे उनकी मातायें और अन्तःपुर की अन्य स्त्रियाँ तथा दासियाँ चिल्लाती हुई चली। वे इन बालकों को पृथक् न करना चाहती थीं। सर्व प्रथम उन अत्याचारियों ने उनमे से दो बड़े भाइयों को पृथक् किया। उस समय फ़राद खाँ बहुत रोया चिल्लाया किन्तु शाहज़ादा अबूबक्र ने उसे रोका कि इस प्रकार रोना चिल्लाना वीरता के प्रतिकूल है। यदि भाग्य में हमारी हत्या ही लिखी है तो हमें वीरों के समान प्राण त्याग देने चाहिये। इसके उपरान्त शाहज़ादों ने नमाज़ पढ़ी और जल्लादों के सामने अपनी गर्दनें झुका दीं। दो बड़े शाहज़ादों की हत्या करदी गई। शेप तीन बालकों की आँखों में सलाई फिरवा दी गई और उन्हें अन्धा बना दिया गया। (२५-२६)

खुसरो के सिंहासनारूढ़ हो जाने के पश्चात् सभी उसके आज्ञाकारी बन गये और किसी ने कोई विरोध न किया। इन अत्याचारों को सुनकर मलिक ग़ाज़ी का बुरा हाल हो गया। वह बदला लेने के लिये व्याकुल हो गया, (३७) किन्तु उसका पुत्र फ़ख़रुद्दीन जूना खाँ दरबार

में वर्त्तमान था। उसके प्राणों के भय से वह अपने बदला लेने के विचार किसी के सामने प्रकट न कर सकता था। मलिक फ़खरुद्दीन को भी इन घटनाओं पर हार्दिक शोक था। (३८) जब वह सहन न कर सका तो उसने अपने एक विश्वासपात्र अली यगदी को अपने पिता के पास भेजा और उसे समस्त घटनाओं की सूचना दी। जब वह मलिक तुगलक़ के पास पहुंचा तो उसने उत्तर में अपने पुत्र को कहला भेजा कि वह जितना शीघ्र संभव हो देहली से निकल कर उसके पास आ जाय। (४१-४२) फ़खरुद्दीन ने जब भागने का संकल्प कर लिया तो उसने भागने के लिये कुछ घोड़े चुने और उन पर सैर करने के लिये जाने लगा। उसने मलिक बहराम ऐबा के पुत्र को गुप्त रूप से मिला लिया। कुछ सेवक तथा कुछ विश्वासपात्र दास भी उसके सहायक बन गये और ये लोग भाग खड़े हुये। देहली की असंख्य सेना उनको न पकड़ सकी। (४३) जूना ने अपने पिता के पास पहुँच कर उसे खुसरो पर चढ़ाई करने के लिये तैयार किया। पिता ने पुत्र की सांत्वना के लिये कहा कि, "मैं केवल तेरे ही आने की प्रतीक्षा कर रहा था और अब मैं अपने स्वामी की हत्या का बदला लेने का पूरा प्रयत्न करूँगा।" (४४-४५)

मलिक फ़खरुद्दीन के चले जाने से ऐसा ज्ञात होने लगा कि किसी भवन के चार स्तंभों में से एक स्तंभ अथवा किसी सिंहासन के चार पायों में से एक पाया कम हो गया। खुसरो ने अपने मित्रों से परामर्श किया कि अब क्या किया जाय और अन्य अमीरों को किस प्रकार वश मे रक्खा जाय। उसके हितैषियों ने उसे राय दी कि सर्व प्रथम जितने शाहज़ादे जीवित हैं, उनकी हत्या करदी जाय ताकि उसके अतिरिक्त कोई राज्य का अधिकारी शेष न रहे। दूसरे, मलिकों को वश में रखने के लिये खूब जी खोलकर धन व्यय किया जाय। यदि वह बादशाह रहा तो यह धन पुनः प्राप्त हो जायगा अन्यथा यह स्पष्ट ही है कि वह उसके किस काम आ सकेगा। हसन को यह राय पसन्द आई और उसने शेष समस्त शाहजादों की हत्या करा दी। मलिक गाज़ी को जब यह सूचना मिली तो वह और भी क्रोधित हुआ और उसने संकल्प कर लिया कि यदि भगवान् ने चाहा तो वह शाहज़ादों का बदला अवश्य लेगा। (४६-४७)

खुसरो ने एक और परामर्श गोष्ठी आयोजित की। दो तीन मुसलमान अमीरों मे जो सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या के षड्यन्त्र में उसके सहायक थे, यूसुफ़ सूफी बड़ा तेज़ था। उसने कहा कि, "हमें मलिक ग़ाज़ी का कदापि भय न करना चाहिये। यदि वह विद्रोह करे तो अपने नये बादशाह के लिए विद्रोहियों से युद्ध करना चाहिए।" उसने एक पत्र भी ग़ाज़ी मलिक तुग़लक़ के पास दीपालपुर भेजा और यह सन्देश भेजा कि "हे सरदार, यद्यपि तू बड़ा वीर और अनुभवी है किन्तु सत्य के सामने सिर झुकाना तेरा कर्त्तव्य है अन्यथा तेरा अन्त भी अन्य विद्रोहियों के समान होगा।" गाजी मलिक, यूसुफ सूफी का यह सन्देश सुनकर बहुत बिगड़ा और उसको बुरा भला कहने लगा, यहाँ तक कि तलवार खींचकर सन्देश वाहक का ही सिर उडा दिया। देहली में जब यह समाचार पहुँचा तो सूफी खाँ तथा हसन के सहायक और भी व्याकुल हुए। वे समझ गये कि गाजी मलिक इस प्रकार की धमकियों से प्रभावित नही हो सकता। (४८-५४)

फ़खरुद्दीन जूना से सुल्तान क़ुतुबुद्दीन की हत्या के समाचार सुन सुन कर ग़ाज़ी मलिक तुगलक को और अधिक क्रोध आता था कि देश में कितने राजभक्त सेवक वर्त्तमान थे किन्तु किसी को भी अपने स्वामी की रक्षा का ध्यान नही हुआ। अब मैं संकल्प कर चुका हूँ कि यदि कोई भी मेरा साथ न देगा तो मैं अकेला ही इन काफ़िरों से युद्ध किये विना न रहूँगा और इनसे अवश्य बदला लूँगा। तत्पश्चात् दबीरे खास को बुलवाया। एक पत्र मुगलती मुल्तान के शासक के नाम, दूसरा मुहम्मद शाह सिविस्तान के शासक के नाम, तीसरा मलिक बहराम

ऐबा को चौथा यकलखो अमीर सामाना को और पाँचवाँ जालौर के मुक्ता, अमीर होशंग को लिखवाया। (५६-५७) मलिक बहराम ऐबा के पुत्र के साथ एक योग्य विश्वासपात्र अली हैदर को भी भेजा। बहराम ने पूरे उत्साह से ग़ाज़ी मलिक की सहायता करने का वचन दिया। (५९)

जब मुग़लती अमीर मुल्तान को वह पत्र मिला तो वह बड़ा रुष्ट हुआ और उसने कहा कि "देहली के राज्य का विरोध मुझको करना चाहिये था। तुगलक़ जो मुल्तान के अधीन द्योपालपुर का शासक है, उसे यह अधिकार किस प्रकार प्राप्त हो गया और वह देहली के बादशाह से उलझने को क्यों तैयार हो गया। मैं भी शाह शहीद का दास हूं और मेरे पास राज्य धन संपत्ति और ख़ज़ाना भी है, किन्तु मेरी सेना मेरा साथ नहीं दे सकती। जब मुगलती के विचारों का पता ग़ाज़ी मलिक को चला तो उसने मुल्तान के अन्य शासकों को गुप्त रूप से संकेत कर दिया कि वे अमीर मुल्तान पर आक्रमण करदें। इस विरोध का नेता बहराम सिराज था। मुग़लती के अधीन सरदारों ने उस पर आक्रमण किया। एक मोची के अतिरिक्त मुगलती का साथ किसी ने भी न दिया। वह जान बचा कर भागा किन्तु एक नहर में गिर पड़ा। यह नहर मलिके ग़ाजी ने रावी से झेलम तक उस समय बनवाई थी जब वह मुल्तान का मुक़्ता था। मुगलती नहर में डुबकियाँ खा ही रहा था कि बहराम सिराज का पुत्र पहुँच गया और उसका सिर उड़ा दिया। (६२-६४)

जब मुहम्मद शाह लुर सिविस्तान के शासक के पास ग़ाज़ी मलिक तुगलक़ का संदेश-वाहक पहुँचा, तो उस समय वहाँ के सरदारों ने मुहम्मद शाह से विद्रोह कर दिया था। यह अमीर क़िले को घेरे थे। ग़ाज़ी मलिक तुग़लक़ के पत्र की सूचना पाकर उसके विद्रोही सरदारों ने उससे संधि करली और उसने स्वयं बड़े उत्साह से तुगलक़ की सहायता करने का वचन दिया किन्तु प्रस्थान करने में इतना विलम्ब कर दिया कि युद्ध भी समाप्त हो गया। फिर भी तुग़लक़ ने उससे कोई पूछताछ न की और उसे अजमेर की अक़्ता की ओर चले जाने की आज्ञा दे दी (६४) होशंग ने भी पत्र पाकर कोई उत्साह न दिखाया। ग़ाज़ी मलिक ने उसे दो तीन बार बुलवाया किन्तु वह युद्ध के बाद पहुँचा। गाज़ी मलिक उससे भी रुष्ट न हुआ। (६५)

ग़ाज़ी मलिक ने जो पत्र ऐनुलमुल्क मुल्तानी को लिखा वह उसने ख़ुसरो ख़ाँ को दिखा दिया और अपनी राज भक्ति उस पर सिद्ध कर दी। उसे मालवा का राज्य प्राप्त था। उज्जैन उसे इनाम में मिला था और धार भी उसकी अक़्ता में सम्मिलित था। ग़ाज़ी मलिक ने पुनः एक गुप्तचर उसके पास भेजा। ऐनुल मुल्क उसे अलग ले गया और उससे कहा कि वह इस समय विवश है और ख़ुसरो ख़ाँ का सहायक बना हुआ है किन्तु उसे ख़ुसरो से हार्दिक घृणा है और युद्ध आरम्भ होते ही वह ग़ाज़ी मलिक के पास पहुँच जायगा फिर चाहे वह उसको क्षमा कर दे या उसे दंड दे (६५-६७)

सामाने के अमीर यकलखी ने पत्र पढ़ कर विरोध प्रारम्भ कर दिया। वह मुल्तान क़ुतुबुद्दीन की कृपा से यह स्थान प्राप्त कर सका था। वास्तव मे वह हिन्दू वंश से था। उसने वह पत्र ख़ुसरो ख़ाँ के पास भेज दिया और स्वयं एक सेना लेकर ग़ाजी मलिक के विरुद्ध चल खड़ा हुआ। लोग उसके व्यवहार से पहले ही से असंतुष्ट थे। युद्ध में उसकी पराजय हुई और वह सामने वापस होकर ख़ुसरो के पास जाने की तैयारियाँ कर रहा था कि नगर वासियों ने उस पर आक्रमण कर दिया और उसकी हत्या करदी। (६८-७०)

उस समय मलिक ग़ाज़ी तुग़लक़ ने तीन स्वप्न देखे। एक में तो किसी बुजुर्ग ने उसे बादशाही की सूचना दी। दूसरे स्वप्न में तीन चाँद दिखाई दिये जिनका अर्थ तीन शाही

चत्र समझे गये। तीसरे स्वप्न में एक बहुत सुन्दर उद्यान देखा जिसका अर्थ यह था कि यह बादशाही का बाग़ है जो उसे प्राप्त होने वाला है (७२–७६) इसी बीच में एक क़ाफ़िला मुल्तान से देहली जाता था। इसके द्वारा देहली के बादशाह के लिये बहुत से घोड़े और सिंध की धन संपत्ति भेजी जा रही थी। ग़ाज़ी मलिक को उसकी सूचना मिल गई। उसने कुछ सैनिकों को भेजा। उन्होंने समस्त धन संपत्ति लूट ली और सब धन सैनिकों में वितरित कर दिया (७३-७७)

ग़ाज़ी मलिक ने स्वयं बढ़ने के स्थान पर खुसरो ख़ाँ के बढ़ने की प्रतीक्षा की। खुसरो ख़ाँ, गाज़ी मलिक तुगलक़ की तैयारियाँ सुन सुन कर बड़े असमंजस में पड़ा हुआ था, किन्तु उसने अपने हितैषियों के परामर्श से एक बहुत बड़ी सेना तैयार की और अपने भाई के, जिसे उसने गाजी मलिक की उपाधि प्रदान की थी, नेतृत्व में ग़ाज़ी मलिक की ओर भेजी। यह सेना सरसुती तक बढ़ी। इसके आगे ग़ाजी मलिक का राज्य आरंभ होता था, और यहाँ ग़ाजी मलिक की सेना वर्त्तमान थी। उसके नेता महमूद ने क़िले के भीतर से देहली की सेना से युद्ध किया किन्तु क़िले के बाहर के ग्रामों को खुसरो ख़ाँ की सेना ने खूब लूटा। जब ग़ाजी मलिक को यह सूचना मिली कि देहली की बहुत बड़ी सेना सरसुती तक पहुँच चुकी है तो वह सेना की अधिकता से चिंतित न हुआ और अपनी सेना जिसकी संख्या अधिक न थी, किन्तु योग्यता तथा कुशलता में बहुत बढ़ चढ़कर थी, तैयार की। उसमें गज़, तुर्क, मुग़ल रूमी रूसी, ताजीक, खुरासानी आदि युद्ध-प्रिय जातियां सम्मिलित थीं। वे लोग युद्ध कला में निपुण थे और गाज़ी मलिक के बहुत बड़े भक्त थे। (८०-८६)

जब गाजी मलिक ने खुसरो की सेना को आते हुए देखा तो वह अपने नगर से निकल कर हिन्दुस्तान (देहली) की ओर चल खड़ा हुआ। सेना के अगले भाग का नेता मलिक फ़खरुद्दीन जूना था। मलिक ग़ाज़ी स्वयं सेना के पीछे था। यह सेना अलापुर से होती हुई हौज़े बहत तक पहुंच गई और वहीं उतर पडी। देहली की सेना बड़ी भयभीत हुई। बहुत से सरदार यहाँ तक कि ख़ाने खानां भी बहुत डरा। अब ग़ाज़ी मलिक की सेना से खुसरो ख़ाँ की सेना की दूरी लगभग दस कोस रह गई थी। दोनों सेनाओं के बीच में एक जंगल था जिसमें पानी का अभाव था। एक रात में देहली की सेना ने यह जंगल पार कर लिया और प्रातःकाल शाही सेना तुगलक़ के सिर पर पहुंच गई। चाऊशों ने युद्ध के बिगुल बजाये। हाथियों की पंक्तियाँ काली घटा के समान बढ़ीं। इन हाथियों पर धनुर्धारी चुटकियों में तीर दबाये बैठे थे। हाथियों के पीछे सवारों की पंक्तियाँ चली आती थीं। सेना के बीच में भीगी हुई घास के ढेर के समान खाने खानाँ चत्र लगाये बैठा था। (८९-९३)

दाहिनी और बाईं ओर सेना के सरदार आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रत्येक अस्त्र शस्त्र लगाये था तथा लोहे में डूबा हुआ था। नक़्क़ारे की आवाज़ से आकाश हिला जाता था। पहलवान अपने हाथों में भाले दाबे हुये थे। मुसलमानों की पंक्तियों से हिन्दुओं की पंक्तियाँ पृथक् थीं। वे तकबीर के स्थान पर अपने श्लोक गा रहे थे और देवी देवताओं के नाम को जपते जाते थे। इसका एक सिरा अधिक फैला हुआ और दूसरा सिरा अधिक सिमटा हुआ था। उधर ग़ाजी मलिक तुगलक की सेनायें कुछ भागों में विभाजित थीं। उसके एक भाग को दूर हटा हुआ देखकर देहली की सेना ने विचार किया कि वे लोग भयभीत हो गये हैं और मैदान से निकल जाना चाहते है अतः वे और भी तेज़ी से झपटे। इतने में सेना का दूसरा भाग सामने आया। इस की संख्या कम थी, अतः देहली की सेना ने बड़े उत्साह से आक्रमण किया किन्तु अभी तलवारों से तलवारें टकराने भी न पायी थीं कि तुगलक़ की सेना की अन्य पंक्तियाँ भी उपस्थित हो गईं। उनके आगे-आगे मलिक

फ़खरुद्दीन जूना था। एक ओर से बहराम ऐबा अग्नि के पर्वत के समान चला आता था। बहाउद्दीन, असदुद्दीन, अली हैदर तथा शिहाबुद्दीन अपनी-अपनी सेनाओं को बड़ी वीरता से लड़ाने लाये थे, और मलिक ग़ाज़ी की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे। देहली की सेना पहले ही रेले में इतना आगे बढ़ गई कि ग़ाज़ी मलिक की मध्य भाग की सेना उसके दोनों ओर फैल गई। उन्होंने घेर कर इतने तीर चलाये कि सैकड़ों मनुष्यों की हत्या हो गई। उसके उपरांत भालों तथा तलवारों से युद्ध हुआ। खुसरो खाँ की सेना के एक ओर के एक सरदार क़तला (खाँ) ने जो शाही मीर शिकार था, आक्रमण किया किन्तु तुग़लक़ की सेना के एक सैनिक ने उसे घायल कर दिया। वह चिल्लाया कि, "मुझे अपने सरदार के पास ले चलो, वह मेरी योग्यता से परिचित है" किन्तु कुछ लोगों ने उसके ऊपर आक्रमण कर दिया और उसका सिर काट कर गाज़ी मलिक के पास लाये। उसने इतने बड़े अमीर की हत्या पर खेद प्रकट किया। गाज़ी मलिक ने अवसर पाकर एक सामान्य आक्रमण कर दिया जिससे शत्रु के पैर उखड़ गये और खाने खानाँ भाग खड़ा हुआ और आरिज शायस्ता खाँ क़र्क़मार, क़दर खाँ, यक लखी जो सेना के बड़े-बड़े सरदार थे, भाग खड़े हुये। मलिक फ़खरुद्दीन की सेना से युद्ध चल रहा था परन्तु खाने खानाँ के भागने से सैनिकों का दिल टूट गया। जिसका जिधर मुँह उठा, उधर भाग खड़ा हुआ। मलिक फ़खरुद्दीन भागने वालों का पीछा करना चाहता था किन्तु इतनी धन सम्पत्ति प्राप्त हुई कि उसका सँभालना कठिन हो गया। बारह हाथी तथा खाने खानाँ का लाल चत्र फ़खरुद्दीन जूना को प्राप्त हो गये। (९३-९८)

ग़ाज़ी मलिक ने ईश्वर को धन्यवाद दिया। देहली के बहुत से सैनिक तथा सरदार जो मारे जाने से बच गये थे, अति निकृष्ट दशा में लाये गये। गाज़ी मलिक के सैनिक उन्हें हर प्रकार से लज्जित करते और ताने देते थे। उनके साथ अत्यधिक धन सम्पत्ति भी लाई गई। ग़ाज़ी मलिक ने बन्दी सैनिकों को क्षमा कर दिया। एक सैनिक तमर की, तुगलक के सैनिक हत्या कर देना चाहते थे, किन्तु उसकी प्रार्थना पर लोग उसे तुग़लक़ के पास ले गये। ग़ाज़ी तुगलक ने उसे क्षमा कर दिया और उसका उपचार किया (९९-१०२)

इस विजय के उपरांत ग़ाज़ी मलिक देहली की ओर अग्रसर हुआ। तुग़लक़ के प्रबन्ध से पालम से हाँसी तथा मदीने तक प्रत्येक स्थान पर शान्ति हो गई। इस अवसर पर जब अनाज के व्यापारियों का एक क़ाफ़िला सैनिकों ने पकड़ लिया और उनसे छः लाख तनके वसूल करके तुग़लक़ के पास लाये तो उसने यह धन लेना स्वीकार न किया। उधर खाने खानाँ तथा पराजित सरदार देहली की ओर भागे। देहली के आसपास के स्थानों पर लूटमार प्रारम्भ हो गई। खुसरो खाँ के शासन प्रबन्ध में विघ्न पड़ गया। शहर (देहली) में इन समाचारों से परेशानी बढ़ गई। खाने खानाँ की सेना में अधिकतर देहली के सैनिक थे। इनमें से जो लोग मारे गये और अपने घरों को वापस न हो सके, उनके सम्बन्धियों के घरों में विशेष रूप से विलाप होने लगा। खुसरो खाँ ने हारे हुये सरदारों को सामने बुलवा कर पूछा कि, "तुम किस प्रकार इतनी सरलता से पराजित हो गये और इतने प्रतिष्ठित सरदारों की हत्या करादी।" उनमें से प्रत्येक तुगलक के बराबर था। फिर कहने लगा कि "इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। यह मेरे भाग्य की ख़राबी है।" फिर तुगलक की वीरता की प्रशंसा करते हुये कहा कि वास्तव में वही बादशाही के योग्य है। (१०२-१०८) इसके पश्चात् उसने अपने विश्वासपात्रों से परामर्श किया। कुछ लोगों ने संधि कर लेने की सलाह दी और कहा कि मलिक ग़ाज़ी को हाँसी के उस पार का राज्य देकर सन्तुष्ट कर लेना चाहिये। कुछ लोगों ने राय दी कि इससे कुछ लाभ न होगा। जब तूने राजसिंहासन पर पैर रक्खा है तो बादशाहों के समान कटिबद्ध हो जा

ओर शयनागार से निकल कर रणभूमि में प्रविष्ट हो। खज़ाने का मुंह खोल दे कारण कि बादशाहों का धन इसी दिन के लिये होता है, विशेष कर यह धन तो तेरा एकत्रित भी नहीं किया हुआ है। तू इसे निःसंकोच व्यय कर। युद्ध में यदि भगवान् ने तुझे विजय प्रदान करदी तो ऐसे बहुत से कोष एकत्रित हो जायँगे। यदि तू पराजित हुआ, तो यह धन तेरे शत्रु को प्राप्त हो जायगा और इस दान पुण्य से तेरा नाम शेष रह जायगा।" हसन इन बातों को सुनकर और भी घबड़ाता था, किन्तु अपना हित इसके अतिरिक्त किसी बात में न पाकर उसने आदेश दिया कि शहर के बाहर सेना एकत्रित हो। इस प्रकार अपना हार्दिक भय छिपा कर वह बड़े ठाठ बाट से राज भवन से निकला। अमीर तथा सरदार अपनी-अपनी सेनायें और हाथियों को लेकर एकत्रित हो गये। हिन्दुओं के साथ खुसरो खाँ के मुसलमान सहायक भी थे। सेनायें हौजे खास के पास एकत्रित हुई। सेना की अधिकता तथा गाज़ी मलिक के भय से डेरे बहुत पास-पास लगाये गये। सेना के शिविर के सामने एक खाई और पीछे की ओर कच्ची दीवार बनाई गई। इस दीवार के भीतर एक हौज़ था जो यद्यपि छोटा ही था, किन्तु उससे पर्याप्त जल मिल जाता था। (१०८-११३)

धन सम्पत्ति लुटाना भी उसी के लिये लाभदायक हो सकता है जो अपने मन से यह कार्य करे। शत्रुओं के भय से और विवश होकर धन सम्पत्ति लुटाने से कोई लाभ नहीं। खुसरो ने भी राजभवन से निकल कर जो धन सम्पत्ति लुटाई, उससे मुसलमानों से अधिक हिन्दुओं को लाभ हुआ। इस पर भी लोगों के हृदय से तलवार का भय कम न हुआ। (११३-११४)

तुग़लक़ हाँसी होता हुआ मदीने पहुँचा। वहाँ से रोहतक होता हुआ मन्दौनी ग्राम तथा पालसा से बढ़कर अरवली पर्वत की कन्सपुर नामक पहाड़ी में प्रविष्ट हुआ। वहाँ से हौजे सुल्तान होता हुआ लहरावत के मैदान में, जिसके पीछे यमुना और सामने देहली थी, पहुँच गया। (११५)

अब दोनों ओर की सेनाये एक दूसरे से कुछ मील की दूरी पर युद्ध के लिये तैयार थीं। शाह ग़ाज़ी इन्दपथ तक पहुँच गया। शुक्रवार की रात्रि में हसन ने तैयारी की। ऐनुल मुल्क अपने गुप्त वचन के अनुसार खुसरो खाँ की सेना छोड़ कर उज्जैन की ओर चल दिया। खुसरो खाँ रात भर सेना की तैयारी करता रहा। शुक्रवार को प्रातःकाल वह गाज़ी मलिक की सेना की ओर बढ़ा। उसकी सेना में यूसुफ खाँ सूफी, कमालुद्दीन सूफ़ी, शायस्ता खाँ क़र्कमार, अमीरहाजिब काफ़ूर "मुहरदार", नायब अमीर हाजिब शिहाब अवध का शासक, उसका दबीर बहाउद्दीन और इसी प्रकार कई अन्य मुसलमान सरदार सम्मिलित थे। खुसरो खाँ का भाई खानेखानाँ, राय रायाँ रन्धौल, संबल हातिम खाँ अमीर हाजिब और बहुत से नये अमीर जो गुलामी से अमीरी की श्रेणी तक पहुंचे थे अपनी-अपनी सेनायें लिये साथ थे। सेना के आगे हाथियों की पंक्तियाँ थीं, और उन्हीं के चारों ओर दस हजार ब्रादों जाति के सवार मरने की ठाने हुये रेशमी रूमाल बाँध कर आये थे (११७-११८) उनके नाम अहर देव, अमर देव, नरसिया, परसिया, हरमार, परमार आदि थे। उनकी काली काली सूरतें थीं। कुछ के झंडों में गाय की दुम बंधी थी। आगे जंगली सूअरों के दाँत लटके थे (११९)। इस प्रकार आधी हिन्दू सैनिकों और आधी मुसलमान सैनिकों की सेना तथा अत्यधिक सामान के साथ खुसरो रणक्षेत्र मे पहुँचा। मलिक ग़ाज़ी को भी जो उस दिन युद्ध न करना चाहता था अपनी सेना तैयार करनी पड़ी। दाहिनी ओर अपने भानजे बहाउद्दौला को और दूसरी सेना का सरदार मलिक बहराम को बनाया। उसके बराबर अलीहैदर की सेना नियुक्त की। (१२०-१२१) बाईं ओर फ़ख़रुद्दीन जूना और अपने भतीजे असद आदि चार सरदार

नियुक्त किये। सेना के मध्य भाग की देख रेख स्वयं की। उसने यह भी आदेश दिया कि प्रत्येक सरदार अपने झंडे पर मोर के पर बांध ले जिससे उनके झंडे शत्रुओं के झंडों से भिन्न हो सकें। तुग़लक़ मुगलों के विरुद्ध भी युद्ध करते समय अपने झंडो मे मोर के पर बंधवाया करता था। उसकी विजयों ने इन परों को शुभ बना दिया था (१२२) इस अवसर पर ग़ाजी मलिक ने "क़ता" शब्द को अपनी सेना का नारा निर्धारित किया। इस नारे को सुनकर खुसरो खाँ की आँखों में अँधेरा छा जाता था (१२३)।

दोनों सेनाओं का आमना सामना होते ही खुसरो खाँ की एक सेना ने तुगलक की सेना पर इतना कड़ा आक्रमण किया कि अपने सामने से सबको रेलती हुए सेना के पड़ाव तक पहुँच गये। मलिक ग़ाजी तुग़लक़ के पास ३०० सवारों की सेना के अतिरिक्त कोई न रहा किन्तु थोड़ी देर में उसके ख़ास ख़ास सरदार, बहराम ऐबा, असद शायस्ता, बहाउद्दीन, मलिक शाही आदि एकत्रित हो गये। उन्ही को लेकर मलिक ग़ाजी ने शत्रु की असंख्य सेना पर आक्रमण कर दिया। आक्रमणकारियों की संख्या पूरी ५०० भी न होगी। (१२४) इस आक्रमण से शत्रु की सेना में हलचल मच गई। तुग़लक़ का घोड़ा युद्ध में प्रत्येक दिशा में दृष्टिगोचर होता था। हसन खाँ के चत्र पर भी उसका एक ऐसा वार हुआ कि चत्र उलट गया। इसी के साथ उसकी सेना की पंक्तियों में विघ्न पड़ गया। (१२५) खुसरो खाँ व्याकुल होकर भागा। जिसका जिधर मुँह उठा वह उधर भाग निकला। सेना की पंक्तियाँ एक दूसरे पर गिरी पड़ती थीं। भागने वालों को आक्रमणकारियों के आक्रमण रोकने का भी ध्यान न था। लोग भागने में घायल होते जाते थे और मृत्यु को प्राप्त होते जाते थे। कुछ लोग बिना युद्ध के हथियार डाल रहे थे। कुछ लोग छिपने के लिए खाई अथवा गड्ढा ढूँढ रहे थे। इस मार काट में भी तुगलक़ की सेना के मुसलमान सैनिकों ने देहली के मुसलमान सैनिकों की कुछ न कुछ रियायत की परन्तु हिन्दू खुक्खरों ने जो बहुत बड़ी संख्या मे थे (१२६-१२७) मुसलमान सैनिकों का भी बुरी तरह संहार किया। प्रत्येक दिशा में मार धाड़ तथा चीत्कार मची थी। ख़ुसरो खाँ को भगा देने के उपरान्त तुग़लक़ की सेनायें लूट मार करने लगीं। इतने में हिन्दुओं की एक सेना ने आक्रमण कर दिया। मलिक ग़ाज़ी तुरन्त इस भय को भाँप गया। आक्रमणकारियों के "नारायण" के नारे के साथ उसने "अल्लाहो अकबर" का नारा लगाया। (१२८) किन्तु यह आक्रमण इतनी तीव्र गति से किया गया था, कि ग़ाज़ी मलिक के सँभलते सँभलते आक्रमणकारियों ने उसकी सेना के बहुत से झण्डे काट डाले। इस समय गाजी मलिक ने अपनी विशेष पताका जिस पर मछली बनी हुई थी, गाड़ने का आदेश दिया। नक़्क़ारा बजाने वाले को निरंतर नक़्क़ारा बजाते रहने की आज्ञा दी और कहा कि यदि भगवान् की कृपा से मुझे विजय प्राप्त हो गई तो तेरा नक़्क़ारा अशरफ़ियों से भर दूँगा। पताका उठाने वाले से कहा कि तेरे शरीर के बराबर रुपये का ढेर लगा कर तुझे मछली के समान उसमें तैरा दिया जायगा, कारण कि यदि यह नक़्क़ारा बजता रहा और यह मछली स्थापित रही तो फिर मुझे कोई भय नही। ग़ाजी मलिक के साहस को देखकर भागे हुये सवार पुनः एकत्रित हो गये। अब उसने ध्यानपूर्वक देखा तो उसे शत्रुओं की एक सेना दृष्टिगोचर हुई जिसके साथ कुछ हाथी भी थे। यह सेना मैदान के नीचे के भाग में होने के कारण दिखाई न देती थी और अब तक मलिक ग़ाज़ी के आक्रमण से सुरक्षित थी। पूछताछ के पश्चात् ज्ञात हुआ कि वह ख़ुसरो खाँ के कुछ मुसलमान सहायकों की सेना थी। कुछ हिन्दू सैनिक भी उनके सैनिक थे। खुसरो का मित्र यूसुफ़ सूफ़ी भी उनके साथ था। यह देखकर तुग़लक़ ने उस ओर आक्रमण किया और एक ही धावे में उस सेना को भगा दिया। (१३०) शत्रुओं से रणक्षेत्र रिक्त हो गया और विजय होने में कोई कमी न रही। ग़ाज़ी

मलिक अपने पड़ाव की ओर पलटा। उसके सैनिकों में खुक्खरों तथा अफ़ग़ानों के अतिरिक्त किसी ने अधिक लूट मार न की और मुसलमानों की लूट मार से अधिक हानि न पहुंची। भागने में हिन्दू सैनिकों की धन सम्पत्ति का विनाश हो गया। (१३१-१३२)

गाज़ी मलिक उस दिन अपने पड़ाव पर ही रहा। विजय के उपरांत मानों आकाश तथा भूमि से उसे राज्य की बधाई मिलने लगी। (१३२-१३५) प्रातःकाल जो शाबान मास की पहली तिथि थी, ग़ाज़ी मलिक राजधानी की ओर चल खड़ा हुआ। आगे आगे उन हाथियों की पंक्तियाँ थीं जो इस युद्ध में प्राप्त हुये थे। नौबत वाले बाजा बजाते जाते थे। नक़ीब "दूर बाश" (दूर रहो) के नारे लगाते जाते थे। प्यादे तथा सवार नंगी तलवारें लिये भाले चमकाते आगे आगे थे। इस प्रकार ये लोग राजभवन तक पहुँच गये। तुग़लक़ ने घोड़े से उतर कर भगवान् के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये सिजदा किया। जिन मलिकों तथा अमीरों ने युद्ध में भाग लिया था, उन्हें क्षमा कर दिया। सब को अपने बराबर बड़े आदर से बिठाया और कहा कि, "मैं साधारण मनुष्य था। सुल्तान जलालुद्दीन ने मुझे अपना विश्वास पात्र बनाया। उस की मृत्यु के उपरांत मैं असमंजस में रहा कि इतने में अलाई भाग्य का सूर्य उदय हुआ। मैं भी बादशाह के सेवकों में सम्मिलित हो गया (१३५-१३६) मैंने सर्व प्रथम बादशाह के भाई उलुग़ ख़ाँ की सेवा की और उस की कृपाओं का भोगी रहा। जब उसकी मृत्यु हो गई तो बादशाह का सेवक बन गया। उसी बादशाह के कृपा-दान से मुझे यह स्थान प्राप्त हुआ"।

लोगों ने तुगलक़ का यह भाषण सुन कर कहा कि, "हे अमीर तू अपने गुणों को दूसरों के नाम से क्यों बताता है। हम लोगों को तेरे विषय में पूर्ण जानकारी है। जिस समय बादशाह (जलालुद्दीन खिलजी) ने रणथम्भोर को घेर लिया और अपनी सेना के चारों ओर एक घेरा तैयार कर लिया तो उस समय राय रणथम्भोर की एक चुनी हुई सेना ने उस घेरे पर धावा बोल दिया। इससे बादशाह की सेना में कोलाहल मच गया। उस समय बादशाह ने तुझे भी आदेश दिया और तू ने ही अपनी वीरता तथा परिश्रम से आक्रमणकारियों को पराजित किया। इस विजय के फलस्वरूप बादशाह ने तुझे विशेष रूप से सम्मानित किया। उस बादशाह की मृत्यु के पश्चात् अलाउद्दीन ने तेरी राजभक्ति के कारण तुझ को उसी प्रकार तुग़लक़ ख़ाँ रहने दिया। तत्पश्चात् जब मुग़लों ने बरन पर आक्रमण किया और बहुत से मुसलमानों को बन्दी बना लिया तो उस समय बादशाह ने तुझ को ही युद्ध के लिये भेजा। उनकी सेना में चार तुमन थे। उसके सरदार चार मुग़ल शाहज़ादे थे किन्तु तूने अल्प काल ही में उनको पराजित कर दिया। तमीक़ तथा अलीबेग के युद्ध में भी तूने बड़ी वीरता दिखाई। फिर तू ने समुद्र के निकट बूनेल के स्थान पर काफ़िर मुग़लों के दस हज़ार सैनिकों से युद्ध किया। उनके सरदार का नाम भी तुग़लक़ था। घमासान युद्ध हुआ किन्तु उस तुग़लक़ ने कुफ़्र के लिये और तू ने धर्म के लिये युद्ध किया था, अतः भगवान् ने तुझे विजय प्रदान की। बूनेल के राजा से भी तूने कर प्राप्त किया। तत्पश्चात् हैदर तथा ज़ीरक की सेनाओं से भी युद्ध किया और उन्हें पराजित किया। तुझे १८ बड़े-बड़े युद्धों में विजय प्राप्त हो चुकी है (१३८) इस समय भी तू ने देहली की सेना पर विजय प्राप्त की। शेरे ख़ुदा अली के पश्चात् अबू मुसलिम के अतिरिक्त इतनी विजय किसी को भी न प्राप्त हो सकी। भगवान् को धन्य है कि उसने तुझे इस दिन के लिये जीवित रक्खा अन्यथा न जाने कितने अमीरों का विनाश हो गया होता। अब तू सिंहासनारूढ़ हो।"

मलिक ग़ाज़ी ने कहा कि "मेरा उत्तर यही है कि मेरा मुकुट तथा सिंहासन मेरे धनुष बाण हैं। जिस प्रकार बादशाहों से युद्ध नहीं हो सकता उसी प्रकार योद्धाओं से बेकार नहीं

बैठा जा सकता। मुझे सुल्तान अलाउद्दीन की कृपा से यह सम्मान प्राप्त हुआ है, अतः उसका मेरे ऊपर बड़ा हक़ है। जब मैंने सुना कि कृतघ्न ख़ुसरो ख़ाँ ने उसका समूल विच्छेदन कर दिया और अपने स्वामी ख़लीफ़ा क़ुतुबुद्दीन की हत्या करदी, उसकी स्त्रियों तथा बालकों की भी हत्या करादी और नाना प्रकार के लज्जा से परिपूर्ण कार्य किये तो मेरे सामने अन्धकार छा गया। (१३९) मैंने बड़ा विलाप किया, और तीन प्रतिज्ञायें की—(१) मैं इस्लाम के लिये जिहाद करूँगा, (२) इस राज्य को इस तुच्छ हिन्दू के पुत्र से मुक्त करा दूँगा और उन शाहज़ादों को जो सिंहासन के योग्य होंगे सिंहासनारूढ़ कराऊँगा। (३) जिन काफ़िरों ने शाही वंश का विनाश किया है, उन्हें दण्ड दूँगा। यह तीनों प्रतिज्ञायें केवल भगवान् के लिये की गई थीं। मैं अब सफलता प्राप्त करके भगवान् के प्रति कृतज्ञता प्रकट किया करूँगा। मुझे राजसिंहासन की इच्छा नहीं और धर्मयुद्ध के अतिरिक्त मैं तलवार न खींचूंगा। अब शाही वंश से यदि कोई जीवित है तो यह सिंहासन उसी को प्रदान किया जाय। यदि उनमें से कोई शेष नहीं तो अन्य बहुत से अमीर वर्त्तमान हैं मुझे अपना घोड़ा तथा द्योपालपुर का जंगल बहुत ही रुचिकर है।"

प्रतिष्ठित मलिकों ने पुनः उसके पैर चूमे और आग्रह किया—"राजमुकुट तुझी को शोभा देगा। यदि राजमुकुट के योग्य कोई अन्य होता तो भगवान् उसको ही यह सम्मान प्रदान करता।" अमीरों के अधिक आग्रह पर तुग़लक़ ने उत्तर दिया कि 'मैं कोई बालक नहीं जो आप लोगों के कहने से राज्य के लोभ में पड़ जाऊँ। दूसरे यदि मैंने राज्य स्वीकार कर लिया तो लोग कहेंगे कि मैंने राज्य ही के लिए युद्ध किया था।" लोगों ने अन्त में कहा कि "यदि तेरे अतिरिक्त कोई अन्य सिंहासनारूढ़ हुआ तो वह सर्वदा तुझ से भयभीत रहेगा और तेरा विरोध करता रहेगा।" तुग़लक़ यह बात सुनकर सोच में पड़ गया वह इसी असमंजस में था कि उसे तीन चत्र दिखाई पड़े। उस समय उसे अपना स्वप्न याद आया और उसने सिंहासनारूढ़ होना निश्चय कर लिया। (१४०-१४३)

दूसरे दिन अर्थात् शनिवार को प्रातः काल तुग़लक़ राजसिंहासन पर विराजमान हुआ। सुल्तान ग़यासुद्दीन उसकी पदवी निश्चित् हुई। (१४४) ख़ुसरो ख़ाँ तथा उसके भाई भागने में एक दूसरे से पृथक् हो गये। ख़ाने ख़ानां किसी बुढ़िया के घर में छिप गया। किन्तु तुग़लक़ के सवारों को पता चल गया। उन्होंने फ़ख़रुद्दीन जूना उलुग़ ख़ाँ को सूचना करदी। उलुग़ ख़ाँ ने उसे वचन दिया कि बादशाह तुझको क्षमा कर देगा किन्तु जब वह बन्दी होकर तुग़लक़ के सामने लाया गया तो उसने आदेश दिया कि उसे शहर में फिराया जाय। इस प्रकार उसे शहर के बाजारों में फिराया गया। तत्पश्चात् उसका सिर काट कर लटका दिया गया। (१४५-१४७)

जब ख़ुसरो ख़ाँ पराजित होकर मैदान से भागा तो कुछ ब्रादों सवार भी उसके साथ थे। वह थोड़ी देर प्रत्येक दिशा में दौड़ता रहा किन्तु इस दौड़ धूप में वह मार्ग भूल गया। ख़ुसरो ख़ाँ अपने साथियों से भी पृथक् हो गया और गिरता पड़ता एक बाग़ में छिप गया। तुग़लक़ ने उलग़ ख़ाँ को उसे बन्दी बनाने के लिए भेजा। वह तुग़लक़ के सामने लाया गया। बादशाह ने उससे पूछा कि, "तूने अपने स्वामी की हत्या क्यों की। उसने तुझे अपने हृदय में स्थान दिया किन्तु तूने उसका रक्त बहा दिया।" ख़ुसरो ख़ाँ ने उत्तर दिया कि "मेरी दशा सब लोगों को ज्ञात है। यदि मुझसे अनुचित व्यवहार न किया जाता तो जो कुछ मैंने किया वह न करता।" तुग़लक़ के इस प्रश्न पर कि "शाहज़ादों ने तेरा क्या बिगाड़ा था?" उसने उत्तर दिया कि "मेरे विश्वास पात्रों ने मुझे यही परामर्श दिया। इसका दोष मुझ पर नहीं।" जब उससे यह प्रश्न किया गया कि 'राजसिंहासन पर तूने क्यों अधिकार जमाया', तो

उसने उत्तर दिया कि "मैं किसी शाहज़ादे को सिंहासनारूढ़ करना चाहता था किन्तु मेरे विश्वास पात्रों ने मुझे परामर्श दिया कि यदि मैंने ऐसा किया तो फिर मेरी जान की खैर नहीं।" तुग़लक़ के इस प्रश्न का कि, "तूने मुझसे युद्ध क्यों किया," ख़ुसरो ने उत्तर दिया कि "मैं तुझे पालम तक का राज्य देना चाहता था किन्तु यह बात भी न स्वीकार हुई और भगवान् ने तुझे राज्य प्रदान कर दिया।" अन्त में ख़ुसरो ने क्षमा याचना की और यह भी निवेदन किया कि उसे अन्धा करके किसी ग्राम में निवास करने की आज्ञा दे दी जाय किन्तु तुग़लक़ ने उसकी यह प्रार्थना भी स्वीकार न की और कहा कि "मैंने बादशाह तथा शाहज़ादों का बदला लेने के लिए युद्ध किया था अतः तुझे क्षमा कर देना मेरी प्रतिज्ञा के विरुद्ध होगा।" (१४८-१५०) तत्पश्चात् जल्लादों को आदेश दिया कि, जिस स्थान पर सुल्तान क़ुतुबुद्दीन मुबारक शाह की ख़ुसरो खां ने हत्या करायी थी, उसी स्थान पर ख़ुसरो ख़ाँ का सिर भी पृथक् कर दिया जाय। इस प्रकार उसका सिर कटवा कर लोगों के रौंदने के लिये प्राँगण में फिंकवा दिया (१५१)।

फ़ुतूहुस्सलातीन

[लेखक, एसामी; प्रकाशन मदरास यूनीवर्सिटी १९४८ ई०]

सुल्तान जलालुद्दीन ख़लजी

एक दिन बादशाह दरबारे ग्राम में अपने वैभव पर बड़ा अभिमान कर रहा था किन्तु उसी समय उसे मुल्तान के दूतों द्वारा ज्ञात हुआ कि मुग़लों की बहुत बड़ी सेना ने आक्रमण कर दिया है। उसने अपने भाई मलिक खामुश (ख़लजी) को मुल्तान की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया और अन्य मलिकों को उसका अधीन बनाकर एक बहुत बड़ी सेना प्रदान की। मुग़लों की सेना ने बर्राम के स्थान पर शाही सेना के पहुँचने के समाचार सुने। बर्राम के निकट शाही यज़कियों ने मुग़ल सवारों की एक सेना को पराजित कर दिया। हिन्दुस्तान की सेना में ३० हज़ार सवार थे। मुग़लों की सेना के सरदार का नाम अब्दुल्ला था। हिन्दुस्तानियों तथा मुग़लों की सेना में दिन भर घोर युद्ध हुआ। रात्रि में मुग़ल सेना भाग निकली। हिन्दुस्तानी सेना वहाँ एक सप्ताह तक ठहरी रही। (२०९-२१४)

इसके उपरान्त सुल्तान जलालुद्दीन ने मन्दूवर पर आक्रमण किया। चार मास के युद्ध के उपरान्त क़िले पर अधिकार जमा लिया और कुछ मास के पश्चात् सेना राजधानी में लौट आई। (२१५)

कहा जाता है कि उस समय एक वृद्ध सीदी मौला रात-दिन एकान्त वास ग्रहण किये था। जो कोई निर्धन उसके पास पहुँचता उसे वह अत्यधिक दान प्रदान करता। कुछ सूफ़ियों ने उसके विषय में नाना प्रकार की बातें प्रसिद्ध करनी प्रारम्भ करदीं। जिस समय सुल्तान ने मन्दूवर पर आक्रमण किया तो लोगों ने उसकी अनुपस्थिति में उस दरवेश को गिरफ़्तार कर लिया। उसे बादशाह के सम्मुख ले गये और कहा कि यह कीमिया जानता है और गुप्त रूप से सेना एकत्रित कर रहा है तथा बादशाह बनना चाहता है। बादशाह के पुत्र अरकलिक खाँ (अरकली खाँ) ने उसे क़ैद में डलवा दिया। जब बादशाह मन्दूवर से वापस हुआ तो उसे पुनः उसके सम्मुख पेश किया गया। बादशाह ने उसके विषय में पूछताछ के उपरान्त उसे मुक्त कर दिया किन्तु अरकलिक खाँ ने बादशाह की बिना आज्ञा उसको हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा कर मरवा डाला। (२१५-२१६)

कहा जाता है कि उस निर्दोष हत्या के फल स्वरूप हिन्दुस्तान में, जलाली राज्य काल में एक बहुत बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा। (२१७) लोग यमुना नदी में डूब डब कर आत्म-हत्या करने लगे। शहन्शाह ने जहाँ कहीं भी अनाज एकत्रित था, वह सब खाली कर दिया। यदि वह ऐसा न करता तो मनुष्य जाति का नाम भी शेष न रहता। (२१८) कहा जाता है कि दो वर्ष तक वर्षा के लिये लोगों ने भगवान् से प्रार्थना की, किन्तु वह स्वीकार न हुई। अन्त में लोग उस मैदान में एकत्रित हुये जहाँ ईद की नमाज़ पढ़ी जाती थी। क़ाज़ी आलिम दीवाना के कहने से सभी ने अपने पापों से तोबा की और भगवान् से वर्षा की प्रार्थना की। कहा जाता है कि उसी समय वर्षा प्रारम्भ हो गई। (२१९-२२०)

वर्षा से मँहगाई का अन्त हो गया। सुल्तान जलालुद्दीन भी हवालिये (देहली) से शिकार खेलता हुआ बलकतारा की ओर गया। वहाँ उसे एक ऐसा घना जंगल मिला जहाँ उपद्रवकारी छिप जाया करते थे। बादशाह के आदेश से सेना ने वह जंगल काट डाला और डाकुओं के शरण का स्थान समाप्त हो गया। (२२१-२२२) इसके ६ मास उपरान्त सुल्तान

ने शिकार के नियम से झायन की ओर प्रस्थान किया। जिधर वह जाता वहाँ से दस दस कोस की दूरी तक जंगल और पर्वत शिकार से खाली हो जाते थे। इस प्रकार शिकार खेलता हुआ वह झायन तक पहुंचा। प्रत्येक दिशा से उसके पास उपहार आते रहते थे। झायन पहुंच कर सुल्तान के आदेशानुसार सेना ने क़िले को टुकड़े टुकड़े कर दिया। मन्दिरों को विध्वंस तथा हिन्दुओं का विनाश कर दिया। (२२३) कहा जाता है कि एक वर्ष सुल्तान शिकार के लिये अवरी तथा कैथून की ओर गया। वहाँ २-३ मास तक उसने विश्राम किया। उस स्थान से उसने भिन्न-भिन्न दिशाओं में सेनायें भेजीं। इन सेनाओं ने अनेक जंगलों तथा क़िलों का विनाश कर दिया। दो मास उपरान्त वह राजधानी को पुनः वापस हो गया (२२४)। कहा जाता है कि राजधानी में एक पागल रहता था जिसका एक मकान बाज़ार में था। जो कोई उसके द्वार के सामने से गुज़रता उसे वह ढेले मारा करता था। उसका एक हब्शी दास था जिसका नाम याक़ूब था। उसके कंधे पर कुछ चाबुक पड़े रहते थे और उसके हाथ में एक लम्बा धागा रहता था जिसमें कई अँगूठियाँ पड़ी रहती थी। जब यह बाज़ारों से गुज़रता तो लोग बड़े भयभीत हो जाते थे। जिस किसी को वह अँगूठी पहने देखता, उसके हाथ से अँगूठी उतरवा लेता था और उसके कई कोड़े लगवाता था। कोई उससे कुछ कह न सकता था। एक दिन सुल्तान का भतीजा गर्शास्प (अलाउद्दीन) उसकी खिड़की तक पहुँच गया। वह वहाँ से वापस होना चाहता था किन्तु क़ाज़ी ने उसके पास उपस्थित होकर उसका आदर-सत्कार किया और उसे एक अंगूठी प्रदान की। अली ने प्रसन्न होकर यह समझ लिया कि इससे उसे कोई बड़ा लाभ होगा।

सुल्तान जलालुद्दीन के ७ वर्ष के राज्य काल में कोई भी उस से असन्तुष्ट न था। सुल्तान के तीन पुत्र थे। एक ख़ानेख़ानाँ, दूसरा अरकलिक ख़ाँ जोकि मुल्तान का शासक था और तीसरा क़दर खाँ, उसके दो भाई थे, जो बड़े वीर थे (२२५-२२६)। एक का नाम ख़ामुश और दूसरे का शहाब था। शहाब के चार पुत्र थे। अली, अल्मासबेग, क़ुतुलुग़ तिगीन, मुहम्मद शाह। सुल्तान का ख़ास हाजिब तथा हितैषी अहमदचप था। मलिक फ़ख़रुद्दीन कूची, नसीरुद्दीन नुसरत बिन सुबाह, कमालुद्दीन अन्य वीर अमीर थे। एक दिन सुल्तान ने गर्शास्प को कड़े की ओर भेजा और अपनी पुत्री भी उसे ब्याह दी। (२२७) इसके चार वर्ष उपरान्त सुल्तान की पुत्री ने उसे विशेष कष्ट पहुंचाना प्रारम्भ कर दिया। अली इससे बड़ा दुःखी हुआ। उस ने देवगीर के ऊपर आक्रमण करना तथा वहाँ से धन-सम्पत्ति एकत्रित करना निश्चय कर लिया (२२८)। उसने तीन चार हज़ार सवारों की सेना एकत्रित की और देवगीर की ओर प्रस्थान कर दिया (२२९)। जब वह लाजौरा की घाटी में पहुँचा तो लाजौरा के मुक़्ता कान्हा को उसकी सेना के पहुँचने का समाचार मिला। उसने रामदेव से, जो मरहठा राज्य का शासक था, जाकर निवेदन किया कि तुर्कों की सेना हमारी अक़्ता में पहुँच चुकी है। राय ने यह सुनकर उससे कहा कि ऐसा ज्ञात होता है कि तेरी बुद्धि का अन्त हो गया है, जो तू इस प्रकार की बात करता है। कान्हा यह सुनकर लाजौरा को वापस हो गया। जब अली की सेना लाजौरा पहुँची तो कान्हा भी युद्ध के लिये निकला। उसकी सेना में दो हिन्दू स्त्रियाँ शेरनियों के समान वीर थीं। उन्होंने बड़ी वीरता से युद्ध किया किन्तु तुर्क सेना ने हिन्दुओं की सेना का विनाश कर दिया। जब वे दोनों स्त्रियाँ गर्शास्प के सामने लाई गईं तो उसने कहा कि जिस स्थान की स्त्रियाँ इतनी वीर हैं, वहाँ के पुरुष अवश्य ही बड़े वीर होंगे। अतः हमें चाहिये कि पुनः दृढ़ संकल्प करके आगे प्रस्थान करें और मरहठा प्रदेश को विध्वंस कर दें। जो कुछ धन सम्पत्ति जिसे प्राप्त हो, वह उसे अपने पास रख ले, चाहे वह धन कितना ही अधिक क्यों न हो।

इसके उपरान्त तुर्क सेना खतका पहुँची। कहा जाता है कि उस समय राय की सेना उसके वीर पुत्र भिल्लम के साथ गई हुई थी। उसने देवगीर के क़िले के द्वार बन्द कर लिये किन्तु एक सप्ताह उपरान्त भोजन-सामग्री के समाप्त हो जाने के फलस्वरूप उसे सन्धि करनी पड़ी। इस प्रकार खतका तथा देवगीर पर अधिकार प्राप्त हो गया। सेना को अत्यधिक धन-सम्पत्ति, सोना, मोती, जवाहरात तथा हाथी घोड़े प्राप्त हुये। जब भिल्लम को यह समाचार मिला तो वह ५ लाख प्यादे, १० हज़ार सवार तथा ६० हाथियों की सेना लेकर देवगीर की ओर चल खड़ा हुआ। (२३३-२३४) गर्शास्प ने राय रामदेव से कहा कि, "तू अपने पुत्र को युद्ध करने से रोक दे अन्यथा सर्व प्रथम मैं तेरा सिर उड़ा दूँगा। तत्पश्चात् उसकी हत्या कर दूँगा।" राय ने उत्तर दिया कि 'मैं अपने पुत्र को समझाने के लिये अपने विश्वासपात्र भेजूँगा।" इसके उपरान्त उसने अपने पुत्र को सूचना भेजी कि 'यदि तू युद्ध करेगा तो मेरी भी हत्या करा देगा और राज्य भी खो देगा।' भिल्लम ने यह सुनकर युद्ध के विचार त्याग दिये और गर्शास्प के चरण छूने के लिये उसकी शरण में पहुँच गया। गर्शास्प ने रामदेव का राज्य उसी को वापस कर दिया और अत्यधिक धन-सम्पत्ति लेकर वहाँ से लौट गया। ६ मास उपरान्त वह अपनी इक़लीम में पहुँच गया। २-३ सप्ताह तक शहर में बड़ा समारोह हुआ और खुशियाँ मनाई गई। (२३५-२३७) अलाउद्दीन बराबर यह सोचने लगा कि वह अवध, बिहार, लखनौती अथवा त्रिहुत पर आक्रमण करे और अपना राज्य पृथक् स्थापित कर ले।

जब बादशाह ने गर्शास्प की कड़े से अनुपस्थिति के समाचार सुने तो वह रात दिन उसकी खोज करवाने लगा। कुछ समय उपरान्त वह ग्वालियर की ओर रवाना हो गया। दो एक महीने तक उस प्रदेश के दाहिनी तथा बाँई ओर के स्थानों पर शिकार के लिए जाता रहा। एक दिन हमीर के दूत ने आकर यह निवेदन किया कि "राय ने कहला भेजा है कि यदि वह गर्शास्प के समाचार बता दे तो सुल्तान उस पर आक्रमण न करे"। जब सुल्तान ने हमीर की शर्त स्वीकार करली तो उसके दूत ने उत्तर दिया कि 'गर्शास्प ने देवगीर पर आक्रमण कर दिया था और (अब) अत्यधिक धन-सम्पत्ति लेकर अपनी अक्ता की ओर वापस हो रहा है।"

सुल्तान, गर्शास्प के समाचार पाने के उपरान्त देहली की ओर वापस हो गया। वहाँ से उसने अल्मास बेग को गर्शास्प के पास भेजा (२३८-२३९) और उसको सूचना भेजी कि "मै तेरी इस विजय से बड़ा प्रसन्न हूँ किन्तु तुझको मुझे अवश्य खबर करनी चाहिये थी। तुझे यह न समझना चाहिये कि मैं तुझसे रुष्ट हूँ। मैं तुझसे भेंट करना चाहता हूँ। यदि तू न आयेगा तो मै स्वयं आऊँगा।" अल्मास बेग के पहुँच जाने से गर्शास्प बड़ा प्रसन्न हुआ। इसके उपरान्त सुल्तान ने अपने एक दूत द्वारा गर्शास्प को सूचना भेजी कि वह स्वयं आ रहा है। (२४०-२४२) गर्शास्प ने अपने दो तीन विश्वासपात्रों को सुल्तान की हत्या के लिए तैयार कर लिया। जब बादशाह की नौका किनारे पहुँची तो अली सुल्तान के पैरों को चूमने के लिये आगे बढ़ा। सुल्तान ने उसे अपनी नौका की ओर खींचते हुये कहा कि "ऐ पुत्र! आज की रात तू मेरा मेहमान हो।" अली ने भी सुल्तान से आग्रह किया कि "आप मेरे घर को आज की रात अपनी उपस्थित से उज्वल करें।" इसी बीच में उस व्यक्ति ने जिसे सुल्तान की हत्या के लिये तैयार किया गया था, सुल्तान का सिर काट लिया। (२४३-२४४)

गर्शास्प ने सुल्तान का सिर अवध की ओर भेज दिया। देहली की सेना में से कुछ लोग उससे मिल गये और कुछ देहली की ओर वापस हो गये। तीसरे दिन गर्शास्प ने सेना लेकर प्रस्थान किया और अत्यधिक सोना-चाँदी लुटाना प्रारम्भ कर दिया। अहमद चप तथा

उलुग ने देहली पहुँच कर क़दरखाँ को सुल्तान की मृत्यु के समाचार सुनाये। ३ दिन और ३ रात तक सुल्तान का शोक मनाया गया। क़दर ख़ाँ ने रुक्नुद्दीन की उपाधि ग्रहण की और देहली का बादशाह हो गया। उसने ३ मास तक देहली में राज्य किया। उलुग़ू नसारुद्दीन तथा अहमद चप ने उसकी सहायता करने के वचन दिये। (२४६) जब गर्शास्प देहली पहुंचा तो रुक्नुद्दीन अपने सहायकों तथा सम्बन्धियों के साथ मुल्तान भाग गया। (२४७) ६९४ हिजरी में अलाउद्दीन देहली के राज-सिंहासन पर विराजमान हुआ। (२४९)

अल्मास बेग को उलुग खाँ की पदवी प्रदान हुई। ज़फ़र ख़ाँ, नुसरत ख़ाँ तथा अलप ख़ाँ को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। सुल्तान ने उलुग़ ख़ाँ तथा जफ़र ख़ाँ को मुल्तान की ओर भेजा। अरकलिक ख़ाँ तथा रुक्नुद्दीन एक दो महीने तक क़िला बन्द किये रहे किन्तु इसके उपरान्त क्षमा याचना की। उन दोनों को क्षमा प्रदान करदी गई किन्तु इसके पश्चात् उलुग़ ख़ाँ ने दोनों की आँखें निकलवा लीं। जफ़र ख़ाँ ने मुल्तान से सीस्तान पर आक्रमण किया। सकदी (सलदी अथवा सुलदी) तुर्क तथा बिलोचियों ने विद्रोह कर दिया था। जफ़र ख़ाँ की सेना के पहुंचने पर २-३ दिन तक उन लोगों ने युद्ध किया किन्तु वे पराजित हुये और ज़फर ख़ाँ कुहराम पहुंच गया। (२५०-२५१)

वीर उलुग ख़ाँ ने बादशाह के आदेशानुसार सूरत की ओर प्रस्थान किया। उसके साथ नुसरत ख़ाँ भी था। गुजरात के राय करण ने सोचा कि तुर्कों से युद्ध करना सम्भव नहीं। उसके मंत्रियों ने उसे परामर्श दिया कि इस समय तू इस स्थान को त्यागकर किसी अन्य दिशा में चला जा। जब तुर्कों की सेना युद्ध के उपरान्त अपने राज्य को लौट जाय तो तू पुनः इस स्थान पर अधिकार जमा ले। इस परामर्श के अनुसार राय करण अपनी समस्त धन-सम्पत्ति तथा रानियों को छोड़ कर भाग गया। तीसरे दिन शाही लश्कर पटन पहुंचा। सेना को अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई। सात हाथी भी प्राप्त हुये। ३ दिन लूट मार करने के उपरान्त शाही सेना वापस हो गई। उलुग ख़ाँ ने मार्ग में सेना के सरदारों को बुलाकर उनसे कहा कि "सैनिकों ने अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त की किन्तु किसी ने भी बादशाह का भाग पृथक् नहीं किया।" उसने सरदारों को आदेश दिया कि शिविर के सामने लूट का समस्त माल एकत्रित किया जाय और उसमें से बादशाह का हिस्सा पृथक् कर दिया जाय। (२५२-२५३) लोगों ने सोना तो पेश कर दिया किन्तु मोती छिपा लिये। इस पर उलुग़ ख़ाँ ने प्रत्येक शिविर में पूछ-ताछ कराई और बादशाह का हिस्सा प्राप्त कर लिया।

क़मीजी मुहम्मद शाह, काभरू, यलचक़ तथा बर्क़ जो पहले मुग़ल थे और अब मुसलमान हो गये थे, धन सम्पत्ति माँगने पर उलुग ख़ाँ की हत्या करने पर कटिबद्ध हो गये। उलुग़ ख़ाँ उस स्थान पर न था जहाँ वह सोया करता था। उन लोगों ने एक शस्ता का जो कि शिविर के सामने था सिर काट लिया और उसे भाले की नोक पर चढ़ाकर सेना में घुमाया। उलुग़ ख़ाँ चुपके से नुसरत ख़ाँ के पास पहुंचा। नुसरत ख़ाँ ने विद्रोहियों पर आक्रमण कर दिया। यलचक़ तथा बर्क़, करण राय के पास भाग गये। क़मीज़ी मुहम्मद शाह तथा काभरू रणथम्बोर के क़िले की ओर चल दिये। उलुग़ ख़ाँ तथा नुसरत ख़ाँ सुल्तान की सेवा में पहुँचे।

ज़फ़र ख़ाँ ने सीस्तान के युद्ध के उपरान्त मुग़लों के सरदार के पास एक दूत भेजा और उसके लिये एक बुर्का, सुर्मा, पाउडर तथा चादर भेजी और उन्हें लिखा कि हिन्दुस्तान में एक ऐसा बादशाह राज-सिंहासन पर विराजमान हुआ है कि जिसने सिन्ध नदी तक के स्थान अपने अधिकार में कर लिये हैं। यदि तुझ मे शक्ति हो तो अब आक्रमण कर (२५४-२५५) अन्यथा सुर्मा, पाउडर तथा बुर्क़े का प्रयोग कर। जब क़ुतलुग़ को यह समाचार मिले तो

उसने तुरन्त युद्ध की तैयारी प्रारम्भ कर दी। २ लाख सेना एकत्रित की। जब मुग़ल सेना ने सिन्ध नदी पार करली तो मुल्तान के शासक की सेना ने क़िले के द्वार बन्द कर लिये। कहा जाता है कि उस समय ज़फर ख़ाँ कुहराम में था। जब मुग़लों की सेना कुहराम के निकट पहुँची तो ज़फ़र खाँ युद्ध के लिये निकला। (२५६-२५७) उसने एक दूत द्वारा क़ुतलुग़ के पास सूचना भेजी कि, "मैंने ही तेरे पास बुर्क़ा भेजा था। पहले मुझसे युद्ध करले, फिर आगे बढ़।" क़ुतलुग़ ने उत्तर दिया कि "बादशाहों को केवल बादशाहों से युद्ध करना चाहिये, अतः मैं तो तेरे बादशाहों पर आक्रमण करूँगा। तू अपने बादशाह के पास जाकर उसकी सहायता कर।

जब अलाउद्दीन को मुग़लों की सेना के आक्रमण का हाल ज्ञात हुआ तो उसने एक बहुत बड़ी सेना एकत्रित की और देहली से निकल कर दुआब के मध्य में कीली नामक स्थान पर शिविर लगा दिये। प्रत्येक वीर के लिये एक उचित स्थान नियत किया। ज़फ़र ख़ाँ को सेना के दाहिनी ओर नियुक्त किया। नुसरत ख़ाँ को बाँई ओर और उलुग़ ख़ाँ को सेना के पीछे तथा अकत ख़ाँ को सेना के आगे रक्खा। (२५८-२५९) प्रत्येक सेना के साथ २०० हाथी कर दिये गये। इस प्रकार प्रत्येक पंक्ति के सामने एक पर्वत खड़ा कर दिया। मुग़ल सेना के मध्य में ख्वाजा क़ुतलुग़ था। हिजलक बाई ओर तथा तिमुरबूग़ाँ दाहिनी ओर नियुक्त किये गये। इसके उपरान्त मुग़लों के बादशाह ने चार दूत सुल्तान के पास भेजे और कहला भेजा कि "ऐ बादशाह! तूने बड़ी वीर सेना एकत्रित की है किन्तु मैं चाहता हूँ कि तू इन चार दूतों को अपनी सेना का निरीक्षण करने दे ताकि वे सब सरदारों से उनके नाम पूछ लें और यह जानकारी प्राप्त कर लें कि किस ओर कौन नियुक्त है। सुल्तान ने मुग़ल दूतों को सेना के निरीक्षण करने का आदेश दे दिया। वे निरीक्षण करने के उपरान्त वापस हो गये। (२६०-२६१) जफ़र ख़ाँ के पुत्र ने एक ऐसा आक्रमण किया कि तिमुर परेशान हो गया। उसके पीछे विश्वविजेता ख़ान ने मुग़ल सेना में मार काट प्रारम्भ कर दी। हिजलक ने जफ़र ख़ाँ की सेना पर आक्रमण किया किन्तु वह उसका मुकाबला न कर सका। जफर ख़ाँ के आक्रमण से हिजलक अपनी सेना की ओर भाग गया। ख़ान ने उसका पीछा किया। उसके आक्रमण से मुग़ल सेना भाग खड़ी हुई। ख़ान के कारण हिन्दुस्तानी क़ैदी भी मुक्त हो गये। ख़ान ने कुछ फ़रसंग तक मुग़ल सेना का पीछा किया। उसकी सेना उसका साथ न दे सकी। मुग़लों की एक सेना घात में बैठी हुई थी। उनकी संख्या १० हज़ार थी और तरग़ी उनका सरदार था। (२६२-२६३) ज़फ़र ख़ाँ के साथ कुल एक हज़ार सेना थी। उसने अलीशाह, उस्मान आख़ुर बक तथा उस्मान यग़ाँ को परामर्श दिया कि मुग़लों की सेना के सामने से भागना उचित नहीं किन्तु सरदार युद्ध के पक्ष में न थे, परन्तु ख़ान के साहस दिलाने पर वे तैयार हो गये। मुग़लों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। (२६४-२६५) उसने मुग़लों की आधी सेना काट डाली किन्तु उसके पास केवल २०० सवार शेष रह गये थे। तरग़ी ने अपनी सेना को लज्जित करके ख़ान पर आक्रमण करने के लिए पुनः तैयार किया; मुग़लों ने उसे घेर लिया। मुगलों ने तीर मार मार कर ख़ान की हत्या करदी। (२६६-२६७) सुल्तान ने उलुग ख़ाँ को ज़फ़र ख़ाँ की सहायता के लिए भेजा किन्तु उसने जाने में विलम्ब किया। जब सुल्तान को जफ़र ख़ाँ की हत्या का हाल मालूम हुआ तो उसे बड़ा दुःख हुआ। सुल्तान के सरदारों ने उसे परामर्श दिया कि अब क़िले की ओर लौट जाना चाहिये और वहीं से युद्ध करना चाहिये किन्तु सुल्तान ने उत्तर दिया कि बादशाहों को युद्ध में अपना स्थान न छोड़ना चाहिये। इसके उपरान्त मुग़लों ने पुनः आक्रमण कर दिया। प्रातःकाल से सायंकाल तक युद्ध होता रहा। रात्रि में मुग़ल सेना कीली से २ कोस पीछे हट गई।

दूसरे दिन पुनः मुग़ल सेना ने आक्रमण किया। हिन्दुस्तान के बादशाह ने अपनी सेना सहित उनसे फिर युद्ध किया। रात्रि में फिर मुग़ल सेना अपने देश की ओर वापस हो गई और १० मील तक निकल गई। (२६८-२६९) मुग़ल सेना के भाग जाने के उपरान्त देहली की सेना राजधानी की ओर लौट गई।

मुग़लों के आक्रमण से निश्चिन्त हो जाने के उपरान्त सुल्तान ने सरदारों को अपनी अपनी अक़्ता की ओर वापस जाने का आदेश दे दिया। उलुग़ ख़ाँ ने झायन पर आक्रमण किया। जब उलुग़ ख़ाँ को यह ज्ञात हुआ कि मुग़लों (मुसलमानों) में से दो व्यक्ति राय हमीर की शरण में पहुँच गये हैं तो उसने एक दूत राय के पास भेजा और उसे लिखा कि क़मीज़ी मुहम्मद शाह तथा काभरू दो विद्रोही तेरी शरण मे आ गये है। (२७०-२७१) तू हमारे दुश्मनों की हत्या कर दे अन्यथा युद्ध के लिये तैयार हो जा। हमीर ने अपने मन्त्रियों से परामर्श किया। उन्होंने उसे राय दी कि हमें युद्ध न करना चाहिये और उन दोनों को उनके सिपुर्द कर देना चाहिये। हमीर ने उत्तर दिया कि जो मेरी शरण में आ चुका है उसे मैं किसी प्रकार हानि नहीं पहुंचा सकता चाहे प्रत्येक दिशा से इस किले पर अधिकार जमाने के लिये तुर्क एकत्रित क्यों न हो जायं। राय हमीर ने उलुग ख़ाँ को भी उत्तर लिख भेजा कि "जो लोग मेरी शरण में आ गये हैं, उन्हें मैं किसी प्रकार तुझको नहीं दे सकता। यदि तू युद्ध करना चाहता है तो मैं तैयार हूँ"। उलुग ख़ाँ ने यह उत्तर पाकर रणथम्बोर पर आक्रमण करके क़िले के निकट पहाड़ी के दामन में शिविर लगा दिये किन्तु उसने देखा कि क़िले तक पक्षी भी न पहुँच सकते थे। यह देखकर उलुग़ ख़ाँ ने सुल्तान से सहायता करने की प्रार्थना की। (२७२-२७३) सुल्तान ने तुरन्त हमीर पर आक्रमण करने के लिये शहर के बाहर शिविर लगा दिये। दूसरे दिन वह तिलपट से झायन की ओर रवाना हो गया। शाही सेना ने हमीर के क़िले के निकट पहुँच कर क़िले के चारों ओर शिविर लगा दिये। रात-दिन युद्ध होने लगा, प्रत्येक दिशा में ऊँचे-ऊँचे गरगच तैयार किये गये। शाही सेना जो भी युक्ति करती, राय उसकी काट कर देता। यदि तुर्क खाइयों को लकड़ी से पाट देते थे तो रात्रि में हिन्दू लकड़ी को जला देते थे। एक वर्ष तक क़िले को कोई हानि न पहुँच सकी। इसके उपरान्त बादशाह ने एक ऐसी युक्ति की जिसकी काट राय न कर सका। उसने आदेश दिया कि समस्त सैनिक चमड़े तथा कपड़ों के थैले बना बना कर मिट्टी से भर दें और उन थैलों द्वारा खाई को पाट दें। इस प्रकार क़िले पर आक्रमण करने के लिए मार्ग तैयार हो गया। दो तीन सप्ताह तक घोर युद्ध होता रहा। राय हमीर ने जौहर का आयोजन किया। अपनी समस्त बहुमूल्य वस्तुएं जला डालीं। इसके उपरान्त सब से विदा होकर युद्ध के लिये निकला। फ़ीरोज़ी मुहम्मद शाह तथा काभरू भी युद्ध के लिये उसके साथ निकले। राय हमीर युद्ध करता हुआ मारा गया। शहर की विजय के उपरान्त शहन्शाह देहली की ओर वापस हो गया।

कहा जाता है कि किले की विजय के पूर्व हाजी मौला ने देहली में विद्रोह कर दिया। वह रत्तक ग्राम का रहना था। उसने देहली पहुँच कर कुछ षड्यन्त्रकारियों को एकत्रित कर लिया और त्रिमिज़ी कोतवाल की हत्या करदी। शहर के एक तिहाई भाग पर अपना अधिकार जमा लिया। बादशाह के हितैषी दल ने उस पतित पर आक्रमण करके उसे भगा दिया। (२७६-२७७) उस सेना के आक्रमण के पूर्व उलुग़ ख़ाँ को बादशाह ने सेना देकर देहली की ओर भेज दिया था। जब उलुग़ ख़ाँ देहली पहुंचा तो सब लोग शान्त हो गये। इसके उपरान्त उलुग़ ख़ाँ देहली से बादशाह के पास वापस हो गया। जब बादशाह विजय के उपरान्त देहली पहुँचा तो वह देहली में प्रविष्ट न हुआ। एक मास तक देहली के बाहर ही रहा और

सेना एकत्रित करता रहा। तत्पश्चात् वह शहर में प्रविष्ट हुआ। कुछ समय उपरान्त वह चित्तौड़ पर आक्रमण करने के लिये निकला और तिलपट में शिविर लगा दिये। सुल्तान कुछ दिन तिलपट में रुका रहा। सुल्तान के चाचा के पुत्र सुलेमान शाह को, जिसे सुल्तान ने अकद खाँ की पदवी प्रदान करदी थी, कुतलुग़ खाँ ने मिला दिया। उन लोगों ने शेर-शेर चिल्लाकर बादशाह पर आक्रमण कर दिया। उसे कुछ तीर मारे किन्तु सुल्तान तख्त के नीचे गिर पड़ा। उसका हाथ घायल हो गया। उन लोगों ने कुछ और तीर चलाये। जब उन्होंने यह देखा कि बादशाह की मृत्यु हो गई तो वहाँ से वापस हो गये। (२७८-२७९) कहा जाता है कि उस समय २-३ हिन्दुस्तानियों ने उन लोगों से यह कहा कि बादशाद की हत्या हो चुकी है। अब उसका शीश काटने से कोई लाभ नहीं। जब वे लोग वहाँ से वापस हो गये तो सुल्तान के दासों ने उसके घाव धोकर बाँधे और उसे सवार करके सेना के सम्मुख ले गये। जो लोग बादशाह को देखते थे वे लोग उसके सहायक हो जाते थे। जब सुलेमान शाह ने यह देखा तो उसने सुल्तान से युद्ध करने के लिये सेना भेजी। अलीशाह शहनये पील हाथियों की सेना आगे ले जाकर सुल्तान से मिल गया। क़ुतलुग़ खाँ तथा अकद खाँ भाग गये किन्तु वे बन्दी बना लिये गये। अकद खाँ पकड़ लिया गया और उसका सिर काट लिया गया। सुल्तान को जब उसकी हत्या की सूचना मिली तो वह बड़ा दुःखी हुआ। इसके उपरान्त सुल्तान ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। राय ८ मास तक युद्ध करता रहा किन्तु ८ मास के उपरान्त राय ने क्षमा याचना की और सुल्तान ने उसे खिलअत देकर सम्मानित किया। शिरजा नामक एक वीर को सुल्तान अपना पुत्र कहता था। उसे उसने मलिक नायब नियुक्त किया और उसकी पदवी ख़ुसरो ख़ाँ निश्चित की और उसे चित्तौड़ मे छोड़कर देहली वापस आ गया।

कहा जाता है कि सुलेमान शाह ने जब सुल्तान पर आक्रमण कर दिया तो एक दास ने उलुग़ ख़ाँ के पास पहुँच कर उसे इस षड्यन्त्र की सूचना दी। (२८०-२८१) उलुग ख़ाँ ने गुप्त रूप से सरदारों को सूचना दी कि "यदि बादशाह की मृत्यु हो गई तो क्या हुआ मैं तो मौजूद ही हूँ।" उस परामर्श गोष्ठी में सुल्तान का एक विश्वास-पात्र भी मौजूद था। उसने उसकी सूचना सुल्तान को दे दी। जब सुल्तान को यह सूचना मिली तो उसने उलुग खाँ को गुप्त रूप से शर्बत में ज़हर दिलवा दिया।

शाहीन के पृथक् हो जाने के पश्चात् सुल्तान ने काफ़ूर को उन्नति प्रदान की। उसे मलिक नायब बनाया। रामदेव ने सुल्तान के पास सूचना भेजी कि भिल्लम ने सुल्तान का विरोध प्रारम्भ कर दिया है और मुझे भी उसके कारण विशेष कष्ट है। मैं कभी भी अपने वचन से न फिरूँगा। यदि सुल्तान अपना कोई दास इस ओर भेज दें तो षड्यन्त्र का अन्त हो जायगा। सुल्तान ने यह सुनकर मलिक नायब को उससे युद्ध करने के लिये भेजा। उसने तिलपट में अपने शिविर लगा दिये। (२८२-२८३) धार से निकल कर वह पर्वतों में प्रविष्ट हुआ। पहाड़ों को खोदकर रास्ता बनाया गया। इसी प्रकार मार्ग बनाते हुये सागौन घाटी को पार किया। भिल्लम को सेना के पहुंचने की सूचना मिली। भिल्लम, रावत तथा रामदेव शाही सेना देखकर बड़े घबड़ाये। सेना ने शहर में लूटमार प्रारम्भ करदी। राय को समस्त धन-सम्पत्ति के साथ सुल्तान की सेवा में भेज दिया। सुल्तान ने राय का आदर सम्मान किया और उसे २ लाख सोने के तनके प्रदान किये। उसकी पदवी राय रायां निश्चित की और उसे देवगीर वापस जाने का आदेश दे दिया।

इसके उपरान्त सुल्तान को सूचना मिली कि तरग़ी मुग़ल ने २०० हज़ार सेना लेकर आक्रमण कर दिया है। (२८४-२८५) सुल्तान ने चारों ओर से सेना एकत्रित की। मुग़ल सेना भी पहुँच गई। वे लोग अपनी प्रथा के अनुसार ढोल पीटते तथा शोर मचाते थे। जब

तरग़ी ने सुल्तानी सेना के शिविर देखे तो वे वहाँ से हट कर दूसरे स्थान पर रुके। ४० दिन तक वहीं ठहरे रहे उसके उपरान्त वापस चले गये।

उनके वापस चले जाने के पश्चात् सुल्तान ने सेना के सरदारों को उनकी अक़्ताओं की ओर भेज दिया। अलप ख़ाँ ने मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। वह शहन्शाह के ससुर का पुत्र था। मलिक अहमद झीतम जिसे सुल्तान ने क़राबेग नियुक्त कर दिया था गुजरात की ओर रवाना हुआ। जब वह पटन से चार फ़रसंग की दूरी पर पहुँच गया तो रातों रात धावा करके दिन में पटन पहुँच गया। करण पहले मरहठा राज्य की ओर भागा किन्तु वहाँ उसे कोई स्थान न मिला, अतः वह तिलंग की ओर भागा। रुद्र ने उसे शरण दी। जब मलिक अहमद पटन पहुँचा तो उसने करण की समस्त धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया। उसकी एक रूपवान पुत्री दिवल तथा अन्य रानियाँ गिरफ़्तार हुईं। सेना ने दो एक महीने वहाँ पड़ाव किया। इसके उपरान्त मलिक अहमद सुल्तान के आदेशानुसार देहली वापस हो गया। (२८६-२८७)

उसके उपरान्त सुल्तान ने अलप खां को मुल्तान में आदेश भेजा कि वह गुजरात पर आक्रमण करे। मुग़लों की एक सेना तहरी के मार्ग से पहुँच चुकी थी। अलप ख़ाँ को मुग़लों से युद्ध करने का आदेश भी दिया गया। दीपालपुर का शासक मलिक तुग़लक़ भी खान से मिल गया। इस प्रकार दोनों सेनाओं ने मुग़लों का मार्ग रोक दिया। शाही सेना ने काफ़िरों की सेना के अनेक वीरों का विनाश कर दिया। कहा जाता है कि इस आक्रमण के अवसर पर मुग़लों के परिवार भी उनके साथ थे। १८ हज़ार मुग़ल तथा उनके परिवार बन्दी बना लिए गये।

जब निकट के स्थानों पर युद्ध करने के लिये कोई स्थान न रह गया तो सुल्तान ने मलिक नायब को तिलंग पर आक्रमण करने का आदेश दिया। (२८८-२८९) सुल्तान ने उसे आदेश दिया कि यदि तिलंग का राय अधीनता स्वीकार करले तो उसका राज्य उसे वापस कर दिया जाय और उसे ख़िलअत तथा चत्र प्रदान हो। मलिक नायब ने अरंगल की ओर प्रस्थान किया और तिलंग की सीमा पर पहुँच कर उसका विनाश प्रारम्भ कर दिया। तिलंग प्रदेश की लूट मार के उपरान्त मलिक नायब ने तिलंग के क़िले के चारों ओर शिविर लगा दिये। एक मास तक रात दिन सेना शत्रुओं का रक्त-पात करती रही। एक मास के उपरान्त तिलंग के राय ने नम्रतापूर्वक हाथी तथा धन-सम्पत्ति देकर अधीनता स्वीकार करली। धन सम्पत्ति के साथ २३ हाथी भी प्राप्त हुए। मलिक नायब ने सुल्तान के आदेशानुसार उसके लिये क़िले में चत्र तथा ख़िलअत भिजवाया। दूसरे दिन वहाँ से देहली वापस हो गया। बादशाह ने उसे तथा अन्य सरदारों को सम्मानित किया।

इसके तीन चार दिन के उपरान्त दुग़ तरग़ी ने दूसरी बार आक्रमण कर दिया। (२९०-२९१) चारों ओर से सेनायें एकत्रित की गईं। तरग़ी ने देहली को चारों ओर से घेर लिया। एक माह तक वह देहली में प्रविष्ट होने का प्रयास करता रहा किन्तु सफल न हो सका। एक मास उपरान्त निराश होकर वह हिन्दुस्तान से वापस चला गया।

मुग़लों के आक्रमण के उपरान्त सुल्तान ने मलिक नायब को बलाल से युद्ध करने के लिए माबर की ओर भेजा। कहा जाता है कि माबर में हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध मन्दिर था जो कि पूरा विशुद्ध सोने का बना था। उसके भीतर मोती लाल तथा जवाहरात जड़े थे। सुल्तान ने मलिक नायब को आदेश दिया कि सर्व प्रथम वह मन्दिर का सोना प्राप्त करे। उसके उपरान्त उस प्रदेश की धन सम्पत्ति पर अधिकार जमाये। (२९२-२९३) मलिक नायब सुल्तान के आदेशानुसार ४० दिन के अन्दर देवगीर पार करके बलाल की सीमा पर पहुंच

गया। जब बलाल को यह सूचना मिली तो उसने मलिक नायब की सेना में हाथी घोड़े तथा सम्पत्ति भेज कर सन्धि करली। एक सप्ताह उपरान्त मलिक नायब ने उससे माबर का मार्ग दर्शाने के लिये कहा। बलाल ने स्वीकार कर लिया और सेना माबर की ओर चल पड़ी। (२९४-२९५)

मलिक नायब की सेना में बहराम कबरा, क़ुतला निहंग, महमूद, सरबत्ता तथा अबाजी मुग़ल भी थे। इन पांचों में से प्रत्येक प्रति दिन सूचना प्राप्त करने के लिये आगे-आगे जाया करता था। अबाजी ने यह सोचा कि मैं माबर के राय के पास चला जाऊँ और उसका सहायक बन जाऊँ तथा तुर्कों की सेना के समाचार उसे पहुंचा दूँ ताकि वे रात्रि में तुर्कों पर आक्रमण करके उनकी हत्या कर दें। यह निश्चय करके वह सेना से कुछ फ़रसंग की दूरी पर पहुंचा किन्तु हिन्दुओं की सेना के एक दल ने उस पर आक्रमण कर दिया। उसका व्याख्या करने वाला मारा गया। अबाजी की सेना परास्त हुई। तीसरे दिन अबाजी शाही सेना में पहुंचा। मलिक नायब ने उसे बन्दी बना लिया। वहाँ से वह माबर की ओर रवाना हुआ और बलाल की सहायता से वह माबर पहुँच गया। उसने सोने के मन्दिर का विनाश कर दिया। कहा जाता है कि उस समय माबर ५ व्यक्तियों के अधीन था और पंच पाण्डिया कहलाता था। वे पाँचों एक ही माता पिता के पुत्र थे और एक दूसरे के सहायक बने रहते थे। वे पाँचों वहाँ से भाग गये और उनका राज्य तुर्कों के अधीन हो गया। (२९६-२९७) ७०० हाथी शाही सेना को प्राप्त हुये। ६ मास उपरान्त वे देहली पहुँचे। सुल्तान ने नायब मलिक को ख़ास खिलअत प्रदान किया। बलाल को, जिसे मलिक नायब अपने साथ ले गया था सम्मानित किया और खिलअत तथा चत्र प्रदान किये। उसे १० लाख तनके देकर उसके राज्य की ओर वापस कर दिया।

सुल्तान ने विद्रोही अबाजी के विषय में यह आदेश दिया कि उसकी हत्या कर दी जाय। उस समय देहली में १० हज़ार से अधिक मुग़ल थे। वे लोग स्वयं बादशाह बनने के लिये षड्यन्त्र रचा करते थे। सुल्तान ने समस्त स्थानों के मुक़्तों को आदेश दिया कि वे मुग़लों को पकड़ कर एक दिन निश्चित समय पर मार डालें। (२९८-२९९)

सुल्तान अलाउद्दीन के २० वर्ष के राज्यकाल में सेना ने अनेक स्थानों पर अधिकार प्राप्त किया। उसके राज्य काल में मुगलों ने ७ बार सिन्ध नदी पार करके आक्रमण किया किन्तु वे सफल न हो सके। उसने देहली के चारों ओर एक दृढ़ हिसार (चहार दीवारी) बनवाया। उसने अलमूतियों का विनाश कर दिया। वे लोग अपनी स्त्रियों तथा पुत्रियों में कोई भेद-भाव न समझते थे। हिन्दुस्तान के लोग इन्हें हिन्दी भाषा में बौरा (बुहरा) कहते हैं। सुल्तान ने इन लोगों से संसार को रिक्त कर दिया। यदि कोई उसके राज्य में शराब पीता तो उसका घरबार तबाह कर दिया जाता था। उसके राज्य काल में चीज़ें इतनी सस्ती थीं कि गुलाब तथा शहद पानी के भाव बिकते थे। लोगों को दीन (धर्म) के अतिरिक्त किसी वस्तु की चिन्ता न थी। सर्व साधारण के विषय में वह हमेशा चिन्तित रहा करता था। जब वह काफ़िरों के विनाश से निश्चिन्त हो गया और हिन्दुस्तान में कोई उसका सामना करने वाला न रहा तो उसने उस सैर के स्थान पर, जहाँ पहले एक महल था, एक क़िला निर्मित कराया। वह क़िला इस कारण से कि कोई उसके राज्य में भूखा न रहता था, सीरी कहलाया। (३००-३०१)

इस प्रकार जब वह निश्चिन्त हो गया था, उसे सूचना मिली कि अलीबेग तथा तरताक़ ने आक्रमण कर दिया है। सुल्तान ने सेना के सरदार नानक को आदेश दिया कि वह युद्ध की तैयारी करे। मलिक नानक आख़ुरबक मैसरा बड़ा ही वीर था। जब वह हाँसी सिरसावे

के निकट पहुंचा तो उसे मुग़ल सेना दृष्टिगोचर हुई। जब हिन्दुस्तान की सेना ने मुग़ल सेना के मध्य भाग पर आक्रमण किया तो अलीबेग तथा तरताक़ की सेना भाग गई। अलीबेग तथा तरताक़ बन्दी बना लिये गये। मुगल सैनिकों के ३० हजार घोड़े शाही सेना को प्राप्त हो गये। नानक, विजय के उपरान्त देहली की ओर वापस हो गया। सुल्तान ने विजय की प्रसन्नता में दरबारे आम किया। मुग़लों के दोनों सरदार तथा २-३ हज़ार सैनिक पेश किये गये। (३०२-३०४) सुल्तान ने मुग़लों को ऊँटों पर बिठा कर शहर में घुमवाया। कुछ समय उपरान्त अलीबेग तथा तरताक़ को मुक्त कर दिया और उन्हें खिलअत प्रदान की। दो मास उपरान्त तरताक़ ने एक दिन मदिरा के नशे मे कहा कि 'मेरी सेना कहां है तथा मेरा घोड़ा निशंक एवं टोपी किस स्थान पर हैं ?" जब बादशाह ने यह सुना तो तुरन्त उसकी हत्या का आदेश दे दिया। एक दो वर्ष उपरान्त अलीबेग की भी यही दशा हुई। (३०५)

कहा जाता है कि बरन का एक हिन्दू तबीब (चिकित्सक) अपने कार्य में बड़ा दक्ष था। वह किसी से कुछ न लेता था, केवल कृषि द्वारा जीवन निर्वाह करता था। एक रात्रि में जब वह सो रहा था तो लंका के अहरमन (शैतान) अपने राजा भिभीखन की चिकित्सा के लिये उसे लंका उठा ले गये। जब वह जागा तो उस नगर तथा नगर वासियों को देखकर आश्चर्य में पड़ गया। भिभीखन एक सोने के राज सिंहासन पर बैठा था, वहाँ कुछ लोग मनुष्य के समान थे, कुछ हाथी के जैसा शरीर रखते थे। कुछ बैल के और कुछ शेर के समान थे किन्तु उनके सींग थे। कुछ लोगों का शरीर अजगर से समान था। उन लोगों ने उससे भिभीखन की चिकित्सा की प्रार्थना की। उसने सोचकर उत्तर दिया कि अपने राजा के खाने पीने की समस्त वस्तुएँ एकत्रित करो जिससे उसकी चिकित्सा के विषय में कोई उपाय किया जा सके। नाना प्रकार की वस्तुएँ, नदी की ३-४ हज़ार मछलियाँ, १० हज़ार भैंस तथा ऊँट एवं अनेक भुने हुए मनुष्य एकत्रित किये गये। भिभीखन वह समस्त वस्तुएँ खा गया। वैद्य ने यह देखकर कहा कि यदि तू तीन परहेज़ करे तो इस रोग से मुक्त हो सकता है :—

(१) कोई चीज़ अकेले मत खा। (२) अत्यधिक मत खा। (३) मनुष्य मत खा। यदि तू इससे भी स्वस्थ न होगा तो मैं तेरे लिये घर से दवा लाऊँगा। (३०६-३०८) भिभीखन ने ३ दिन तक परहेज़ किया और इसी से वह स्वस्थ हो गया। उसने वैद्य को बुलाकर कहा कि, "तुझे जिस वस्तु की भी इच्छा हो मुझे बता दे, मैं उसे पूरा कर दूँगा।" वैद्य ने अहरमन से कहा कि, तू मुझे अपने घर भेज दे। जब अहरमन ने उससे कुछ स्वीकार करने के विषय में आग्रह किया तो उसने उत्तर दिया कि मैं केवल कृषि द्वारा जीवन निर्वाह करता हूं, मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। अहरमन को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ किन्तु उसने उसे परामर्श दिया कि खेती में यदि कोई अपहरण नहीं करता तो फिर अहरमन उसे कोई हानि नहीं पहुँचाते। इसके उपरान्त अहरमन ने वैद्य को एक मेवा दिया और कहा कि इसमें विशेष लाभ हैं। इसे तू और तेरे मित्र खायँ। तत्पश्चात् इसके २-३ बीज किसी बाग़ में डाल देना। प्रत्येक बीज से एक वृक्ष पैदा हो जायगा जो साल भर फल दिया करेगा। जब रात्रि में वैद्य सो गया तो अहरमनों ने उसे उसी स्थान पर पहुँचा दिया जहाँ से उसे लाये थे। (३०९-३१०) उसने अपने परिवार वालों तथा पड़ौसियों को सब हाल बताया। शीघ्र ही यह कहानी समस्त नगर तथा राज्य में प्रसिद्ध हो गई। खेत बोने का समय भी आ चुका था। उसने अहरमन के परामर्शों पर आचरण किया। कहा जाता है कि एक योग्य क़ाइन जो कि अपने समय का बलीनास था, पैमाइश करता हुआ उसके खेत पर पहुँचा। उसने उसके खेत में बड़ी अच्छी पैदावार देखी। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने वैद्य से पूछा कि इस प्रकार की पैदावार कहीं नहीं देखी गई। वैद्य ने उसे सब हाल बता दिया। यह सुनकर उसने वैद्य को सुल्तान की सेवा

में भेज दिया। (३११) वह अहरमन के दिये हुये २-३ बीज भी अपने साथ लेता गया और बादशाह को यह सब हाल बता दिया। बादशाह ने यह सुनकर उसे विशेष-रूप से सम्मानित किया और आदेश दिया कि उससे तथा उसकी सन्तान से भी कर न वसूल किया जाय। बादशाह ने आजीवन अपहरण का विनाश प्रारम्भ कर दिया। उसकी सच्चाई का प्रभाव समस्त वस्तुओं पर पड़ा और सभी वस्तुओं का मूल्य १/१० हो गया। समस्त साधारण तथा विशेष व्यक्तियों को उसके राज्य से आराम हो गया किन्तु उसकी मृत्यु के उपरान्त सत्य का अन्त हो गया। (३१२)

कहा जाता है कि बादशाह ने एक दिन एक महफ़िल का आयोजन किया जिसमें यग़ाँ ख़ाँ क़ीरबक आदि उपस्थित थे। मदिरापान तथा संगीत एवं नृत्य हुआ। उस समय बादशाह के एक विश्वासपात्र ने उससे कहा कि, "यद्यपि मदिरा बड़े आनन्द की वस्तु है किन्तु संसार में बादशाह को निर्बल तथा निस्सहाय लोगों के विषय मे विशेष ध्यान रखना चाहिये। मैने सुना है कि आज मंडी में दुर्भिक्ष के कारण इतने व्यक्ति एकत्रित हो गये थे कि २-३ निर्बल व्यक्ति कुचल गये।" बादशाह को इसका बड़ा दुःख हुआ। उसने आदेश दिया कि प्याले तोड़ डाले जायँ, मधुशालाओं मे आग लगा दी जाय। नक़ीबों द्वारा यह सूचना करा दी कि, "जो कोई मदिरापान करेगा उसे कठोर दण्ड दिये जायगे। अनाज एकत्रित किया जाय और पिछले भाव पर बेचा जाय। ऐहतेकार करने वालों को मृत्यु दण्ड दिया जाय।" (३१४) सूर्यास्त के उपरान्त प्रत्येक दिन बरीद बाज़ार की सूचना बादशाह को पहुंचाते थे। प्रत्येक वस्तु के भाव की सूचना उसे सायंकाल दी जाती थी। कहा जाता है कि दस दिन में उसने पुनः रौनक़ पैदा कर दी।

शहर (देहली) तथा क़स्बों के संतुष्ट हो जाने के उपरान्त सुल्तान ने देहली से सिवाना की ओर प्रस्थान किया और सिवाना का क़िला घेर लिया। ४० दिन तक युद्ध होता रहा किन्तु सफलता न प्राप्त हो सकी। (३१५) इसके उपरान्त सुल्तान ने क़िले के चारों ओर सेना के भिन्न भिन्न दल नियुक्त किये। सब ने मिलकर एक बार आक्रमण कर दिया। हिन्दुओं ने बड़ा प्रयत्न किया किन्तु वे सफल न हुये। सीतल निराश हो गया। शाही सेना क़िले में घुस गई और सीतल को गिरफ़्तार कर लिया। सीतल की हत्या कर दी गई। (३१६-३१७) उसके वापस होने के कुछ समय पश्चात् मुल्तान से सूचना प्राप्त हुई कि मुगलों ने आक्रमण कर दिया है। मुग़ल सेना का सरदार कबक है। सुल्तान ने मलिक नायब को आदेश दिया कि सेना का अर्ज़ प्रारम्भ कर दे। एक लाख सेना एकत्रित हुई। सुल्तान ने उन्हें एक वर्ष का वेतन प्रदान किया। सेना के सरदारों को विशेष रूप से सम्मानित किया। तुग़लक़, काफ़ूर मरहठा, बंशवाला तथा अन्य हिन्दू सरदारों को खिलअत प्रदान की। इसके उपरान्त सुल्तान ने सेना को आदेश दिया कि वह मुल्तान की ओर प्रस्थान करे। अली वाहन में मुगलों को शाही सेना के पहुँचने के समाचार मिले। वह एक सप्ताह के लिये वहीं ठहर गई। मलिक नायब प्रत्येक दिन अपने यजकियों को आगे भेजा करता था। मलिक तुग़लक़, जिसे सुल्तान ने दीपालपुर की अक़्ता प्रदान कर दी थी और जिसकी पदवी शहनये बारगाह थी, यज़कियों का सरदार होता था। (३१८-३१९) जब यज़कियों को मुग़ल सेना का पता लग गया तो मलिक नायब ने सेना को तैयार होने का आदेश दिया। मुग़ल सेना ने हिन्दुस्तानी सेना के मध्य भाग पर आक्रमण कर दिया। कबक ने घोर परिश्रम किया किन्तु हिन्दुस्तानी सेना के मध्य भाग को कोई हानि न पहुँच सकी। कबक स्वयं गिरफ़्तार हो गया। मुग़ल भाग निकले (३१९-३२०) मलिक नायब मुग़ल सेना को पूर्ण रूप से पराजित करके राजधानी की ओर लौट पड़ा। शहर में बड़ा समारोह हुआ और कुछ समय उपरान्त कबक की हत्या कर दी गई।

सुल्तान का ज्येष्ठ पुत्र खिज्र् खाँ करण राय की पुत्री दिवल रानी पर आसक्त था। (३२२) सुल्तान ने उसे बहुत रोका किन्तु जब खिज्र् पर कोई प्रभाव न हुआ तो उसने अलप खाँ की पुत्री का विवाह शाहज़ादे से कर दिया। कहा जाता है कि अलप खाँ गुजरात से बड़े समारोह से उपस्थित हुआ। रामदेव देवगीर से तथा अन्य इक़लीमदार उपस्थित हुये। शहर में बड़ी धूमधाम हुई। कुब्बे सजाये गये। अन्तःपुर में जलवे का स्थान विशेष रूप से सजाया गया। सद्रेजहाँ ने निकाह का खुत्बा पढ़ा। (३२४-३२५) शाहज़ादा इस विवाह से सन्तुष्ट न हुआ। उसकी माता ने उसे समझाने का प्रयत्न किया किन्तु उस पर उसके समझाने का कोई प्रभाव न पड़ा। (३२६-३२७)

इसके उपरान्त एक दिन सुल्तान को देवगीर के एक यात्री द्वारा यह सूचना मिली कि बादशाह के हितैषी रामदेव की मृत्यु हो गई है और उसके स्थान पर भिल्लम राजसिंहासन पर विराजमान है। उसने सुल्तान का विरोध प्रारम्भ कर दिया है। सुल्तान ने मलिक नायब को आदेश दिया कि वह देवगीर पर आक्रमण करे और यदि भिल्लम गिरफ़्तार हो जाय तो उसे देहली भेज दे। उस राज्य पर अपना अधिकार जमा ले। वहाँ एक जुमा मस्जिद का निर्माण करदे और इस्लाम का प्रचार करे। मलिक नायब सेना लेकर सागौन घाटी तक पहुंच गया और वहाँ भिल्लम के विनाश की योजनायें बनाने लगा। भिल्लम यह सूचना पाकर भाग गया। मलिक नायब ने तुरन्त देवगीर पहुंच कर क़िले पर अधिकार जमा लिया। उसने किसी की हत्या न की और शहर के निवासियों को कोई हानि न पहुँचाई। उसने उस नगर तथा राज्य को सुव्यवस्थित किया। मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदें बनवाईं।

उस प्रदेश को सुव्यवस्थित कर देने के उपरान्त वह विरोधी अक़्ता के स्वामियों पर आक्रमण किया करता था। इसी बीच में कूमटा के सरदार ने विद्रोह कर दिया। मलिक नायब उसे परास्त करके अपने राज्य (देवगीर) में वापस आ गया। (३३४-३३५) इसी बीच में सुल्तान ने शादी खाँ का विवाह करना भी निश्चय कर लिया था। उसने मलिक नायब को भी बुलवाया। अलप खाँ की पुत्री से शादी खाँ का विवाह किया। इसके उपरान्त सुल्तान ने दिवल रानी से खिज्र् खाँ का निकाह कर दिया।

इसी बीच में सुल्तान बीमार पड़ गया। मलिक नायब ने बादशाह से एकान्त में निवेदन किया कि सभी लोग उसकी हत्या करना चाहते हैं। (३३६-३३७) बादशाह ने उससे पूछा कि इस अवसर पर क्या करना चाहिये? मलिक नायब ने कहा कि, "अलप खाँ उपद्रव की खान है। दो शाहजादे उसके दामाद हैं। उसके पास बहुत बड़ी सेना है। वह बादशाह की मृत्यु की प्रतीक्षा देख रहा है। यदि उसकी हत्या करादी जाय तो शाहजादों से कोई भय न रहेगा। उन्हे किसी क़िले में क़ैद किया जा सकता है।" सुल्तान ने उत्तर दिया कि, "अलप खाँ मेरे पुत्र के स्थान पर है, मैं उसकी हत्या किस प्रकार करा सकता हूं।" दूसरे दिन जब अलप खाँ सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ तो सुल्तान ने उसे अपनी क़िबा प्रदान की। मलिक नायब ने उसे क़िबा पहनाई किन्तु इसी के बाद ही उसकी हत्या करदी। (३३८-३३९)

अलप खाँ की हत्या के उपरान्त हैदर तथा ज़ीरक ने गुजरात पर अधिकार जमा लिया। मलिक नायब ने उस पर आक्रमण करने के लिए दीनार, शहनये पील को गुजरात की ओर भेजा। जब वह गुजरात की सीमा पर पहुंचा तो उसे ज्ञात हुआ कि सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई है।

कहा जाता है कि जब अलप खाँ की हत्या के पूर्व खिज्र् खाँ अपनी माता के साथ पैदल बादशाह के स्वास्थ्य के लिये मज़ारों की ज़ियारत करने को हतनापुर गया था, उसकी अनुपस्थिति में अलप खाँ की हत्या हो गई तो बादशाह ने खिज्र् खाँ को सूचना भेजी

कि वह राज भवन में न आये और अमरोहे चला जाय। (३४०-३४१) वह बड़ा दुखी होकर अमरोहा पहुंचा किन्तु कुछ समय उपरान्त वह राजधानी वापस आ गया। मलिक नायब ने सुल्तान से आदेश प्राप्त करके उसे पकड़वा कर ग्वालियर के क़िले में क़ैद करा दिया। दिवल रानी को भी उसी के साथ क़ैद कर दिया।

मलिक नायब ने सुल्तान का अन्तिम समय देख कर एक सभा की और उमर खाँ को जा कि रामदेव की पुत्री का पुत्र था और जिसकी अवस्था ६ साल कुछ महीने की थी सुल्तान घोषित कर दिया। उसकी पदवी शिहाबुद्दीन निश्चित की (३४२-३४३) वास्तव में मलिक नायब ही बादशाह था और शिहाबुद्दीन केवल नाम मात्र को था।

११ शव्वाल ७१५ हिजरी (८ जनवरी १३१६ ई०) को सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि सुल्तान के मरते ही उसकी अँगूठी मलिक नायब ने उतार ली (३४४-३४५) और उसे एक दास, सम्बल को प्रदान किया और उसे आदेश दिया कि वह ग्वालियर पहुँच कर खिज्र खां को अन्धा कर दे। जब खान ने सम्बल का नाम सुना तो वह समझ गया कि सुल्तान की मृत्यु हो चुकी है और अब उसका भी अन्तिम समय आ गया है। वह दिवल रानी से विदा हुआ। (३४६) सम्बल ने खिज्र खाँ की आँखों में सलाई फेरकर उसे अन्धा बना दिया।

सुल्तान की मृत्यु के उपरान्त मलिक नायब ने ऐनुलमुल्क को देवगीर में सूचना भेजी कि वह तुरन्त गुजरात पर आक्रमण करे। वह सेना लेकर गुजरात की ओर रवाना हुआ किन्तु जब वह चित्तौड़ पहुँचा तब उसे सूचना मिली कि मलिक नायब की हत्या कर दी गई है। वह १-२ मास तक चित्तौड़ ही में रहा और वहाँ से किसी अन्य दिशा में प्रस्थान न किया। कहा जाता है कि मलिक नायब ने सम्बल को ग्वालियर भेज देने के उपरान्त रातों रात शहन्शाह को दफन कर दिया। उसने राज-सिंहासन पर बालक को बिठा दिया और अन्य शाहज़ादों को अर्थात् मुबारक खाँ, शादी ख़ाँ, फ़रीद ख़ाँ, उस्मान खाँ, खान मुहम्मद तथा अबूबक्र खाँ को गिरफ़्तार करा दिया। दूसरे दिन मुबारक खाँ को एक स्थान पर क़ैद कर दिया और शादी खाँ को ग्वालियर भेज दिया।

इस घटना के एक मास उपरान्त सुल्तान के सोने के कमरे के २-३ पायकों ने आपस में परामर्श किया कि यह व्यक्ति जो न पुरुष है और न स्त्री, समस्त स्त्री और पुरुषों को हानि पहुँचा रहा है। उन पायकों के नाम मुबश्शिर, बशीर, सालेह तथा मुनीर थे। (३४८-३४९) उन्होंने परामर्श किया कि उसने अलप खाँ की हत्या कर दी तथा खिज्र खाँ को अन्धा बना दिया। अन्य शहजादों का भी जीवन ख़तरे में है। हम लोग मिलकर उसकी हत्या कर दें तो बड़ा ही उत्तम होगा। मलिक नायब को इस बात की सूचना मिल गई। उसने एक पहर रात्रि व्यतीत हो जाने के उपरान्त मुबश्शिर को बुलवाया। मुबश्शिर समझ गया कि सम्भव है कि मलिक नायब को सब कुछ ज्ञात हो चुका है। इसके उपरान्त उसने अपने मित्रों से कहा 'कि आज की रात्रि में जो सो जायेगा मैं उसका शीश काट डालूँगा।' तत्पश्चात् वह हथियार लगा कर मलिक नायब के महल की ओर रवाना हुआ। जब वह महल के निकट पहुँचा तो एक व्यक्ति ने उस से आकर कहा कि अपने हथियार इसी स्थान पर रख दे। मुबश्शिर ने उत्तर दिया कि "मैं संसार के बादशाह के सोने के कमरे की रक्षा करता हूँ। (३५०) मैंने कभी तलवार और ढाल प्रसिद्ध बादशाह (अलाउद्दीन) के समय में भी पृथक् न की।" यह कहकर वह महल में प्रविष्ट हो गया और उस छली, कमीने के एक तलवार मारी। प्रत्येक दिशा से उसके मित्र (मलिक नायब) पर टूट पड़े और उसका सिर काट डाला। नायब के २-३ मित्र दौड़े किन्तु पायकों ने उनकी भी हत्या कर दी। पायकों ने शीघ्र

मुबारक ख़ाँ को बन्दी गृह से छुड़ा लिया। प्रातःकाल सभी उस उपद्रवकारी की हत्या की सूचना पाकर प्रसन्न हुये। मुबारक ख़ाँ से बालक बादशाह का नायब बनने की प्रार्थना की गई। मुबारक ख़ाँ ने उत्तर दिया कि 'मुझे किसी अधिकार की इच्छा नही। मुझे तथा मेरी माता को किसी अन्य देश में चले जाने की आज्ञा प्रदान की जाय।' (३५१) मुबारक ख़ाँ ने उन लोगों के आग्रह से नायब बनना स्वीकार कर लिया। वह दो मास तक नायब रहा। वह बालक, जिसे सुल्तान ने अपने स्थान पर बादशाह बना दिया था, रामदेव की पुत्री झिताई का पुत्र था। जब उसने ख़ान को कुशलता से प्रबन्ध करते देखा तो उसने ईर्ष्या के कारण उसे विष दे देने की योजना बनानी प्रारम्भ कर दी। ख़ान के एक हितैषी ने उसे इस षड्यन्त्र की सूचना दे दी। राज्य के स्तम्भों ने ख़ान से कहा कि बालक बादशाही के योग्य नहीं होते, अतः आपको बादशाह बन जाना चाहिये। (३५२-३५३) उनके आग्रह पर मुबारक शाह राज सिंहासन पर विराजमान हो गया। उसके राज सिंहासन पर विराजमान होते ही बन्दी गृहों से समस्त बन्दियों को मुक्त कर दिया। वह ७१६ हिजरी (१३१६-१७ ई०) में राज सिंहासन पर विराजमान हुआ। प्रत्येक नगर तथा राज्य से उस वर्ष का खिराज वसूल न किया और न कृषकों से भूमि कर लिया।

सुल्तान क़ुतुबुद्दीन (मुबारक शाह) ने तुग़लक़ को ऐनुल-मुल्क के पास भेजकर उसे यह आदेश दिया कि वह गुजरात पर आक्रमण करे। (३५४-३५५) तुग़लक़ ने चित्तौड़ पहुँच कर ऐनुलमुल्क को बादशाह का सन्देशा पहुँचा दिया। उसने सेना के अन्य सरदारों को बुलाकर परामर्श किया। सभी ने उत्तर दिया कि "हम लोगों में से किसी ने उसके दर्शन नहीं किये हैं; हम नही समझते कि उसके आदेशों के पालन का क्या प्रभाव होगा। एक दो मास तक हमें प्रतीक्षा देखनी चाहिये।" सरदारों की यह बात सुनकर सेनापति चुप हो गया। जब तुगलक़ को यह हाल मालूम हुआ तो वह तुरन्त बादशाह की सेवा मे उपस्थित हुआ और उससे निवेदन किया कि "अभी तक सरदारों में से किसी ने संसार के बादशाहों के दर्शन नहीं किये हैं। यदि बादशाह की इच्छा है कि वे उसकी आज्ञा का पालन करें, तो उसे चाहिये कि प्रत्येक सरदार को पृथक्-पृथक् ख़िलअत भेजे तथा उन्हें प्रोत्साहन दे।" बादशाह ने आदेश दिया कि प्रत्येक के लिये पृथक्-पृथक् फ़रमान तथा ख़िलअतें भेजी जायें। जब सब को फ़रमान तथा ख़िलअतें प्राप्त हो गई और जब सभी वीर बादशाह के आज्ञाकारी बन गये तो तुग़लक़ ने ऐनुलमुल्क को सुल्तान का फ़रमान दिया। (३५६-३५७) इस फ़रमान के उपरान्त ऐनुलमुल्क चित्तौड़ से चल खड़ा हुआ। जब हैदर तथा ज़ीरक को सेना के पहुँचने की सूचना मिली तो वे भी युद्ध के लिये तैयार होकर निकले। दोनों सेनायें एक मैदान में पहुँच गईं। ऐनुलमुल्क ने एक पत्र प्रत्येक सरदार को भेजा और उन्हें यह लिखा कि "अत्याचारी तथा निर्दोष दोनों की हत्या हो चुकी है। अब युद्ध करने से दोनों ओर की सेनाओं को बड़ी क्षति पहुंचेगी। यदि हैदर तथा ज़ीरक युद्ध करना चाहते हैं तो वे पछतायेंगे। राजधानी की सेना का कदापि कोई मुक़ाबला नही कर सकता। यदि तुम लोगों में समझ हो तो बादशाह का विरोध न करो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि बादशाह तुम लोगों को क्षमा कर देगा।" जब सरदारों को यह पत्र मिला तो वे आज्ञा पालन के लिये तैयार हो गये और युद्ध से पूर्व ही शाही सेना में पहुँच गये। हैदर तथा ज़ीरक ने जब यह देखा कि सेना उनसे मुख मोड़ चुकी है तो वे थोड़ी देर युद्ध करके भाग खड़े हुये। विजय के उपरान्त ऐनुलमुल्क ने दो एक मास के भीतर वह प्रदेश सुव्यवस्थित कर दिया। उसके पश्चात् वह राजधानी की ओर चल खड़ा हुआ और दो एक मास में शाही महल में पहुँच गया। बादशाह ने उसे ख़िलअत देकर सम्मानित किया। अन्य सरदारों को भी खिलअत प्रदान हुये। (३५८-३५९) इसके उपरान्त बादशाह ने दीनार को

ज़फ़र ख़ाँ की पदवी प्रदान की और उसे गुजरात की ओर भेजा। वह इससे पूर्व शहनये पील था।

इसके उपरान्त सुल्तान देवगीर तथा तिलंग से धन सम्पत्ति एकत्रित करने के लिये चल खड़ा हुआ। तिलपट से २ मास उपरान्त वह मरहठों के राज्य में पहुँचा। मलिक नायब की अत्यधिक धन-सम्पत्ति उसे प्राप्त हुई। मलिक नायब का सहायक हरपाल शाही सेना के पहुँचने के समाचार सुनकर भाग गया किन्तु वह पकड़ लिया गया और मलिक नायब की धन-सम्पत्ति उससे प्राप्त कर ली गई। तत्पश्चात् उसे नरक मे भेज दिया गया।

बादशाह का एक प्राचीन दास तथा नदीम एवं मित्र उसका बड़ा विश्वास-पात्र था। बादशाह ने उसे ख़ुसरो ख़ाँ की पदवी प्रदान करदी थी। जब बादशाह ने देवगीर पर अधिकार स्थापित कर लिया और सभी विशेष तथा साधारण व्यक्ति उसके आज्ञाकारी बन गये तो बादशाह ने ख़ुसरो ख़ाँ को आदेश दिया कि वह अरंगल पर आक्रमण करे और तिलंग के राय से ख़िराज वसूल करे। (३६०-३६१) अरंगल की सीमा पर पहुँच कर ख़ुसरो ने राय को लिखा कि, 'यदि तू वह धन-सम्पत्ति दे दे जिसके विषय मे तू वचन दे चुका है तो यह तेरे लिये बड़ा अच्छा होगा।" राय ने ख़ुसरो के दूत का बड़ा आदर सम्मान किया और उत्तर दिया कि, "मैं स्वयं राजधानी में खिराज भेजना चाहता था किन्तु राजधानी यहाँ से बहुत दूर है। अतः इस कार्य में इतना विलम्ब होगया।" उसने ख़िराज तथा लगभग १०० हाथी भेजे। ख़ुसरो ने बादशाह के आदेशानुसार रुद्रदेव को चत्र तथा दूरबाश एवं बहुमूल्य ख़िलअत भेजे। रुद्रदेव ने शाही सायाबान के सामने धरती चुम्बन किया।

ख़ुसरो ख़ाँ के तिलंग की ओर प्रस्थान करने के एक सप्ताह उपरान्त सुल्तान देवगीर से देहली की ओर रवाना हो गया। मरहट राज्य यकलखी को प्रदान कर दिया। जब बादशाह का पड़ाव इलौरा मे था तो उसे सूचना मिली कि खमुश के पुत्र असदुद्दीन ने बादशाह की हत्या करना निश्चय कर लिया है। (३६२-३६३) उसने यह निश्चय कर लिया है कि जब बादशाह सामौन घाटी से गुजरे तो उसकी हत्या कर दी जाय। बादशाह ने यह सुनकर आदेश दिया कि षड्यन्त्रकारियों को बन्दी बना लिया जाय और उनकी हत्या करदी जाय। जब उनकी हत्या हो चुकी तो बादशाह इलौरा से राजधानी की ओर चल खड़ा हुआ और किसी स्थान पर एक दिन से अधिक न रुका।

देहली पहुँचने के कुछ समय उपरान्त सुल्तान शिकार खेलने के लिये बदायूँ पहुंचा और २-३ मास तक वहाँ रुका रहा। शिकार के उपरान्त सुल्तान ने अपने एक सरदार को जिसका नाम क़ाफ़ूर था और जो उसका मुहरदार था, एक सेना लेकर तिरहुट भेजा ताकि वह तिरहुट के राय से ख़िराज प्राप्त करे। कहा जाता है कि जब सुल्तान जिस किसी स्थान को जाता था तो उसकी रानियाँ भी उसके साथ होती थीं और वह सर्वदा मदिरा के नशे में मस्त होता था। रमणियाँ और युवतियाँ सुल्तान के पीछे तथा दाहिने बायें चला करती थीं। जहाँ कहीं भी कोई रमणीक स्थान मिल जाता था वहीं वह उतर पड़ता और भोग-विलास प्रारंभ कर देता। ४ वर्ष तक जब तक कि वह बादशाह रहा वह रात दिन इसी प्रकार भोग विलास मे ग्रस्त रहता था। (३६४-३६५)

एक दिन सुल्तान को मरहटा राज्य के एक दूत द्वारा यह सूचना मिली कि यकलखी ने देवगीर में विद्रोह कर दिया है और अपनी उपाधि शम्सुद्दीन निश्चित की है। दूसरे दिन बादशाह ने ख़ुसरो को आदेश दिया कि वह देवगीर पर आक्रमण करके यकलखी को बन्दी बना ले और इस ओर भेजदे तथा स्वयं उस स्थान से सेना लेकर पट्टन की ओर प्रस्थान करे। बादशाह ने उसके साथ अन्य शूरवीर भी नियुक्त किये। बगदा का पुत्र तलगा, नादी सलनबह,

क़तलह, अमीर शिकार, ताजुलमुल्क तथा चाची भी उसके साथ भेजे गये। दो महीने में खुसरो मरहठा प्रदेश में पहुँच गया। (३६६-३६७) जब यकलखी को शाही सेना के पहुँचने की सूचना मिली तो उसे कोई चिन्ता न हुई। उसकी सेना के सरदारों ने खुसरो को लिखा कि हम लोग सुल्तान के हितैषी हैं किन्तु हम लोग एक प्रकार से इस मूर्ख के बन्दी हैं। जैसे ही खुसरो की सेना युद्ध के लिये पहुँचेगी हम लोग सहायता करने के लिये उपस्थित हो जायेंगे। इमरान नामक एक व्यक्ति ने यकलखी को गिरफ्तार करके खुसरो खाँ के पास भेज दिया और सभी सरदार उसकी सेवा में उपस्थित हो गये। खान शाही सेना लेकर देवगीर में प्रविष्ट हुआ और यकलखी को सुल्तान के आदेशानुसार देहली भेज दिया। ऐनुलमुल्क को देवगीर में नियुक्त करके खुसरो खाँ पट्टन की ओर चल खड़ा हुआ। जब वह पट्टन पहुँचा तो शहर पूर्णतया खाली था। उस नगर मे एक धनी व्यापारी रहता था जिसका नाम सिराज तक़ी था। वह बड़ा धर्मनिष्ठ मुसलमान था और बराबर ज़कात अदा किया करता था। जब शाही सेना पट्टन पहुँची तो वह बन्दी बना लिया गया। (३६८-३६९) उसे खान की सेवा मे उसके ३-४ हज़ार सोने और मोतियों से लदे ऊँटों एवं उसकी रूपवान पुत्री सहित पेश किया गया। खान ने उसकी पुत्री से विवाह करना चाहा किन्तु (सिराज तकी) ने स्वीकार न किया और विष खाकर आत्म-हत्या कर ली। खुसरो ने अत्यधिक धन-सम्पत्ति एकत्रित की। धन-सम्पत्ति प्राप्त करके उसने यह निश्चय किया कि वह विद्रोह कर दे किन्तु जब सेना के सरदारों को यह हाल ज्ञात हुआ तो उन्होंने रात दिन खान की रक्षा करनी प्रारम्भ कर दी। जब खान ने यह देखा तो उसने विद्रोह के विचार त्याग दिये और ६ मास उपरान्त खुसरो देहली पहुँच गया। बादशाह स्वयं उसका स्वागत करने के लिये आया। खान ने बादशाह को प्रसन्न पाकर सरदारों की उससे शिकायत की। बादशाह ने सरदारों को क़ैद करा दिया। (३७०-३७१)

सुल्तान भोग-विलास तथा मदिरा पान में ग्रस्त रहता था। खुसरो खाँ ने एक रात्रि में अपने सहायकों द्वारा, जो कि पराव वंश के थे और गुजरात प्रदेश के निवासी थे, सुल्तान की हत्या करा देना निश्चय किया। क़ाज़ी खाँ सुल्तान के सोने के कमरे का रक्षक था। जब उसने देखा कि खुसरो खाँ ने कुछ और निश्चय कर लिया है तो उसने उसे कुंजी प्रदान न की। उस हिन्दू ने क़ाजी की हत्या कर दी और सुल्तान के सोने का कमरा खोलकर अपने साथियों के साथ वहाँ घुस गया। सुल्तान जाग गया और उठकर अपने अंतःपुर की ओर चल दिया। खुसरो खाँ भी उसके पीछे दौड़ा और उसके केश पकड़कर उसे खींचा। बादशाह ने उसे भूमि पर पटक दिया। पराव बादशाह को ढूँढते हुये तथा चिल्लाते इधर उधर भागते घूमते थे। जहरिया नाग, कच तथा बर्मा सुल्तान के अंतःपुर की ओर चल खड़े हुये। जब खान ने उन लोगों को देखा तो वह चिल्लाया कि "बादशाह मेरे ऊपर है और मैं नीचे हूँ।" जहरिया ने जब यह सुना तो इसने सुल्तान की कोख में एक बत्ता मारकर उसकी हत्या कर दी। कुछ लोगों ने बादशाह का शीश काट लिया। जब लोगों ने बादशाह का शीश कटा हुआ देखा तो सब लोग अपने-अपने घरों को भाग गये। (३७२-३७३)

खुसरो खाँ का सिंहासनारोहण

खुसरो खाँ ने बादशाह की हत्या के उपरान्त समस्त शाहज़ादों तथा बादशाह की माता की भी हत्या कर दी। इसके पश्चात् उसने अत्यधिक धन-सम्पत्ति लुटाई और संसार प्रेमियों की एक बहुत बड़ी संख्या को अपना सहायक बनाकर राज सिंहासन पर विराजमान हो गया। पराव जाति को उसने विशेष सम्मान प्रदान किया। मुसलमान अत्यन्त निर्बल हो गये। खान ने सेना को दो वर्ष का वेतन भी प्रदान कर दिया। योग्य लोगों के स्थान पर अयोग्य लोगों को भरती कर लिया। मुसलमानों को बड़ी हानि पहुँची। उसने अपनी पदवी नासिरुद्दीन

निश्चित की। वह ७१९ हिजरी में राज सिंहासन पर विराजमान हुआ। हुसामुद्दीन को उसने खाने ख़ानाँ बना दिया। वह उसका भाई था। यूसुफ सूफ़ी सद्र बनाया गया। अत्याचारी सम्बल खाने खातम नियुक्त हुआ। दुष्ट अम्बर बुग़रा ख़ाँ बना। क़र्क़माश शास्ती ख़ाँ नियुक्त हुआ किन्तु दो तीन मास के राज्य के उपरान्त ही उनका भाग्य उनसे फिर गया।

उस समय मलिक फ़ख़रुद्दीन जूना आखुरबक था। वह एक दिन घोड़े पर सवार हुआ। (३७४-३७५) और पायगाह से कुछ उत्तम घोड़े चुनकर दीपालपुर की ओर अपने पिता के पास चल दिया। उसने अपने पिता मलिक ग़ाज़ी तुग़लक़ को बताया कि पराव जाति ने बड़ा उत्पात मचा रक्खा है। ग़ाज़ी मलिक इस्लाम तथा बादशाह एवं शाहज़ादों के विनाश पर बड़ा दुखी हुआ। उसने अपने पुत्र से कहा कि हमें शाहज़ादों के रक्त का बदला लेना चाहिये। जब सेना के सरदारों को उसकी इस योजना की सूचना मिली तो वे भी इसके सहायक हो गये। शूरवीर बहराम ऐबा, जो अनेक काफ़िरों का विनाश कर चुका था, खुक्खरों के नेता गुलचन्द तथा सहिजराय, एवं सिराज का पुत्र तथा अन्य सरदार उससे मिल गये और रात दिन उसकी सेना बढ़ने लगी। जब नासिरुद्दीन ख़ुसरो खाँ को यह सूचना मिली तो उसने खाने खानाँ को आदेश दिया कि वह (ग़ाजी मलिक) से युद्ध करने के लिये प्रस्थान करे। क़ुतला ने भी सेना एकत्रित करनी प्रारम्भ कर दी। खाने खानाँ सेना लेकर हाँसी की सीमा तक पहुँच गया। तुग़लक़ ने भी दीपालपुर से सेना भेजी। सरसुती में दोनों सेनाओं का सामना हुआ। ख़ान चत्र लगाये सेना के मध्य में था। क़ुतला सेना के आगे था। तलबगा बग़दा बाईं ओर, और नाग कच व ब्रह्म दाहिनी ओर थे। इस प्रकार सभी पराव युद्ध के लिये तैयार थे। दूसरी ओर तुग़लक़ स्वयं सेना के मध्य में था। गुलचंद सहजू (सहिजराय) तथा अन्य सरदार सेना के आगे थे। ऐबा का पुत्र बाँई ओर था और असदुद्दीन दाहिनी ओर। खुक्खरों ने आक्रमण करके क़ुतला को भगा दिया। क़ुतला का घोड़ा एक बाण द्वारा घायल हो गया। क़ुतला गिर पड़ा। खुक्खरों ने उसका सिर काट लिया। तुगलक़ की सेना ने ख़ान खानाँ की सेना पर आक्रमण किया। गुलचन्द ने उसके चत्रदार पर आक्रमण करके उसका सिर काट लिया और उसका चत्र तथा कटा हुआ सिर मलिक ग़ाजी के पास भेज दिया। मलिक ग़ाज़ी ने उस स्थान पर २-२ दिन तक पड़ाव किया।

इसके उपरान्त वह देहली की ओर रवाना हुआ। देहली से नासिरुद्दीन अपनी सेना लेकर निकला। राजधानी से ३ फरसंग की दूरी पर उसने बाग़ेजूद को अपने पीछे रक्खा और समस्त हिन्दुस्तानी सेना के साथ वहीं पड़ाव डाल दिया। वीर तुग़लक़ भी उसी स्थान पर पहुंच गया। (३८०-३८१) नासिरुद्दीन स्वयं सेना के मध्य में था। खाने ख़ानां मालदेव, तलबग़ा बगदा आदि उसकी सहायता के लिये थे। सम्बल दाहिनी ओर था, सूफ़ी ख़ाँ, सेना के आगे था। बाईं ओर अम्बर था जिसकी पदवी बुग़रा ख़ाँ थी। शास्ती खाँ, क़र्क़माज़नाग, कच, ब्रह्म, रंधौल तथा अन्य पराव युद्ध के लिये तैयार थे। दूसरी ओर तुग़लक़ स्वयं सेना के मध्य में था। अली हैदर तथा सहिजराय तुग़लक़ के पीछे थे। गुलचन्द तथा खुक्खर सेना के आगे थे। असदुद्दीन जोकि दादर का पुत्र था सेना के दाहिनी ओर था। मलिक फ़ख़रुद्दीन, जाशग़ूरी बाईं ओर थे। बहाउद्दीन भी जो सेना के सरदार का भान्जा था बाईं ओर की सेना की सहायता के लिए नियुक्त था। बहराम ऐबा, यूसुफ़ शहनये पील तथा अन्य मुग़ल एवं अफ़ग़ान युद्ध के लिए तैयार थे। कहा जाता है कि राजधानी की सेना से क़बूल, जो कि शहनये मण्डा था, सेना से पृथक् होकर दोनों सेनाओं के बीच में शोर मचाता हुआ पहुँचा और उसने ३-४ बार अपना धनुष घुमाया। तुग़लक़ समझ गया कि वह उसकी सेना की सहायता करने आया है। उसी समय राजधानी की सेना के बाईं ओर से, कच, ब्रह्म तथा रन्धौल

ने फ़ख्ररुद्दीन पर आक्रमण कर दिया। फ़ख्ररुद्दीन उनका मुकाबला न कर सका; वह तथा शिहाब भाग खड़े हुये। तुग़लक़ की सेना की यह कमज़ोरी देखकर पराव सेना उस ओर टूट पड़ी। असदुद्दीन ने यह देखकर तुरन्त दाहिनी ओर से बढ़ कर आक्रमण कर दिया बुग़रा ख़ाँ की पंक्ति ने भी विजय प्राप्त की। तलबग़ा को उस आक्रमण में पराजय हुई। कायर मैदान से भाग गये। दोनों ओर के वीर मैदान में डटे रहे।

नासिरुद्दीन ने जब तुग़लक़ की सेना को छिन्न-भिन्न होते देखा (३८२-३८३) तो उसने क़र्कमाज़ को आदेश दिया कि वह तुग़लक़ के शिविर पर आक्रमण करे। शास्ती ख़ाँ ने बढ़कर उसके शिविर की डोरियाँ काट दी। शिविर से स्त्रियों ने शोर मचाना प्रारम्भ कर दिया कि तुग़लक़ अपने राज्य को भाग गया है। इसी प्रकार कुछ और लोगों ने भी शोर मचाया। जब तुग़लक़ ने यह शोर सुना तो उसने शेष सेना को एकत्रित किया। समस्त शूरवीर युद्ध के लिये एकत्रित हो गये। बहराम ऐबा, गुलचन्द, बहाउद्दीन तथा अन्य वीरों ने घोर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। इसके उपरान्त तुग़लक़ ने अपनी सेना से १०० वीर एकत्रित किये और उन्हें यह आदेश दिया कि वे एक साथ शत्रु की सेना के मध्य भाग पर आक्रमण कर दें। गुलचन्द को इन लोगों का सरदार बनाया। दुश्मन की सेना के मध्य भाग पर आक्रमण करने के लिये तुग़लक़ इन १०० सवारों को भेजने के उपरान्त स्वयं शत्रु की सेना के मध्य भाग पर टूट पड़ा। उसने तथा उन १०० सवारों ने सेना का सुथराओ प्रारम्भ कर दिया। नासिरुद्दीन भाग गया। जब उसकी सेना ने उसे न देखा तो वह भी भाग खड़ी हुई। पराजित हुई सेना के अनेक पुरुष मारे गये तथा बन्दी बना लिये गये। कहा जाता है कि गुलचन्द ने शत्रुओं का पीछा किया और विरोधी चत्रदार के पास पहुँच कर उसका सिर काट लिया। (३८४-३८५) इसके उपरान्त वह चत्र लेकर तुग़लक़ के पास उपस्थित हुआ, किन्तु बाईं ओर सम्भल अभी तक वर्तमान था, अतः तुग़लक़ ने उस ओर आक्रमण कर दिया। वह अपने सम्मुख एक बहुत बड़ी सेना देखकर भाग गया। इस प्रकार पूर्णरूप से विजय प्राप्त करके तुग़लक़ अपने शिविर को वापस हुआ।

अहमद इब्ने (पुत्र) अयाज़ ने उपस्थित होकर उसे विजय की बधाई दी और शहर के दो फाटकों की कुञ्जियाँ ज़मीन बोस करके पेश कीं। तुग़लक़ कुञ्जियाँ पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ और कोतवाल को विशेष रूप से सम्मानित किया।

प्रातःकाल वह शहर की ओर रवाना हुआ। ख़ाने ख़ानाँ आधी रात में गिरफ़्तार हो गया था। जब उसे पेश किया गया तो तुग़लक़ ने आदेश दिया कि उसकी हत्या करके उसे क़िले के फाटक पर लटका दिया जाय। तत्पश्चात् उसने आदेश दिया कि पराव जाति की हत्या करदी जाय। प्रातःकाल से सायंकाल तक पराव जाति के लोगों की हत्या होती रही। पराव जाति की बहुत बड़ी संख्या मार डाली गई तथा बहुत बड़ी संख्या में लोग बन्दी बना लिये गये। (३८६-३८७)

अजाइबुल असफ़ार

[लेखक—इब्ने बतूता, मी डेफ़रेमरी द्वारा फ्रांस से प्रकाशित]

(१८१) जलालुद्दीन बड़ा ही नेक तथा सदाचारी था। उसकी मृत्यु उसकी नेकी के कारण हुई।...... उसने एक महल बनवाया जो उसी के नाम से प्रसिद्ध है। यह महल सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ ने अपने साले अमीर ग़द्दा बिन मुहन्ना को उस समय प्रदान कर दिया जब उसने अपनी बहिन का विवाह उससे किया।......कड़े में बड़ा बारीक कपड़ा बनता है जो देहली भेजा जाता है। कड़े से देहली तक २० दिन में यात्रा होती है।......

(१८२) एक बार अलाउद्दीन दुआय क़ीर (देवगीर) में युद्ध करने गया। यह कतका के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसका उल्लेख शीघ्र ही होगा। यह मालवा तथा मरहट प्रदेश की राजधानी है। यहाँ का राजा काफ़िर राजाओं में सबसे बड़ा समझा जाता है। अलाउद्दीन के आक्रमण के समय उसके घोड़े का पैर एक पत्थर से लड़ गया। उसने किसी चीज़ के बजने की आवाज़ सुनी। उसने भूमि के खोदने का आदेश दे दिया। उसे भूमि के नीचे बहुत बड़ा ख़ज़ाना मिला। वह ख़ज़ाना उसने अपने साथियों को बाँट दिया। जब वह देवगीर पहुँचा तो राजा ने अधीनता स्वीकार करली और बिना युद्ध के उसे शहर प्रदान कर दिया। उसे बहुमूल्य उपहार भी भेंट किये।......

(१८४) वह (अलाउद्दीन) समस्त सुल्तानों से उत्तम था। हिन्दुस्तानी उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। वह स्वयं अपनी प्रजा के विषय में पूछ-ताछ किया करता था और चीज़ों के मूल्य के विषय में जो लोगों को अदा करना पड़ता था, पूछ-ताछ करता रहता था। वह इस कार्य के लिये प्रत्येक दिन मुहतसिब, जो रईस कहलाते हैं, भेजा करता था। कहा जाता है कि उसने एक दिन मांस का मूल्य बढ़ जाने का कारण पूछा। उत्तर मिला कि पशुओं पर भिन्न-भिन्न स्थानों पर कर वसूल किया जाता है। उसने आदेश दिया कि यह प्रथा बन्द करदी जाय। उसने व्यापारियों को बुलवाकर उन्हें धन प्रदान करते हुये कहा कि इस से पशु तथा बकरियाँ खरीद ली जाय और जो धन उन्हे बेच कर प्राप्त हो वह राज-कोष मे दाखिल कर दिया जाय। इस कार्य के लिये उनका पारिश्रमिक निश्चित कर दिया। इसी प्रकार का प्रबन्ध उसने उन कपड़ों के लिये भी किया जो दौलताबाद से लाये जाते थे। जब अनाज का भाव बहुत बढ़ गया तो उसने ग़ल्ले के गोदाम खुलवा दिये और जब तक ग़ल्ले का भाव कम न हुआ, वह स्वयं ग़ल्ला बिकवाता रहा। कहा जाता है कि एक बार भाव बहुत बढ़ गया। उसने आदेश दिया कि अनाज उसके निश्चित किये हुये भाव पर बेचा जाय।

(१८५) लोगों ने उस भाव पर बेचने से इन्कार किया। इस पर उसने यह आदेश दिया कि कोई भी अनाज न बेचे। केवल सरकारी गोदामों मे से अनाज मिला करेगा। इस प्रकार उसने छः मास तक अनाज बिकवाया। जिन लोगों ने एहतेकार (चोर बाज़ारी) के लिये अनाज एकत्रित कर लिया था, वे भयभीत हो गये और समझने लगे कि इस प्रकार उनका अनाज नष्ट हो जायगा। उन्होंने सुल्तान से अनाज बेचने की आज्ञा माँगी। उसने उन्हें इस शर्त पर आज्ञा दी कि वे उस भाव से भी कम पर बेचें जिस पर बेचना इससे पूर्व उन्होंने स्वीकार न किया था।

वह जुमे की नमाज़ पढ़ने घोड़े पर सवार होकर न जाता था। ईद तथा अन्य समारोहों के अवसर पर भी वह घोड़े पर सवार न होता था।.. ...

(१८६) उसके पुत्रों के नाम खिज्र खाँ, शादी खाँ, अबूबक्र खाँ, मुबारक खाँ अर्थात् क़ुतुबुद्दीन, जो बादशाह हुआ, और शिहाबुद्दीन थे। क़ुतुबुद्दीन से वह बड़ा कठोर व्यवहार करता

था और उसे कुछ भी प्रदान न किया था। उसने उसके समस्त भाइयों को राजसीय-चिह्न झण्डे तथा नक़्क़ारे प्रदान किये थे किन्तु उसे कुछ भी न दिया था। एक दिन अलाउद्दीन ने उससे कहा कि "मैं तुझको भी वे सब वस्तुएँ प्रदान कर दूँगा जो मैंने तेरे भाई को प्रदान करदी हैं।" उसने उत्तर दिया कि "भगवान् मुझे यह वस्तुएँ प्रदान करेगा।" सुल्तान इस उत्तर से बड़ा खिन्न हुआ और उसके विषय में संदेह करने लगा.........।

(१८९) सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु के उपरान्त मलिक नायब ने उसके कनिष्ठ पुत्र शिहाबुद्दीन को सिंहासनारूढ़ कर दिया। लोगों ने उसी की बैअत करली। वह मलिक नायब के वश में था। मलिक नायब ने उसके भाइयों अर्थात् अबूबक्र खाँ और शादी खाँ को अन्धा करके ग्वालियर के क़िले में क़ैद कर देने के लिए भेज दिया। उसने आदेश दिया कि उनके भाई ख़िज्र् खाँ को जो वहाँ बन्दी था, अन्धा बना दिया जाय। उन सब को बन्दीगृह में डाल दिया गया। उसने क़ुतुबुद्दीन को भी बन्दी-गृह में डाल दिया किन्तु उसे अन्धा न किया।

(१९०) सुल्तान अलाउद्दीन के दो प्रिय दास थे। एक का नाम बशीर और दूसरे का मुबश्शिर था। मुख्य ख़ातून (रानी) अर्थात् अलाउद्दीन की विधवा तथा सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन की पुत्री ने उन्हें बुलवाया और उन्हें उनके स्वामी के दयापूर्वक व्यवहार याद दिला कर कहा, "तुम लोग जानते हो कि किस प्रकार इस नपुंसक मलिक नायब ने मेरे पुत्रों से व्यवहार किया है। अब वह क़ुतुबुद्दीन की भी हत्या करना चाहता है।" उन्होंने उत्तर दिया कि हम जो कुछ करेंगे वह आपको ज्ञात हो जायगा। उस समय यह प्रथा थी कि वे लोग नायब मलिक के कमरे में रात भर रहते थे और उसके सामने हथियार लगा कर उपस्थित रहते थे। उस रात्रि को भी वे हमेशा की तरह आये। नायब मलिक उस रात्रि को एक लकड़ी के मकान में था। उस पर कपड़ा मढ़ा था और वह खुरमका कहलाता था। वह वर्षा ऋतु में महल की छत पर ऐसे ही मकान में सोता था। उस रात्रि में उसने उनमें से एक की तलवार लेकर उसको उलटा-पलटा और देख कर वापस कर दिया।

(१९१) उसने तलवार लेकर मलिक नायब पर तलवार का वार कर दिया। दूसरे ने भी उसी प्रकार तलवार लगाई। वे उसका कटा हुआ सिर लेकर क़ुतुबुद्दीन के पास बन्दी-गृह में पहुँचे। सिर उसके सामने फेंक कर उसे बन्दीगृह से छुड़ा दिया। क़ुतुबुद्दीन कुछ समय तक अपने भाई शिहाबुद्दीन के नायब के रूप में कार्य करता रहा। इसके उपरान्त उसने उसे राजसिंहासन से हटा दिया।

क़ुतुबुद्दीन ने अपने भाई शिहाबुद्दीन को राजसिंहासन से पृथक् करके उसकी उँगलियाँ कटवा डाली और उसे ग्वालियर भेज दिया जहाँ उसके अन्य भाई क़ैद थे। इस प्रकार क़ुतुबुद्दीन पूर्ण रूप से बादशाह हो गया। कुछ समय उपरान्त वह राजधानी देहली से दौलताबाद जो देहली से ४० दिन की यात्रा की दूरी पर स्थित है गया। मार्ग में दोनों ओर सरपत तथा अन्य वृक्ष लगे हुये हैं। यात्रियों को ऐसा ज्ञात होता है कि वे किसी उपवन में यात्रा कर रहे हैं। इस सड़क के प्रत्येक मील में ३-३ दावात (डाक की चौकियाँ) हैं।

(१९२) इनके प्रबन्ध का उल्लेख इसके पूर्व हो चुका है। प्रत्येक धावे पर यात्रियों की आवश्यकता की समस्त वस्तुएँ मिल जाती हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि वह ४० दिन तक बराबर बाज़ार में यात्रा करता रहा है। इसी प्रकार यह सड़क तिलंग तथा माबर तक चली गई है जो देहली से ६ महीने की पैदल यात्रा की दूरी पर स्थित है।

प्रत्येक पड़ाव पर सुल्तान का महल तथा यात्रियों के लिये सराय है। यात्रियों को अपने साथ किसी भी वस्तु को लेजाने की आवश्यकता नही होती। जब सुल्तान क़ुतुबुद्दीन मार्ग

में था तो कुछ अमीरों ने विद्रोह करना निश्चित कर लिया। वे उसके भतीजे को, जो खिज्र खाँ का पुत्र था और जिसकी अवस्था १० वर्ष की थी, राजसिंहासन पर बिठाना चाहते थे। वह उस समय सुल्तान के साथ था। जब सुल्तान को इस षड्यन्त्र का हाल ज्ञात हुआ तो उसने अपने भतीजे के पाँव पकड़वाकर उसका सिर पत्थरों से टकरा कर भेजा निकाल कर मार डाला। अपने एक अमीर को, जिसका नाम मलिक शाह था, ग्वालियर की ओर भेजा और उसको आदेश दिया कि वहाँ इस बालक के पिता तथा चाचा की हत्या करदे।

(१९३) क़ाज़ी ज़ैनुद्दीन मुबारक ने, जो ग्वालियर के क़िले के क़ाज़ी थे, मुझे बताया था कि जिस दिन यह मलिक शाह दोपहर पूर्व हमारे पास पहुँचा तो मैं खिज्र खाँ के पास बैठा था। जब खिज्र खाँ ने उसके आने के समाचार सुने तो भय के कारण उसके चेहरे का रंग उड़ गया। जब अमीर (मलिक शाह) उसकी कोठरी में पहुँचा तो शाहज़ादे ने उससे पूछा कि "तुम किस लिये आये हो" उसने उत्तर दिया, "आखुन्द आलम के काम से।" शाहज़ादे ने उससे पूछा कि "मेरे प्राणों का तो भय नहीं।" मलिक शाह ने उसे विश्वास दिलाया कि ऐसा नहीं है। उसके उपरान्त उसने कोतवाल अर्थात् क़िले के हाकिम एवं मुफ़रेदान अर्थात् वे सैनिक जो स्थाई रूप से भरती हों, को जिनकी संख्या ३०० थी, बुलवाया। इसके उपरान्त उसने मुझे एवं साक्षियों को बुलवाया। सबके सामने सुल्तान का आदेश पढ़वाया। उसे पढ़कर वे शिहाबुद्दीन के पास, जो राज-सिंहासन से वंचित हो चुका था, पहुँचे और उसका वध कर दिया। वह पूर्ण रूप से सावधान रहा और किसी भय का प्रदर्शन न किया। इसके उपरान्त उन्होंने अबूबक्र खाँ तथा शादी खाँ की भी हत्या कर दी।

(१९४) जब वे खिज्र खाँ की हत्या करने पहुंचे तो वह भयभीत होकर चिल्लाने लगा। उसकी माता भी उसके साथ थी किन्तु उसे बन्द कर दिया गया और खिज्र खां की हत्या कर दी गई। तत्पश्चात् उन्होंने मृतक शरीर एक गड्ढे में डाल दिये और लाश को न तो नहलाया और न कफ़न पहनाया किन्तु कुछ वर्ष पश्चात् लाशों को निकलवाकर उनके पूर्वजों के क़ब्रस्तान में दफ़न कर दिया गया। खिज्र खाँ की माता बहुत समय तक जीवित रही और मैंने उसे सन् २८ (७२८ हि० १३२७ ई०) में देखा था।

ग्वालियर का क़िला एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है और ऐसा ज्ञात होता है कि मानो पहाड़ी को काट कर बनाया गया हो। इसके निकट कोई अन्य पहाड़ नहीं। उसके अन्दर पानी के हौज़ हैं। क़िले की दीवार से मिले हुये लगभग २० कुएँ हैं। उनके निकट की दीवार पर मंजनीक़ तथा अरादे लगे हुये हैं। क़िले तक जाने के लिये एक चौड़ा रास्ता है। उस रास्ते पर हाथी तथा घोड़े सुगमता पूर्वक चल सकते हैं। क़िले के दरवाज़े पर पत्थर की कटी हुई हाथी की मूर्ति महावत सहित वर्त्तमान हैं। दूर से देखने पर वह सचमुच हाथी मालूम होती है। क़िले के नीचे एक बड़ा सुन्दर नगर बसा है।

(१९५) समस्त भवन तथा मस्जिदें सफ़ेद पत्थर की बनी हैं। दरवाज़ों के अतिरिक्त किसी स्थान पर भी लकड़ी नहीं लगी है। बादशाह का महल भी इसी प्रकार का बना हुआ है। मक़बरे तथा मजालिस (बँगले) भी पत्थर के बने हुये हैं। यहाँ के निवासी अधिकतर काफ़िर हैं। यहाँ ६०० शाही सवार रहते हैं जो सर्वदा काफ़िरों से युद्ध किया करते हैं, कारण कि यह नगर काफ़िरों के बीच में बसा हुआ है।.........

(१९६) खुसरो खाँ क़ुतुबुद्दीन का बहुत बड़ा अमीर था। वह बड़ा ही वीर तथा रूपवान था। उसने चंदेरी (जन्दरी) तथा माबर प्रदेश पर विजय प्राप्त की थी। यह प्रदेश हिन्दुस्तान में बड़ा उपजाऊ समझा जाता है। माबर देहली से ६ मास की दूरी पर स्थित है। क़ुतुबुद्दीन खुसरो मलिक से बड़ा प्रेम करता था। वह उसका बड़ा विश्वासपात्र था।

इसी कारण उसकी हत्या भी हुई। क़ुतुबुद्दीन का गुरु क़ाज़ी ख़ाँ सद्रे जहाँ था। वह उसके अमीरों का सरदार था। वह किलीददार अर्थात् क़िले की कुंजिया रखता था। वह रात्रि को बादशाही महल के दरवाज़े पर रहता था। एक हज़ार सैनिक उसके अधीन थे। प्रत्येक रात्रि में ढाई ढाई सौ सैनिक पहरा देते थे। बाहर के द्वार से अन्दर के द्वार तक दो पंक्तियों में हथियार लिये खड़े रहते थे। जब कोई महल के अन्दर प्रविष्ट होता था तो उसे उन पंक्तियों के बीच से होकर जाना पड़ता था।

(१९७) जब रात्रि समाप्त हो जाती तो दिन के पहरेदार उनका स्थान ले लेते थे। यह लोग नौबत वाले कहलाते थे। उन पर अफ़सर तथा मुन्शी नियुक्त होते थे, जो चक्कर लगाया करते थे और हाज़िरी लेते रहते थे जिससे कोई अनुपस्थित न रहने पाये। रात वाले जब पहरा दे चुकते थे तो दिन के पहरा देने वाले उनके स्थान पर खड़े हो जाते थे……।

एक दिन खुसरो ख़ाँ ने सुल्तान से कहा कि कुछ हिन्दू मुसलमान होना चाहते हैं। उस समय यह प्रथा थी कि जब कोई हिन्दू मुसलमान होना चाहता था तो वह सर्व प्रथम बादशाह के सलाम को उपस्थित होता था। बादशाह की ओर से उसे खिलअत तथा सोने के आभूषण कड़े आदि उसकी श्रेणी के अनुसार प्रदान किये जाते थे। सुल्तान ने उससे उन लोगों को लाने के लिये कहा। उसने उत्तर दिया कि वे लोग अपने सम्बन्धियों तथा अन्य हिन्दुओं के भय से रात को आने मे डरते हैं।

(१९८) सुल्तान ने उससे कहा कि उन लोगों को रात मे लाओ। अतः खुसरो ख़ाँ ने कुछ हिन्दुस्तानी वीर तथा सरदार एकत्रित किये। इनमें उसका भाई ख़ाने ख़ानाँ भी था। इस समय ग्रीष्म-ऋतु थी। सुल्तान महल की छत पर अकेला सोया करता था। कुछ नपुसकों के अतिरिक्त कोई अन्य उसके निकट न होता था।

जब हिन्दुस्तानी, जो कि हथियार लगाये हुये थे, चारों द्वारों को पार करके पाँचवें द्वार पर, जहाँ क़ाज़ी ख़ाँ का पहरा था, पहुँचे तो उसे संदेह हो गया। उसने उन्हें रोका कि, "मैं स्वयं जाकर अपने कानों से आख़ुन्द आलम की आज्ञा सुन लूं फिर तुम लोगों को प्रविष्ट होने दूंगा।" जब उसने उन लोगों को अन्दर जाने से रोका तो वे उस पर टूट पड़े और उसकी हत्या कर दी। द्वार पर कोलाहल देखकर सुल्तान ने कहा कि, "क्या बात है" खुसरो ख़ाँ ने उत्तर दिया कि "हिन्दुस्तानी इस्लाम स्वीकार करने आये हैं। क़ाज़ी ख़ाँ ने उन्हें प्रविष्ट होने से रोक दिया है।"

(१९९) जब कोलाहल बहुत बढ़ गया तो सुल्तान को भय हुआ और वह महल के अन्दर जाने के लिये चल खड़ा हुआ किन्तु द्वार बन्द थे और नपुंसक द्वार के सामने खड़े थे। जैसे ही सुल्तान ने द्वार खटखटाये खुसरो ख़ाँ ने उसे पीछे से पकड़ लिया किन्तु सुल्तान अधिक बलवान था अतः उसने खुसरो ख़ाँ को पटक दिया। उसी समय हिन्दुस्तानी भी पहुँच गये।……

(२००) जब खुसरो ख़ाँ सुल्तान हुआ तो उसने हिन्दुओं को विशेष रूप से सम्मानित करना प्रारम्भ कर दिया। वह खुल्लम खुल्ला इस्लाम के विरुद्ध कार्य करने लगा। उसने काफ़िर हिन्दुओं की प्रथा के अनुसार गौ हत्या रोक दी। हिन्दू गौ हत्या नहीं होने देते। यदि कोई गौ-हत्या कर देता है तो वे उसे उसी गाय की खाल में सिलवाकर जलवा देते हैं। ये लोग गौ का बड़ा सम्मान करते हैं। पूर्ण पुण्य तथा औषधि के रूप में गौ के मूत्र का सेवन करते हैं। उसके गोबर से अपने घर तथा दीवारें लीपते हैं। खुसरो ख़ाँ चाहता था कि मुसलमान भी ऐसा ही करें। इसलिये लोग उससे घृणा करने लगे और तुग़लक़ शाह के सहायक बन गये। इस प्रकार वह अधिक दिनों तक राज्य न कर सका और उसका राज्य शीघ्र ही समाप्त होगया।

भाग स

बाद के कुछ मुख्य इतिहासकार

यह्या

(क) तारीख़े मुबारक शाही

फ़रिश्ता

(ख) तारीख़े फ़रिश्ता

अब्दुल्लाह

(ग) ज़फ़रुल वालेह

तारीखे मुबारक शाही

लेखक यहया बिन अहमद सरहिन्दी

[कलकत्ता १९३१ ई० के प्रकाशन द्वारा अनूदित]

(६१-६२) सुल्तान जलालुद्दीन फ़ीरोज़ शाह युग़रुश खलजी का पुत्र था। जब एतमर सुरखा का विद्रोह शान्त हो गया और सुल्तान शम्सुद्दीन बादशाह बना लिया गया तो वह रबीउल आख़िर (६८९ हि०) में अमीरों व मलिकों की सहायता से किलोखड़ी राज भवन में राज सिंहासन पर विराजमान हुआ।......

(६३) उपर्युक्त सन् के शाबान मास में मलिक छज्जू ने कड़ा में विद्रोह कर दिया। अमीर अली सरजानदार अवध का मुक़्ता तथा हिन्दुस्तान के अमीर उसके सहायक हो गये।...... जब उपर्युक्त समाचार सुल्तान को मिला तो उसने खाने खानाँ को देहली छोड़ कर अपनी सेना के दो भाग किये। एक सेना अपने मंझले पुत्र अरकली खाँ को देकर उसे अमरोहे की ओर भेज दिया। दूसरी सेना स्वयं लेकर कोल और बदायूँ की ओर प्रस्थान किया। मलिक छज्जू काबर की ओर से आया। अरकली खाँ जूबाद की ओर बढ़ा। दोनों सेनाओं का रहब नदी के तट पर युद्ध हुआ। कई दिन और रात तक युद्ध होता रहा। इसी बीच में पीरम देव कोतला के कुछ आदमी मलिक छज्जू के पास पहुँचे और उससे कहा कि सुल्तान जलालुद्दीन फ़ीरोज़ शाह पीछे से आरहा है, यदि सम्भव हो तो भाग जाओ। मलिक छज्जू रुक न सका और रातों रात भाग गया। जब दिन हुआ तो अरकली खाँ ने नदी पार करके उनका पीछा किया।......

(६४) भीम देव को नरक मे भेज दिया और अलप गाजी की हत्या कर दी। मलिक मसऊद आखुरबक तथा मलिक मुहम्मद बलबन जीवित ही बन्दी बना लिए गये। अरकली खाँ को अनहरी किथूर तथा मलिक अलाउद्दीन को कड़े की अक़्ता प्रदान कर दी गई। अलमास बेग आखुरबक नियुक्त हो गया। सुल्तान ने अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान किया। इसके उपरान्त सुल्तान खुरासान के शाहजादे अब्दुल्ला बच्चा के जोकि एक बहुत बड़ी सेना लेकर आया था, आक्रमण का मुक़ाबला करने के लिये सुन्नाम की ओर गया। दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। दोनों ओर के बहुत से आदमी मारे गये किन्तु युद्ध होता ही रहा। अन्त में सन्धि हो गई और दोनों ने एक दूसरे को अत्यधिक उपहार भेजे। अब्दुल्ला खुरासान की ओर वापस हो गया और सुल्तान अपनी राजधानी देहली लौट आया। खाने खानाँ इसी समय बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई। अरकली खाँ मुल्तान से देहली पहुँचा। सुल्तान ने अरकली खाँ को देहली छोड़कर स्वयं मन्दौर की ओर प्रस्थान किया। जब वह वहाँ पहुंचा तो मलिक फ़खरुद्दीन कूची ने सुल्तान से सायंकाल की नमाज़ के समय निवेदन किया कि मलिक मुगलती, मेरा भाई ताजुद्दीन कूची, हिरनमार, मलिक मुबारक, शिकारबक ग़यासी विद्रोह की योजनायें बना रहे हैं। सुल्तान रात भर सावधान रहा। प्रातःकाल उसने दरबार किया। समस्त अमीर तथा मलिक सलाम करने उपस्थित हुये। सुल्तान ने मुग़लती को सम्बोधित करते हुये कहा, "क्योंकि भगवान ने मुझे राज्य तुम्हारे कारण नहीं प्रदान किया है अतः वह तुम्हारे प्रयत्न से राज्य मुझ से छीनेगा भी नहीं। मैंने तुम से कौनसा दुर्व्यवहार किया जो तुम इस प्रकार विद्रोह की योजनायें बना रहे हो।"

(६५) उसी समय उसे बदायूँ की अक्ता प्रदान की और खिलअत देकर जाने की आज्ञा दी। मलिक मुबारक को तबरहिन्दा प्रदान किया। हिरनमार से सरजानदारी का पद ले लिया और वह पद मलिक बुगरा कन्दाली को प्रदान कर दिया। इसके उपरान्त मन्दौर के किले पर विजय प्राप्त होगई। सुल्तान वहाँ से प्रस्थान करके शीघ्रातिशीघ्र अपनी राजधानी में पहुँच गया। जब किलोखड़ी के राज भवन में पहुंचा तो उसने जश्न का आयोजन कराया। अपने कुछ विश्वास-पात्रों के पास बैठ कर उसने निम्नांकित रुबाई की रचना की :

मै यह नही चाहता कि तेरे बिखरे हुये केश एक दूसरे से उलझे हुये रहें,
मै नही चाहता कि गुलनार के समान तेरा मुखड़ा मुरझा जाये।
मैं चाहता हूँ कि तू बिना किसी वस्त्र पहने हुये एक रात्रि में मेरी गोद में आ जाये,
मैं यह चिल्लाकर कहता हूं और छुपा कर इसकी आकांक्षा नही करता।

कुछ समय उपरान्त मलिक उलग़ू ने सीदी मौला पर दोषारोपण किया और कहा कि समस्त अमीर तथा मलिक उसके सहायक हो गये हैं। उसने निवेदन किया कि सीदी मौला क़ाजी शेख जलालुद्दीन काशानी, उसके पुत्र मलिक तातार, मलिक लुँगी, मलिक हिन्दू पुत्र तरग़ी, मलिक इज़्ज़ुद्दीन बग़ान खाँ तथा हथिया पायक को एक दिन बन्दी बना लिया जाय। तद्नुसार वे बन्दी बना लिये गये। इसके पश्चात् जुमे की नमाज के समय गण्यमान्य व्यक्ति तथा सद्र देहली बुलवाये गये। महल में महज़र हुआ। सुल्तान राज सिंहासन पर विराजमान हुआ। सीदी मौला तथा उपर्युक्त अमीर लाये गये। सुल्तान ने सीदी को सम्बोधित करते हुये कहा कि "दरवेशों को राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध से क्या सम्बन्ध है। शेख ने उत्तर दिया कि 'यह मेरे ऊपर मिथ्याभियोग है।'

(६६) तत्पश्चात् सुल्तान ने क़ाज़ी जलालुद्दीन को सम्बोधित करते हुये कहा कि "जब कोई बुद्धिमान बहुत ही उन्नति कर जाता है तो क़ज़ा का पद प्राप्त कर लेता है। तुझे इससे बढ़कर और कौन सा पद मिल जायेगा !" उसने भी कहा कि '"यह मेरे ऊपर मिथ्याभियोग है। मै भगवान की शपथ लेकर कहता हूँ कि मेरा इस कार्य से कोई सम्बन्ध नहीं और में उसे बहुत ही घृणित समझता हूँ।" सुल्तान ने उत्तेजित होकर सहमुलहश्म को आदेश दिया कि गदा द्वारा हथिया पायक की हत्या कर दी जाय। तरग़ी के पुत्र को हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिया जाय। अमीर हिन्दू को बुलवा कर कहा कि "एक बार विद्रोह करने पर मैंने तुझे भी क्षमा कर दिया अब तू क्या चाहता है ?" उसने उत्तर दिया कि "जो कुछ भी सुल्तान फ़रमायें वह ठीक ही है। जब मैने एक बार विद्रोह किया तो अन्नदाता ने मुझे क्षमा कर दिया।"

छन्द

ताकि जो बादशाह सोना और चाँदी प्रदान करते हैं वे सीख जायें,
यह है धर्म के सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की प्रथा कि वह प्राणों को प्रदान करता है।

मै भगवान् की शपथ लेकर कहता हूँ कि "इस बार मैं निरपराध ही मारा जाऊँगा। यदि आज्ञा हो तो मैं अपने विषय में प्रमाण दूँ।" तत्पश्चात् सुल्तान ने कुछ दरवेशों का सम्बोधित करते हुये कहा कि "तुम लोग किस कारण मौला से मेरा बदला नही लेते !" दो क़लन्दर और एक हैदरी आगे बढ़े और उन्होंने अपने चाक़ू निकाल लिये। धर्मनिष्ठ सीदी की शुभ दाढ़ी ठोढ़ी तक काट डाली और बोरा सीने वाले सुये उसके पेट में भोंक दिये। धर्मनिष्ठ सीदी बैठ गया। वहाँ एक पत्थर पड़ा हुआ था। उन्होंने वह पत्थर सीदी के सिर पर मारा। उसी समय अरकली ख़ाँ ने हाथी लाने का संकेत किया।

(६७) हाथी लाया गया और सीदी को टुकड़े टुकड़े कर दिया गया। सीदी ने भगवान् से अपने पापों की क्षमा माँगी। कहा जाता है कि इस घटना के एक मास पूर्व धर्मनिष्ठ सीदी जो बड़ा ही बुजुर्ग शेख था रात दिन निम्नांकित छन्द पढ़ कर हँसा करता था :—

रुबाई

केवल उत्कृष्ट व्यक्ति ही प्रेम की रसोई में मारे जाते हैं
बुरे गुण वाला तथा बुरी आदतों वाले नहीं मारे जाते
यदि तू सच्चा प्रेमी है तो मारे जाने से मत भाग
जिसका बध नहीं होता वह मृतक शरीर के समान है।

सुल्तान के आदेशानुसार अन्य लोग हटा दिये गये। तीन दिन उपरान्त एक बहुत बड़ा गड्ढा जो १० गज लम्बा तथा ३ गज़ चौड़ा था खोदा गया। उसमें भयंकर अग्नि जलाई गई, ताकि सीदी के अन्य साथियों की हत्या कर दी जाय। अरकली खाँ अपनी पगड़ी अपनी गर्दन में लपेट कर सुल्तान के पैरों में गिर पड़ा और उन लोगों की सिफ़ारिश की। सुल्तान ने सब को क्षमा कर दिया।

तत्पश्चात् सुल्तान ने रणथम्बोर के ऊपर आक्रमण किया। अरकली खाँ सुल्तान की बिना आज्ञा मुल्तान चला गया। मलिक अलाउद्दीन कड़े का मुक्ता किसी अज्ञात स्थान को प्रस्थान कर गया था। सुल्तान इस कारण बड़ा ही चिन्तित था। सुल्तान ने कालपुर (ग्वालियर) में पड़ाव डाला। वहाँ एक चबूतरा और एक बहुत बड़ा गुम्बद बनवाया और स्वरचित रुबाई खुदवाने का आदेश दिया।

रुबाई

मैं वह हूँ जिसके चरण आकाश का शीश चूमता है,
ढूंने तथा पत्थर का ढेर किस प्रकार मेरे सम्मान को बढ़ा सकता है।
इन टूटे हुये पत्थरों को मैंने पानी से ठीक करा दिया
इस कारण कि शायद कोई टूटे हुये हृदय का मनुष्य वहाँ आराम पा सके।

सुल्तान ने मलिक साद मन्तक़ी तथा राजा अली को बुलवा कर पूछा कि "इस रुबाई में कोई दोष है ?" उन्होंने एक मत होकर कहा कि इसमें कोई दोष नहीं। यह बड़ी ही उत्तम है। सुल्तान ने कहा कि तुम मुझे प्रसन्न करने के लिये यह बात कह रहे हो किन्तु मैं इस रुबाई का दोष इन दो छन्दों में स्पष्ट करता हूँ।

(६८) तत्पश्चात् उसने इस रुबाई की रचना की :—

रुबाई

संभव है कोई यात्री इस स्थान से गुज़रे
जिसका खिरक़ा आकाश का अतलस हो।
संभव है कि वह अपनी स्वाँस या चरणों के आशीर्वाद से
एक अंश मुझ तक पहुंचादे और जो मेरे लिए पर्याप्त हो।······

(७०) अलाउद्दीन राजसिंहासन पर १९ जिलहिज्जा ६९५ हि० (१८ अक्तूबर १२९६ ई०) को विराजमान हुआ। सुल्तान जलालुद्दीन ने ७ वर्ष और कुछ महीने राज्य किया।

(७१) सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मद शाह मलिक शिहाबुद्दीन खलजी का पुत्र था। जब सुल्तान रुकनुद्दीन मुल्तान की ओर चला गया तो वह २२ ज़िलहिज्जा उपर्युक्त सन् (६९५ हि०) को अमीरों तथा मलिकों की सम्मति से राजभवन में राजसिंहासन पर विराजमान हुआ। उसी समय वह लाल राजभवन में पहुँचा।···मुहर्रम ६९६ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १२९६

ई०) में सुल्तान अलाउद्दीन ने उलुग खाँ तथा अलप खाँ को मुल्तान में अरकली खाँ एवं मुल्तान रुकनुद्दीन के विरुद्ध भेजा। जब उलुग़ खाँ मुल्तान पहुंचा तो वे मुक़ाबला न कर सके और क़िले में बन्द हो गये। मुल्तान निवासियों ने क्षमा याचना करके संधि करली। अरकली खाँ तथा सुल्तान रुकनुद्दीन को बन्दी बना कर उलुग खाँ के पास भेज दिया। उलुग़खाँ उन्हें अपने साथ देहली ले गया।

(७२) जब वह अबुहर के निकट पहुँचा तो सुल्तान का एक फ़रमान प्राप्त हुआ कि अरकली खाँ तथा रुकनुद्दीन की आँखों में सलाई फिरवा कर उन्हें अन्धा बना दिया जाय। अलप खाँ उन लोगों को हाँसी के कोतवाल को सौंप कर देहली चल दिया। उनकी आँखों में सलाई फेर दी गई। अहमद चप तथा उलुग़ की आँख में भी सलाई फेर दी गई और उन्हें ग्वालियर भेज दिया। मुल्तान की अक़्ता मलिक हिरनमार को प्रदान कर दी गई। उलुग़ खाँ देहली पहुँचा। एक अन्य समूह भी जो अरकली खाँ का सहायक था अन्धा बना दिया गया। और कोहराम भेज दिया गया। अरकली खाँ तथा अग्मलान खाँ को सामाने से बन्दी बना कर बहरायच भेज दिया गया। वहीं उनको फाँसी दे दी गई। हिरनमार भी मुल्तान से बुलाया गया। उसे भी अन्धा करके उच्छ भेज दिया गया। मुल्तान की अक़्ता अलप खाँ को प्रदान कर दी गई।

इसी प्रकार दुष्ट मुग़लों की सेना ने मंजूर पर आक्रमण किया। सुल्तान ने उलुग़खाँ तथा मलिक तुग़लक़ अमीर दीपालपुर को एक बहुत बड़ी सेना देकर उनसे युद्ध करने भेजा। जब वे वहाँ पहुँचे तो उन्हें ज्ञात हुआ कि मुग़लों की सेना ने आक्रमण करके अत्यधिक लूटमार की है। उलुग़ खाँ ने घात लगा कर उन पर आक्रमण किया और पहिले ही आक्रमण में उन्हें पराजित कर दिया। कुछ तो भाग गये और कुछ जीवित बन्दी बना लिये गये।

दूसरी बार तुर्किस्तान के बादशाह क़ुतलुग ख्वाजा ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया। मुग़ल सेना कीली पर चढ़ आई। सुल्तान उलुग खाँ तथा ज़फ़र खाँ बहुत बड़ी सेना के साथ युद्ध करने के लिए भेजे गये। दोनों सेनाओं का कीली में युद्ध हुआ। ज़फ़रखाँ शहीद कर दिया गया। क़ुतलुग ख्वाजा कुछ सेना के साथ तुर्किस्तान भाग गया और वहाँ पहुँच कर नरक को चल बसा।

(७३) तीसरी बार तरग़ी ने जो कि उस देश का एक सरकतान था, (बदायूनी के अनुसार एक दक्ष धनुर्धर) एक लाख बीस हजार वीर सवार लेकर पर्वतों के दामन से होता हुआ बरन तक पहुँच गया। बरन का मुक़्ता मलिक फ़ख़रुद्दीन अमीरदाद क़िले में बन्द हो गया। सुल्तान ने दुष्टों के विनाश के लिये मलिक तुग़लक़ को एक बहुत बड़ी सेना देकर भेजा। जब इस्लामी सेना बरन पहुंची तो मलिक फ़ख़रुद्दीन अमीरदाद भी निकल आया। उन सबने एकत्र होकर दुष्टों पर रात्रि में छापा मारा। भगवान् की कृपा से दुष्टों की सेना पराजित होकर छिन्न भिन्न हो गई और भाग गई। तरग़ी जीवित बन्दी बना लिया गया। मलिक तुग़लक़ उसे देहली ले आया।

चौथी बार मुहम्मद तरतक़ तथा अलीबेग ने जो कि खुरासान के शाहजादे थे, एक बहुत बड़ी सेना, जिसमें असंख्य वीर सैनिक थे, एकत्र की। इसके दो भाग किये। एक भाग सिरमूर पहाड़ी से होता हुआ विवाह (व्यास) नदी की ओर बढ़ा। दूसरे भाग ने नागौर पर छापा मारा। सुल्तान ने अपने दास मलिक नायब तथा मलिक तुग़लक़ अमीर दीपालपुर को अमरोहे के मार्ग से उनसे युद्ध करने के लिये भेजा। जब वे अमरोहा पहुँचे तो उन्हें ज्ञात हुआ कि मुग़ल अत्यधिक धन सम्पत्ति लूट कर रहब नदी के तट से होते हुये आ रहे हैं। मलिक नायब उनसे युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा। दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। इस्लामी सेना

को विजय प्राप्त हुई। दोनों शाहज़ादे गिरफ़्तार हो गये। उनकी गर्दनों को जंज़ीरों से जकड़ दिया गया और वे देहली लाये गये। समस्त धन सम्पत्ति तथा पशु जो मुग़लों के हाथ आ गये थे, छीन लिये गये। बहुत से दुष्ट तलवार के घाट उतार दिये गये। शेष पराजित होकर भाग गये।

(७४) पाँचवी बार इक़बालमन्दा तथा कीक ने सेना एकत्र करके तग्तक़ तथा अलीबेग का बदला लेने के लिये मुल्तान पर आक्रमण किया। उनके पास अगणित सेना थी किन्तु वे सुल्तान अलाउद्दीन की विजय देख चुके थे और अनेक बार पराजित होकर उन्हें भागना पड़ा था, अतः वे आगे न बढ़ सके। सुल्तान ने मलिक नायब तथा मलिक तुगलक को बहुत बड़ी सेना देकर उनसे युद्ध करने के लिये भेजा। जब वे मुल्तान पहुँचे तो मुग़ल लूटमार के पश्चात् भाग चुके थे। मलिक नायब तथा मलिक तुगलक़ ने उनका पीछा करके उन पर आक्रमण किया, दुष्ट कीक जो कि इस क्षेत्र के योद्धाओं में समझा जाता था बन्दी बना लिया गया। दुष्टों ने जो धन सम्पत्ति प्राप्त की थी, उस पर अधिकार जमा लिया गया। इस्लामी सेना विजय तथा सफलता पाकर वापस हुई। इसके उपरान्त मुग़ल सेना हिन्दुस्तान की सेना के भय से इस देश पर आक्रमण करने तथा इस ओर मुंह करने का साहस न कर सकी।······

(७५) ६९६ हि० (१२९७-९८ ई०) मे सुल्तान ने नव मुसलमान मुग़लों की हत्या करने का संकल्प कर लिया। इसी बीच मे कुछ नव मुसलमानों ने जो शहर देहली मे थे, विद्रोह कर दिया। इसका कारण यह था कि सुल्तान उनसे भयभीत रहता था और उनसे कठोरता से पेश आता था। वह उनके स्वभाव मे सशंकित था। विद्रोहियों ने योजना बनाई कि, "सुल्तान सैरगाह में असावधान होकर शिकरे उड़ाता है, लोग शिकरे का दृश्य देखने में लगे रहते हैं, हम लोग सवार होकर उस पर आक्रमण कर दें। उसकी तथा उसके निकटवर्तियों की हत्या कर दे।" गुप्तचरों ने सुल्तान को यह समाचार पहुँचा दिये। सुल्तान ने समस्त प्रदेशों के तथा राज्य के भागों के मुक्तों को गुप्त रूप से लिख दिया कि एक निश्चित दिन तथा समय पर समस्त राज्य के नव मुसलमानों की हत्या कर दी जाय। इस प्रकार कोई भी मुगली भाषा बोलने वाला शेष न रहा।

इसके उपरान्त वह हिन्दुस्तान के बाहर निकला और देवगीर पर, जिसे उसने उस समय विजित किया था जब कि वह वहाँ अमीर था और वहाँ से अत्यधिक धन सम्पत्ति तथा बहुमूल्य वस्तुयें लाया था, पुनः चढ़ाई की और उसे सुव्यवस्थित कर दिया।

(७६) जब भगवान् की दया से देहली का राज्य सुव्यवस्थित हो गया और सुल्तान दुष्टों की सेनाओं के युद्ध से निश्चिन्त हो गया तो उसने ६९८ हि० में (१२९८-९९ ई०) में उलुग खाँ को एक बहुत बड़ी सेना देकर गुजरात पर आक्रमण करने के लिये भेजा जिससे वह वहाँ के निवासियों के अभिमान का अन्त कर दे। उस समय गुजरात के करण राय के पास ३०००० वीर सवार, ८०००० प्रसिद्ध पैदल तथा ३० भयंकर हाथी थे। जब उलुग़ खाँ गुजरात के निकट पहुँचा तो करण राय उसका मुक़ाबला न कर सका और भाग निकला। उलुग़ खाँ गुजरात में प्रविष्ट हुआ। समस्त प्रदेश को छिन्न भिन्न कर दिया। २० हाथियों पर अधिकार जमा लिया। राय करण का पीछा सोमनाथ तक किया। सोमनाथ का मन्दिर जो कि प्राचीन काल से हिन्दुओं का तथा राय रायान का मुख्य पूजागृह था विध्वंस कर दिया। उसके स्थान पर एक मस्जिद का निर्माण कराया और वहाँ से देहली वापस आ गया।······

(७७) ६९९ हि० (१२९९-१३०० ई०) में उलुग़ खाँ एक बहुत बड़ी सेना लेकर रणथम्बोर तथा झायन की ओर भेजा गया। वहाँ का राजा हमीर देव क़िलाबन्द हो गया, उसका क़िला एक पहाड़ी पर स्थित था और बड़ा ही मज़बूत बना था। वहाँ एक झील भी

उड़ कर नहीं पहुँच सकता था। उसके पास १२००० सवार, अगणित प्यादे तथा प्रसिद्ध हाथी थे। जब उलुग़ खाँ वहाँ पहुँचा तो उसने अपनी सेना की पंक्तियाँ जमाईं। दोनों सेनाओं ने वहाँ से कुछ हट कर पड़ाव डाला। उलाग (समाचार वाहक) सुल्तान के पास भेजे गये ताकि वह क़िले की मजबूती तथा सवार व प्यादों के विषय में निवेदन करें और सुल्तान से आक्रमण करने तथा क़िले पर विजय प्राप्त करने की याचना करें। जब समाचार वाहकों ने सुल्तान के सम्मुख समस्त बातें रक्खीं तो सुल्तान ने सेनाएँ एकत्रित कीं और कूच करता हुआ रणथम्बोर पहुँचा और उस स्थान पर विजय प्राप्त करली। दुष्ट हमीर देव को नरक भेज दिया। उसके हाथी, धन, सम्पत्ति, ख़ज़ाना और गड़ी हुई पूँजी राज्य के अधिकारियों के हाथ में आ गई। उस किले के लिये एक कोतवाल नियुक्त कर दिया गया। झायन की अक्ता उलुग़ खाँ को प्रदान कर दी गई। उस स्थान से उसने चित्तौड़ पर आक्रमण किया और उस पर भी विजय प्राप्त कर ली। वहाँ ख़िज़्र खाँ को उसने लाल छत्र प्रदान किया। चित्तौड़ का नाम ख़िज़्राबाद रक्खा गया और वह ख़िज़्र खाँ को प्रदान किया गया। वहाँ से उच्च पताकायें विजय तथा सफलता प्राप्त करके देहली वापस हुईं।

(७८) ७०० हि० (१३००-१३०१ ई०) में सुल्तान ने मलिक ऐनुल शिहाब मुल्तानी को बहुत बड़ी सेना देकर मालवा भेजा ताकि वह वहाँ के विद्रोहियों का विनाश कर दे और उनकी दुष्टता के लिये उन्हें कठोर दंड दे; जो कोई भी आज्ञाकारी बन जाय उसे क्षमा तथा सहायता की खिलअत प्रदान करे। उस समय मालवा में कोका नामक एक मुक़द्दम था। उसके पास लगभग ४०००० सवार और एक लाख प्यादे थे। जब सेना उस स्थान पर पहुँची तो कोका मुक़ाबला न कर सका और भाग गया। उसका समस्त प्रदेश लूटकर तहस नहस कर दिया गया।

उस समय सिवाना में एक विद्रोही सतल देव (सीतल देव) नामक था। वह एक बहुत बड़ी सेना लेकर सिवाना के क़िले में बन्द हो गया। शाही सेना के विशेष प्रयत्न पर भी उसने किला न खोला। सुल्तान शिकार खेलने के ढंग से बाहर निकला और वहाँ पहुँच कर पहिले ही दिन उपर्युक्त क़िले को विध्वंस कर दिया। उस न्यायकारी तथा प्रजा के हितैषी बादशाह का भाग्य और भगवान की उसके प्रति सहायता बधाई के पात्र है। क़िले पर विजय प्राप्त कर ली गई और दुष्ट सीतल देव नरक भेज दिया गया। उसी वर्ष कमालुद्दीन गुर्ग ने जालौर पर अधिकार जमा लिया और विद्रोही कन्हर देव को नरक भेज दिया। तत्पश्चात् उच्च पताकाएँ देहली की ओर वापस हुईं।

७०२ हि० (१३०२-१३०३ ई०) में सेनायें तिलंग की ओर भेजी गईं। जब सेना तिलंग की सीमा में प्रविष्ट हुई तो राय तिलंग, यद्यपि उसके पास अगणित हाथी, सवार व पैदल थे किन्तु फिर भी इस्लामी सेना का मुकाबला न कर सका और वह क़िले में बन्द हो गया। शाही सेना ने क़िला घेर लिया और समस्त प्रदेश को तहस नहस कर दिया। तिलंग के रायों ने क्षमा याचना कर ली। हाथी, धन सम्पत्ति, ख़ज़ाना, गड़ा हुआ माल उपहार में भेंट किया। वहाँ से इस्लामी सेना देहली वापस हो गई।

(७९) तत्पश्चात् मलिक नायब बार्बक बहुत बड़ी सेना के साथ माबर भेजा गया। माबर पहुँच कर माबर प्रदेश विध्वंस कर दिया। अत्यधिक धन सम्पत्ति तथा गड़ा हुआ खजाना प्राप्त हुआ। १०० हाथी हाथ लगे। कई हज़ार प्रसिद्ध विद्रोही नरक भेज दिये गये। माबर की इक़्लीम राज्य के अधिकारियों के अधीन हो गई। मलिक नायब विजय तथा सफलता प्राप्त करके वापस हुआ।......

७ शव्वाल ७१५ हि० (९ जनवरी १३१६ ई०) को मलिक नायब ने सुल्तान के एक

पुत्र को जिसकी उपाधि शिहाबुद्दीन थी सिंहासनारूढ़ किया। उसकी पदवी सुल्तान शिहाबुद्दीन निश्चित की और स्वयं नायब मलिक बन गया।......

(८२) मुबारक खां ने सुल्तान शिहाबुद्दीन को बाहर निकाल दिया और स्वयं सुल्तान की उपाधि धारण करके सिंहासनारूढ़ हो गया। यह घटना ७१६ हि० (१३१६ ई०) में हुई। सुल्तान अलाउद्दीन ने २१ वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान कुतुबुद्दीन मुबारक शाह सुल्तान अलाउद्दीन का पुत्र था। जब सुल्तान शिहाबुद्दीन को निकाल दिया गया तो वह राजधानी के प्रासाद मे रविवार २० मुहर्रम ७१६ हि० (१४ अप्रैल, १३१६ ई०) को सिंहासनारूढ़ हुआ। अपने आदमियों को पदवियों तथा राज्य-सेवायें प्रदान कीं। खुसरो पासबान (रक्षक) को "खुसरो खाँ" की उपाधि प्रदान की।

(८३) सिंहासनारोहण के प्रथम वर्ष मे सुल्तान ने देवगीर पर आक्रमण करना निश्चित किया।......

(८४) तत्पश्चात् सुल्तान ने देवगीर की ओर प्रस्थान किया। कुछ समय वहाँ ठहर कर यकलखी को देवगीर में छोड़ कर देहली लौट आया।......

इसके उपरान्त यकलखी ने देवगीर मे विद्रोह कर दिया और बादशाही के चिह्न प्रदर्शित करने लगा। सुल्तान ने खुसरो खाँ को एक बहुत बड़ी सेना देकर यकलखी का विद्रोह शान्त करने के लिये देवगीर भेजा। जब खुसरो खाँ वहाँ पहुँचा तो देवगीर की सेना ने जो वहाँ एकत्रित हो गई थी यकलखी को बन्दी बना कर उसकी गर्दन व पैरों को जंजीर से जकड़ कर खुसरो खाँ के पास लाये। खुसरो खाँ ने उसे देहली भेज दिया। वहाँ इसकी हत्या कर दी गई।

खुसरो खाँ ने उस स्थान से प्रस्थान करके राघो के प्रदेश का विनाश करके अत्यधिक धन सम्पत्ति तथा सोना प्राप्त किया। वहाँ से तिलंग की ओर गया। तिलंग का राय युद्ध न कर सका और क़िले में बन्द हो गया। कुछ दिन उपरान्त राय ने विवश होकर लगभग १०० हाथी, ख़ज़ाना तथा बहुमूल्य वस्तुयें खुसरो खाँ की सेवा मे भेजी और आज्ञाकारी रहना स्वीकार किया। खुसरो खाँ ने उसे ख़िलअत प्रदान की।

(८५) वहाँ से खुसरो खाँ ने मलकी की ओर प्रस्थान किया। [illegible] हाथी और ६ दिरम के बराबर एक हीरा प्राप्त करके माबर की विलायत मे पहुँच गया। वहाँ से भी उसने हाथी तथा अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त की। जब उसे अत्यधिक धन सम्पत्ति तथा हाथी प्राप्त हो गये तो उसकी यह इच्छा हुई कि सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह करके उसी स्थान पर रह जाय। देहली से जो अमीर तथा मलिक नियुक्त हुये थे, अर्थात् मलिक तलबग़ा यग़दा, मलिक तलबग़ा नागौरी, मलिक हाजी नायब अर्ज़, मलिक तमर, मलिक तिगीन, मलिक मल, तथा अन्य अमीरों ने सर्वसम्मति से उसे देहली भेज दिया और इस बात की सूचना सुल्तान को भेज दी। सुल्तान ने उसके विषय में उनकी बात स्वीकार नहीं की, अपितु उसे विशेष रूप से सम्मानित किया और अत्यधिक कृपा दृष्टि दिखाई। उन राजभक्तों को कठोर दंड दिये।

(८६) वह हराम खोर (खुसरो खाँ) उस शुभ विश्वास वाले बादशाह का काम तमाम करके सिंहासनारूढ़ हो गया। अपनी उपाधि सुल्तान नासिरुद्दीन निश्चित की। सुल्तान की स्त्री से विवाह कर लिया। यह घटना ५ रबीउलअव्वल ७२० हि० (१५ अप्रैल, १३२० ई०) को घटी। सुल्तान कुतुबुद्दीन ने ४ वर्ष कुछ महीने राज्य किया।......

तारीखे फ़रिश्ता

[लेखक मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी, फ़रिश्ता]

(नवल किशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ से अनूदित)

(९५) उसने (अलाउद्दीन ने) सुन रक्खा था कि दकिन (दक्षिण) के राजा रामदेव के पास कई पीढ़ियों का ख़ज़ाना वर्त्तमान है। देहली के किसी सुल्तान को उस प्रकार का ख़ज़ाना प्राप्त न हो सका है। इस कारण वह सात आठ हज़ार सवार लेकर चन्देरी पर आक्रमण के बहाने से ६९४ हि० में जंगल के मार्ग से, जो बड़े निकट का मार्ग है, चल खड़ा हुआ। दक्षिण की सीमा पर पहुँचकर देव पर धावा बोल दिया। उसे आशा थी कि इस कारण कि देवगढ़ नगर में कोई चहार दीवारी अथवा मजबूत क़िला नहीं है, अतः सम्भव है कि उसके भाग्य से रामदेव अथवा उसका कोई पुत्र या सम्बन्धी असावधानी में बन्दी बना लिया जाय और उस बहाने से अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हो जाय। यद्यपि वह विचार बुद्धि-शून्य था किन्तु उसने अपने भाग्य पर विश्वास करके इस कार्य में हाथ डाल दिया था और एलिचपुर पहुँच गया। कहा जाता है कि उसने दो दिन तक वहाँ विश्राम किया और वहीं से शीघ्राति-शीघ्र देवगढ़ की ओर चल खड़ा हुआ। रामदेव अपने पुत्र के साथ किसी दूर के स्थान को गया था। जब उसे अलाउद्दीन के देवगढ में प्रविष्ट हो जाने की सूचना मिली तो वह रायों की एक बहुत बड़ी सेना लेकर उससे युद्ध करने के लिये पहुंच गया। युद्ध में मलिक अलाउद्दीन ने उस सेना को पराजित कर दिया और देवगढ़ पर विजय प्राप्त करली।

तबकाते नासिरी[1] के संकलन कर्त्ता ने जो उनका समकालीन था. लिखा है कि मलिक अलाउद्दीन कड़े से निकल कर एक ओर रवाना हुआ। मार्ग में शिकार खेलता जाता था। मार्ग के राजाओं को उसने किसी प्रकार की हानि न पहुंचाई। उसके विश्वास-पात्रों के अतिरिक्त किसी को उसकी योजनाओं के विषय में कुछ ज्ञात न था। दो मास उपरान्त वह एलिचपुर में जो दक्षिण के प्रसिद्ध नगरों में से एक है अचानक पहुँच गया। उसने यह अफ़वाह उड़ादी कि मलिक अलाउद्दीन देहली के बादशाह का एक अमीर है। कुछ कारणों से वह उसकी सेवा से पृथक् होकर तिलंगाना के एक राज्य के राजा राज मुन्दरी की सेवा में जा रहा है। आधी रात में एलिचपुर से प्रस्थान कर के शीघ्रातिशीघ्र देवगढ़ की ओर बढ़ा। उस समय रामदेव की पत्नी तथा उसका ज्येष्ठ पुत्र उस ओर के एक मन्दिर की यात्रा को गये थे और वह स्वयं देवगढ़ मे पूर्णतया असावधान था। उसको अत्याचारी आकाश की लीलाओं की सूचना न थी। मलिक अलाउद्दीन अचानक पहुँच गया। रामदेव ने दो तीन हजार मनुष्यों को, जो उस समय उपस्थित थे, उनसे युद्ध करने के लिये भेजा। इन लोगों का देवगढ़ से दो कोस पर मलिक अलाउद्दीन की अग्रगामी सेना से युद्ध हुआ। इस कारण कि दक्षिण के काफ़िरों ने मुसलमानों का युद्ध कभी न देखा था और उनकी आँखों को मुसलमानों की तलवारों तथा सीनों को छेद डालने वाले तीरों का कोई अनुभव न हुआ था, अतः वे पहले ही आक्रमण का सामना न कर सके और भाग खड़े हुये। देवगढ़ तक अपने घोड़ों की लगामें किसी स्थान पर भी न मोड़ी। इस्लामी सेना के पीछा करने के कारण रामदेव. देवगढ़ के क़िले में जिस में, उस समय न तो खाई थी और न जो मजबूत ही था, हैरान और परेशान होकर घुस गया और क़िला बन्द कर लिया। उसी दिन व्यापारी दो तीन हजार नमक के बोरे कोंकन से लाये थे। वे इन बोरों

---

[1]. इस पुस्तक का अभी तक कोई पता नहीं चला सका है।

को क़िले तथा नगर के निकट छोड़कर भाग गये थे। रामदेव के सम्बन्धी उसे अनाज समझ कर क़िले में उठा ले गये। उनमें नमक के अतिरिक्त कुछ न था। मलिक अलाउद्दीन ने नगर के गण्यमान्य व्यक्तियों, व्यापारियों, तथा प्रजा को भागने का अवसर न मिलने दिया और देवगढ़ नगर में प्रविष्ट हो गया। उस स्थान के महाजनों, ब्राह्मणों तथा प्रतिष्ठित लोगों को बन्दी बना लिया। लूटमार आरम्भ करदी। चालीस हाथी और रामदेव के ख़ास तवेले के कई हज़ार घोड़े अपने अधिकार में कर लिये। यह बात प्रसिद्ध करदी कि बीस हज़ार मुसलमान सवार अमुक मार्ग से पीछे पीछे आ रहे हैं। उस नगर की लूटमार के पश्चात् जिसे शत्रुओं के घोड़ों की टापों ने कई हज़ार वर्ष से कोई हानि न पहुँचाई थी, वह क़िले की ओर बढ़ा और उसे घेर लिया। रामदेव को विश्वास हो गया कि वे लोग उसके राज्य पर अधिकार जमाने के लिये उसमें प्रविष्ट हुये हैं और यह उचित है, कि अन्य अमीरों के आने के पूर्व ही उनसे सन्धि करली जाय और मलिक अलाउद्दीन को लौटा दिया जाय, अतः उसने अपने कुछ विश्वास पात्रों को जिनमें अधिकतर ब्राह्मण थे उसी दिन उसके पास भेजा और कहलाया कि, "तुम लोगों ने इस प्रदेश में प्रविष्ट होने में बुद्धि से काम नहीं लिया। नगर के रिक्त होने के कारण तुम ने उस पर अधिकार जमा लिया, और जो कुछ तुम्हारे मन में आया वह तुमने किया। तुम्हें अभिमान न करना चाहिये। शीघ्र ही दक्षिण के चारों ओर से अगणित तथा असंख्य सेना एकत्रित हो जायगी और तुम लोगों में से किसी को भी इस प्रदेश से जीवित न जाने देगी। यदि तुम भाग्यवश दक्षिण से बचकर निकल भी गये तो मालवे का राजा जिसके पास चालीस हज़ार सवार तथा प्यादे हैं और खानदेश तथा कोंदवाड़ा के राजे जिनके पास असंख्य सवार तथा पैदल हैं, तुम्हारे वापस लौटने के समाचार पाकर तुम्हारा मार्ग रोक देंगे और तुम में से किसी को भी जीवित न छोड़ेंगे, अतः यह उचित होगा कि आस पास के राजाओं के सूचना पाने के पूर्व तुम महाजनों एवं प्रजा से धन सम्पत्ति लेकर उन्हें छोड़ दो और लौट जाओ।" अलाउद्दीन ने बुद्धिमत्ता तथा सावधानी से काम लेकर यह बात स्वीकार करली। बन्दियों से पचास मन सोना, कई मन मोती तथा उत्तम प्रकार के कपड़े लेकर यह निश्चय किया कि अपने प्रविष्ट होने के पन्द्रहवें दिन की सुबह को वह बन्दियों को मुक्त कर के चला जायगा। संयोग से रामदेव के ज्येष्ठ पुत्र को सब हाल ज्ञात हो गया। उसने युद्ध के लिये एक सेना एकत्रित की और जिस समय अलाउद्दीन वापस होने वाला था, वह देवगढ़ से तीन कोस की दूरी पर पहुँच गया। रामदेव ने अपने पुत्र के पास आदमी भेजकर उसके पास यह कहलाया कि, 'जो कुछ होना था हो गया। भगवान् का कृतज्ञ होना चाहिये कि मुझे कोई हानि नहीं हुई। प्रजा को जो कुछ हानि हुई अथवा उस पर जो अत्याचार हुआ उसकी पूर्ति किसी सुन्दर ढंग से करदी जायगी। उनसे युद्ध के द्वार मत खोलो। तुर्क अर्थात मुसलमान बड़े ही विचित्र लोग हैं। उनसे युद्ध करना उचित नहीं। पुत्र ने शत्रु की सेना की अपेक्षा अपनी सेना अधिक देखकर तथा राजाओं को सहायता के लिये तैयार पाकर युद्ध का आग्रह किया।

(९६) उसने मलिक अलाउद्दीन के पास यह संदेश भेजा कि यदि तुम्हें जीवन प्रिय हो और तुम इस भयंकर तथा प्रचंड भंवर से पार उतरना चाहते हो तो जो कुछ भी तुमने प्रजा से लिया हो उसे वापस करके अपने राज्य को लौट जाओ और यहाँ से सुरक्षित वापस होने को बहुत समझो। मलिक अलाउद्दीन ने क्रोध से आग बगूला होकर रामदेव के पुत्र के आदमियों के मुँह काले करवाकर उन्हें सेना में घुमवाया। मलिक नुसरत को एक हज़ार सवार देकर क़िले को घेरे रहने का आदेश दिया और बिना किसी प्रकार की देर अथवा प्रतीक्षा के सेना को ठीक करके दक्षिण की सेना से युद्ध करने के लिये आगे बढ़ा और लड़ाई छेड़ दी। उसके पैर उखड़ने वाले ही थे और वह भागने वाला ही था कि मलिक नुसरत

बिना आज्ञा क़िला का घेरा छोड़ कर समरभूमि की ओर बढ़ा। जैसे ही दक्षिण की सेना की दृष्टि मलिक नुसरत की फ़ौज पर पड़ी तो वे समझे कि बीस हज़ार इस्लामी सेना जिस के आने के समाचार सुने जा रहे थे, पहुँच गई। इस धोखे से वे पीठ दिखा कर भाग खड़े हुये। मलिक अलाउद्दीन ने विजय तथा सफलता प्राप्त कर के उसी समय वापस होकर पहले की भाँति क़िला घेर लिया। बड़ी कठोरता तथा क्रोध दिखाना प्रारम्भ कर दिया। बहुत से बन्दी महाजनों तथा ब्राह्मणों की हत्या करा दी। रामदेव के बहुत से सम्बंधियों को ज़ंजीर में बँधवा कर क़िले के सामने खड़ा कर दिया। रामदेव ने शत्रुओं को हटाने के लिये अपने विश्वासपात्रों से परामर्श किया। उसने सोचा कि गुलबरगी, मालवा तथा खानदेश के राजाओं से सहायता माँगी जाय। इसी बीच में ज्ञात हुआ कि क़िले में अनाज बिलकुल नहीं है। जो बोरे भीतर लाये गये हैं उनमें नमक ही नमक है और अनाज किसी में भी नही है। खलजियों के भय तथा आतंक के कारण कोई भी क़िले के निकट नही पहुँच सकता और अनाज तो उन तक आ ही नहीं सकता।

रामदेव बड़े असमंजस में पड़ गया। उसने खाने और अनाज की कमी के समाचार गुप्त रक्खे और मलिक अलाउद्दीन के पास दूत एवं संदेश भेजने प्रारम्भ कर दिये। उसने यह निवेदन कराया कि "अन्नदाता को भली भांति ज्ञात है कि इस हितैषी का इस मामले में कोई हाथ नही। यदि मेरे पुत्र ने युवावस्था एवं अज्ञानवश युद्ध की पताकायें बलन्द कीं तो मुझे उसका दण्ड न मिलना चाहिये। उसने दूतों से गुप्त रूप से कह दिया कि क़िले में अनाज नही है। यदि दो तीन दिन यही स्थिति रही और मलिक अलाउद्दीन यहाँ से वापस न हुआ तो लोग भूख से मर जायंगे और क़िला तथा यह प्रदेश उन्हे प्राप्त हो जायगा। तुम लोग इस बात का प्रयत्न करो कि उन लोगों को इस बात का पता न चलने पाये और इस्लामी सेना वापस चली जाय। मलिक अलाउद्दीन को रामदेव की परेशानी से इस बात का विश्वास हो गया कि क़िले मे अनाज नही है। उसने संधि करने में इतनी देर करदी कि दूतो को आग्रह करके यह निश्चित करना पड़ा कि रामदेव छः सौ मन सोना, सात मन मोती, दो मन जवाहरात, लाल याक़ूत, हीरे, पन्ने, एक हज़ार मन चाँदी, चार हज़ार रेशमी कपड़ों के थान तथा अन्य वस्तुयें जिसका उल्लेख बहुत ही लम्बा है और जिस पर बुद्धि भी विश्वास नहीं कर सकती, मलिक अलाउद्दीन की सरकार में दाख़िल करेगा और एलिचपुर तथा उससे सम्बन्धित एवं अधीन स्थान उसके अधिकारियों को प्रदान कर देगा या उसे अपने अधीन रख कर उसका वार्षिक कर कड़े मे भेजता रहेगा। मलिक अलाउद्दीन समस्त बन्दियों को मुक्त करदे और उस सेना को जिसके विषय मे कहा जाता है कि देहली से भेजी गई है, लौटा ले जाय। वह उसके तथा सुल्तान जलालुद्दीन फ़ीरोज़ शाह खलजी के बीच मे मध्यस्थ का कार्य करता रहे और दोनों के बीच में सर्वदा सन्धि बनाये रखने का प्रयत्न करता रहे। मलिक अलाउद्दीन उपर्युक्त सब वस्तुयें लेकर और बन्दियों को मुक्त करके घेरा डालने के पच्चीसवें दिन विजय तथा सफलता प्राप्त करके कड़े की ओर चल खड़ा हुआ।······

(११४) सुल्तान के एक नदीम ने जो वैश्या गामी था बादशाह को प्रसन्न चित्त देख कर एक दिन निवेदन किया कि समस्त वस्तुओं का मूल्य तो बादशाह की ओर से निश्चित तथा निर्णित हो गया किन्तु एक चीज़ का मूल्य जो परमावश्यक तथा सर्वश्रेष्ठ है, अभी तक निर्धारित नहीं हुआ और अभी तक उसी प्रकार है।" बादशाह ने पूछा कि "वह क्या है?" उस व्यक्ति ने धरती चुम्बन करते हुये निवेदन किया, कि, "वैश्याओं का मूल्य जो युवकों तथा सैनिकों को खराब करती हैं निर्धारित नहीं हुआ है।" बादशाह हँसा और उसने कहा कि तेरे कहने पर मैं उनका मूल्य भी निर्धारित करता हूं" अतः उसने मीर बाज़ार एवं कोत-

वाल को बुलवा कर आदेश दिया कि वैश्याओं, गायकों तथा नर्तकियों को चेतावनी दे दी जाय कि वे शाही निर्धारित भाव से अधिक लेने का लोभ कदापि न करें। उसने उन्हें भी तीन श्रेणियों में विभाजित किया और प्रत्येक की मज़दूरी निर्धारित की।

कुछ समय उपरान्त जब चीज़ों के सस्ता करने से सम्बन्धित आदेशों का पूर्णतया पालन होने लगा तो उसने व्यापारियों पर दया करते हुये इस बात की आज्ञा दे दी कि वे भी क्रय विक्रय कर सकते हैं किन्तु सुल्तान द्वारा निश्चित भाव का उल्लंघन न करें। यदि प्रथम श्रेणी के अरबी तथा इराक़ी घोड़े एवं ख़ताई चर्की अथवा तुर्की दास या दासियाँ अन्य देशों से हिन्दुस्तान में लाई जायँ तो सर्व प्रथम उन्हें उसके सम्मुख पेश किया जाय। जो वह स्वीकार करले वह ठीक है। शेष को वह जिस अमीर के हाथ बेचने को कहे उसके हाथ बेचें।

उस समय तनका एक तोले सोने अथवा चाँदी का होता था। प्रत्येक चाँदी का तनका पचास ताँबे के पोल (पैसे) के बराबर होता था जो जीतल कहलाते थे किन्तु उनके वज़न के विषय में कोई जानकारी नहीं। कुछ का विचार है कि इसका वज़न एक तोला ताँबा होता था। कुछ का विचार है कि इस समय के पोल के समान इसका वज़न पौने दो तोला होता था। उस समय का मन चालीस सेर का होता था। प्रत्येक सेर २४ तोले का होता था। इस पुस्तक में जिस स्थान पर तनके का उल्लेख है उसका अर्थ चांदी का तनका है।

जब जीवन वृत्ति तथा युद्ध के हथियार सस्ते हो गये तो बादशाह ने सैनिकों का वेतन इस प्रकार निश्चित किया। प्रथम श्रेणी को २३४ तनके,' द्वितीय श्रेणी को १५६ तनके, तृतीय श्रेणी को ७८ तनके। जब कर्मचारियों ने इस नियम का पालन किया तो चार लाख पछत्तर हज़ार सैनिक भरती हो गये। सेना की अधिकता से मुग़लों के आक्रमण के द्वार पूर्णतया बन्द हो गये।......

(११८) जिस समय मलिक नायब दक्षिण की ओर गया हुआ था, बादशाह सिवाना के क़िले की ओर, जो देहली के दक्षिण में है और जिसे देहली की सेना कई वर्षों तक घेरे रह चुकी थी किन्तु असफल रही थी, रवाना हुआ। क़िले को घेर कर बीच में कर लिया। सिवाना के राजा सीतल देव ने नम्रता पूर्वक अपनी सोने की प्रतिमा तैयार कराई और उसके गले में सोने की ज़ंजीर डाल कर सौ हाथियों तथा अन्य बहुमूल्य उपहार के साथ बादशाह के पास भेजी और क्षमा याचना की। बादशाह ने प्रसन्नता पूर्वक उसे अपने पास रख लिया और उसे कहला भेजा कि जब तक वह स्वयं उपस्थित न होगा उस समय तक कोई लाभ न होगा। सीतल देव विवश होकर क़िले से निकल कर सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ। बादशाह ने क़िले में जो कुछ भी था, यहाँ तक कि चाक़ू और सुई तक अपने अधिकार में कर लिये। जो कुछ उसकी सरकार के योग्य था, वह कारख़ानों में भिजवा दिया और शेष को सैनिकों तथा शागिर्द पेशा लोगों के वेतन में दे दिया। यह विलायत अमीरों में विभाजित कर दी और रिक्त क़िला सीतल देव को प्रदान कर दिया।

ज़फ़रुल वालेह बे मुज़फ़्फ़र वालेह

[गुजरात का अरबी इतिहास, लेखक अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अल मक्की अल-आसफ़ी, उलुग़ ख़ानी, (१६०५ ई०), प्रकाशन लन्दन १९१० ई०]

(१५४-१५५) अलाउद्दीन का अपने एक चचा की पुत्री से सम्बन्ध था। इस बात से उसकी धर्म पत्नी खिन्न रहती थी। वह (अलाउद्दीन) यह बात अपने चचा (जलालुद्दीन) के कारण अपनी धर्म पत्नी से छिपाता था। उस लड़की का नाम महरू था। यह अलप ख़ाँ की बहिन थी। जब उस चचा (जलालुद्दीन) की पुत्री को यह सूचना मिली तो वह बड़ी प्रभावित तथा रुष्ट हुई, किन्तु अलाउद्दीन ने यह बात अस्वीकार की। उसकी स्त्री ने कुछ दरबान इस बात की देख रेख के लिये नियुक्त कर दिये कि वे कहाँ मिलते हैं। संयोग से वे लोग एक उद्यान में एकत्रित हुये। जब वे लोग पूर्णतया असावधान थे, तो यह लड़की (अलाउद्दीन की धर्म पत्नी) उनके पास पहुंच गई, मानो वह यह छन्द पढ़ रही हो।

निस्संदेह वह भोग विलास सब से उत्कृष्ट है जो समय तुझे प्रदान करे और जिस समय आपत्तियाँ सो रही हों।

अलाउद्दीन को यह बहुत बुरा मालूम हुआ। उसकी धर्म पत्नी ने केवल आलोचना ही नहीं की अपितु अपने पैर से जूता निकाल लिया और उस स्त्री को उससे मारा। अलाउद्दीन ने जब यह देखा तो वह सहन न कर सका। उसके हाथ में तलवार थी। उसने वह तलवार अपनी धर्म पत्नी के मारी किन्तु घाव गहरा न लगा। तलवार के घाव से केवल कुछ रक्त बह गया। अलाउद्दीन अब बड़े संकट में पड़ गया। वह बहुत घबड़ाया, कारण कि उसकी पत्नी बड़ी चतुर थी और उसकी (पत्नी की) माता बड़ी दुष्टा थी, किन्तु उसका चचा (जलालुद्दीन) बड़ा ही सहनशील था और उस पर बड़ी कृपा दृष्टि रखता था किन्तु अलाउद्दीन और उसकी धर्म पत्नी में यह घबड़ाहट बहुत समय तक वर्त्तमान रही।

शब्दार्थ

अक़्ता—इसका अनुवाद प्रायः जागीर किया जाता है किन्तु अक़्ता वह भूमि थी जो सेना के सरदारों को सेना रखने और उसका उचित प्रबन्ध करने के लिये दी जाती थी। हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न भागों पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त तुर्क जिस भाग पर विजय प्राप्त करते थे उस भाग को भिन्न भिन्न अक़्ताओं में विभाजित कर देते और प्रत्येक भाग एक सरदार को प्रदान कर देते थे। सरदार के बूढ़े हो जाने अथवा युद्ध में कार्य्य करने के योग्य न रहने पर भूमि दूसरों को दे दी जाती थी।

अमीर—दस सिपह सालारों का सरदार। इन्हें ३०, ४० हज़ार तनकों तक की अक़्ता प्राप्त होती थी।

अमीराने पंजाह—५० सैनिकों के अधिकारी।

अमीराने सदा—१०० सैनिकों के अधिकारी।

अमीराने हज़ारा—१००० सैनिकों के अधिकारी।

अमीरे तुज़ुक—शाही मुहर की देखभाल करने वाला अधिकारी।

अमीरे बहर—नौकाओं का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी।

अमीरे शिकार—शिकार का प्रबन्ध करने वाला सबसे बड़ा अधिकारी।

अमीर दाद—वह सुल्तान की अनुपस्थिति में दीवाने मज़ालिम का अध्यक्ष होता था और बहुत बड़ा अधिकारी होता था। वह दादबक भी कहलाता था। सेना आदि में भी अमीर दाद होते थे। क़ाज़ी के फ़ैसलों का पालन कराना भी उसी का कर्तव्य होता था।

अमीर मजलिस—सुल्तान की सभाओं, गोष्ठियों आदि का प्रबन्ध करने वाला मुख्य अधिकारी।

अमीर हाजिब—बार्बक; देखो हाजिब।

अर्ज़—सेना का निरीक्षण तथा नई भरती।

अलाई—सुल्तान अलाउद्दीन से सम्बन्धित।

अहकामे तौक़ी—आज्ञा पत्र जिन पर सुल्तान के नाम की मुहर के स्थान पर शाही चिह्न की मुहर लगती थी। नियुक्ति, तथा अन्य आदेश इसी प्रकार के आज्ञा पत्र से भेजे जाते थे।

आख़ुर बक—शाही घोड़ों की देख भाल करने वाला अधिकारी। सेना के दाहिनी और बाईं ओर के घोड़ों की देख भाल के लिये अलग अलग अधिकारी होते थे। दाहिनी ओर वाला आख़ुर बके मैमना और बाँई ओर वाला आख़ुर बके मैसरा कहलाता था।

आमिल—ग्रामों में भूमि-कर वसूल करने वाला। ग्रामों में उसका तथा मुतसर्रिफ़ का एक ही कार्य होता था।

आरिज़े ममालिक—दीवाने अर्ज़ (सेना विभाग) का सबसे बड़ा अधिकारी आरिज़े ममालिक अथवा अर्ज़े ममालिक कहलाता था। सेना की भरती, निरीक्षण तथा सेना का समस्त प्रबन्ध उसके अधीन कर्मचारियों द्वारा होता था। युद्ध में सेना की अध्यक्षता उसके लिये आवश्यक न होती थी किन्तु वह अथवा उसके नायब युद्ध में सेना के साथ जाते थे। रसद का प्रबन्ध तथा लूट के माल की देख भाल भी उसी को करनी होती थी।

इक़लीम—जलवायु के प्रदेश । मध्यकालीन मुसलमान भूगोलवेत्ताओं के अनुसार संसार सात इक़लीमों में विभाजित था । बड़े-बड़े प्रान्त अथवा स्वतन्त्र राज्य भी इक़लीम कहे जाते थे ।

इदरार—विद्वानों तथा धार्मिक लोगों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता, वृत्ति ।

इनाम—वह भूमि जो किसी से प्रसन्न होकर अथवा पुरस्कार के रूप में प्रदान की जाती थी ।

इबाहती—एक धर्म के अनुयायी जो स्त्री तथा पुरुष के सम्बन्ध में किसी नियम का पालन नहीं करते थे । मिफ़ताहुल फ़ुतूह के अनुसार इसमाईलियों की एक शाखा ।

अमरद—किशोर । वे बालक जो अभी युवावस्था को प्राप्त न हुये हों ।

उलिल अमर—जिसके आदेशों का पालन हो । सुल्तान ।

उलिल अमरी—सुल्तानी आदेश ।

उश्र—$\frac{1}{10}$; इस्लामी राज्य में भूमि तीन भागों में विभाजित की जाती थी । उश्री, ख़राजी, सुलही । उश्री भूमि (१) अरब की (२) इस्लाम स्वीकार करने वालों की (३) उन राज्यों के मुसलमान सैनिकों की जो उन्हें विजय के उपरान्त प्रदान होती थी । (४) वह भूमि जिन पर मुसलमान बाग़ लगा लेते हों । (५) ऊसर जिसे मुसलमान कृषि योग्य बनाते थे । इस प्रकार की भूमि से पैदावार का $\frac{1}{10}$ भूमि कर के रूप में लिया जाता था ।

एहतिकार—चोर बाजारी । ग़ल्ले को इस आशय से एकत्रित करना कि भविष्य में उसे अधिक मूल्य पर बेचा जाय ।

क़बा—सब कपड़ों के ऊपर पहनने का वस्त्र । यह बड़ा बहुमूल्य होता था ।

करही—घर का कर । इसका प्रयोग चराई के साथ किया गया है, अतः यह चराई के समान भी कोई कर हो सकता है । डा० क़ुरेशी इसे करा अथवा ताजा मक्खन से सम्बन्धित बताते हैं । इसे घरी भी पढ़ा जा सकता है ।

क़ल्ब—सेना का मध्य भाग ।

क़सीदा—किसी की प्रशंसा में कोई कविता ।

क़ाज़ी—न्यायाधीश जो शरा के अनुसार मुकद्दमों का निर्णय करते थे । प्रत्येक क़स्बे में एक क़ाजी हुआ करता था । वह धार्मिक कार्यों के लिए दी गई भूमि तथा वृत्ति आदि का भी प्रबन्ध करता था ।

क़ाजी ए ममालिक—देखो सद्रुस्सुदूर ।

कारकुन—भूमि कर का हिसाब किताब रखने वाला ।

कारख़ाना—शाही आवश्यकताओं तथा शिकार आदि के प्रबन्ध के लिये बहुत से कारख़ानों की स्थापना की जाती थी । शिकारी कुत्ते, बाज चीते आदि का प्रबन्ध भी इन्हीं कारख़ानों द्वारा होता था । शाही आवश्यकता की वस्तुएं भी कारख़ानों में तैयार होती थी । प्रत्येक कारख़ाना एक मलिक अथवा ख़ान के अधीन होता था । कारख़ानों का हिसाब किताब मुतसर्रिफ़ रखता था ।

किताबदार—शाही पुस्तकालय का मुख्य अधिकारी ।

कुफ़्र—अल्लाह और मुहम्मद साहब पर विश्वास न रखना । इस मत का मनुष्य काफ़िर कहलाता है ।

क़ुब्बे—एक प्रकार के द्वार जो ख़ुशी के अवसर पर मार्गों में सजाये जाते थे ।

क़ूरख़ाना—शाही पताकाओं का प्रबन्ध करने वाला विभाग ।

क़ूरबेग—क़ूरख़ाने का मुख्य अधिकारी ।

कोतवाल—नगर की देखभाल करने वाला अधिकारी । उसके सैनिक नगर का रात्रि में पहरा देते थे और कोतवाल नगर की रक्षा का उत्तरदायी होता था । किले का अधिकारी भी कोतवाल कहलाता था । पुलिस का मुख्य अधिकारी कोतवाल होता था ।

कोहानशुतरी—एक खुली हुई चीज़ को छिपाने का प्रयत्न करना ।

ख़रीतादार—फ़रमानों को भेजने वाला अधिकारी ।

ख़ाकबोस—धरती चूमना । इस्लामी नियम के अनुसार केवल अल्लाह के सम्मुख धरती पर शीश नवाया जाता है किन्तु सुल्तानों ने ख़ाकबोस के नाम से लोगों को अपने सम्मुख पृथ्वी-चुम्बन की आज्ञा दे दी थी ।

ख़ान—दस मलिकों का सरदार । इन्हें एक लाख तनके तक की अक़्ता प्राप्त होती थी ।

ख़ानक़ाह—मठ , वह स्थान जहाँ शेख़ एकत्रित होते हैं तथा निवास करते हैं ।

ख़ालसा—वह भूमि जिसकी आय केन्द्रीय सरकार के लिये सुरक्षित रहती थी । इसमें से किसी को कोई भाग अक़्ता के रूप में नहीं दिया जाता था ।

ख़ासा ख़ेल—शाही महल से सम्बन्धित सेना ।

ख़ासादार—सुल्तान के अस्त्र शस्त्र का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी ।

ख़िर्क़ा—वह ऊपरी वस्त्र जो शेख़ पहनते हैं । चेला बनाते समय शेख़ अपना ख़िर्क़ा लोगों को प्रदान करते हैं ।

ख़िराज—भूमिकर किन्तु बाद में सभी कर ख़िराज कहलाने लगे ।

ख़िलअत—वह वस्त्र जो सुल्तान की ओर से पुरस्कार के रूप में प्रदान होता था ।

ख़ुत्बा—इसमें भगवान्, मुहम्मद साहब, उनकी सन्तान तथा समकालीन बादशाह की प्रशंसा होती है । एक इस्लामी राज्य में केवल एक ही सुल्तान का ख़ुत्बा पढ़ा जा सकता है । ख़ुत्बा, जुमे, दोनों ईदों और दरबार के ख़ास ख़ास अवसरों पर पढ़ा जाता था ।

ख़ुम्स—देखो ग़नीमत ।

ख़ूत—मुक़द्दम की भाँति गाँव का मुखिया जिसका कार्य भूमिकर वसूल करना होता था ।

ख़्वाजा—प्रत्येक प्रान्त में वज़ीर की सिफ़ारिश पर एक ख़्वाजा अथवा साहिबे दीवान नियुक्त होता था । वह प्रान्त का हिसाब किताब रखता तथा केन्द्र में भेजता था । वह मुक़्ता का अधीन होता था किन्तु केन्द्र से नियुक्त होने के कारण उसे विशेष अधिकार प्राप्त थे ।

ख़्वाजा ताश—साथी ।

ख़्वाजगी—ख़्वाजा का कार्य ।

ग़नीमत—लूट का माल । इस्लामी नियमानुसार लूट के माल का $\frac{1}{5}$ बैतुल माल में जाना चाहिये और शेष सैनिकों को बांट दिया जाय ।

गरगच—एक प्रकार का चलता फिरता मचान जिसे ऊँचा करके क़िले की दीवार के बराबर कर दिया जाता था और क़िले पर आक्रमण करने में सुविधा होती थी । कभी कभी इन पर छत भी होती थी जिससे क़िले के भीतर से आक्रमण करने वाले इन्हें कोई हानि न पहुंचा सकें ।

गुमाश्ते—आधुनिक एजेन्ट के समान होते थे ।

ग़ैर वजही—अल्प समय के लिये नियुक्त होने वाली सेना ।

चत्र—छत्र । यह एक राज-चिह्न होता था । इसके भिन्न भिन्न रंग होते थे । इसका प्रयोग सुल्तान के अतिरिक्त कोई अन्य न कर सकता था । कभी कभी सुल्तान अपने पुत्रों तथा

बड़े बड़े खानों एवं मलिकों को भी चत्र प्रदान कर देता था।

चाऊश—सेना तथा दरबार की पंक्तियाँ ठीक करते थे।

जकात—वह कर जो मुसलमानों की उस सम्पत्ति पर लगता था जो उनके पास निर्धारित समय तक रहती थी। वह कर ज़िम्मियों से न लिया जाता था।

जज़िया—वह कर जो ज़िम्मियों से वसूल किया जाता था। इसका एक कारण यह भी था कि ज़िम्मी अनिवार्य सैनिक सेवा से मुक्त थे।

जलाली—सुल्तान जलालुद्दीन से संबंधित।

जहाँगीरी—दिग्विजय।

जहाँदारी—राज्य-व्यवस्था अथवा शासन प्रबन्ध।

जानदार—सुल्तान के अँग-रक्षक।

जिन्दीक़—नास्तिक, अग्नि-पूजक। ख़ुदा अथवा क़यामत पर विश्वास न रखने वाले।

ज़िम्मी—किसी देश पर विजय के उपरान्त वहाँ की जो प्रजा इस्लाम स्वीकार न करती थी और जज़िया देना स्वीकार कर लेती थी। केवल ईसाई और यहूदी ही ज़िम्मी हो सकते थे किन्तु हन्फ़ी नियमानुसार हिन्दू भी ज़िम्मी बना दिये गये थे।

जिहाद—धर्म-युद्ध। इस्लाम के प्रसार के लिये युद्ध। साधारणतया सुल्तान अपनी सभी लड़ाइयों को जिहाद कहते थे। यहाँ तक कि विद्रोही मुसलमानों के युद्ध भी जिहाद ही बताये गये हैं।

जीतल—१ तोले से १$\frac{३}{४}$ तोले तक ताँबे का सिक्का होता था। इसे दो रत्ती चाँदी के बराबर कहा जा सकता है और आधुनिक १$\frac{१}{३}$ पैसे के बराबर होगा।

तज़कीर—धर्मोपदेश। क़ुरान तथा अन्य धार्मिक पुस्तकों से ऐसा भाषण देना जिससे इस्लाम के प्रति लोगों की श्रद्धा बढ़ जाय।

तनका—यह एक तोला सोने या चाँदी का होता था और तोल में आधुनिक रुपये के बराबर समझा जा सकता है।

तफ़सीर—क़ुरान का अनुवाद तथा समीक्षा।

तयम्मुम—जल न मिलने पर धरती या मिट्टी पर हाथ पटक कर पाक (शुद्ध) होना।

तसर्रुफ़—मुतसर्रिफ़ का कार्य।

तुमन—दस हज़ार सैनिकों की सेना।

तौक़—हंसली। बन्दियों के गले में लोहे के भारी और कभी कभी काँटेदार तौक़ इसलिये डाले जाते थे कि उन्हें कष्ट होता रहे और वे भाग न जायें।

दबीरे खास—दीवाने इन्शा का मुख्य अधिकारी। उसके अधीन अनेक दबीर होते थे। वे शाही पत्र, विजय पत्र आदि लिखा करते थे।

दस्त बोस—हाथों का चुम्बन। धार्मिक अधिकारियों तथा बड़े बड़े अधिकारियों को धरती चुम्बन के स्थान पर दस्त बोस (हाथ चूमने) की आज्ञा प्राप्त थी।

दाग़—घोड़ों को दाग़ने की प्रथा इसलिये चलाई गई कि एक ही घोड़ा निरीक्षण (अर्ज़) के समय कई बार प्रस्तुत न कर दिया जाय।

दादबक—देखो अमीर दाद।

दाँग—एक छोटा अनाज, ड्राम का $\frac{१}{४}$ भाग। किसी चीज़ का $\frac{१}{४}$ भाग।

दारुल अदल—देखो सराये अद्ल।

दारुल इस्लाम—देखो दारुल हर्ब।

दारुल हर्ब—इस्लामी नियमानुसार संसार दारुल इस्लाम तथा दारुल हर्ब दो भागों में विभाजित किया जाता था। दारुल हर्ब वह देश है जिससे मुसलमानों का युद्ध चल रहा हो। विजय

उपरान्त वह दारुल इस्लाम में सम्मिलित हो जाता था।

दिरहम—चाँदी का एक सिक्का। इसका वज़न भिन्न भिन्न समय में पृथक् रहा है।

दीनार—सोने का एक सिक्का जो लगभग ९६ जौ के बराबर होता था।

दीवान—कार्यालय, विभाग। हिसाब किताब का कार्यालय।

दीवाने अर्ज़—युद्ध-विभाग दीवाने अर्ज़ कहलाता था। दीवाने अर्ज़ में प्रत्येक सैनिक का पूर्ण विवरण भी रखा जाता था।

दीवाने इन्शा—शाही पत्र व्यवहार दीवाने इन्शा द्वारा होता था। दबीरे ख़ास इसका सबसे बड़ा अधिकारी होता था।

दीवाने इशराफ़—मुशरिफ़ का विभाग।

दीवाने क़ज़ा— साधारण झगड़ों का निर्णय देने वाला विभाग। क़ाज़ी-ए-ममालिक इसका अध्यक्ष होता था। अन्य धार्मिक बातों का प्रबन्ध भी दीवाने क़ज़ा द्वारा होता था।

दीवाने मज़ालिम—बड़े बड़े अपराधों का निर्णय करने वाला विभाग। सुल्तान या उसकी ओर से कोई अन्य इसका अध्यक्ष होता था। प्रार्थना पत्र हाजिबों द्वारा प्रस्तुत होते थे।

दीवाने रियासत—बाज़ार के भाव, क्रय विक्रय आदि की देख भाल करने वाला विभाग।

दीवाने रिसालत—धर्म सम्बन्धी कार्यों का प्रबन्ध करने वाला विभाग। इसका अध्यक्ष सद्रुस्सुदर होता था जो क़ाज़ी-ए-ममालिक भी होता था।

दीवाने विज़ारत—वज़ीर का विभाग दीवाने विज़ारत कहलाता था।

दूरबाश—दूर रहो। वह लकड़ी जिससे चाऊश तथा नक़ीब जनसाधारण को सुल्तान के पास पहुँचने से रोका करते थे।

दो अस्पा—मुरत्तब सैनिक जो दो घोड़े रखते थे। अलाउद्दीन के समय में उनका वेतन २३४+७८ तनका होता था।

नक़ीब—आज्ञाओं को उच्च स्वर में सुनाते थे।

नक़ीबुल नुक़बा—नक़ीबों का अधिकारी।

नदीम—सुल्तान के मुसाहिब।

नवीसिन्दे—मुन्शी। विशेष कर भूमि कर से सम्बन्धित लिखा पढ़ी करने वाले।

नाज़िर—मुशरिफ़ के अधीन एक मुख्य कर्मचारी।

निसाब—वह कम से कम सम्पत्ति जिस पर ज़कात देना अनिवार्य हो।

पायक—पैदल सैनिक।

पायक बा अस्प—ऐसे पैदल सैनिक जिनको पैदल सैनिकों का वेतन दिया जाता था किन्तु युद्ध के समय उनको सुल्तान की ओर से घोड़े दे दिये जाते थे।

पायगाह—इस विभाग द्वारा शाही घोड़ों की नस्ल तथा घोड़ों का प्रबन्ध होता था।

पाशेब—मिट्टी का मचान जो क़िले की दीवारों की ऊँचाई के बराबर बनाया जाता था। इस पर आग और पत्थर फेंकने वाली मशीनें रखी जाती थी।

फ़तवा—किसी समस्या का धार्मिक नियमों के अनुसार निर्णय। मुफ़्ती का मत।

फ़रमाने तुग़रा—वह फ़रमान जिसमें सुल्तान की ख़ास मुहर लगी हो। भूमि संबन्धी फ़रमान फ़रमाने तुग़रा कहलाते थे।

फ़रसंग, फ़रसख़—तीन मील के बराबर होता था। प्रत्येक मील ४,००० गज़ का तथा प्रत्येक गज़ २४ अँगुल का होता था।

फ़र्राश—शाही फ़र्श, फ़रनीचर खेमे आदि का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी।

फ़िदाई—इस्माईलियों की एक शाखा जो दसवीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी ईसवी तक छिप छिप कर सुन्नी मुसलमान अधिकारियों तथा सुल्तानों की हत्या कर देते थे और अपना अधिकार स्थापित करने का प्रयत्न किया करते थे।

बरीद—समाचार वाहक। वे राज्य के भिन्न भिन्न भागों से सुल्तान तक निरंतर समाचार पहुंचाया करते थे।

बरीदे ममालिक—समाचार-वाहक-विभाग का सबसे बड़ा अफ़सर।

बलाहर—सम्भवतया साधारण किसान।

बार्बक—दरबार के समस्त कार्यों का प्रबन्ध करने वाले अधिकारियों का अफ़सर। अमीरों तथा अधिकारियों के खड़े होने और दरबार की शान स्थापित रखने का कार्य उसी का कर्तव्य होता था। उसे अमीरे हाजिब भी कहते थे।

बअ़त:—अधीनता स्वीकार करने की एक प्रकार की शपथ। शेख़ भी अपने चेलों से बैअ़त कराते थे।

बैतुलमाल—राजकोष। इसका अर्थ राज्य की सम्पूर्ण आय समझा जाता था।

मख़दूम-ए-जहाँ—सुल्तान की माता।

मग़रबी—इसके विषय में कोई ज्ञान नहीं। इसका अर्थ तोप भी बताया गया है किन्तु सम्भव है कि इसके द्वारा आग तथा शीघ्र जलने वाले पदार्थ फेंके जाते हों।

मंजनीक़—पत्थर, आग तथा अन्य शीघ्र जलने वाले पदार्थ फेंकने की एक मशीन।

मण्डी—अनाज का बाज़ार।

मजलिस—सभा, गोष्ठी।

मन—४० सेर का होता था और एक सेर ७० मिस्क़ाल या ७२ ग्रेन के बराबर होता था और इसमें ५०४० ग्रेन होते थे। मन २०१, ६०० ग्रेन या २८·८ पौंड का होगा।

मलिक—दस अमीरों का सरदार। इन्हें पचास साठ हज़ार तनकों की अक़्ता प्राप्त होती थी।

मलिकये जहाँ—सुल्तान के अन्तःपुर की मुख्य रानी।

मवास—घने जगल, पहाड़ आदि के प्रकार के वह स्थान जहाँ विद्रोही रक्षा के लिये छिप जाते थे।

मशअलदार—शाही महल, ख़ेमे आदि में रोशनी का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी।

मशायख़—बहुत से शेख़।

मसनवी—वह कविता जिसमें किसी कहानी अथवा किसी ऐतिहासिक घटना का उल्लेख हो।

मसले—ऐसे प्रश्न जिनके उत्तर की इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुसार आवश्यकता हो।

मिल्क—इसका अर्थ सम्पत्ति है, किन्तु वह भूमि मिल्क कही जाती थी जो सर्वदा के लिये किसी को प्रदान की जाती हो। यह भूमि हमेशा मिल्क के स्वामी के वंश में रहती थी। इस प्रकार की भूमि अधिकतर दान एवं धार्मिक कार्यो के लिये प्रदान की जाती थी।

मुइज्ज़ी—सुल्तान मुइज्ज़ुद्दीन कैक़ुबाद से संबंधित।

मुक़्ता—अक़्ता का स्वामी।

मुक़द्दम—गाँव का मुखिया।

मुक़द्दमा—सेना का अग्रिम दल।

मुज़किर—तज़कीर (धर्मोपदेश) करने वाले।

मुतसर्रिफ़—ग्रामों में किसानों से भूमिकर वसूल करने वाला अधिकारी। आमिल। शाही कारख़ानों का हिसाब किताब रखने के लिये भी मुतसर्रिफ़ रक्खे जाते थे।

मुनहियान—गुप्तचर।

मुफ़्ती—वह जो इस्लामी धर्म शास्त्र के अनुसार मसलों में अपना मत देता है।
मुफ़रिद—वे सैनिक जो स्थाई रूप से भरती हों।
मुरीद—चेला।
मुरतिद—जो मुसलमान इस्लाम त्याग दे।
मुरत्तब—वह सैनिक जिनका वेतन अलाउद्दीन के समय में २३४ तनका निश्चित किया गया था।
मुलहिद—नास्तिक। क़यामत पर विश्वास न करने वाला।
मुशरिक—जो अल्लाह के अतिरिक्त अन्य ख़ुदाओं पर विश्वास करते थे।
मुशरिफ़—प्रान्तों द्वारा प्राप्त हिसाब किताब मुशरिफ़ लिखता था।
मुशरिफ़—(ग्रामों में) ग्रामों की फ़सलों का निरीक्षण करने वाला अधिकारी।
मुशरिफ़े ममालिक—राज्य का Accountant General। वह दीवाने विज़ारत का एक
अधिकारी होता था। वह आय पर नियंत्रण रखता था।
मुस्तौफ़ी—हिसाब किताब की जाँच करता था।
मुस्तौफ़ी-ए-ममालिक—Auditor General। वह व्यय पर नियंत्रण रखता था।
मुसहफ़दार—सुल्तान की क़ुरान की देखभाल करने वाला।
मुहद्दिस—हदीसवेत्ता
मुहतसिब—समस्त ग़ैर इस्लामी बातों को रोकने वाला अधिकारी। शरा के नियमों के पालन
के विषय में देख रेख उसी के द्वारा होती थी। वह स्वयं दण्ड देकर शरा के विरुद्ध
बातें रोक सकता था।
मुहस्सिल—किसानों से भूमि कर वसूल करने वाला।
मैमना—सेना का दाहिना भाग।
मैसरा—सेना का बायाँ भाग।
यकअस्पा—साधारण मुरत्तब सैनिक जिसके पास एक घोड़ा होता था।
यज़की—सेना का वह अग्रिम भाग जो शत्रुओं का पता लगाने तथा रसद का प्रबन्ध करने के
लिये मुख्य सेना से आगे भेजा जाता था।
रईस—बाज़ार के भाव, क्रय, विक्रय आदि की देख भाल करने वाला अधिकारी।
रवायत—मुहम्मद साहब अथवा उनके खलीफ़ाओं की कही हुई कोई बात। उदाहरण।
रुकू—नमाज़ में घुटना पकड़ कर झुकना।
वकीलदर—शाही महल तथा सुल्तान के विशेष कर्मचारियों का प्रबन्ध करने वाला सबसे बड़ा
अधिकारी।
वज़ीर—मुख्य मंत्री को वज़ीर कहते थे। राज्य के शासन प्रबन्ध तथा आय व्यय का प्रबन्ध
उसी के सिपुर्द होता था।
वज़ू—नमाज़ के लिये क्रमशः हाथ मुँह धोना।
वजही—शाही स्थायी सेना।
वली—मित्र, प्रसिद्ध सूफ़ी।
वक़्फ़—वह भूमि अथवा धन जो धार्मिक कार्यों के लिये सुरक्षित हो।
वाइज़—धार्मिक भाषण (वाज़) करने वाला।
वाज़—धार्मिक भाषण।
वाली—प्रान्त का सबसे बड़ा अधिकारी। उसे हर प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। वह प्रान्तों में
सुल्तान का प्रतिनिधि होता था। सुल्तान के निर्बल हो जाने पर वाली स्वतंत्र हो
जाते थे।

विलायत—इसे प्रान्त के बराबर समझना चाहिये। विलायत में कई अक़्तायें होती थीं।

शरा (शरीअत)—इस्लाम के धार्मिक नियम शरा कहलाते थे।

शराबदार—सुल्तान के पीने की वस्तुओं का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी।

शहन-ए-पील—शाही हाथियों का प्रबन्ध करने वाला मुख्य अधिकारी।

शहन-ए-मंडी—मंडी का अधिकारी।

शिक़—प्रान्त को प्रबंध की सुविधा के लिये भिन्न भिन्न शिक़ों में विभाजित किया जाता था।

शिक़दार—शिक़ के अधिकारी।

शिर्क—एक ख़ुदा के अतिरिक्त कई ख़ुदा मानना।

शेख़—मुसलमान संतों का गुरू।

सज्जादा—गद्दी। शेख़ों की गद्दी सज्जादा कहलाती है। किसी का सज्जादा प्राप्त करने वाले सज्जादानशीन कहलाते हैं।

सद्र—सद्रुस्सुदूर के अधीन धार्मिक न्याय तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्य की देख रेख करने वाला। प्रदेशों के क़ाज़ी सद्र का कार्य भी किया करते थे।

सद्रुस्सुदूर—समस्त धार्मिक कार्यों की देख रेख सद्रुस्सुदूर करता था। वह क़ाज़ी-ए-ममालिक अर्थात् मुख्य न्यायाधीश भी होता था। न्याय के सम्बन्ध में वह सुल्तान की सहायता करता था। वह धार्मिक तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्य करने वालों के लिए वृत्ति की सुल्तान से सिफ़ारिश करता था।

सराये अदल—अथवा दारुल अदल—अलाउद्दीन द्वारा स्थापित वह बाज़ार जहाँ मुल्तानी जिन्हें सरकारी सहायता प्राप्त होती थी, कपड़ा लाकर बेचते थे।

सरख़ेल—दस सवारों का सरदार।

सर चत्रदार—शाही छत्र का प्रबन्ध करने वाला मुख्य अधिकारी।

सर जानदार—सुल्तान के अङ्ग रक्षक जानदार कहलाते थे। उनका सरदार सरजानदार कहलाता था। कभी कभी दो सरजानदार नियुक्त होते थे। एक दाहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर का।

सरदावतदार—शाही लेखन सामग्री का प्रबन्ध करने वाला मुख्य अधिकारी।

सहमुल हशम—वे भी चाऊशों की भाँति सेना तथा दरबार की पंक्तियाँ ठीक करते थे।

साक़ी—मदिरा पिलाने वाले। प्रायः रूपवान किशोर तथा सुन्दर युवतियाँ साक़ी नियुक्त होती थीं।

साबात—एक प्रकार का ढँका हुआ मार्ग जिससे आक्रमणकारी बिना अधिक हानि के सुगमता पूर्वक क़िले पर आक्रमण कर सकते थे।

साहिबे दीवान—देखो ख्वाजा।

सिक्का—एक राज्य में केवल एक ही सुल्तान का सिक्का चल सकता था। जो अधिकारी स्वतंत्र होना चाहते थे वे अपने नाम का सिक्का चला देते थे।

सिजदा—अल्लाह को उपस्थित समझकर धरती पर सिर झुकाना।

सिपहसालार—दस सरख़ेलों का सरदार, इन्हें बीस हज़ार तनकों तक की अक़्ता प्राप्त होती थी।

सिलाहदार—ये भी सुल्तान के अंगरक्षक होते थे और जब सुल्तान दरबार करता अथवा कहीं बाहर जाता तो वे उसके साथ-साथ रहते थे। उनका सरदार सरसिलाहदार कहलाता था। दाहिनी ओर बांई ओर के लिये पृथक् सरसिलाहदार होते थे।

सूफ़ी—मुसलमान संत, दरवेश।

हकीम—वैद्य। मलिकुल हुकमा सब से बड़ा शाही वैद्य होता था।

हदीस—मुहम्मद साहब के कथनों तथा जीवन से सम्बन्धित कहानियों का संग्रह।

हशमे अतराफ़—प्रान्तों की सेना।

हशमे क़ल्ब—देहली की सेना।

हाजिब—बार्बक के अधीन हाजिब होते थे। वे दरबार में सुल्तान तथा दरबारियों के मध्य म खड़े होते थे और उनकी आज्ञा बिना कोई सुल्तान तक न पहुंच सकता था। उनका सरदार अमीर हाजिब कहलाता था। समस्त प्रार्थना पत्र भी अमीर हाजिब तथा हाजिबों द्वारा ही सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत हो सकते थे। वे बड़े योग्य सैनिक होते थे और युद्ध संचालन भी कभी-कभी इनके द्वारा होता था।

हाफ़िज़—वे लोग जिन्हें पूरा क़ुरान कंठस्थ हो।

हुल्या—सैनिकों का पूर्ण विवरण।

हूर—मुसलमानों के अनुसार स्वर्ग की अप्सरा।

प्रयुक्त पुस्तकें

	पुस्तक	लेखक
१.	*तबक़ाते नासिरी*	मिनहाज सिराज (कलकत्ता १८६३–६४ ई०)
२.	*मिफ़ताहुल फ़ुतूह*	अमीर खुसरो (अलीगढ़ १९५४ ई०)
३.	*ख़ज़ाइनुल फ़ुतूह*	अमीर खुसरो (अलीगढ़ १९२४ ई०)
४.	*दिवलरानी खिज्र खाँ*	अमीर खुसरो (अलीगढ़ १९१७ ई०)
५.	*नुह सिपेहर*	अमीर खुसरो (इस्लालिमक रिसर्च एसोसिएशन १९५० ई०)
६.	*तुग़लक़ नामा*	अमीर खुसरो (हैदराबाद १९३३ ई०)
७.	*फ़ुतुहुस्सलातीन*	एसामी (मदरास यूनीवर्सिटी १९४८ ई०)
८.	*अजाइबुल असफ़ार*	इब्ने बतूता (डेफ़रेमरी द्वारा सम्पादित फ़ांस १९२६ ई०)
९.	*तारीखे फ़ीरोज़ शाही*	ज़ियाउद्दीन बरनी (कलकत्ता १८६०-६२ ई०)
१०.	*तारीखे मुबारक शाही*	यहया बिन अहमद सरहिन्दी (कलकत्ता, १९३१ई०)
११.	*तबक़ाते अकबरी*	ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद (कलकत्ता १९१३ ई०)
१२.	*मुनतखबुत्तवारीख़*	अब्दुल क़ादिर 'क़ादिरी' बदायूनी (कलकत्ता १८६४-६९ ई०)
१३.	*तारीखे फ़रिश्ता*	मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी फ़रिश्ता (नवल किशोर प्रेस)
१४.	*ज़फ़रुल वालेह*	अब्दुल्लाह (डेनीसन रास द्वारा सम्पादित लन्दन १९१० ई०)
१५.	*आसारुस्सनादीद*	सर सैयद अहमद खाँ (देहली, १८५४ ई०)

नामानुक्रमणिका

(अ)

(आ)

(इ)

(ड)

(त)

(द)

(य)

(र)

(ल)

(व)

(श)

(स)

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२८	उस्मानी	उस्सानी
२	३१	खसरों	खुसरो
८	२९	सुस्तान	सुल्तान
१३	३९	सामना	सामाना
२३	१२	१	×
	२७	मजहर[2]	महज़र[1]
	३९	२······	यह पंक्ति न होनी चाहिये
२८	३६	मिल्सा	भिलसा
३४	२५	अल्लास बेग	अलमास बेग
३६	६	अलमाम बेग	अलमास बेग
३७	१३	सामने	सामाने
४८	१०	मुसलमान	नव मुसलमान
५७	१७	ए	एवं
६०	२५	मुल्तान	सुल्तान
६४	२३	अमार कोह	अमीर कोह
७४	२२	मिश्र के	मिश्र से
७५	२१	खयास	क़यास
७७	३८	रक्ख	रक्खें
८४	१६	मन	×
९१	८	जमादारों	जमींदारों
९४	३२	भूल्य	मूल्य
११४	२	बदायूना	बदायूनी
११७	२५	क़द	क़ैद
१२५	४	७७७ हिजरी	७१७ हिजरी
	३९	७७६ हिजरी (१३७४-७५ ई०)	७१६ हि० (१३१६ ई०)
१२९	३३	वारीलदा	बारीलदा
१३९	२०	इश्हाक	इसहाक़
१४४	३३	बालकों	बालक
१४८	७	क़ाज़ी	ग़ाज़ी
१४९	९	एमामी	एसामी
१५२	४०	उस	उसने
१६३	पृष्ठ शीर्षक	खज़ाइनुल फ़ुतूह	मिफ़ताहुल फ़ुतूह

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५५	१४	११९३ ई०	१२९३ ई०
१५७	१५	मुञ्जर	मुंजर
१६१	१५	शहकश	सेहकुश
१६२	११	१३०१ ई०	१३०९ ई०
१६३	१३	१३०९ ई०	१३१० ई०
१६४	१	गर्गंब	गर्गंच
१७१	शीर्षक	दिबल रानी	दिवल रानी
१८०	१	मु	मुग
	१६	के	×
१८५	३३	फ़राद	फ़रीद
१९०	२०	पालमा	पालम
१९८	१	उलुग	उलग़ू
२१३	१	लेखक—इब्ने बतूता	संकलनकर्त्ता इब्ने जुजये
२२०	३९	उसा	उसी
२२३	१६	६९६ हि०	६९७ हि०
आ	२५	मुक़द्दमों	मुक़दमों
अ	११	बग्रत	बैग्रत

नामानुक्रमणिका

१	८	अइज्जुद्दीम	अइज्जुद्दीन
२	१८	९१	५१
	१९	९८	५८
	२९	सरजाननार	सरजानदार
	४४	वद्रुद्दीन	बद्रुद्दीन
	५१	१२३	२२३
	७५	वग़ाखां	बग़ाखां
३	१	इद्रपत	इन्द्रपत
	२	मोलना	मोलाना
४	२०	काफर	काफ़ूर
	५०	कतुबुद्दीन कैथली	कुतुबुद्दीन कैथली
६	१६	सहनये	शेहनये
	१९	हिजवुद्दीन	हिजब्रउद्दीन
	२३	रुद्दीन	ज़फरुद्दीन
	४२	फहीरुद्दीन	जहीरुद्दीन
७	५१	ताबी	तावी
८	३०	धारे	धार

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९	२६	फखरुद्दान	फख़रुद्दीन
१०	६	भहराम ऐवा	बहराम ऐबा
	१३	वहाउद्दान	बहाउद्दीन

छपाई की बहुत ही साधारण अशुद्धियों का उल्लेख नहीं किया गया है। पृष्ठ शीर्षक में 'फ़ुतूहुस्सलातीन' की नीचे की मात्राएँ कहीं कहीं छूट गई हैं।